अद्वैत वेदान्त का अनुपम पद्य ग्रन्थ

श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश

(भजन, सवैया, कुण्डलियाँ, दोहे, अरिल, कवितायें आदि)

रचयिता

श्री सुखदेव जी महाराज

किशनगढ़- रेनवाल, जयपुर (राज.), दूरभाष - 9829332686

श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश

रचयिता

श्री सुखदेव जी महाराज

दादूराम । सत्यराम ।।

श्री दादू सम्प्रदायाचार्यों की परम्परा, दादूधाम, नरायना

श्री दादू दयालजी महाराज
सं. १६०१-१६६०

आचार्य श्री गरीब दास जी
सं. १६६०-१६९३

आचार्य श्री मस्कीन दास जी
सं. १६९३-१७०५

आचार्य श्री फकीर दास जी
सं. १७०५-१७५०

आचार्य श्री जयतराम जी
सं. १७५०-१७८९

आचार्य श्री किशन देव जी
सं. १७८९-१८१०

आचार्य श्री चैनराम जी
सं. १८१०-१८३७

आचार्य श्री निर्भयराम जी
सं. १८३७-१८७१

आचार्य श्री जीवणदास जी
सं. १८७१-१८७७

आचार्य श्री दलेराम जी
सं. १८७७-१८८७

आचार्य श्री प्रेमदास जी
सं. १८८७-१९०१

आचार्य श्री नारायणदास जी
सं. १९०१-१९१२

आचार्य श्री उदयराम जी
सं. १९१२-१९३१

आचार्य श्री गुलाबदास जी
सं. १९३१-१९४८

आचार्य श्री हरजीराम जी
सं. १९४८-१९५५

आचार्य श्री दयाराम जी
सं. १९५५-१९८८

आचार्य श्री रामलाल जी
सं. १९८८-२००१

आचार्य श्री प्रकाशदेव जी
सं. २००१-२०२३

आचार्य श्री हरीराम जी
सं. २०२३-२०५८

आचार्य श्री गोपालदास जी
सं. २०५८ से वर्तमान

दादूराम । सत्यराम ।।

दुर्बल, दुर्जन, दानव, दीनहु, दीन दयाल दु:खी, दु:ख टारो।
दुष्कर, दुर्जन, दुर्गम, देव!, सुदूर दीखे दरियाव किनारो।।
देह तरे दृग दृष्टि परे, दम्भ, द्वेष रु, द्वन्द्व को दूर निवारो।
द्वार पे दस्तक दी ''सुखदेव'', दया हित दादू हि दादू पुकारो।।
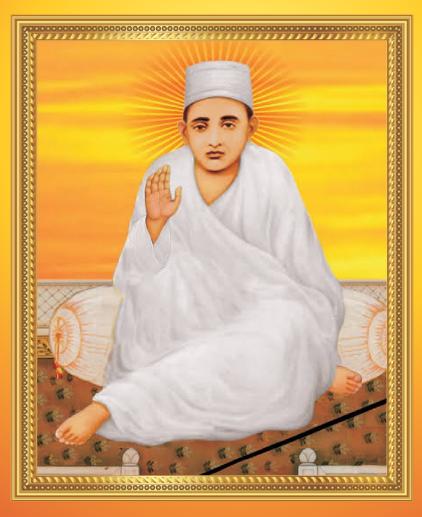
श्री दादू दयालवे नमः

अनन्त श्री विभूषित सन्तप्रवर दादूदयाल जी महाराज

दादूराम । सत्यराम ।।

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः।
वन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः।।
आपा मेटै हरि भजै, तन, मन तजै विकार।
निर्बेरी सब जीव सौं, दादू यहु मत सार।।

श्रीमद्दादू पीठाधीश्वर श्री श्री 1008
परम पूज्य गोपाल दास जी महाराज

दादूराम । सत्यराम ।।

दादू इस संसार में, यह द्वै रतन अमोल ।
इक साईं इक संत जन, जिनका मोल न तोल ।।
परमारथ को सब किया, आप स्वारथ नाहि ।
परमेश्वर परमार्थी, के साधु कली माहि ।।
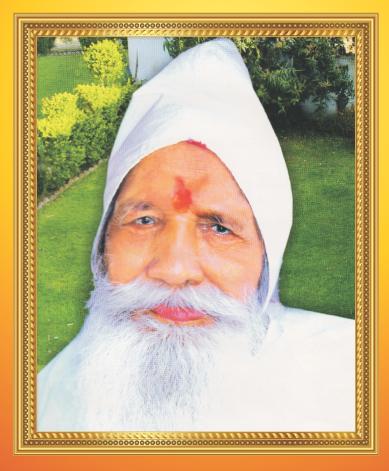
सिद्ध बाबा सन्त श्री रामपाल दास जी महाराज
निवाई (टोंक)

दादूराम । सत्यराम ।।

भक्ति भक्ति सबको कहे, भक्ति न जानै कोइ।
''दादू'' भक्ति भगवन्त की, देह निरन्तर होइ।।
आपा पर सब दूर कर, राम नाम रस लाग।
दादू अवसर जात है, जाग सके तो जाग।।

सिद्ध बाबा सन्त श्री रामप्रसाद दास जी महाराज
निवाई (टोंक)

गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना

(श्री) भूरादास जी ! दास उदासहि, सुन अरदास उदासी हरो ना।
सुमिरत हूँ नित स्वासन स्वासहि, किन्चित दास पे दृष्टि करो ना ।।
आप मेरे विश्वास रु आशहि, चरणन् पास हूँ हाथ धरो ना।
सन्मुख है "सुखदेव" कुपातर, पात्र बना निज ज्ञान भरो ना।।
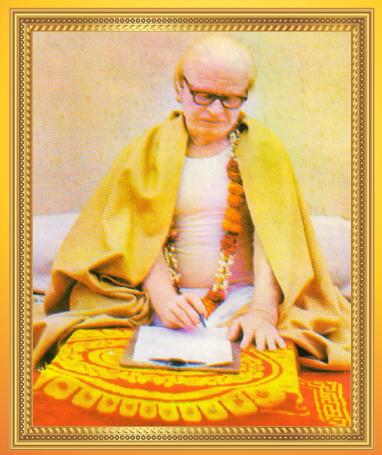
लेखक के सद्गुरुदेव (ब्रह्मलीन)

परम पूजनीय श्री भूरादास जी महाराज

महामण्डलेश्वर ब्रह्मनिष्ठ पण्डित (श्री दादू वाणी के टीका कर्त्ता)

श्री गुरुदेव के चरणों में समर्पित श्रद्धा सुमन

संत हूँ ना मैं कवि, ज्ञानी नहीं ना अनुभवी।
है राम, गुरू, माँ भारती की, हृदय में अद्भुत छवि।।
हूँ मात, पितु, गुरूदेव, संतन, के चरण का धूलि कण।
यह जानकर स्वीकार लो, श्रद्धा सुमन, शत-शत नमन्।।

ग्रंथ रचयिता–श्री सुखदेव जी महाराज

''श्री दादू पंथ श्री'' विभूषित

संस्थापक-राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केन्द्र

कि. रेनवाल, जयपुर (राजस्थान)

श्री दादू दयाल जी महाराज

।। श्री दादू दयालवे नमः ।।

श्रीमद्दादू सम्प्रदाय प्रधानपीठ नरायना

श्री दादू धाम नरायना, जिला-जयपुर (राज.)
फोन 01425-234160

प.पू. महन्त गोपालदास जी महाराज

"श्री दादूपंथ श्री" विभूषित श्री सुखदेव प्रसाद जी किशनगढ–रेनवाल नगर वास्तव्य एक अध्यात्म चेतना के साथ राष्ट्रीय गौरव के प्रखर व उदीयमान कवि हैं। इनके द्वारा रचित अनेक रचनाऐं जो भारतीय संस्कृति की जीवन्त अभिव्यक्ति के साथ मौलिक रूप से वेदान्त से अनुस्यूत है, समय-समय पर सामने आयी है। आप "राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केन्द्र" के माध्यम से व्यक्ति निर्माण के साथ-साथ सेवा कार्यों में निरन्तर व्यस्त रहते हैं।

प्रस्तुत संरचना – "श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश" पद्य ग्रन्थ में उन सभी के निदर्शन से गागर में सागर को समा देने के साथ विषयोक्ति अभिव्यक्ति को सन्त समाज के आदर्शों छाया में लोक कल्याणार्थ अपने अनुभूत भावों के गांभीर्य में निमज्जित करते हुए सन्त सरणि को ओर आगे वृद्धिगत कर 'मनोगत' को पूर्णता प्रदान करेगी तथा सत्य पथ को प्रशस्त करेगी, ऐसी अपेक्षा है।

श्री सुखदेव जी महाराज के इस आत्मिक प्रयास से जिज्ञासु जन लाभान्वित होंगे ऐसी श्रीमद्दादूपीठ की शुभ कामना एवं आशीर्वाद है।

श्रीमद्दादूपीठ

महन्त गोपालदास

श्री दादू सम्प्रदायाचार्य, मुख्य पीठ
श्री दादू द्वारा नरायना, जयपुर

अ.भा. जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद, किशनगढ़-अजमेर (राज.) 305815

प.पू. श्री श्यामशरणदेवाचार्य जी महाराज ('श्रीजी' महाराज)

दादूपन्थ के "श्रीदादूपंथश्री" विभूषित मूर्धन्य साधक श्रीसुखदेवजी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थ "श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश" का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। कवि क्रांतदर्शी होता है जो अपने अनुभूत क्षणों की अभिव्यक्ति कर राष्ट्र और समाज को प्रेरणा देता है।

श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश ग्रन्थ उन सभी विषयों से परिपूर्ण है जो समाज के साथ-साथ सन्त समाज के आदर्शों की प्रतिकृति के रूप में जन कल्याणार्थ अपने भावों का सम्पूर्ण गाम्भीर्य को साथ प्रस्तुत करता है। यह ग्रन्थ मौलिक विचार सरणि के साथ आध्यात्मिक चेतना और सात्विक ऊर्जा प्रदान करने वाला है। आपने इस ग्रन्थ में गुरु भक्ति, भगवद् भक्ति, स्वदेशी जागरण, गोरक्षा, सन्त महिमा, सत्संग महिमा, अद्वैत ब्रह्म की महत्ता प्रतिपादित की है। यह ग्रन्थ ज्ञान पिपासुओं के लिये तृप्ति और संतुष्टी प्रदान करने और आध्यात्मिक चेतना एवं साधकों को उर्जावान बनाने में सक्षम होगा। इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ हम श्रीराधामाधव प्रभु से अभ्यर्थना करते है कि आप इस प्रकार से साहित्य सर्जन में सतत प्रगतिशील रहे। जय श्रीराधे।

श्रीचरणों की आज्ञा से-

डॉ. विनोद दीक्षित

अभिमत

पूज्य रामपाल दास जी महाराज
बड़े बाबा, निवाई

कवि हृदय श्री सुखदेव जी महाराज द्वारा स्वरचित पद्य ग्रंथ "श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश" के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन का सौभाग्य पूज्य गुरुदेव संत श्री रामपाल दास जी महाराज (बड़े बाबा) संत श्री रामप्रसाद जी महाराज (छोटे बाबा) की कृपा एवं पूज्य पिताजी श्री गुलाबचंद शर्मा, भक्ति मति माता श्रीमती गोविंदी देवी शर्मा के आशीर्वाद से ही प्राप्त हुआ है। मुझे प्रसन्नता है कि आप द्वारा संचालित राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केंद्र के अनुशासित एवं समर्पित साधक श्री दादू मेला महोत्सव पर 16 वर्षों से निरंतर सेवाएं दे रहे हैं। अतः श्री दादू दयाल जी महाराज की महत्ती कृपा, आपके पूज्य गुरुदेव तपस्वी संत भूरा दास जी महाराज (श्री दादू वाणी के टीका कर्ता) का पावन मार्गदर्शन तथा आचार्य प्रवर प.पू. गोपाल दास जी महाराज का शुभआशीर्वाद एवं विशेष स्नेह आपको प्राप्त है। आपके उत्तम व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ ही ग्रंथावलोकन से पता चलता है कि आप राष्ट्र चेतना, आध्यात्मिक चेतना, व्यक्तिनिर्माण, गौ सेवा, वेदांत ज्ञान वार्धक्य, समाज संगठन, सनातन धर्म संवर्धन एवं संरक्षण के पुनीत सेवा कार्यों में समाज के हर वर्ग को साथ लेकर अहर्निश लगे रहते हैं।

वक्तृत्व से ज्यादा कृतित्व को अधिक महत्व देने के साथ ही संगठन का कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले ग्रंथ रचयिता द्वारा रचित पद्य विविधता, सरसता, सरलता एवं माधुर्यता से युक्त हैं। लोकोक्तियां, मुहावरे, विविध अलंकार आदि के प्रयोग से पदों की संरचना सुंदर एवं प्रभावी बन पड़ी है। आज मानव के समक्ष धर्मांधता, मतान्धता, मदान्धता, जातिवाद, भाषावाद, पंथवाद, प्रांतवाद, धर्मांतरण, स्वरूप विस्मरण, स्वार्थपरता आदि समस्याएं मुंह बाए खड़ी है। ऐसे समय में निश्चित ही यह ग्रंथ कई समस्याओं के समाधान का हिस्सा बनेगा तथा भक्त, मुमुक्षुओं के साथ ही सर्व सामान्य के लिए भी परमोपयोगी सिद्ध होगा तथा विशेषकर आज के दिशाहीन युवा वर्ग को सम्यक दिशा प्रदान करेगा। पुस्तकालयों में भी संग्रहणीय यह ग्रंथ पाठकों को खूब पसंद आएगा, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ सत्यराम।

शुभेच्छु
रामेश्वर प्रसाद शर्मा (पटेल)
A-5, गीतांजलि कॉलोनी बरकत नगर
टोंक फाटक, जयपुर।

संस्कार ! सेवा !! संगठन !!

अरिल छंद

करें जगत से बात फोन भी चाहिये।
जब हो गुरू संग संवाद मौन भी चाहिए।।
फोन करन के काम सदा बिल दीजिए।
परि हां सच है 'सुखदेव'
गुरू मिलावे राम सदा दिल दीजिए।।

ग्रंथ रचयिता
श्री सुखदेव जी महाराज

चेतना मंत्र

जटिल समस्या देख रुको मत, ले गुरु ज्ञान संभल के रहिए।
साहस, संयम, शौर्य युक्त हो, जलती आग पर चलते रहिए।।
कर सतसंग सदा संतों की, समता भाव में गलते रहिये।
रह 'सुखदेव' निरंतर हंसमुख रोज भलाई करते रहिए।।

मनहर सवैया छंद

भक्ति है वो हि इष्टदेव में अनन्य भाव, मुक्ति है सोइ सर्व द्वंद्व, फंद टार दे।
ज्ञान वो हि ब्रह्मज्ञान सहज मुक्त करि, सर्व भेद, खेद, द्वय संशय निवार दे।।
ध्यान वो हि ध्येय रूप होइ मन अविचल, स्नान सोइ धोय मल मन के विकार दे।
ग्रंथ वो हि पढ़त सकल भ्रम जार देय, संत सोइ 'सुखदेव' बंधन बिडार दे।।

श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश

द्वितीय संस्करण

रचियता, संपादक एवं प्रकाशक :

श्री सुखदेव जी महाराज

संस्थापक : राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केन्द्र

विवेकानन्द नगर, किशनगढ़-रेनवाल, पिन-303603

जिला-जयपुर (राज.) दूरभाष : 9829332686

पुस्तक प्राप्ति के स्थान :

- आराधना आई. टी. एण्ड मैनेजमेंट कॉलेज, सप्तवृक्ष, कि. रेनवाल
  ✆ 9829993159
- संत श्री लक्ष्मणदास जी महाराज की बगीची दादूद्वारा गुढ़ासाल्ट
  ✆ 8875695375
- निर्भय जनरल स्टोर्स, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर (राज.)
  ✆ 9602419920
- श्री मद्दादू पीठ नरायणा एवं भैराणा धाम
- प्रमुख साहित्य विक्रेताओं के पास भी उपलब्ध

समर्पण राशि : 150/- (एक सौ पचास रुपये मात्र)

मुद्रित प्रतियों की संख्या - 1000

मुद्रण एवं लोकार्पण वर्ष : सितम्बर 2022

मुद्रक :

सारथी प्रिन्टर्स

बी-38, अलंकार प्लाजा, सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर (राज.)

मो. : 9829792515, 6378575660

उठो ! जागो ! !

युग पुरुष स्वामी विवेकानंद

हिंदू राष्ट्र को अमर संदेश

(आध्यात्मिकता से ही गौरवशाली भारत का उदय होगा, अन्यथा पतन अवश्यंभावी)

स्मरण रखो ! यदि तुम पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता के चक्कर में पड़कर, आध्यात्मिकता का आधार त्याग दोगे तो उसका परिणाम होगा कि, तीन पीढ़ियों में तुम्हारा जातिय अस्तित्व मिट जाएगा, क्योंकि राष्ट्र का मेरुदंड टूट जाएगा। राष्ट्रीय भवन की नींव ही खिसक जाएगी।

इस सब का परिणाम होगा– सर्वतोमुखी सत्यानाश। अतः मित्रों ! एक ही मार्ग शेष है कि हम अपने प्राचीन पूर्वजों से चली आई इस अमूल्य विरासत आध्यात्मिकता की पकड़ को कदापि ढीली ना होने दें।

चाहे तुम्हारे आध्यात्मिकता में आस्था हो या न हो, राष्ट्रीय जीवन की रक्षा हेतु तुम्हें आध्यात्मिकता के आधार पर टिके रहना होगा। फिर दूसरा हाथ बढ़ाकर अन्य जातियों से जो कुछ लेना चाहो लो, किंतु जो भी उनसे ग्रहण करो उसे अपने जीवन आदर्श के अधीन कर दो। तब एक चमत्कारी गौरवशाली भावी भारत का उदय होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह होकर रहेगा ! पहले से कहीं अधिक महान् भारत का उदय अवश्यंभावी है।

पुस्तकसंदर्भ– ''उत्तिष्ठत ! जाग्रत ! !'' (पृष्ठ संख्या–62)
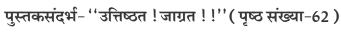
प्रथम संस्करण के सन्दर्भ में .....
विनम्र निवेदन

श्री सुखदेव जी महाराज

वन्दऊ गुरुपद, सन्तजन, नमो निरंजन राम।।
करि करुणा सिर कर धरो, सफल होय सब काम।।

प्रातः स्मरणीय, अर्चनीय, वन्दनीय, कृपासागर सन्त प्रवर दादू दयाल जी महाराज, श्री मद्दादू पीठाचार्य जगद्गुरु अनन्त श्री विभूषित परम् पूज्य गोपाल दास जी महाराज एवं गुरुदेव परमपूज्य भूरादास जी महाराज के पावन चरणों में मेरा सादर दण्डवत प्रणाम।

जिनकी पावन कृपा से भव तारिणी सत्संग एवं खुशहाल जीवन जीने की दिव्य युक्तियाँ प्राप्त हुई। पूज्य पिताजी के मार्गदर्शन में आध्यात्मिक जीवन की शुरूआत के पश्चात स्वामी विवेकानन्द साहित्य की मेरे हृदय पर अमिट छाप पड़ी, लोक शिक्षा, देशभक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान, सेवा व संगठन पर स्वामी जी ने विशेष जोर दिया है। इन्हीं चरण चिन्हों पर चलने के साहस को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा ने सम्बल प्रदान किया। परन्तु जीवन को वास्तविक संतुष्टि, तृप्ति एवं आनन्द परम पूज्य गुरुदेव एवं सन्तजनों के सत्संग में ही मिला।

स्वरूप के बारे में अज्ञान ही समस्त भय, कुण्ठा, अवसाद, दुःख एवं आफतों की जड़ है। स्वरूप का अज्ञान, स्वरूप के ज्ञान से ही निवृत होता है, यह वैदिक सिद्धान्त भी है और अनुभव से भी सिद्ध है। ऐसा अज्ञान ही सर्व भेदों का जनक है। जब तक मति में भेद पड़ा है, जीव सपने में भी सुखी नहीं हो सकता। जिसने अद्वैताचार्यों की शरण लेकर स्वरूप ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) प्राप्त किया है, उसके जीवन से सर्वभेद, खेद, भय, कुण्ठा अवसाद आदि आत्म हत्या कर लेते हैं। वह जीवन मुक्त होकर सर्व को आनन्द एवं प्यार बांटता हुआ जगत में निर्भय विचरण करता है। साधक को ऐसी उच्च अवस्था सन्त समागम एवं गुरुदेव की कृपा बिना असम्भव है। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में श्री निर्भय पुरी जी महाराज, नाथूराम जी महाराज (पीपली का बास), अर्जुन सिंह जी महाराज (हाथीपुरा) नित्यानन्द जी महाराज (मीण्डा) भगवान दास जी महाराज (श्रीमाधोपुर), चन्द्र भूषण जी श्री वास्तव वेदान्ताचार्य (फुलेरा) आदि सन्तों के द्वारा प्राप्त निर्मल प्यार एवं सानिध्य ने आत्म निश्चय को दृढ़ता प्रदान की एवं पद्यमयी कृति ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' की संरचना को आशीर्वाद मिला।

प्रस्तुत ग्रंथ में नया कुछ भी नहीं है किन्तु जैसा कि देखा गया है हर लेखक के लेखन में भाव प्रकटीकरण का तौर-तरीका नवीन बन पड़ता है। स्वामी निश्चल दास जी महाराज का 'विचार सागर' सन्त कवि सुन्दर दास जी महाराज रचित 'सुन्दर ग्रंथावली' स्वामी नारायणदास जी महाराज द्वारा रचित 'वेदान्त प्रश्नोत्तरी' पीताम्बरदास जी महाराज कृत 'विचार चन्द्रोदय' आदि अद्वैत वेदान्त ग्रंथों के अध्ययन से विषय वस्तु के अनुभव में अद्‌भुत सहायता मिली।

प्रस्तुत ग्रंथ में पूर्व प्रकाशित ग्रंथ आध्यात्मिक ज्ञान भारती, दिव्य भजन संदेश, स्मृति ज्ञान दर्पण, सुख सागर भजन प्रकाश, संध्या संजीवनी के सार गर्भित पद्यों का समावेश है। जिज्ञासुओं के कल्याणार्थ अनेक शंकाओं के समाधान हेतु प्रयाप्त सामग्री देने का प्रयास किया गया है। आशा है जिज्ञासुजन इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे। सद्‌गुरू संकेत को हृदयंगम कर इस ग्रंथको छपवाने हेतु पवित्र पावन ज्ञान यज्ञ में, श्रद्धानिधि की आहुति प्रदान करने वाले, सुशिष्य श्री पन्नालाल कुमावत मीण्डा पुत्र श्री भोलूराम जी छिछोलिया ने सम्पूर्ण व्यय सहर्ष प्रदान करके अपने माता-पिता, गांव, मित्रों एवं सद्‌गुरुदेव के कीर्ति गौरव को बढ़ाया है।

''पन्ना के दिल के पन्ने पर केवल नाम तुम्हारा'' गुरु भक्ति के स्वरचित पद्य में जो कहा वो विनम्र एवं समर्पित भाव से करके दिखाना आपका पुराना स्वभाव ही है।

अन्य सद्‌गुरु प्रेमी भक्तों के लिए इस उच्च आदर्श को सहृदय शुभाशीर्वाद। पुस्तक में सम्पूर्ण श्रेष्ठताएं सन्तों एवम् सद्‌ग्रंथों की है एवम् त्रुटियां मेरी ।

प्रूफ संसोधन का महत्वपूर्ण कार्य सद्‌गुरु कृपा पात्र श्री बन्नू भारती, रामकिशोर जी सिरसवा (किशनगढ़-रेनवाल) अर्जुन जी हस्तेड़ा, केसरमल जी मीण्डा एवं गिरधारी लाल जी जोबनेर ने परिश्रम पूर्वक किया है। फिर भी त्रुटियां रह गई हो तो कृपालु पाठकगण दूर करने में सहयोग करेंगे ऐसी अपेक्षा है। ग्रन्थ में स्नेह युक्त सम्मतियों, आशीर्वाद प्रदान करने वाले पूज्य संत एवं विद्वज्जनों के साथ-साथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले महानुभावों का सहृदय आभारी हूँ। हृदय निसृत तरंगित काव्य :

पिंगल का नहीं ज्ञान मुझे, कितने अक्षर अर्थालंकारा।
भिन्न रसों अरू छन्द के भेद का, भेद न जानत पाया न पारा।।
एक ही ध्यान रहा मुझको, सद्गुरु पद की रज को उर धारा।
है ''सुखदेव'' लिखा जिहि सुन्दर, वो मम् सद्गुरु का उपकारा।

काव्य अनंत वेदान्त के ग्रन्थ, पाया नहीं अन्त बहू पचिहारा।
यद्यपि महन्त रू सन्तन ने, सत पंथ का तंत दिया कई बारा।।
साहित्य, संगीत, कलायें अनेक, न एक का किन्चित ज्ञान विचारा।
है ''सुखदेव'' लिखा जिहि सुन्दर, वो मम सद्गुरु का उपकारा।।

आप ही काव्य रू ग्रन्थ रचे, प्रभु आप ही लेख लिखावनहारा।
दद्क्षर है तो मुझे डर क्या? सिर दादू दयाल बचावन हारा।।
मोद भया गुरू गोद गया, उसको जग में नहीं मारन हारा।
है ''सुखदेव'' लिखा जिहि सुन्दर, वो मम् सद्गुरु का उपकारा ।।

जाति रु पंथ, भाषा अरु प्रान्त का, भेद मिटाय रहो इक सारा ।
छूत, अछूत न ऊँच न नीच, प्रत्येक हि मानव राम का प्यारा ।।
होय संगठित प्रेम परस्पर, तामस मेट करो उजियारा।
कह ''सुखदेव'' जगे जब भारत! गूँज उठे जग में जयकारा ।।

आतम ज्ञान से देश जगावन, ग्रन्थ का उत्तम नाम निकारा।
''सुख सागर प्रकाश'' के सब पद, सद्गुरू चरण प्रसाद है सारा ।।
वन्दन अरु अभिनन्दन है, पढ़ियो, करियो नित ज्ञान प्रचारा ।
है ''सुखदेव'' सहयोग किया जिन, बारम्बार प्रणाम हमारा ।।

शुभेच्छु :
सद्गुरू चरणारविन्द
''सुखदेव''
किशनगढ़ रेनवाल, जिला- जयपुर
दूरभाष : 9829332686

द्वितीय संस्करण के सन्दर्भ में .....
विनम्र निवेदन

संत शिरोमणि मम् गुरुदेव ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय (श्री दादू वाणी की टीका कर्ता) परम पूज्य तपस्वी भूरादास जी महाराज की कृपा एवं प्रेरणा से लिखा गया ग्रंथ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' के प्रथम संस्करण को सम्मानीय ज्ञानी गुणी, भक्त, जिज्ञासु, संत जनों एवं भजन गायकों ने बहुत ही पसंद किया है, इस कारण से प्रथम संस्करण की प्रतियां अल्पकाल में ही समाप्त हो चुकी थी। कार्यक्षेत्र की व्यस्तता एवं समयाभाव के कारण से द्वितीय संस्करण के छपने में विलंब हुआ है, इसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। परमार्थ मार्ग के पथिक, प्रेमी, भक्त, जिज्ञासुओं के हितार्थ इस पुस्तक का प्रथम अंक सुशिष्य श्री पन्नालाल जी पुत्र श्री भोलूराम जी छिछोलिया मीण्डा, (इंदौर) ने छपवा कर पावन गुरु सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त किया था अब यह द्वितीय संस्करण श्रीमान भाया जी के श्री गुरुदेव बड़े बाबा परम पूज्य रामपाल दास जी महाराज (सिद्ध संत) के आशीर्वाद से छपकर तैयार हुआ है।

साथ ही ग्रंथावलोकन करने के पश्चात अनेकों संत, विद्वज्जनों ने अपनी सम्मति, अभिमत एवं आशीर्वचन प्रदान करके हमारा मनोबल बढ़ाया है। मैं सभी महान पुरुषों को श्रद्धा से नमन करता हूं। विशेषकर अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीमद्दादू पीठाचार्य प.पू. गोपाल दास जी महाराज, अखिल भारतीय जगद्गुरु श्री निंबार्काचार्य प. पू. श्री श्याम शरण देवाचार्य जी महाराज ('श्री जी' महाराज), अग्रपीठाधीश स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, रेवासा धाम आदि महान संतों के द्वारा सहज आशीर्वचन एवं निर्मल स्नेह प्राप्त होने से हृदय का गदगद होना स्वाभाविक ही है। पुस्तक के नवीन संस्करण में एक सौ के लगभग नये भजन, सवैया, दोहे कुंडलियां, अरिल छंद, कविताएं, देश भक्ति गीत आदि जोड़े गये है। पूर्व में रही त्रुटियों का शुद्धिकरण, बढ़िया कागज, सुंदर क्लेवर, सुंदर छपाई आदि के कारण यह अंक निश्चित ही हमारे प्रेमी पाठकों को पसंद आएगा। पुस्तक की सुंदरता, शुद्धता एवं छपने तक का संपूर्ण पुरुषार्थ सुशिष्य, गुरु भक्त हृदय श्रीमान गिरधारी जी जोबनेर ने अत्यंत परिश्रम पूर्वक किया है हम उन्हें हृदय से शुभ आशीर्वाद एवं साधुवाद देते हैं।

सभी कृपालु पाठकों से विनम्र निवेदन है कि इसे ध्यान से पढ़ें, पढ़ायें एवं अधिकतम लोगों तक सुप्रचारित करके आत्म जागरण से विश्व जागरण के महाअभियान का हिस्सा बनें तथा पुस्तक में रह गई त्रुटियों को सुधारकर पढ़ें, साथ ही हमें अवगत कराने की भी कृपा करें। जिससे आगामी अंक में सुधार किया जा सके। आप सभी का सहयोग आशीर्वाद एवं स्नेह निरंतर बना रहे इसी अपेक्षा के साथ सादर सत्यराम।

''श्री सद्गुरु चरणारविन्द''
'सुखदेव'
किशनगढ़ रेनवाल, जिला- जयपुर

पूज्य गुरुदेव के चरणों में समर्पित भावांजली

श्री पन्ना लाल कुमावत

नाम रूप से रहित सच्चिदानंद स्वरूप है जिनका जिन्होंने भक्त, मुमुक्षुओं के कल्याणार्थ पवित्र भारत भूमि पर अवतरित होकर कि.रेनवाल (जयपुर,राज.) नगरी का गौरव बढ़ाया है। जो ज्ञान सागर, सुख सागर एवं प्रेम के महासागर है।आपके पूज्य पिता श्री गुल्ला राम जी कुमावत एवं पूज्य माता श्रीमती बरजीदेवी की पवित्र कोख से जन्म लेकर 48 वर्षों से निरंतर, अथक, अटल व अबाध रूप से सत्संग प्रचार, आध्यात्मिक चेतना, राष्ट्र चेतना का अखंड शंखनाद करके सुप्त समाज को जगा रहे हैं। अनंत है महिमा जिनकी, ऐसे ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्रिय गुरुदेव जो श्री सुखदेव जी महाराज के नाम से जाने जाते हैं, उनके पावन श्री चरणों में विनयता पूर्वक सादर दंडवत प्रणाम करता हूं। चौदह वर्ष की आयु में ही ब्रह्म ज्ञानी संत दादा गुरु प.पू. भूरादास जी महाराज के चरणों में दीक्षा शिक्षा ग्रहण करने के बाद से ही स्वाध्याय, सत्संग, काव्य संरचना, देश भक्ति , भजन गायन, लेखन, राष्ट्र एवं आत्म चिंतन आदि में आपकी गहरी रुचि हो गई थी। परिणाम स्वरूप गृहस्थ धर्म का निर्वहन करते हुए भी 26 वर्षों तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सदायित्व कार्य किया। परिणाम स्वरूप आप के समय में राष्ट्र कार्य करने के लिए कई विस्तारक निकले।

गौ रक्षा, धर्म रक्षा, यौवन सुरक्षा, स्वदेशी अपनाओ, कश्मीर सुरक्षा, 370 धारा हटाना आदि विषयों पर भी आपकी कवित्व शक्ति, लेखन शक्ति, वक्तृत्व शक्ति, विचार शक्ति , संगठन शक्ति आदि के द्वारा समाज में विशेष चैतन्यता का वायुमंडल बना। श्री राम जन्मभूमि मुक्तिसंग्राम में आपके क्रांतिकारी,जोशीले गीतों ने संपूर्ण हिंदू समाज के साथ विशेषकर युवा शक्ति को झकझोरित व आंदोलित करके रख दिया था। श्री राम और राष्ट्र की अस्मिता को कलंकित करने वाले बाबरी ढांचे को ढ़हाते वक्त आप भी लाखों कार सेवकों के साथ उपस्थित थे। आप द्वारा विरचित पद्य ग्रंथ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' शोषित, पीड़ित, माया के दलदल में फंसे दुर्दशा एवं दिशा विहीन समाज-राष्ट्र (विशेषकर युवा शक्ति) को उत्तम दशा व सम्यक दिशा प्रदान करता है। आप द्वारा रचित मनहर-इंदव सवैया, कुंडलियां, अरिल, दोहे, चौपाइयां, भजन, पद, कविताएं आदि एवं इनमें प्रयुक्त विभिन्न

राग-रागनियां, विभिन्न रस,अलंकार, लोकोक्तियां, मुहावरे आदि उत्तम प्रभावोत्पादकता के साथ ही काव्यात्मक विद्वत्ता का विलक्षण उदाहरण है। आप द्वारा सृजित काव्य में सहजता, सरलता, मौलिकता, प्रांजलता, धारा प्रवाहिकता आदि विशेषताएं सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह ग्रंथ ब्रह्मविद्या का शास्त्र होने के साथ ही चिज्जड़ ग्रंथि को भेदने वाला अनुपम शस्त्र भी है।यह तो आप ग्रंथ को आद्योपांत पढ़ेंगे तो ज्ञात हो ही जाएगा।
श्रीमद्दादू पीठाचार्य परम पूज्य गोपाल दास जी महाराज,रैवासा पीठाधीश्वर पूज्य राघवाचार्य जी महाराज आदि संतों एवं अनेकों विद्वज्जनों के द्वारा आप द्वारा प्रवाहित काव्य धारा के भागीरथी प्रयास को आशीर्वाद (सम्मतियां) मिलने से ग्रंथ की विश्वसनीयता, महत्ता एवं सुंदरता में चार चांद लग गए हैं। भारतवर्ष में उपस्थित सभी मत पंथानुयायियों के प्रति समादर का भाव रखते हुए भी वेदान्त अद्वैत सिद्धांत के आप सुयोग्य प्रचारक हैं।
आपका जीवन ध्येयनिष्ठा, गांभीर्यता युक्त, सरल व्यक्तित्व, सादा भोजन, सादा रहन-सहन, मधुर व्यवहार, कुशल योजक, कुशल संगठक आदि विशेषताओं से युक्तहै, साथ ही व्यक्ति निर्माण के तो आप कुशल शिल्पकार है। श्रीमद्दादू पीठ नरायणा द्वारा''श्री दादू पंथ श्री''सम्मानीय विभूषण से आप विभूषित हैं।
पूज्य दादा गुरु जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात ''राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केंद्र'' के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र चेतना, व्यक्ति निर्माण की अनेकों विधाएं आपके सानिध्य में संगठन द्वारा संचालित हैं। जिससे विशेषकर युवा वर्ग भोग विलास, स्वार्थपरता आदि से विमुख होकर परमार्थ पथ पर अग्रेसित हो रहे है।
आपके व्यक्तित्व, कृतित्व एवं नेतृत्व का आलोचक, निंदक भी समादर करते हैं। उदार चरित एवं अजातशत्रु होते हुए भी ईर्ष्या वश जो लोग आपको शत्रु मानते हैं उन सर्व के प्रति बदले की भावना के बजाय बदल देने की भावना, आत्मीयता पूर्ण व्यवहार रखना आपका स्वभाव ही रहा है। संकटों में निडर, अविचल, धैर्यशील रहकर सर्व के हितार्थ तत्काल समुचित निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता रखते है।
मेरा सौभाग्य ही है कि लगभग 30 वर्षों से आपका सानिध्य, स्नेह एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। व्यवहार्थ एवं परमार्थ दोनों ही क्षेत्रों के कार्य सिद्धि प्रदाता एवं सभी साधकों को मातृवत प्यार देकर सदैव संभाल करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पुनः अनंत कोटि प्रणाम।

सब धरती कागज करूं, कलम करूं वनराय।
सात समंद की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय।।

सद्गुरु चरणारविन्द
पन्ना लाल कुमावत
मीन्डा, इंदौर।

आशीर्वचन

संत चंद्र भूषण वेदान्ताचार्य

''सुख सागर अनुभव प्रकाश'' श्री सुखदेव जी महाराज द्वारा रचित मौलिक किन्तु आध्यात्मिक उर्जा प्रदान करने वाला ग्रंथ है। आज विश्व पटल पर दृष्टिगत है कि मानव मूल्यों का पतन निरन्तर होता जा रहा है। भ्रष्टाचारी, व्याभिचारी, कपटी, धूर्त व्यक्ति मदोन्मत व मनमाना आचरण करता हुआ देव भूमि, तपोभूमि, कर्मभूमि, मोक्षदायिनी भारत माता को लज्जित एवं असुरक्षित करने पर तुला है। मानव मन अशान्त एवं अवसाद से ग्रसित है। ऐसे समय में भटके मानव को महापुरूषों के सार गर्भित ग्रंथ एवं सत्संग ही विपथ से सुपथ पर लाने का एकमात्र साधन है।

''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' में सर्व पद्य सरसता, सरलता, माधुर्य एवं विविधता से युक्त हैं। लेखक के दोहे, कुण्डलियां, गीत, भजन, कविताएं आदि में पूर्व रचित पद्यों से उतरोत्तर श्रेष्ठता विद्यमान है। विविध छन्दों में विभिन्न रस, अलंकार, तुक, अर्थ आदि का अनुपम समावेश है पद्यों के गायन हेतु सुगमता के लिए विविध रागों एवं परम्परागत तर्जों का विवरण एवं पदों के सार गर्भित शीर्षक देने से पुस्तक की सुन्दरता में चार चाँद लग गये हैं। रचनाओं में अद्वैत प्रतिपादक ग्रन्थों की स्पष्ट झलक मिलती है।

विवेक चुड़ामणि, पंचदशी, विचार सागर श्रीमद्भगवत गीता, श्रीमद्दादूवाणी, रामायण जी, उपनिषदों एवं सन्तों के प्रेरणादायी विचार पद्यों में अनुस्युत होने से जिज्ञासुजनों का ग्रंथ के प्रति आकर्षण, हृदयंगम करने की शक्ति में उत्साह का संचार होगा। ज्ञान धारा से निरन्तर प्रवाहित इस ज्ञान सरिता में सम्पूर्ण भेद भाव की समाप्ति, गुरू महिमा, नाम की महत्ता, सत्संग महिमा, सन्त महिमा, जगत मिथ्यातत्व, प्रेम का स्वरूप एवं महत्व, आत्मानुभव, षड़लिंग, ज्ञान की सप्त भूमिका आदि मणि-माणिक्य दृष्टि गोचर होते हैं। श्रीमद्दादू पीठाचार्य परमपूज्य गोपालदास जी महाराज का वरदहस्त प्राप्त सादा जीवन, लोक संग्रही, व्यवहार

कुशल, ध्येय निष्ठ, युवा शक्ति के प्रेरणा पूंज, गम्भीर व्यक्तित्व के धनी श्री सुखदेव जी महाराज, ब्रह्मलीन सन्त पूज्य भूरादास जी महाराज के सुशिष्य है। अपनी ओजस्वी वाणी एवं लेखन के माध्यम से सुप्त जन, मन को नवचेतना प्रदान कर रहे हैं। एक कुशल कारीगर की भाँति समय-समय पर ''राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केन्द्र''द्वारा आयोजित आध्यात्मिक ज्ञान योग शिविर, सत्संग, समरसता पदयात्रा, सन्त सम्मेलन आदि के माध्यम से व्यक्ति निर्माण के पावन कार्य में नित्य निरन्तर व्यस्त रहना जिनका स्वभाव है। सर्व पाठकों के लिए यह ग्रंथ लाभकारी सिद्ध होगा इसमें कोई संदेह नहीं है ।

संत चद्र भूषण वेदान्ताचार्य अद्वैत वेदान्त आश्रम,
फूलेरा।

डॉ. अशोक कुमार शर्मा

अभिमत

कवि हृदय श्री सुखदेव जी महाराज की सरल एवं सहज काव्य रचनाएं जो जन सामान्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है। संस्कृति दर्शन, आध्यात्म, राष्ट्रचेतना, संगठन एवं महापुरूषों का परिचय काव्य के रूप में प्रस्तुत करना निश्चित रूप से सराहनीय कार्य है। पुस्तक में लेखक की मौलिकता एवं सृजनधर्मी कवित्व का परिचय मिलता है। यह पुस्तक राष्ट्र भक्त, तत्व पिपासु, किशोरों एवं युवकों के लिए विशेष प्रेरक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। प्रस्तुत पुस्तक परिवार, विद्यालय एवं अन्य संस्थाओं के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय कृति है। मैं पुस्तक की सफलता एवं रचयिता के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।
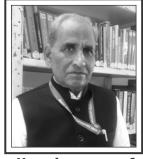
डॉ. अशोक कुमार शर्मा
''एम.एस.सी., एम.ए., एम.एड., एम.फिल, पी.एच.डी. प्राचार्य- श्री अग्रसेन स्नात्कोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्या पीठ, जामडोली, जयपुर

आशीर्वचन

प. पू. हरिराम जी महाराज

श्री सुखदेव प्रसाद संत चरणों में प्रणत एक आस्थावान युवा कवि है जिनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य राष्ट्र, समाज, धर्म संस्कृति की सेवा में अभिवृद्धि तथा प्राणी मात्र का कल्याण प्रतीत होता है। इस दृष्टि से कवि का यह प्रयास निश्चित ही प्रशंसनीय है। कवि की विद्यालयीन शिक्षा की तुलना में उनकी योग्यता कहीं अधिक प्रतीत होती है।

– परम पूज्य श्री हरिराम जी महाराज,
श्री दादू (19वे) पीठाधीश्वर नरैना धाम।

आशीर्वचन

पू. हरि बल्लभ दास जी महाराज

श्री सुखदेव प्रसाद जी द्वारा प्रस्फुटित श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश की संपूर्ण रचनाओं में अतिशयोक्ति रहित वास्तविकता भरी पड़ी है। कवि ने अपनी सहज रचनाओं में मुंह बोलता हुआ रस प्रस्तुत किया है। कहीं भी रस भंगता नहीं आने दी है। करुण रस, रौद्र रस, वीर रस, भयानक रस, तथा शांत रस का भरपूर वर्णन मिलता है, जो पाठकों को अद्भुत आनंद प्रदान करने वाला है। अध्यात्म एवं राष्ट्र चेतना हेतु यह ग्रंथ सर्व के लिए उपयोगी सिद्ध होगा

–प.पू. मंहत हरि बल्लभ दास जी महाराज
आयुर्वेद विशारद, काव्य तीर्थ बड़ा मंदिर, कि. रेनवाल, जयपुर (राज.)

आशीर्वचन

गोस्वामी रतनपुरी जी महाराज

वाह दादू का बालका, कीन्हा काम कमाल।
ज्ञान, भक्ति, वैराग्य पद, रचिया सुरत संभाल।।
जिनको देख जिज्ञासु को, होगा हर्ष अपार।
''रतनपुरी'' सत पथ मिले, सहज होय भव पार।।
दादू संत समाज में, वर्तमान कवि जान।
सुखदेवा अद्वित्य है, रतनपुरी सतमान।।
जिनकी ख्याति विश्व में, होगी भविष्य मांय।
''रतनपुरी'' इस बात में, अतिशयोक्ति नांय।।

–गोस्वामी रतनपुरी जी महाराज
निर्भय आश्रम काली डूंगरी मदनगंज किशनगढ़, जिला अजमेर (राजस्थान)।

पू. स्वामी रामसुखदास महाराज

आशीर्वचन

मानव समाज के इतिहास में 15 वीं व 16वीं शताब्दी में धार्मिक एवं राजनीतिक कट्टरता से मानव मन भयभीत, अशांत एवं संतप्त था। तब संत प्रवर श्री दादू दयाल जी महाराज ने सबके कल्याणार्थ आतम भाई एक सब, एक पेट परिवार। का उपदेश देकर मानव मात्र के हृदय में प्रेम, भाईचारा एवं सामाजिक समरसता का संदेश प्रदान किया था। आज भी मानव हताशा निराशा एवं भय युक्तजीवन जी रहा है।

श्री दादू दयाल जी महाराज की अनुभूत श्री दादू वाणी जी सहित सर्व संतो के संदेश, उपदेश को भक्त, मुमुक्षुओं तक पहुंचाने के लिये श्री दादूपंथी संत श्री भुरादास जी महाराज के सुशिष्य संत कवि श्री सुखदेव जी महाराज (किशनगढ़–रेनवाल) कर्मठता पूर्वक सतत् क्रियाशील है। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सेवाव्रत राष्ट्र चिंतन आदि विषयों पर रचित यह पद्य ग्रंथ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' का यह द्वितीय संस्करण मानव मात्र को समग्र दिशा देने में महत्ती भूमिका निभाएगा। ग्रंथ में रचित पद्य सरस, सरल एवं प्रेरणादाई होने से निःसंदेह सर्व पाठकों को सजगता एवं सहजता प्रदान करने वाले सिद्ध होंगे।

निश्चित ही इस काव्य ग्रंथ के अध्ययन से पाठकों के जीवन में स्वस्थता, स्वच्छता, शांतियुक्त, भय मुक्त एवं सुखद वायुमंडल का निर्माण होगा। श्री दादू दयाल जी महाराज इन्हें और अधिक कवित्व, वक्तृत्व एवं कृतित्वशक्ति प्रदान करें। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ सत्यराम।

श्री दादू संत साहित्य शोध संस्थान
A-1, शहर के बालाजी,
सीकर रोड, जयपुर (राज.)

स्वामी रामसुखदास
संस्थापक व संरक्षक,
श्री दादू अध्ययन प्रकोष्ठ हिंदी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान)

पंडित शंकरानंद वेदांती जी महाराज

सम्मत्ति

कृति की विशेषता उसके अर्थ गुरुता, पद लालित्य एवं विविधता है, पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है मानो लेखनी से त्रिपथगामिनी का उद्‌गम हुआ हो। शैली काव्यमयी, भावपूर्ण मार्मिक एवं सधी हुई होने से ऐसा लगता है इस मुक्त माल की मुक्ताएं बड़े युक्तियुक्त ढंग से पिरोई गई है। चौपाईयां, दोहे छंद, सवैया हमें भक्ति कालीन कवियों का स्मरण कराते हैं।

– पंडित शंकरानंद वेदांती
श्री रघुनाथ धाम निवाना जयपुर (राजस्थान)

श्री सीताराम जी महाराज

सम्मत्ति

संत कवि श्री सुखदेव प्रसाद जी महाराज द्वारा रचित ''सुख सागर अनुभव प्रकाश'' अनुपम काव्यशास्त्र एवं वेदांतानुकूल संरचना है। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि विषयों का सरलीकरण एवं प्रभावोत्पादक कवित्त, छंद दोहावली, सवैया, भजन आदि धर्म मार्ग के पथिकों का सहज ही भला करने वाले हैं।

–श्री सीताराम जी महाराज, वेदांताचार्य, वेदांत आश्रम कुणी, नागौर ।
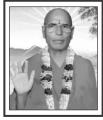
पू. नित्यानंद जी महाराज

सम्मत्ति

जैसा इनका नाम सुखदेव है वैसा ही इस पुस्तक में जिज्ञासु को परमसुख पहुंचाने वाला उपदेश नीति, धर्म, मर्यादा, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, जीव–ब्रह्म की एकता एवं वेदांत के गूढ़ रहस्य को सरलता पूर्वक (सुंदर कविता दोहे, पद, सवैया कुंडलियां चौपाइयां आदि) अनेक प्रकार से रचना करी है, जो भक्तजिज्ञासु इसको एकांत में बैठकर पढ़ेगा और मनन करेगा वह सहज ही जन्म मरण रूपी दीर्घ काल के रोग से मुक्त हो जाएगा, ऐसा मेरा निश्चय है।

–स्वामी नित्यानंद जी महाराज (श्री महात्मा वचनराम जी महाराज के अधिकारी शिष्य)
वचनाश्रम बगीची
ग्राम–मींडा जिला नागौर राजस्थान।

श्री कल्याण मल जी महाराज

सम्मत्ति

ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्रिय संत श्री भूरा दास जी महाराज के सुशिष्य श्री सुखदेव जी महाराज की यह रचना ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' अद्वैत ज्ञानार्थ अनुपम अभिकृति है। वेदांत के क्लिष्ट विषयों एवं प्रक्रियाओं को सरल एवं बोधजन्य बनाते हुए सुंदर तथ्यात्मक रूप प्रदान किया है।लेखन में ओजस्विता सहजता सरलता विविधता माधुर्यता के साथ-साथ काव्य पक्ष एवं भाव पक्ष दोनों का सुंदर समावेश होने से यह ग्रंथ विद्वज्जनों, जिज्ञासुओं आदि के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

-श्री कल्याण मल जी महाराज

सेवानिवृत्त व्याख्याता, गुड्डा साल्ट, नागौर(राज.)

श्री गिरिराज जी महाराज

अभिमत

श्री सुखदेव प्रसाद जी गुरु कृपा से आध्यात्मिक ज्ञान एवं राष्ट्रभक्ति का उत्कट भाव स्वयं में भरकर उसे व्यवहार में भी प्रकट करते रहने के साथ-साथ सर्वसाधारण समाज में भी यह सद्विचार व्यवहार में लाकर समाज का जीवन स्तर परिवार परक ही न रखकर समाज सेवा परायण, राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण होकर वे जाति भेद, प्रांत भेद और संस्थाओं के भेदों से ऊपर उठकरय एक ऐसी संगठित शक्तिखड़ी करने में लगे हैं जिससे 100 करोड़ की आबादी का यह भारत अजय, अखंड, अभंग और परम शक्ति मान बन सके।

-श्री गिरिराज जी शर्मा शास्त्री (दादा भाई) प्रबंध संपादक संस्कृत भारती, प्रकाशक ''पाथेय कण पत्रिका'' जयपुर।

स्वामी राघवाचार्य जी वेदान्ती

आशीर्वचन

कवि हृदय श्रीमान् सुखदेव जी महाराज द्वारा काव्यात्मक ग्रन्थ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' ज्ञान पिपासुओं के लिये तृप्ति एवं संतुष्टि प्रदान करने में समर्थ होगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। यह शाश्वत सत्य है कि बिना आध्यात्मिक बोध के मानव जीवन अतृप्त एवं अशांत बना रहता है। प्रस्तुत ग्रन्थ आध्यात्मिक ज्ञान एवं राष्ट्र चेतना के साथ पाठकों को नई उर्जा प्रदान करेगा। लेखक के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ-साथ कोटिशः साधुवाद

मंगलाकांक्षी
स्वामी राघवाचार्य वेदान्ती
अग्रपीठाधीश
रैवासाधाम (सीकर) राज.

आशीर्वचन

पू. अर्जुनदास जी महाराज

''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' में युवा संत कवि श्री सुखदेव जी महाराज सृजनधर्मी, कवित्व, मौलिकता, राष्ट्रीय चिन्तन आदि विशेषताओं का परिचय मिलता है। ग्रन्थावलोकन से प्रतीत होता है रचयिता ने मुक्तमाल की मुक्ताऐं बड़े युक्तियुक्त ढंग से पिरोई गई है। पद, दोहे, छन्द, सवैया आदि हमें भक्तिकालिक संत कवियों की याद दिलाते हैं। संत प्रवर दादू दयाल जी महाराज के विशेष कृपा पात्र लेखक आयु वर्ग से अधिक ज्ञानायु, अधिक प्रौढ़ता प्राप्त प्रतीत होती है। श्रद्धालु, जिज्ञासुओं के लिये पाठकों के लिये यह पुस्तक अवश्य मंगलदायक सिद्ध होगी, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। सफलता की शुभकामना एवं आशीर्वाद के साथ- सत्य राम।

महामण्डलेश्वर अर्जुनदास जी महाराज
श्रीमद्दादू द्वारा
बग्गड़, जिला-झुन्झुनूं (राज.)

सम्मत्ति

पू. भगवान दास जी महाराज

काव्य ग्रन्थ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' में अद्वैत तत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है। अद्वैत क्या है ? सुख बिन्दु ही सुख सिन्धू हैं। हम जो है सदा से हैं हम वही हो सकते हैं जो हम है ही। आप ही अपनी मंजिल हो। पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है पूर्ण के निकलने पर पूर्ण ही अवशेष रहता है, पूर्ण से पूर्ण में लीन होने पर भी पूर्ण-पूर्ण ही रहता है यही अद्वैतता है।

संत कवि सुखदेव जी महाराज द्वारा विरचित ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' में अर्थ नहीं अभिप्राय है। अर्थ तो शरीर है अभिप्राय आत्मा। अर्थ तो बुद्धि से समझाया जा सकता है। किन्तु अभिप्राय सद्गुरुओं की करुणा हृदय में उतरने से। आत्मा क्या है ? त्रिकालाबाधित जो देह जन्म के पहले से है, अब भी है और रहेगी। प्रेम क्या है ? करते है सब। समय क्या है ? सब पता है फिर भी पता नहीं ! यही है ''अभिप्राय'' जो अनुभव जन्य है उसकी ओर संकेत करता है यह ग्रन्थ। दादू दयाल जी महाराज की पंथ परम्परा में जाग्रत संतवर्ती द्वारा जो असत्य है, उसे भी बताया गया है। सुख सागर (परमात्मा) को पुकारती हुई सरिता (जिज्ञासुवृति) अनुभव प्रकाश रूप सुख सागर में लीन होकर बन्द सीमाओं से मुक्त होय सुख सागर रूप हो गई। ''स्वछन्द'' परमतत्व ही दिव्य एवं प्रभावी ''छंद'' बनकर सागर अब गागर में पुकार रहा है। राह में अटके, अंधेरे में भटके, विषय वृक्ष से लटके, चिंताओं में खटके साधकों को सद्गुरु सटके ही मार्ग दर्शन करते हैं। शिष्य द्वारा गुरु के सन्मुख होते ही पलक में ही अनंत कोटि जन्मों के कर्म कटकर दिव्य स्वरूप को प्राप्त होता है।

स्वरूप से विस्मृत जीव को शिवत्व की स्मृति दिलाना ही संत व सद्ग्रंथों का प्रयोजन है। लेखक पर सद्गुरु एवं संत प्रवर दादूदयाल जी महाराज की महती करूणा अनुकम्पा देखकर, वर्तमान युग के ऐसे रहस्यमयी विद्वानों का ऋणी हूँ मैं तो। वेदान्त का मुख्य अंतरंग साधन षडलिंग, पंच कोश विवेक, त्रिय अवस्था भेद आदि पढ़कर ज्ञान पिपासु अवश्य ही लाभान्वित होंगे। गुरु कृपा के साथ यही है शास्त्र कृपा। सत्यराम।

''श्री दादू पंथ'' से विभूषित
संत भगवान दास
वेदान्त आचार्य सत्संग मण्डल, श्री माधोपुर

डॉक्टर मोहित शर्मा

अभिमत

भगवत गीता में कहा गया है, ''नहि मनुष्यात् श्रेष्ठतम हि किंचित'' अर्थात मनुष्य से श्रेष्ठ इस संसार में कुछ भी नहीं है। साहित्य, संगीत एवं विभिन्न कलाओं की अभिव्यक्ति इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। श्री सुखदेव जी महाराज द्वारा रचित मौलिक ग्रंथ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' में वर्णित रचनायें भक्तिमार्ग, ज्ञान मार्ग एवं अद्वैत वेदांत दर्शन के साथ सर्व के लिए सम्यक दिशा निर्देश प्रदान करती है।

शाश्वत शांति के लिए दो प्रकार की विचारधाराएं काम कर रही है एक आध्यात्मिक ज्ञान और एक विज्ञान। विज्ञान से हम पदार्थों को समझते हैं जबकि आध्यात्मिक ज्ञान से हम समझने वाले को समझते हैं अर्थात जानने वाले(आत्म स्वरूप) को जानते हैं।

सर्वोपरि वेदांत सिद्धांत ''ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या'' को जगतगुरु शंकराचार्य जी, स्वामी रामतीर्थ, श्री दादू जी महाराज, श्री कबीर दास जी महाराज, सुंदर दास जी महाराज,अचल राम जी महाराज आदि अद्वैताचार्यों ने मुमुक्षुओं की शाश्वत शांति के लिए सहजता से प्रस्तुत किया। प्रस्तुत पद्य ग्रन्थ इसी दिशा में सर्व भेदों को मिटा कर सरलता किंतु गूढ़ रहस्यों के साथ में अभेद ब्रह्म स्वरूप का बोध कराने में सहायक प्रतीत होते है।

आत्म अबोध की दशा ही सर्व दुःख,आफत एवं भय की जननी है,तथा आत्मबोध ही परम शांति का आधार है। जीव ब्रह्म के अभेद ज्ञान से ही जीवन सरस,सरल और सहज बनता है। इस दिशा में ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' का यह द्वितीय संस्करण सर्व साधकों के लिए परम उपयोगी सिद्ध होगा,इसमें कोई संशय नहीं है। लेखक एवं पाठकों के प्रति उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

डॉक्टर मोहित शर्मा
सहायक आचार्य,कार्डियक सर्जरी विभाग, सवाई मानसिंह चिकित्सा अस्तपताल, जयपुर
एवं आर्ट ऑफ लिविंग योग प्रशिक्षक।

श्री नन्द किशोर पांडेय

अभिमत

संत कवि श्री सुखदेव जी महाराज श्री दादू वाणी जी, अद्वैत वेदांत के साथ-साथ सनातन संस्कृति के सुप्रचारक हैं। इनका स्वरचित पद्य ग्रंथ ''श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश'' का अवलोकन करने से ज्ञात हुआ कि इस सुख सागर ग्रंथ में गुरु भक्ति, भगवद् भक्ति, राष्ट्रभक्ति, स्वदेशी जागरण, गोरक्षा, संत महिमा, सत्संग महिमा, अद्वैत ब्रह्म ज्ञान की महत्ता बताने वाले दोहे, कुंडलियां, मनहर सवैया, इंदव सवैया, पद, भजन, कविताएं आदि अनेकों मणि-माणिक्य समाहित है। जो भी जिज्ञासु स्वरूपी हंस इनका अध्ययन एवं मनन आचार्यों के सानिध्य में करेंगे वे निश्चित ही जीवन मुक्त, आत्मतृप्त एवं सार्वजनिक जीवन में सेवा भाव को प्राप्त होंगे। भारतीय जीवन मूल्यों की अभिवृद्धि एवं संरक्षण की दृष्टि से यह ग्रंथ उपयोगी होने के साथ-साथ विविध राग-रागनियों की उपस्थिति से संगीतकार व भजन गायकों के लिए भी रुचिकर एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। आध्यात्मिक विद्या के साथ ही गायन व काव्य क्षेत्र में विविध रस, अलंकार, लोकोक्तियां, मुहावरों आदि से युक्त इनकी प्रभावी काव्य सृजन की कला एवं कुशलता प्रशंसनीय है। घोर अज्ञान अंधकार में भटकते मानव को सम्यक दिशा एवं उत्तम दशा प्राप्ति के लिए परम पिता प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि इनकी लेखनी निरंतर चलती रहे। लेखक को हार्दिक बधाई के साथ सादर सत्यराम।

भवदीय

नंद किशोर पांडेय
अधिष्ठाता कला संकाय तथा शोध निदेशक
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान)

पूज्य श्री गुल्लाराम जी

परम श्रद्धेय माता-पिता
के चरण कमलों में
सादर समर्पित

श्रीमती बरजी देवी

समर्पण

मात-पिता श्री आपको, वन्दन बारम्बार ।
भेंट करा गुरुदेव से, जीवन दिया सुधार।।
जीवन दिया सुधार, सदा शुभ शिक्षा दीन्ही।
मैं बालक नादान, नहीं कुछ सेवा कीन्ही ।।
बातें कई बिसार दी, दिल धोखा दिन रात।
हुँ दोषी ''सुखदेव'' मैं, आप भले पितु-मात।।

हाथ जोरि विनती करूँ, पद रज गण में लेट।
प्रेम पुष्प अर्पित करूँ, तव चरणों में भेंट।।
तव चरणों में भेंट, मिला जो ज्ञान का दर्पण।
करूँ आपका आपको, लघु ग्रन्थ समर्पण।।
मात-पिता गुरुदेव की, कृपा रही दिन रात।
''सुखदेवा'' लो हाथ में, ग्रन्थ सहित मम हाथ।।

मात पिताजी क्षमा करो, भूलें ज्ञात अज्ञात।
दुःख देवा के आपने, कष्ट सहे दिन रात।।
कष्ट सहे दिन रात, पालना मेरी कीन्ही।
पढ़ा लिखाकर मोक्ष हेतु, सतसंगत दीन्ही।।
ऋणी आपका, आपकी महिमा कही न जात।
''सुखदेवा'' मिलने नहीं, अब तुम से पितु मात।।

अनुक्रमणिका

श्रद्धालु पाठकों के लिए ज्ञातव्य

श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश (प्रथम संस्करण प्रकाशन वर्ष, मार्च 2013) के पद **''देश न बदलो वेश न बदलो''** पृष्ठ क्रमांक-162, **''साधो भाई षट मुक्ति हम जानी''** पृष्ठ क्रमांक184, **''सत्संग बेचारे जीव को शिव रूप पलक में कर दे''** पृष्ठ क्रमांक- 60, **''मेरे सत्संग मन भावे रे''** पृष्ठ क्रमांक- 58, **''सत्संग से प्यारे प्रेमी परम सुख पाय''**, पृष्ठ क्रमांक- 60 **''सतसंगत में आकर के सद्गुरु शरण में जाकर के''** पृष्ठ क्रमांक- 62 इत्यादि को श्रीप्रकाशानंद जी महाराज, शिवोहम आश्रम, हमजापुर मथुरा) ने भजन के अंत में सुखदेव की जगह प्रकाशानंद यानि अपने नाम की छाप लगाकर अन्य पुस्तक में छपवा दिये है। सोशल मीडिया के माध्यम से जब हमें ज्ञात हुआ तो उनसे बातचीत की गई। उन्होंने अपनी गलती स्वीकार करते हुए क्षमा याचना तो की है किंतु उक्त पुस्तक उपलब्ध कराने के बारे में कतराते रहे हैं। ओर भी कई भजन तोड़े मरोड़े गए होंगें, ज्ञात होने पर ही जानकारी दी जाएगी।

श्री सुख सागर अनुभव प्रकाश में प्रकाशित पदों की प्रमाणिकता रहे तथा गड़बड़ी करने वाले लोगों से सावधान रहें। इसके लिए यह जानकारी देना आवश्यक समझा गया, सादर सत्यराम।

संत चरणारविंद
''सुखदेव''
किशनगढ़-रेनवाल जयपुर, राजस्थान।

मंगलाचरण एवं उसकी महत्ता

मंगलमय निज आत्मा, मंगल हरि को रूप।
मंगल किये मंगल मिले, निज आनन्द स्वरूप ।। 1।।

मंगलमय परमात्मा, मंगल प्रभु को नाम ।
'सुखदेवा' मंगल किये, होय सुमंगल काम ।।2।।

मंगलाचरण के करण से, होय अमंगल दूर ।
'सुखदेवा' मंगल किये, मौज मिले भरपूर ।।3।।

करिये जन मंगलाचरण, तन, मन, वचन सुप्रीत।
'सुखदेवा' बहु काल से, यहुँ संतन की रीत ।।4।।

ब्रह्म मंगल, मंगल गुरु, मंगलमय जगदीश।
'सुखदेवा' मंगलकरण, तोय नवाऊँ शीश ।। 5।।

मंगल कर मांगल्यकरण, गुरु ईशन के ईश।
'सुखदेवा' मंगलाचरण, शरण राख जगदीश ।। 6।।

ब्रह्म, गुरु सब सन्त को, बारम्बार प्रणाम।
उर बसियो सुखदेव के, सफल करो सब काम ।।7।।

बार - बार वन्दन करूँ, दादू दीन दयाल।
विघ्न हरो सुखदेव के, दारुण दुःख भय टाल ।।8।।

दादू दीन दयाल प्रभु, दया करो बख्शीश।
दद अक्षर को टारिये, चरण नवाऊँ शीश ।।9 ।।

मैं दादू का बालका, घट दादू का नाम।
दुविधा दुर्मति दूर कर, देहु चरण विश्राम ।।10।।

मैं सुत दादू आपका, दुविधा दुःख भय टारि ।
दुस्तर भव जल तारिये, सुनकर करुण पुकारि ।।11 ।।

पद प्रीति पद-पद मिले, पद - पद में पद धारि ।
प्रभु पद रज उर धारि के, रचियहु पद, पद सारि ।।12 ।।

निर्गुण वस्तु निर्देश मंगलाचरण

राग-यमन तर्ज- गाइये गणपति जग वन्दन

सुमिर प्रथम गणपति गणनायक, विघ्न हरण शुभ मंगल दायक।।टेर ।।
वन्दन किये मिटे भव बंधन, रिद्ध, सिद्ध, सुध, बुध देत विनायक।। 1 ।।
सुमिर प्रथम ....
गणपति सब जीवन के स्वामी, हर संकट में होत सहायक।। 2 ।।
सुमिर प्रथम ....
सुर नर असुर संत जन सुमिरे, श्रद्धा से सेवें बन पायक ।। 3 ।।
सुमिर प्रथम ....
महिमा पूर्ण गाये कोई ऐसा, होय न हुआ न है कोई गायक ।। 4।।
सुमिर प्रथम ....
नमन् करे ''सुखदेव''निरन्तर, है अर्पित धन, मन, वच, कायक।। 5।।
सुमिर प्रथम ....

राग-यमन

जय गण ईश अटल अविनाशी, आनन्द रूप है, स्वयं प्रकाशी ।।टेर ।।
निर्गुण, एक, विमल, सम चेतन, स्थिर अचल सर्व का साक्षी ।।1 ।।
जय गण ईश ....
नित्य, निरन्तर, सब जग व्यापक, सर्वाधार सर्व सुख राशि ।।2 ।।
जय गण ईश ....
गणपति जैसा देव न कोई, घट-घट अरु कण-कण के वासी ।।3 ।।
जय गण ईश ....
कर सतसंग गणेश रूप लख, हो आनन्द कटे चौरासी ।। 4 ।।
जय गण ईश ....
भज ''सुखदेव''गणेश निरन्तर, सुख दुःख परे परम सुख पासी ।।5 ।।

पद

(निर्गुण वस्तु निर्देश मंगलाचरण)

राम– भीम पलासी

सुमंगल हो जिससे सबका, स्वरुप स्व–मंगल गाय रहे।
सब सन्त निरन्तर भजन करे, पुलकित हो शीश नवाय रहे ।। टैर ।।

सर्वत्र, सर्वगत, सर्व समय, स्वरुप अनूप लखा जिसने।
भय विघ्न क्लेश नहीं शेष रहे, अवशेष निजातम पाय रहे ।। 1 ।।

यमराज, धनेश, गणेश, वरुण, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, रवि ।
निज आतम अब्धि की लहरें सभी, निश्चय कर नित हर्षाय रहे ।।2 ।।

सर्वज्ञ कृपालु ईश्वर का, कई सन्त मुनि जन ध्यान धरे।
रज्जु सर्प जिहि कल्पित मुझमें, निज अनुभव करि मुस्काय रहे ।।3 ।।

जिस ब्रह्म का बोध जिज्ञासु चहे, पुनि जाय परे सद्गुरु पग में।
''सुखदेव''सोहम, हम सो ब्रह्म है, निज आनन्द बीच समाय रहे ।। 4।।

भजन, तर्ज– म्हारो दीनानाथ दयाल

दाता दीन के दयाला आये, दीन के दरबार।
आनन्द आज चहुं दिश छाया, हो रहा मंगला चार ।। टेर।।

धन्य नगर, धन भाग हमारा, धन्य सकल परिवार।
आये आज राम के प्यारे, बहुत किया उपकार ।। 1।।

शुभ दिन आज महोत्सव भारी, सब खुश है नर नार।
चन्दन, पुष्प सुगन्धित महके, हो रही जय जयकार ।।2 ।।

उमड़ पड़े घनश्याम, अमीरस बरसे मूसलधार।
स्वाती बूंद चखे कोई चातक, पावे चैन अपार ।। 3।।

याद करे ''सुखदेव'' दया कर, आते है हर बार ।
वन्दन कोटि करुँ, अभिनन्दन, चरण कमल बलिहार ।।4।।

भजन

राग – यमन, तर्ज – गुरुदेव मेरी नैया

कब से इन्तजार करें, सद्‌गुरु कब आयेंगे।
हम करुण पुकार करें, दर्शन कब पायेंगे ।।टेर ।।

प्रतिव्रत पतिदेव बिना, दुःखी चातक मेह बिना।
हम भी गुरुदेव बिना, तड़फत मर जायेंगे ।। 1।।

तेरे प्रेम में पागल हम, अपयश भी मिले क्या गम।
प्रिय दर्शन कर हरदम, मन में हर्षायेंगे ।। 2।।

दिल प्रेम है बैर नहीं, है देर अँधेर नहीं।
अपने है गैर नहीं, सीने से लगायेंगे।। 3।।

बैचेन न चैन परे, नयनों में नीर झरे।
'सुखदेव' की पीर हरे, खुशियाँ संग लायेंगे।। 4।।

भजन

राग– भीम पलासी

हे गुरुवर ! तुम आते रहिये।

वत्सलमयी माँ मैं सुत मेरा, रिश्ता मधुर निभाते रहिये।। टैर ।।

जीवन सौंप दिया जब तुमको, लेकर गोद खिलाते रहिये ।। 1 ।।

मात मदालसा के सम मुझको, दे निज प्यार झुलाते रहिये ।। 2 ।।

जब जब भूल बने बालक से, करहुँ कृपा समझाते रहिये ।। 3 ।।

बारम्बार तुम्हें आना है, या फिर विघ्न हटाते रहिये ।। 4 ।।

बंधन मुक्त करो मुझको फिर, जब जी चाहे बुलाते रहिये ।। 5।।

दया दृष्टि 'सुखदेव' रखो नित, दिल में प्रेम बढ़ाते रहिये ।। 6।।

भजन

तर्ज– दीन दयाल दया करके..........

श्री सद्गुरुदेव पधारो जी, म्हारो जीवन आय सुधारो जी ।।
म्हारो जीवन आय सुधारो जी, दुखिया के कारज सारो जी।।टेर ।।
मैं जग से हताश हुआ जब से, तुमसे मेरी प्रीत भई तब से ।
रो–रो कर नयन थके कब से, मुझ दीन को नाथ स्वीकारो जी ।।1 ।।
धन, दौलत, यश की चाह नहीं, मुझे मृत्यु की परवाह नहीं।
मुक्ति की पूछूँ राह नहीं, हो आप मिले सुख भारो जी ।। 2 ।।
जग में इक नाथ तू ही मेरा, अवशेष सभी कुछ है तेरा।
'सुखदेव' है चरण कमल चेरा, म्हारे शीश पे पंजो धारो जी ।।3।।

भजन, तर्ज– गुरुदेव मेरी नैया..........

गुरुदेव दयाल मेरे मेरी अर्ज सुनों आके
ये प्रेम भरे नैना, तव दर्शन को ताके ।। टेर।।
मैं तुमसे विमुख हुआ, दुःख जनम जनम पाया।
तुम विघ्न विनाशक हो, फिर बैठे कहाँ जाके।। 1।।
तुम अधम उद्धारक हो , मैं महा अधामी जग में।
जब नित्य सम्बंध अपना, फिर क्यों ना अब झांके ।। 2।।
तुम नाथ अनाथ हूँ मैं, तुम राम हराम हूँ मैं।
मैं दीन, दयाल है तू, फिर भेद कहाँ बाके।। 3।।
जो दण्ड मुझे दोगे, स्वीकार सभी मुझको।
तुम क्रोध या प्रेम करो, हो चैन तुम्हें पाके ।। 4।।
कमबख्त रु भक्तों के, अहेतु कृपालु हो।
अब और कहुँ क्या मैं, ''सुखादेव'' थका गाके ।। 5।।

भजन

विरह व्यथा

तर्ज–बीरा जाइजे जाइजे सत री संगत रे मांय

आवो आवो जी म्हारा सतगुरु दीन दयाल,
थारे बिन भव दुःख कौन हरे ।। टेर ।।
लागी–लागी रे म्हा रे दिल बिरह की आग,
दर्शन बिन पल नहीं चैन प–रे ।। 1 ।।
आवो आवो जी......................

सूख्यो–सूख्यो रे म्हारे बिरह अग्नि सू नीर
नैणा नहीं मोती एक झ–रे ।। 2 ।।
आवो आवो जी......................

गरजे–गरजे जी म्हारे हरदम सिर पर काल
म्हारी छाती धड़क प्राण ड–रे ।। 3 ।।
आवो आवो जी......................

जाण्यो–जाण्यो म्हे, ओ स्वारथ को संसार
दूजा ने मा–रे आप म–रे ।। 4 ।।
आवो आवो जी......................

म्हारा सद्गुरु जी, सुख सागर सुख का धाम
भैट्या बिन संकट कौन ह–रे ।। 5 ।।
आवो आवो जी......................

भावे–भाव ना म–ने, अन्न, जल उड़गी नींद
देह दुर्बल तीन्यूं ताप ज–रे ।। 6 ।।
आवो आवो जी......................

तरसे–तरसे जी दर्शन हित जन ''सुखदेव''
करूणा कर आओ अर्ज क–रे ।। 7 ।।
आवो आवो जी......................

भजन

गुरुदेव के आगमन से पूर्व की स्थिति

तर्ज-पिया मिलन के काज आज जोगन बन जाऊँगी

सखी आयेंगे भगवान, आज मेरी अखियाँ फड़क ये।
मैं बड़भागिन, शुभ दिन है, मिलस्यूं बैधड़क ये ।।टैर।।
शकुन भये शुभ हे री सखी, सुन फेर-के तड़क ये।
बेसब्री सूं देख रही, छत पर चढ़-चढ़के ये ।। 1।।
सखी आयेंगे........................
सूजरिया है नैन देख, पत्तियाँ पढ़ - पढ़ के ये ।
बीते पल-पल त्यूं दिल म, बिरह अग्नि भड़-के ये ।।2।।
सखी आयेंगे........................
चन्दन दीप कपूर लई, थाली में सजके ये।
मिष्ठ पदारथ धर्‍या रसोई, देखो बड़-के ये ।। 3।।
सखी आयेंगे........................
नैनन नीर बहे ज्यूं आये, मेघ उमड़ के ये।
बिन दर्शन नहीं चैन परे, ये पल-पल रड़-के ये ।।4।।
सखी आयेंगे........................
रोम-रोम रोमान्च भयो, बिजल्याँ सी कड़के ये।
''सुखदेवा'' मैं नमन करूँ, गुरू चरणा पड़के ये ।।5।।
सखी आयेंगे........................

भजन

तर्ज–गुरुदाता मैंने अवगुण बहुत किया

गुरुदाता बिना कौन संभाले मेरा हाल ।। टेर ।।

झूँठे जगत की आश न मुझको, आप बिना बेहाल ।। 1।।

मैं भव रोगी वैद्य गुरु सा, दे औषधि दुःख टाल ।। 2।।

फँस रहा मैं प्रभु जगत जाल में, सिर पर गरजे काल ।। 3।।

अण्डों को कछुवी पाले त्यों, करदो नजर निहाल ।। 4।।

प्रभु बिन भक्त, गुरु बिन सेवक, रहे न माँ बिन लाल ।।5।।

है 'सुखदेव' दुःखी बिन तेरे, आन मिलो तत्काल ।। 6।।

भजन

तर्ज– दीन दयाल दया करके।

हे भगवन् ! आन मिलो हमसे, हम बालक करुण पुकार करें।। टेर ।।

हम बेगि सवेरे उठकर के, सेवा सुमिरन में जुट करके।
तेरे चरणन् मे नित झुक करके, करें वन्दन नाथ स्वीकार करें।। 1।।

अँधे, लूले, लंगड़े, बहरे, जैसे भी हैं प्रभु हैं तेरे।
दर्शन दो आय प्रभु मेरे, हम भक्तों का उद्धार करें।। 2।।

सबसे हिल मिलकर रहते हैं, हँसते–हँसते दुःख सहते हैं।
हैं व्याकुल सच–सच कहते हैं, तेरे मिलने का इन्तजार करें।। 3।।

सुन विनय चले नहीं आवोगे, यदि और हमें तड़पावोगे।
'सुखदेव' हमें नहीं पावोगे, आकर के बेगि सँभार करें ।। 4।।

सद्गुरु केवट

हे गुरुदेव दयालु मुझे भव से पार उतारो।
जन्म जन्म का दुखियारा हूँ संकट सकल निवारो।। टैर।।

पापी खल तिर गये दया से, मेरा भी अब ध्यान है रखना।
ना भक्ति ना ज्ञान है मुझमें, तव चरणों की शरण में रखना।।
ब्रह्म स्वरुपा अद्भुत रूपा, जीवन मेरा सँवारो।। 1।।

कोटि जन्म की भूल पड़ी है, मोह माया ने आकर घेरा।
तेरे बिना अब कौन जगत में, दुःखड़ा दूर करेगा मेरा।।
फँस गई बीच भँवर में नैया, बैगी दया कर तारो।। 2।।

ज्ञान की ज्योति जलाकर के प्रभो, जीवन को आलोकित कर दो।
घट-अज्ञान का तमस मिटाकर, सच्चा प्यार हृदय में भर दो।।
जन "सुखदेव" पुकारे निशदिन, आकर बेगि संभारो।। 3।।

नमस्कार मंगलाचरण

राग- यमन

नमोः नमोः गुरु ब्रह्म अनूपम, विघ्न हरण परमानन्द रुपम् ।। टेर।।

सृष्टि प्रकट स्थित लय होवे, निर्विकार, नित, सत्य स्वरुपम ।। 1।।

ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय नहीं तुम बिन, द्रष्टा न दर्शन, दृश्य त्रिपूटम।। 2।।

जिमी कर्ता, कारण, क्रिया भासे, सर्वाधार आप अति गूपम ।। 3।।

देवी, देव, जीव, जग, ईश्वर, हो 'सुखदेव' सर्व के भूपम ।। 4।।

भजन

भक्ति दो दाता सद्गुरु पाँवन की

भक्ति दो दाता सद्गुरु पाँवन की ।। टैर ।।

मान, प्रतिष्ठा, पद, यश मुक्ति, चाह न स्वर्ग सिधावन की ।। 1।।

ग्राम, महल, धन रिजक, खजाना, कील न संग में जावन की ।।2।।

पद वन्दन अभिमान विनाशे, प्रेम सुधा बरसावन की ।। 3।।

नयन भरे चरणन् को ताके, झड़ी लगी ज्यों सावन की ।। 4।।

विरह वेदना में मन डूबा, चाह न गान बजावन की ।। 5।।

तीर्थराज आश करे जिनकी, वो ही मेरे मन भावन की ।। 6।।

दास अपावन पाँव है पावन, क्यों फिर देर लगावन की ।। 7।।

''सुखदेवा'' वन्दे गुरु चरण्न और कछु नहीं चावन की ।। 8।।

भजन

राग- गजल

कोई मुझे संत ना समझे, प्रभू पावन का पायक हूँ।
हकीकत साफ कहता हूँ, चरण की धूलि लायक हूँ।। टेर।।

संत सिरमौर है गुरुवर, वो ही है ईश्वर के ईश्वर।
सकल संतों का मैं अनुचर, बात किस किस से जाय कहूँ।

सदा प्रभु प्रेम का प्यासा, लगी गुरुदेव से आशा।
वो ही है सन्त मैं दासा, गुरु महिमा का गायक हूँ।

कवि, अनुभवी नहीं ज्ञानी, कई जन्मों का अभिमानी।
किसी से है नहीं छानी, महा पतितों का नायक हूँ।।

दया अरु प्रेम के सागर, भरे गुरु ज्ञान से गागर।
कहे ''सुखदेव'' यह गाकर, सदा गुण ज्ञान ग्राहक हूँ।।

भजन

गुरु चरणों में परमानन्द की अनुभूति

तर्ज–सद्गुरु आपकी अटरिया चढ़.....................

सद्गुरु आप के चरणों में गिर मगन भई ।। टैर।।

आप ही मात – पिता अरु भ्राता, पार ब्रह्म भगवान।
हाथ धरा तब से भक्ति की, अगन भई ।। 1।।
सद्गुरु...............

किया विषय रस पान, जान को मिला नहीं विश्राम।
पी चरणामृत हुई छकाछक, लगन भई ।। 2।।
सद्गुरु...............

तन–तनकर मारे बहु ताने, निन्दा करे गँवार।
बिन भगती जगती के संग, मैं ठगन भई ।। 3।।
सद्गुरु...............

तव चरणों की भई दिवानी, दीन्हा जगत बिसार।
साँची प्रीत प्रभु की, दुनियाँ नगन[1] भई ।। 4।।
सद्गुरु...............

दीन दयाल दया के सागर, दीन्हा शब्द विचार।
हर दम चिन्तत–चिन्तत, सुरतां गगन गई ।। 5।।
सद्गुरु...............

पद पंकज पूजूँ धर ध्याना, जीवन है बलिहार।
"सुखदेवा" भगती में वृति, सघन भई ।। 6।।
सद्गुरु...............

नगन[1] – नगन्य

भजन

करूण प्रकार

तर्ज– हे दीन दयाल दया करके......

श्री सद्गुरु दीन दयाल प्रभो ! तुम ही इक नाथ हमारे हो।
भव डूबत जीवन नैया के तुम ही इक खेवनहारे हो ।। टेर।।

श्री सद्गुरु दीन ....

ब्रह्मा, हरि, हर, परब्रह्म तू ही, सब दीनन के रखवारे हो।
तुमको तज और मैं जाऊँ कहाँ, जीवन तुम पर बलिहारे हो ।। 1।।

श्री सद्गुरु दीन ....

कोई सद्गुरु भक्ति न ज्ञान मुझे, नहीं पूजा विधि का ध्यान मुझे।
मैं कैसे रिझाऊँ महान् तुझे, तुम सबके जानन हारे हो ।। 2।।

श्री सद्गुरु दीन ....

तेरे प्रेम में पागल मतवारे, अब आन खड़े तेरे द्वारे हो।
स्वीकार भले धिक्कार मुझे, शरणागत अर्ज गुजारे हो ।। 3।।

श्री सद्गुरु दीन ....

मेरी तो नाथ यही फर्जी, दोऊ कर जोड़ करूँ अर्जी।
अब देख न देख तेरी मर्जी, 'सुखदेव' की आँख के तारे हो ।।4।।

श्री सद्गुरु दीन ....

भजन

मन भावन गुरुदेव

राग– मारवाड़ी

म्हारे गुरुदेव मन भावे सा।

बिन स्वारथ, बिन सेवा के सब कष्ट मिटावे सा ।। टैर।।

निर्मल ज्ञान, प्रेम है निर्मल, निर्मल, जाके नैना।

निर्मल तन, मन, निर्मल जीवन, निर्मल जाके बैना।

सतसंग करि–करि आनन्द आवे सा ।। 1।।

बिन स्वारथ..........

करुणा, प्रेम, दया के सागर, निलोर्भी, निर्मोही।

ब्रह्म निरंजन, सब दुःख भंजन आप समान न कोई।।

सत, चित्त, आनन्द रूप लखावे सा ।। 2।।

बिन स्वारथ..........

आप ही राम, सदा शिव, ब्रह्मा, आप ही कृष्ण मुरारी।

आप ही देवी, देव गुरुवर, पार ब्रह्म अवतारी।।

जग में सूता जीव जगावे सा ।। 3।।

बिन स्वारथ..........

कह ''सुखदेव'' गुरु करूणाकर, काग से हंस बनावे।

सोहं मोती खाय निरन्तर, सुख सागर में नहावे।

दाता आवागमन नशावे सा ।। 4।।

बिन स्वारथ..........

गुरु महिमा

तर्ज– गाइये गणपति जग वन्दन

जय गुरुदेव परम उपकारी, बिन स्वारथ भव बंधन टारी ।।टेर।।

हो निर्लेप सर्व जग व्यापक, निराकार, निरगुण, अविकारी ।।1।।

प्रेम भाव वश रुप सगुण धर, जिज्ञासुन को लेत उबारी ।।2।।

श्रद्धारत, तत्पर, संयमी जन, निश्चित ही पावे सुख भारी ।।3।।

जन''सुखदेव'' करे नित वंदन, चरण कमल पर जीवन वारी ।।4।।

भजन – गुरु वन्दना

सद्गुरु तेरे चरणों को, हम छोड़ कहाँ जाये ।
संसार ने ठुकराया, प्रभु आप न ठुकरायें ।। टेर।।

तेरे नाम पे नाथ हुये, बदनाम सारे जग में।
परवाह नहीं किन्चित, चाहे प्राण निकल जायें ।। 1।।

जैसा हूँ भला या बुरा, दरबार में हाजिर हूँ।
हर बार जो भूल बनी, इस बार न बन पाये ।। 2।।

मेरा दर्द नहीं जाने, बेदर्द जगत सारा।
हमदर्द तू ही मेरा, फिर और क्यों तड़पाये ।। 3।।

गिद्ध, गणिका, अजामिल से, हुये धन्य दया पाकर।
तेरे प्रेम के सागर में, ''सुखदेव'' भी मिल जाये ।।4।।

भजन

राग– मारवाड़ी

तर्ज– आवो आवो जी म्हारा सतगुरु.....

लागी लागी रे म्हारी सतगुरुजी से प्रीत
तोड़ेड़ी कोनी टूटे रे ।।टैर।।

रूठे रूठे चाहे सांवरिया संसार,
सत्गुरुसा नाहीं रूठे रे ।। 1।।

रूठे रूठे भाई बहिना मायर बाप,
सम्बन्ध सारे झूँठे रे।। लागी लागी ... ।। 2।।

दुनिया बदनामी करे तो होवे नाम,
तब निगुरा छाती कूटे रे।। लागी लागी ... ।।3।।

भूल्या चाहूँ त्यों त्यों ज्यादा आवे याद,
नैणा में पाणी फूटे रे।। लागी लागी ... ।।4।।

म्हारे सत्गुरुसा की होवे ज्यां पर मेहर,
चोरासी बांकी छूटे रे।। लागी लागी ... ।। 5।।

जग में जीवन की बतावे सांची सैन,
समझे तो मौजां लूटे रे।। लागी लागी ... ।।6।।

मिलिया मिलिया रे सुखसागर में ''सुखदेव'',
आनन्द की लहरां उठे रै।। लागी लागी..... ।।7।।

करुणानिधि करुण पुकार सुनो

राम-भीम पलासी, भजन (प्रश्न) ताल - कहरवा

तर्ज- दीन दयाल दया करके.................

करुणानिधि करुण पुकार सुनो, करुणा कर मम दुःख हर देना।
घट जनम, जनम का अन्धियारा, झट ज्ञान उजारा कर देना ।। टैर।।

यह काम क्रोध, भय, शोक, मोह, शत्रु दल दलन करो पल में।
भयभीत सदा निर्भय कर दो, हे दयाल दया का वर देना ।। 1।।

है कौन ज्ञान का अधिकारी, भव बन्ध किसे? किससे मुक्ति।
मुक्ति की सरल बता युक्ति, प्रभु प्रश्नों के उत्तर देना।। 2।।

''मैं'' कौन हूँ किसका, कौन मेरा, कितनी देह, कितने कोश, प्राण?
ब्रह्मनिष्ठ ज्ञान के महासागर, गागर में सागर भर देना ।। 3 ।।

है कौन जीव, जग, ईश्वर है, मृत्यु और जनम कहो किसका?
''सुखदेव'' अवस्था, काल किते, ब्रह्मविद्या अपरा-पर देना ।।4 ।।

भजन, तर्ज- मैं अरज करूं गुरु थाने

म्हारी अरज सुनो गुरु दाता, रहूँ चरण कमल संग राता।
रहूं चरण कमल संग राता, कोई और नहीं मन भाता ।। टैर।।

कई देवी देव मनाया, पढ़ ग्रंथ मरम नहीं पाया।
पढ़ ग्रंथ मरम नहीं पाया, यम डर से प्राण घबराता ।।1।।

कई जन्म-जन्म भटकाया, अब शरण तिहारी आया।
अब शरण तिहारी आया, हिय ज्ञान बिना दुख पाता ।।2।।

मैं हूं प्रभु अति अज्ञानी, करि दया कहो ब्रह्म वाणी।
करि दया कहो ब्रह्म वाणी, मैं और कछु नहीं चाहता ।।3।।

''सुखदेव'' मेहर फरमाओ, मेरे संशय सकल मिटाओ।
मेरे संशय सकल मिटाओ, तब होय हृदय कुशलाता ।।4।।

भजन

तर्ज – गुरु दाता मैने अवगुण बहुत किया

गुरु दाता बिना कैसे मिटे भ्रमज्ञान ।। टेर।।

कोटि सितारे उगे गगन में, अंधियारा न नशान ।। 1।।

सूरज चांद उगे जब नभ में, होय तमस की हान ।। 2।।

अनगिन चन्द्र, सूर उगि आवे, जाय न घट का अज्ञान ।। 3।।

ज्ञान ही से अज्ञान विनाशे, गुरु बिन होय न ज्ञान ।। 4।।

कोटि उपाये करे गुरु बेमुख, हुआ न होय कल्याण ।। 5।।

हो ''सुखदेव'' ज्ञान से मुक्ति, संत ग्रन्थ प्रमाण ।।6।।

भजन

तर्ज– गुरु दाता मैंने अवगुण बहुत किया

गुरु दाता बिना कौन हरे मेरी पीर ।। टेर।।

जीवन जहाज गरे सागर में, छोड़ चला मन धीर ।। 1।।

बीच भँवर में आकर अटकी, निकट करो भव तीर ।। 2।।

जहाज का पंछी उड़ कहाँ बैठे, चहुँ दिश नीर ही नीर ।। 3।।

करहुँ कृपा ''सुखदेव'' उबारो, हरि हरो विपत्त गम्भीर ।। 4।।

भजन

हे भगवान दयालु मेरी, लाज बचा लो।
डूबे भव में पल पल, जीवन जहाज बचा लो ।। टेर।।

खूब तेरे संसार में डोला, यह जग है बरसात का ओला।
होय दुःखी मैं आपसे बोला, पहन लिया तेरे नाम का चोला।
दीन दयाल भगत का गिरता ताज बचालो ।। 1।।

बारम्बार पड़ा चौरासी, अबकी मेरी काटो फाँसी।
आप प्रभू मेरे हो विश्वासी, सकल जगत में हो रही हाँसी।
हे करुणाकर ! जन्म-मरण का संकट टालो ।। 2।।

करुणा करो तुम हे करुणाकर ! दास खड़ा तेरी शरण में आकर।
है 'सुखदेव' प्रभु पद चाकर, धन्य करो मुझको अपनाकर।
हे दुःख भंजन सुन मेरी आवाज बचालो ।।3।।

भजन, तर्ज- डाकिया रे

आया - आया द्वार म्हारे परम गुरु सा।
परम गुरु सा, चरण कमल रज धरुँ, माथा ।। टैर।।
प्रेम बढ़ा परमानन्द पाया, मंगल गान हृदय गाता ।। 1।।
देवेश्वर, ब्रह्मनिष्ठ दयालु, मात पिता मेरे है भ्राता ।। 2।।
करे उजियारा मेटे अँधेरा, ज्ञान का दीप जला राता ।।3।।
भ्रम मिटा ब्रह्म रुप लखावे, सद्गुण, ज्ञान, अभय दाता ।। 4।।
शत्-शत् वन्दन, करूँ अभिनन्दन, कह 'सुखदेव' अति मन भाता।।5।।

भजन

तर्ज – सावन आयो रे

सद्‌गुरु आया रे सजन मिल गावो रे मंगलाचार।
आज म्हारे सद्‌गुरु आया रे ।। टेर।।

रो-रो नैन सजल हो थाके, बाट निहार – निहार।
तन,मन,मति, इन्द्रिय सब थाकी, करि – करि के इन्तजार ।। 1।।

शीश नऊँ मैं चरण पखारूँ, पहनाऊँ गल हार।
सेवा करि-करि बड़े चाव से, खूब बढ़ावाँ प्यार ।। 2।।

घट में कमल खिले खुशियों के, आनन्द भयो अपार।
संशय सकल विनाशे पल में, देकर ज्ञान विचार ।। 3 ।।

ईश्वर के महाईश गुरुवर, महिमा अपरम्पार।
हो ''सुखदेव'' हृदय गुरु भक्ति, सहज होय भवपार ।। 4।।

भजन

तर्ज – एक बार आवो जी जवांई

राम जी की मेहर हुई संत आया पावणा।
गावां हिलमिल मंगलाचार, दादू जी बैड़ा पार करो ।। टेर।।
दीन के दयाल दादू, अघ के हरण है।
म्हारी अर्ज करो स्वीकार।। दादू जी.......... ।। 1।।
दादू जी है ईष्ट म्हारे, दादू जी सहाय छै।
म्हारे दिल में बड़ो विश्वास। दादू जी.......... ।। 2।।
दादूजी ही राम म्हारे, दादू जी सूं काम हैं।
म्हारी पूरण करियो आस। दादू जी.......... ।। 3।।
दादू जी की वाणी प्यारी। प्यारो ब्रह्म ज्ञान हैं।
''सुखदेव'' पियारो नाम। दादू जी.......... ।। 4।।

भजन

सद्‌गुरु राजी सब काम सफल

राग- कव्वाली

मेरे गुरुदेव राजी हो, वही हर काम करना है।
हुकम अरू सेवा में रहकर, मुझे भव नीर तरना है ।। टेर।।

कोई धन धाम में पागल, कोई सुत वाम में पागल।
कोई पी जाम में पागल, कोई जग काम में पागल।।
अपन गुरु नाम में पागल, उन्हीं का ध्यान धरना है।। 1।।
मेरे गुरुदेव....................

कोई सुर गान में राजी, कोई लय तान में राजी।
कोई निज शान में राजी, किताबी ज्ञान में राजी ।।
अपन गुरु ध्यान में राजी, किसी से काहे डरना है ।। 2।।
मेरे गुरुदेव....................

कोई महावीर को पूजे, कोई वृक्ष, नीर को पूजे।
कोई हरी, पीर को पूजे, कोई तकदीर को पूजे।।
अपन महापीर को पूजे, गुरूपद शीश धरना है ।। 3।।
मेरे गुरुदेव....................

भरोसा आप पर भारी, मित्र माँ बाप पर भारी।
किसी को जाप पर भारी, किसी को ताप पर भारी,
मुझे गुरु आप पर भारी, लिया ''सुखदेव'' शरना है।। 4।।
मेरे गुरुदेव....................

भजन

अनन्य भक्ति

तर्ज– पंख होते तो उड़ आती रे.........

(मेरे) संत दादूजी मन भावे रे

और न आवे दाय, कोई है यदि मुझको मिलावे रे ।। टैर।।

निर्मल जीवन, निर्मल है वाणी, निर्मल सूरत लागे सुहाणी,

कोई बतादे चरण निशानी, धोऊँ पद ले नयनों का पाणी।

है कहाँ मुझे बताय, मुझे पल–पल याद सतावे रे ।। 1।।

संत दादू जी मन ....

अर्जुन के घनश्याम हैं जैसे, हनुमत के प्रभु राम हैं तैसे।

अष्टावक्र मुनि जनक के जैसे, परीक्षित के सुखदेव हैं वैसे।

दिल में रहे समाय, दर्शन बिन जिया तरसावे रे ।। 2।।

संत दादू जी मन ....

ज्ञान न चाहूँ ध्यान न चाहूँ, दौलत यश सम्मान न चाहूँ।

सिद्धि, स्वर्ग, निर्वाण न चाहूँ, चरण शरण बिन आन न चाहूँ।।

दिल से लगालो आय, ''सुखदेव'' हरष गुण गावे रे ।। 3।।

संत दादू जी मन ....

(दोहा)
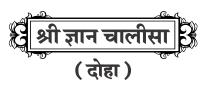
गुरु पद पंकज लौटि के, प्रथम करुं प्रणाम।
हाथ धरो मम शीश पर, सफल होय सब काम ।।1।।
गुरु कृपा बिन जीव का, मिटे न भरम अज्ञान।
सतसंगत सेवा करे, हिय प्रगटे निज ज्ञान ।। 2।।

चौपाइयां

नित्य ब्रह्म मुहूर्त में जगना।
राम सुमिर फिर धंधे लगना ।।1।।
रोज बड़ों को शीश नवाना।
ले आशीष सदा सुख पाना ।।2।।
नहाय धोय हरि सुमिरन करना।
गुरु मंतर जप मस्तक धरना ।।3।।
नर तन जान अमोलक हीरा।
राम सुमिर उतरो भव तीरा ।।4।।
स्वास-स्वास में राम रटीजे।
जनम-जनम का पाप कटीजे ।।5।।
कर सतसंग राम रस पीजे।
सबसे प्रेम भलाई लीजे ।।6।।
दुर्जन संग कभी मत करना।
निन्दा झूंठ कपट से डरना ।।7।।
मात पिता सद्गुरु की सेवा।
करना रोज मिलेगा मेवा ।।8।।

आदर प्रेम सदा सुख देना।
सबसे मिलजुल करके रहना ।। 9।।

निन्दा कटु वचन नहीं कहना।
और कहे तो हरदम सहना ।। 10।।

सादा पहनों सादा खाओ।
उच्च विचार रखो-सुख पाओ ।। 11।।

शिक्षा युक्त किताबें पढ़ना।
जीवन पथ पर आगे बढ़ना ।।12।।

हो शुभ काम बेगि निपटाना।
पीछे पड़े नहीं पछताना ।। 13।।

अपनी खरी कमाई खाना ।
देख पराई मत ललचाना ।। 14।।

पहले सोच समझ कर बोलो।
सच्चा बोलो पूरा तोलो ।। 15 ।।

शीतल शान्त सदा खुश रहना।
काम क्रोध के वश नहीं बहना।। 16।।

घर आये को आदर दीजे।
दीन दुखी की सेवा कीजे।। 17।।

भूखे प्यासे को अन्न पानी।
बोलो हरदम मीठी बानी ।। 18 ।।

जीव जन्तु मानव पशु पंखी।
पालन करो सीख सतसंग की ।। 19।।

बैर घात हिंसा जिन टारी ।

रहे सुखी जग में नर नारी ।। 20 ।।

ताश गंज का खेल तमाशा।

छोड़ बुराई चौपड़ पाशा ।। 21 ।।

फूहड़ नाच भूल मत नाचे।

राम भजन मे रह मत पाछे ।। 22 ।।

सद्गुरु शरण, चरण में रहना।

गुरु को पीठ कभी मत देना ।। 23 ।।

गुरु का ध्यान निरन्तर करना।

भूत प्रेत से कभी न डरना ।। 24 ।।

कण-कण में भगवान विराजे।

ऐसा ज्ञान गुरु से पाजे ।। 25 ।।

चोट फेट यम काल न लागे।

गुरु को देख तुरन्त भय भागे ।। 26 ।।

आतम ज्ञान हृदय धर लीजे।

मुक्ति पाय जुगों जुग जीजे ।। 27 ।।

राम-गुरु में दोष न राई।

ब्रह्म निरंजन है सुखदाई ।। 28 ।।

जो संतो को दोष लगावे।

चौरासी योनि भटकावे ।। 29 ।।

जे थारा सद्गुरु जी बरजे।

ऐसो काम कभी मत करजे ।। 30 ।।

ये धन धाम रु. मुलक खजाना।

इक दिन यहीं पड़े रह जाना ।। 31 ।।

तन का गर्व कभी मत करना।

हरदम ध्यान प्रभु का धरना ।। 32 ।।

माता पिता मीत सुत दारा।

सबको जान प्रभु का प्यारा ।। 33 ।।

गुरु सेवा कर आज्ञा मानो।

अपना आतम रुप पिछानो ।। 34 ।।

झूँठी काया झूँठी माया।

सच्ची आतम निश्चय आया ।। 35 ।।

तू आतम परब्रह्म स्वरूपा।

सत चित्त आनन्द रुप अनूपा ।। 36 ।।

जीव, जगत अरु ईश्वर तीनों।

एक तत्व है निश्चय कीनों ।। 37 ।।

ज्ञान भये फिर जनम न मरना।

हो निरलेप जगत में फिरना ।। 38 ।।

राम गुरु को नमन हमारा।

देकर ज्ञान किया उजियारा ।। 39 ।।

पढ़ चालीसा जो चित लावे।

कह ''सुखदेव'' सदा सुख पावें ।। 40 ।।

।।दोहे ।।

पढ़ सुन जे दिल धारिये, निर्मल होय स्वभाव।
जीवन हो सुखमय अति, चले न यम का दाव ।।
सजग, सरल हो सहज ही, मिले पदारथ चार।
विनशे, विघ्न विकार सब, होवे जय जय कार ।।

राम ध्वनि

वो ही दादूराम है, वो ही सत्यराम है।
वो ही ऊँ, शिव, ब्रह्म वो ही सियाराम है ।। 1।।

विघ्न विनाशक मंत्र

दादू दीन दयाल, प्रभो त्रिय ताप हरो।
सद्गुरु दीन दयाल, सकल संताप हरो ।। 2।।

भजन

तर्ज – गुरु दाता मैंने अवगुण बहुत किया

गुरु दाता तेरा बहुत बड़ा विश्वास ।। टैर।।

ज्यों बालक को मात पिता से, रहे निरंतर आस ।। 1।।

शरणागत की लाज बचालो, एक यही अरदास ।। 2।।

क्रोंच पक्षी तुम मैं तेरा अण्डा, तुम बिन होय विनाश ।। 3।।

सेवा में हाजिर हूँ राखो, चरण कमल के पास ।। 4।।

हूँ ''सुखदेव'' दीन अपराधी, दासन को महादास ।। 5।।

भजन

दोहा

जन्मू सौ–सौ बार मरूँ, नहीं मोक्ष की आस।
इक विनती तव वत्स की, राखि चरण के पास।।

सद्‌गुरु प्रेम अभिलाषा

हे मेरे प्यारे गुरुवर गोद में उठा लो, पाँवों में पड़ा हूँ मुझे सीने से लगालो।
दुनिया से आया हूँ मैं हार, अब तो दे दो ना थोड़ा प्यार ।। टैर।।
हे मेरे प्यारे गुरुवर..........

नीच कुटिल खल कामी हूँ गुरुवर, सब पतितों में नामी हूँ गुरुवर।
सिर पर लाखों पापों का भार, अब तो दे दो ना थोड़ा प्यार ।। 1।।
हे मेरे प्यारे गुरुवर..........

मात–पिता भाई सुत नारी, स्वार्थ काज करत सब यारी।
कुछ भी दर्शे ना जग में सार, अब तो दे दो ना थोड़ा प्यार ।। 2।।
हे मेरे प्यारे गुरुवर..........

ब्रह्म स्वरुप दया के सागर, फिर क्यों बैठे हो दाता दृष्टि बचाकर
मुझको बस तेरा ही आधार, अब तो दे दो ना थोड़ा प्यार ।। 3।।
हे मेरे प्यारे गुरुवर..........

गलती माफ करो सब मेरी, बेगी सम्भालो मत करो देरी।
''सुखदेवा'' करत पुकार, अब तो दे दो ना थोड़ा प्यार ।। 4।।
हे मेरे प्यारे गुरुवर..........

शरणागति

तर्ज– म्हारो दीनानाथ दयाल सुण्यो म्हे...........

मैं शरण आपकी आया जी, दया करो भगवान।
भक्ति, प्रेम, सेवा, नित, दीज्यो चरणां में स्थान ।।टेर।।
सुन्दर नारि कोई तन सुन्दर, चाहे सुत वरदान।
ये सब बन्धन टूटन वाले, मोहे पड़ी अब जान ।।1।।
मैं शरण आपकी........................
कोई चाहवे महल मालिया, धन दौलत की खान ।
इक दिन ये सब छूटने वाले, करली मैं पहिचान।।2।।
मैं शरण आपकी........................
कला साहित्य, संगीत रु काव्य, कोई चाहे सुर तान।
कोई जग में नाम कमावण, बण्या चाहे विद्वान ।।3।।
मैं शरण आपकी........................
कोई चाँद, सूरज पर जाने, नभ में भरे उड़ान।
मैं चरणामृत पाय रहूँ नित, आनंद में गलतान ।।3।।
मैं शरण आपकी........................
कोई मोक्ष पदार्थ हेतु, रोज सुणे ब्रह्मज्ञान।
मेरा तो दिन रैन रहे बस, चरण कमल में ध्यान ।।4।।
मैं शरण आपकी........................
सकल पदारथ गुरु चरणों में शास्त्र संत प्रमाण।
''सुखदेवा'' कहीं और न भटकुँ, लीनी है मन ठान ।।5।।
मैं शरण आपकी........................

ईश वन्दना

राग–दीप चन्दी ताल–रूपक

हे हरि ! सब दुःख सहूँ मैं, सुख सदा देता रहूँ
भक्ति और शिव शक्ति दो, अमृत दे विष पीता रहूँ ।। टैर ।।
हे हरि सब.................

नित्य ही संघर्ष में, उत्कर्ष हेतु हर्ष हो।
मरण हो कई जन्म लेकिन, देश भारत वर्ष हो।।
वृक्ष सम फल दूँ मैं छाया, धूप नित सहता रहूँ।। 1।।
हे हरि सब.................

दीन दुःखियों के हितारथ, तन, वचन, मन, धन लगे।
स्वार्थ, मद, मोह, कामना का, भाव ना रंचक जगे ।।
शीश पर आशीष दो हे ईश पद धोता रहूँ ।। 2।।
हे हरि सब.................

घृणा निंदा, दुःख–सुख में, हृदय नित ही सम रहे।
विफलता, अपयश मिले तब, जोश–होश ना कम रहे।।
सेवा पथ पर ही निरन्तर, गंग सम बहता रहूँ ।। 3।।
हे हरि सब.................

कंटकों से युक्त मग मम, औरों के पथ फूल हो।
ऐसा अवसर आये ना प्रभू, तू मेरे प्रतिकूल हो।।
देव ! सुन "सुखदेव" की, हरि गीत नित गाता रहूँ ।। 4।।
हे हरि सब.................

भजन

तर्ज – गुरु दाता मैंने अवगुण बहुत किया

गुरु दाता तोहे बारम्बार प्रणाम ।। टैर।।
आप ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, आप निरंजन राम ।। 1।।
गुरु दर्शन, परसन, सुमिरन से, हृदय होय आराम ।। 2।।
करुणा प्रेम दया के सागर, निर्लोभी निष्काम ।। 3।।
परमारथ हित नर तन धारे, पहुँचावे सुखधाम ।। 4।।
'भूरादासजी' सद्‌गुरु मेरे, दीन्हा मोहे निज नाम ।। 5।।
कर "सुखदेव" हृदय में सुमिरन, लखिया आतम राम।।6।।

भजन

राग – आसावरी

गुरु महिमा मुख कही न जावे।
ब्रह्म स्वरूप अनंत सदाहि, शोभा अनंत अंत नहीं आवे ।। टैर।।

दे निज ज्ञान स्वच्छंद करें, भव बंध टरे , यम फंद मिटावे ।
कीट पलटि भृंग रूप करें तिहिं, जीव पलटि ब्रह्म रुप बनावे ।। १।।

सूते जीव जरे अगनी में, ताहि दया करि आय जगावे ।
पूरण ब्रह्म, अखंडित, व्यापक, अजर, अमर, निज रूप लखावे ।। २।।

ईश्वर सृजित जीव भव बूडत, ताहि कृपा करि आन बचावे ।
सब दुख द्वन्द्व संदेह निवारत, गोविंद तें गुरु अधिक कहावे ।। ३।।

"भूरादास" जी ईष्ट, वशिष्ट, वरिष्ठ, गरिष्ठ मेरे मन भावे ।
ईश तजिहु पर गुरु न तजिहु, "सुखदेव" भजिहु गुण कहां लग गावे।।४।।

भजन

राग– आसावरी

सपने हु सदगुरु वचन न टारे।
कृपा सिन्धू करि मेहर दयानिधि, भव निधि पार उतारे।। टैर।।

अभिअंतर उर प्रेम अत्यन्तहि, ऊपर कस–कस मारे।
सम्यक दिशा, दशा करि उत्तम, रिपू दल सकल संहारे ।।1।।

सेवा वचन सुदृढ़ कर पाले, सो शिष परम पियारे।
बिगरे काज ध्यान दे निश्चित, दीन दयाल सुधारे।।२।।

गुरु दूषण, भूषण करि मानहु, अवगुण गुण करि धारे।
श्रद्धा देख देय ब्रह्म चिंतन, संशय शोक निवारे।।३।।

झूठ प्रपंच जीव ब्रह्म एकहि, अद्भुत ज्ञान उचारे।
जन "सुखदेव" मिले परमानंद, अमर अभय पद भारे।।४।।

भजन तर्ज– बीरा म्हारा रामदेव वो

पुकारुं थाको नाम जी वो राम जी दर्शन देवो दयाल ।
मैं हूं पतित पतित पावन तुम, करियहुं बेगि संभाल ।।टैर।।

जल बिन मीन क्षीर बिन शिशु, शशि बिन नहीं रहत चकोर ।
पीहू–पीहू करत पुकार पपीहरा,पिव बिनु भावे न और ।। १।।

विरह अग्नि धधके उर अंदर, जालहि तन मन प्राण ।
आप बिना बेहाल बिहरणी, धरे तिहारो ध्यान ।। २।।

कोयल कूक–कूक भई काली, पिव बिन रहत अधीर ।
विरहा में जल भई कोयला, यूं भया कृष्ण शरीर ।। ३।।

ज्ञान न ध्यान योग जानत नहीं, भक्ति करण की रीत ।
एक आश विश्वास तिहारो ,और न से नहीं प्रीत ।। ४।।

दया सिंधु ये प्रेम बिंदु मय, नैन बहे दिन रैन ।
कह "सुखदेव" दरश जब करियहुं, तब परियहुं दिल चैन ।। ५।।

भजन

राग– पारवा अथवा हरियाणवी

यों ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव की नित सेवा करना चाहिए।।टेर।।

तन, मन, धन, सवचन पद डार भाई।
अन्न जल वसन से सेवा सत्कार भाई।।
मार चाहे प्यार मिले सहज स्वीकार भाई।
काम, क्रोध, मोह रिपु सकल संहार भाई।।
फिर आन देव को छांड़ि, सिर चरणों में धरना चाहिए।।
यों ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव.......।।१।।

सन्मुख खड़े हो तो खड़े-खड़े बात करें।
विचरणरत तब दौड़कर साथ करें।।
आसन विराजे दंडवत प्रणाम करें।
दंडवत करि अभिमान अहंकार हरे।।
सन्मुख आते देखकर बचकर नहीं टरना चाहिए।
यों ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव.......।।२।।

विनय, सुशील, श्रद्धा भाव से निकट रहे।
संग नहीं छांड़े चाहे विपदा विकट रहे।
रीष मांहि बोले तब, प्रेम दूना घट रहे।।
आज्ञारत, सेवारत छल ना कपट रहे।
पद रंज निरंजन देव की मस्तक पर धरना चाहिए।
यों ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव......।।३।।

तजि के कुसंग सत्संग बार-बार करि।
स्वाध्याय, संध्या नित उत्तम व्यवहार करि।।
कोई अपकार करें तोहि उपकार करि।
जीव, जग, ईश पुनि ब्रह्म का विचार करि।।
पुरुषारथ करि ब्रह्म ज्ञान का भवसागर तरना चाहिए।
यों ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव.......।।४।।

गुरुद्रोही कोटिन कल्प तक कल्पाय।
डाह, निंदा करे नर श्वान की योनि को पाय।।
मिथ्या दोष मढ़े वह खर की योनि में जाय।
भिन्न-भिन्न समझावे मनु जी स्मृति मांय।।
रह सन्मुख नित क्यों विमुख होय चौरासी में परना चाहिए।
यों ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव........।।५।।

ब्रह्मा, हरि, हर गुरुदेव जी को मान कर।
ध्यान का है मूल गुरु मूर्ति का ध्यान करि।।
गुरु पद पूज, वाणी ब्रह्म वाक्य जानकर।
ज्ञान ही करे तो ब्रह्मात्म एक ज्ञान कर।।
''सुखदेव'' सकल भवबंध हर स्वच्छंद विचरना चाहिए।
यों ब्रह्म निष्ठ गुरुदेव..........।।६।।

भजन

राग – आसावरी

जोरे गुरुदेव नहीं अपनाते।
हो संतप्त भ्रमत मृग जिहि वन, अंत रसातल जाते।।टेर।।

कर्मकांड, नानाविधि पूजन, देवी, देव मनाते ।
देव निरंजन सोहम निज पद, लौट कहां पुनि आते।। १।।

भेद वचन सुन मत,पंथन के, और अधिक अरूझाते।
भेदाभेद निरपेक्ष शिवोहम, गुरु बिनु कौन लखाते।। २।।

अपनो भजन आप पुनि करियहु, कबहुं द्वैत बिसराते।
बिन ''सुखदेव'' मेहर उनकी, किम् सहज समाधि पाते।। ३।।

भजन

तर्ज– घणा दिन सो लियो रे.....

गुरु बिन हो नहीं रे जियरा जीवन को कल्याण।
गुरु बिन मुक्ति कबहुं नहीं पावे, गावे वेद पुराण ।। टैर।।

गुरु बिन मारग कौन बतावे, गुरु बिन भक्ति न ध्यान।
गुरु बिन भरम भेद नहीं नाशै, मिले नहीं भगवान ।।१।।

गुरु बिन निष्फल योग यज्ञ चाहे, करि तीरथ स्नान।
पूजा, पाठ, कथा सब निष्फल, निष्फल जप, तप, दान।। २।।

माया, ब्रह्म, कौन जग, ईश्वर, ? नहीं खुद की पहिचान।
गुरु बिन गोविंद कौन मिलावे, हिय प्रगटे नहीं भान।। ३।।

''भूरादास'' जी सद्‌गुरु मिलिया, दीन्हा आतम ज्ञान।
है ''सुखदेव'' गुरु पद पंकज, तन, मन, धन, कुर्बान।। ४।।

भजन

निर्भरा भक्ति

तर्ज– कुछ नहीं बिगड़ेगा तेरा

दीजिए गुरुदेव भक्ति निर्भरा मोहे दीजिए ।
दीन दयाल दया करके तत्काल शरण में लीजिए।।टेर।।

माया में कब का फंसा हूं, छूटन की शक्ति कहां ?
दिल हो द्रवित जेही विधि दाता, वो मुझमें भक्ति कहां ?
करुणाकर करुणा करके, हे नाथ ! कृपा अब कीजिए।। १ ।।

असमर्थ मैं समरथ तुम हो, मैं याचक दाता तुम्ही ।
वत्सलमयी आनंद प्रदाता, रक्षक मम् माता तुम्ही ।।
हो बेचैन फिरहु इतहि उत, आप बिना क्या जीजिए।। २ ।।

मामूली सी विनती मेरी, मामूली सा काम है ।
मामूली कृपा से मिलियहु, चरणों में विश्राम है ।।
शरणागत वत्सल प्रभो, ''सुखदेव'' पर अब रीझीये।। ३ ।।

भजन

तर्ज– म्हाने कर मनवार........

म्हारे कालजयारी पीर मिटाओ जी, गुरु दाता म्हारे, एक बार आओ जी ।।टेर।।
आप गुरु सा ज्ञान समंदर हो, म्हाने निज ब्रह्म वाणी सुणावो जी ।। १ ।।
आप गुरु सा प्रेम समन्दर हो, म्हाने अमरित प्रेम पिलाओ जी।। २ ।।
आप गुरु सा ब्रह्म स्वरूपी हो, म्हाने ब्रह्म स्वरूप लखावो जी।। ३ ।।
आप गुरु सा मुक्त स्वरूपी हो, म्हाने जीवन मुक्त करावो जी।। ४ ।।
जन ''सुखदेव'' सद् गुरुजी रा चरणां म, सब लुळ-लुळ शीश नवावो जी ।।५ ।।

भजन

तर्ज– गुरु जी मेरी लागी लगन

भैया जी प्यारे, गुरु के चरण मत छोड़ना ।। टैर ।।

स्वर्णकार, कुंभकार ज्यों गुरुवर, खोट हरे सब चोट से डरि –डरि।
भूल के मुख मत मोड़ना ।। १ ।। भैया जी प्यारे............................

काम, क्रोध, मद, लोभ के वश हो, लोक प्रशंसा अत्यधिक जस हो ।
फूल के अंग ना मरोड़ना ।। २ ।।भैया जी प्यारे............................

गुरु आज्ञा सेवा में रहना, साधन कष्ट मिले सब सहना।
गुरु विश्वास न तोड़ना ।। ३ ।। भैया जी प्यारे............................

जन ''सुखदेव'' हरि चाहे रूठे, गुरुपद परम प्रीत नाहि टूटे ।
सतसंगत चित्त जोड़ना ।। ४ ।। भैया जी प्यारे............................

भजन

तर्ज– मन लागा मेरा यार

हे हरि राखो मेरी लाज आया शरणन में।। टैर।।
सद्‌गुण ज्ञान न करनी भली कछु, अनंत पाप अंतःकरणन में ।
हे हरी रखो.................।। १ ।।
नाम अनंत, अनंत है महिमा, करहूँ कहाँ लग वर्णन में ।
हे हरि राखो................।। २ ।।
जिस पर करुण कृपा भई तेरी, देरि कहां भवतरणन में ।
हे हरि राखो................।। ३ ।।
द्रवित हृदय पुनि श्रवित नयन नित, रोम–रोम रत सुमिरन में ।
हे हरि राखो................।।४।।
जन ''सुखदेव'' पुकार सुनो मम, आय परा तव चरणन में ।
हे हरि राखो................।।५ ।।

अनन्य प्रेम योग

''तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई''

इन्दव सवैया– प्रेम योग

जाँ घट प्रेम प्रीति नेह हित का, भानु उगा तो भगा अँधियारा।
नवधा भक्ति के नेम आचार, छिपे नभ के सब नौ लख तारा।।
सेवक स्वामी बने स्वामी सेवक, प्रेम स्वरूप लगे अति प्यारा।
प्रेम से प्रेमी मिले ''सुखदेव'' हि, प्रेम बिना नर धूल जमारा।।

भजन

मार एवं प्यार

मेरा निर्माण करने को, मेरे गुरु प्यार करते हैं।
भक्त के दोष हरने को, वक्त पर मार करते हैं ।। टैर।।
मेरा निर्माण करने...............

घड़े जब ठोक के मूरत, कारीगर दे अजब सूरत।
आया पूजन का जब मुहुर्त, नमन् नर नार करते हैं ।। 1।।
मेरा निर्माण करने...............

भयानक रोग ने जकड़ा, औषधि नहीं लई अकड़ा।
दवा दी, जोर से पकड़ा, सफल उपचार करते हैं ।। 2।।
मेरा निर्माण करने...............

काम अरु क्रोध ने घेरा, दिया गुरुदेव ने पहरा।
उठा यमराज का डेरा, गजब संहार करते हैं ।। 3।।
मेरा निर्माण करने...............

पीटले, पीटने ना दे, कहीं मल चींठने ना दे।
नरक में भींटने ना दे, सदा उपकार करते है ।। 4।।
मेरा निर्माण करने...............

मैं बालक जब मिट्टी खाता, निकाले पीटकर माता।
मातु सम आप गुरु दाता, हृदय संस्कार भरते हैं ।। 5।।
मेरा निर्माण करने...............

मूढ़ मन मानले कहना, शरण गुरुदेव की रहना।
जगत के साथ मत बहना, साफ इन्कार करते है ।। 6।।
मेरा निर्माण करने...............

खुशी हूँ मैं शरण पाकर, भरी ''सुखदेव'' की गागर।
क्रोध या प्रेम के सागर, सभी स्वीकार करते हैं।। 7।।
मेरा निर्माण करने...............

भजन

बिन फेरे हम तेरे

प्रेम के वश हम हो गये तेरे।

दिल में पीर नीर नयनों में, कब होंगे तुम प्रियवर मेरे ।। टेर।।

देख स्वरुप में खो गया तुझमें, तू मुझमें क्यों खो न सके रे ।।1।।

बैठ गई मन मोहन मूरत, कहत बने नहीं दूर कि नेरे ।।2।।

भूल ना चाहूँ भूल सकुँ ना, होय सम्बन्ध प्रगाढ़ घनेरे ।।3।।

नयन मिले जब कमल खिले तब, बाँह पसार मिलो मुझसे रे ।।4।।

लोक लाज तज कहि सुखदेवहि, हो गये हम तेरे बिन फेरे ।।5।।

भजन

भगवान से अपनापन

भगवन तुम्हारे प्यार में, मैं हो गई दिवानी।
दिल में प्रेम का पानी, नयनों में पानी ही पानी ।। टैर।।

तन, मन, धन जीवन सब , जब तुमको सौंप दिया है।
तू मेरा मैं तेरी, अमर है प्रेम कहानी ।। 1।।

तेरे प्यार में खो गई, सच है तेरी हो गई।
तेरी गोद में सो गई, केवल प्रीत बढ़ानी ।। 2।।

तेरे प्रेम में गलके प्रभु बंद न होती पलकें।
विरह अग्नि में जलके, तेरे बीच समानी ।। 3।।

और कोई नहीं मेरा, 'सुखदेव' भरोसा तेरा।
मेटो घोर अँधेरा, प्रेम के दीप जलानी ।। 4।।

भजन

दे दो निज प्यार

तर्ज- छोटी-छोटी गैया

थोड़ा-थोड़ा मुझ पर करो उपकार, थोड़ा सा गुरुवर, दे दो निज प्यार ।।टेर।।

झूठी है यह काया, झूठा संसार, झूठा है सारा जग व्यवहार ।।1।।

मेरे गुरु साँचे साँचा है विचार, ज्ञान दे साँचा करे भव पार ।।2।।

सुनो मेरे दिल की करुण पुकार, भूल न जाना मुझे इस बार ।।3।।

मेरे गुरु सत, चित, आनन्द अपार, कहे 'सुखदेव' मैं जाऊँ बलिहार ।।4।।

भजन

प्रेम कटारी, राग- माड

वैद्य वेद न जाने अनारी रे, हिरदे में मेरे, बह रही प्रेम कटारी।। टेर।।

वैद्य अनारी नारी निहारे, तंग करे बहुभारी रे ।। 1।।

बैद[1] न वेदन[2], भेद न जाने, प्रेम पीर अति प्यारी रे।। 2।।

नारी के नारी में ना हरी, हरि बिन रहूँ दुखियारी रे ।। 3।।

पागल भई मैं पा गलने को, प्रीतम संग सुखियारी रे ।। 4।।

प्रेम पीर की औषधि प्रेमहि, प्रेम पीर को हारी रे ।।5।।

पीर महा महापीर ही जाने, बेपीर सकल संसारी रे ।। 6।।

पीर रहे नहीं, पीर मिले ''सुखदेव'' पीर पर वारी रे ।। 7।।

वैद्य[1], वेदना[2]

भजन

मिले ना प्रभु प्रेम बिना

तर्ज– थारे घट में विराजे भगवान..........

हंसा प्रेम रखो भरपूर मिले ना प्रभु प्रेम बिना ।। टेर।।

इच्छा, मेहनत, भाग्य बिना नहीं भोग मिलेंगे तोय।
किन्तु राम मिले इच्छा से, नयना भर-भर रोय ।। 1।।
मिले ना प्रभु..............

माँ बिना रुदन करे ज्यों बालक, त्यों हरि बिन बैचेन।
दौड़त आय गोद में ले-ले, प्रेम से बोले मीठे बैन ।। 2।।
मिले ना प्रभु..............

माता देर करे तो डाँटे, ससुरा देवर जेठ।
त्यों ऋषि संत हरि को डाँटे, बेगि पधारो सांवरा सेठ ।। 3।।
मिले ना प्रभु..............

जे हरि बिन नहीं चैन तुम्हें तो, हरि तुम बिन बैचेन।
भक्ति वश भगवान रहे नित, साँचि बताई गुरु सैन ।। 4।।
मिले ना प्रभु..............

करे दण्डवत भजन बंदगी, पूजा पाठ हमेश।
प्रेम बिना नहीं रीझे भगवन, चाहे रंगालो भगवा वेश ।। 5।।
मिले ना प्रभु..............

मिलते थे, मिलते हैं, मिलसी, जे मिलने की चाह।
हो ''सुखदेव'' प्रेम मन माँही, राम मिलेंगे भरि बाँह ।। 6 ।।
मिले ना प्रभु..............

बिरह वेदना

भजन तर्ज : केसरिया बालम

पपैया प्यारे प्रीतम को, सुनाना यह संदेश ।।टेर।।

नयन प्रेम झर-झर बहे, आवत याद हमेश।

ना मोहे अन्न, जल भावहि, चैन परत नहीं लेश ।। 1।।

सुनाना यह संदेश.................

जल बिन तरफत मीन त्यों, पिव बिन रहत क्लेश।

जे अब और विलम्ब करे तो, प्राण रहे नहीं शेष।।2।।

सुनाना यह संदेश.................

पपीहा प्यारे क्यों करे, पीहू-पीहू का उपदेश।

तू स्वाती जल बिन मरे, मैं पीव बिना रहूँ केश।। 3।।

सुनाना यह संदेश.................

प्रेम निभाना तो प्रिय, तजि आना परदेश।

नहीं तजि धीरज मैं करूँ, अब अग्नि में परवेश ।। 4।।

सुनाना यह संदेश.................

आँख मिले बिन पीव से, नहीं आँख लगे लवलेश।

जन "सुखदेव" को भूलकर प्रिय, जाय बसे किस देश।।5।।

सुनाना यह संदेश.................

पतिव्रता

साँच सुहागिन कन्त पियारी।

छोड़ जगत इक पीव संग राची, धन्य वही है पतिव्रत नारी ।।टेर।।

सज श्रृंगार पीव संग परसी, प्राण सहित जीवन बलिहारी।। 1।।

सुमिरन रत पिव प्यार में डूबी, भोग वासना सकल बिसारी।। 2।।

अजर, अमर मम प्रीतम प्यारा, सत चित आनन्द रूप निहारी ।।3।।

पतिव्रत की गति पतिव्रत जाने, जानत कहां नार व्यभिचारी।।4।।

संत अनंत कंत संग पाये, कह "सुखदेव" मिले सुख भारी ।।5।।

भजन

मोहित मन में प्रेम नहीं

मोहि मन प्रेम को पा न सका रे

तीरथ तट पनघट पर नहाया, प्रेम नीर में नहा न सका रे ।।टेर।।

खूब गया मन्दिर मस्जिद में, प्रेम नगर में जा न सका रे।। 1।।

वेद पुराण कुरान पढ़े नित, प्रेम ग्रन्थ पढ़ गा न सका रे।। 2।।

मत, मजहब, पंथों में भटका, प्रेमी के मन भा न सका रे ।।3।।

विविध रागनी, राग सुनावे, प्रेम के गीत सुना न सका रे।।4।।

मृग तृष्णा जल देखत धावे, सद्गुरु शरणे आ न सका रे।।5।।

कह "सुखदेव" कहो किम पावे, प्रभु चरणन चित्त ला न सका रे ।।6।।

भजन

प्रेम का पंथ कृपाण की धारा

प्रेम का पंथ कृपाण की धारा, शूर चले जिन, जीवन वारा ।।टेर।।

मोम अश्व चढ़, आग पे धावे, सोई जन पावे प्रेम पियारा ।।1।।

प्रेम में उन्मत, प्रेम में डूबा, बिसर गया सब नेम आचारा।।2।।

समयासमय दिन रैन न देखे, प्रेमी संग मिल होय सुखारा।।3।।

तन मन मति बिन पांव चले जो, प्रेम नगर पहुँचे मतवारा।।4।।

कायर पंथी कट-कट गिर गये, मोहित जन महा दीन बेचारा ।।5।।

शीश के पाण कृपाण पे चाले, तो ''सुखदेव'' मिले पिव प्यारा।।6।।

भजन

अनन्त प्रेम रस

कृष्ण तू ही मैं राधा प्यारी।

मोह बिन मोहित भई मन मोहन, राधेश्याम तू ही बनवारी ।। टेर।।

तू सागर मैं लहर पियारे, तू दिनकर मैं किरण तुम्हारी।। 1।।

मैं माया, मायापति तू है, लीला खेलत कुशल खिलारी ।।2।।

डूबे प्रेम सिन्धु में जबहि, नहीं देह शेष नहीं नर नारी।। 3।।

दोनों एक भिन्न नहीं किन्चित मैं आतम पर ब्रह्म पियारी।। 4।।

प्रेमीपन नहीं है अब प्रेम ही, भई''सुखदेव''मगन मतवारी।।5।।

भजन

प्रेम में देना ही देना

तर्ज– दीन दयाल करके

जिसने बस लेना सीख लिया, वो वक्त पे देना क्या जाने।
जो प्रीत की रीत न जान सके, वो प्रेम निभाना क्या जाने ।।टेर।।
जिसने बस ....

जो जौंक बने शोणित चूसे, वो दूध का पीना क्या जाने।
जो डूब रहे विषय रस में, वो हरि रस पीना क्या जाने।। 2।।
जिसने बस ....

बिन लाभ, लोभ के प्रेमीजन, स्वारथ का गाना क्या जाने।
प्रेमी को पाकर मस्त रहे, प्रीतम से पाना क्या जाने।। 3।।
जिसने बस ....

जिनको सुख भोग की आदत है, वो दुख में जीना क्या जाने।
अवसर पाकर ले प्राण भले, वो प्राण चढ़ाना क्या जाने।। 4।।
जिसने बस ....

जो श्रद्धानत सच्चे सेवक, वो हृदय दुखाना क्या जाने।
जो हरदम मद में चूर रहे, वो शीश झुकाना क्या जाने।। 5।।
जिसने बस ....

देह आकर्षण पर मरता है, वो प्रेम का करना क्या जाने।
''सुखदेव'' प्रेम से मौत डरे, वो मौत से डरना क्या जाने।। 6।।
जिसने बस ....

भजन

प्रभु पागल भया मैं तो, प्रभु पा गल गया मैं तो।
गला जल में गिरा ओला, त्यूँ प्रीतम ढ़ल गया मैं तो ।। टेर।।
मनोहर देख के सूरत, हुआ बेहाल सुध भूला।
पतंगा दीप पर वारी, उसी सम जल गया मैं तो ।। 1।।
हिमालय सूर्य संग पिघला, बहा बन गंग की धारा।
रूप रंग खोय सागर में, मिली त्यूँ मिल गया मैं तो ।। 2।।
भ्रमर जो काठ को काटे, सुगंधित फूल में बैठा।
प्रेम क्या मौत को जाने, मस्त हर पल भया मैं तो।। 3।।
जीव शिव हो गया आतम, मिला परब्रह्म में जाके।
तू ही "सुखदेव" सब में है, तेरे संग घुल गया मैं तो।। 4।।

भजन

तर्ज- दीन दयाल दया करके............

गुरु देव बिना मेरे नयनों से नित प्रेम के आँसू बहते हैं ।। टेर।।

माया ने नाथ दिया पहरा, मैं अति व्याकुल होकर टेरा।
कृपा कर काट देवो घेरा, बिरह प्रेम में पागल रहते हैं।। 1।।

कुछ और कहुँ पर कह ना सकूं, बस आप बिना अब रहना सकूं।
दिल दर्द उठा जिसे सहना सकूं, तेरे प्यार में सब कुछ सहते हैं।। 2।।

प्रभू आय सकल संताप हरो, मेरे सिर करूणा का हाथ धरो।
'सुखदेव' की गलती माफ करो, कर जोड़ यही बस कहते हैं।। 3।।

भजन

सहज प्रेम के वासी

राग– आसावरी

सद्गुरु सहज प्रेम के वासी।

ममता, चाह, अहं नहीं चिन्ता, जग से भये उदासी।। टेर।।

ना चाहिए सेवक अरु शिष्य ना कोई दास अरु दासी।

सेवक बन प्रेमी भक्तों की, काटे यम की फांसी ।। 1।।

सद्गुरु सहज........................

जहँ घट प्रेम भाव भरपूरा, तहँ घर अन्न, जल पासी।

मन की बात कहे बस उनको, हो पूरा विश्वासी।। 2।।

सद्गुरु सहज........................

सजग, सरल, निर्लेप, निरंजन, अमर लोक के वासी।

पाका, पाक होय जब पूछे, आतम अलख लखासी।। 3।।

सद्गुरु सहज........................

अभिमानी, कामी और क्रोधी, गुरु का भेद न पासी।

कह ''सुखदेव'' भक्त हि निश्चित्, पावे पद अविनासी।।4।।

सद्गुरु सहज........................

भजन

तर्ज– ऊधो म्हाने प्यारी लागे हो.............

ज्ञानी की अद्‌भुत लीला को समझेंगे प्रेमी प्यारे।। टेर।।

जिज्ञासु, भक्त, वैरागी, अति श्रद्धालु बड़भागी।
गुरु चरणन् के अनुरागी, जिन तन, मन, धन सब वारे।। 1।।

है दया, क्षमा, दिल घृति, परमारथ में प्रवृति।
कल्याणमय हर कृति, समभाव हृदय में धारे।। 2।।

देह दृष्टि नहीं ब्रह्म दृष्टि, ब्रह्म रुप भई सब सृष्टि।
हो निर्मल प्रेम की वृष्टि, नहायेंगे प्रेम दुलारे।। 3।।

करते पर कुछ नहीं करते, निर्लेप जगत में फिरते।
सत्संग करे वो तिरते, ''सुखदेव'' मिले सुख भारे।। 4।।

भजन

परम प्रेम की पीर

तर्ज– लागा चुनरी में दाग..........

लागी गुरु सा से प्रीत, भुलाऊँ कैसे ? भुलाऊँ कैसे मैं घर जाऊँ कैसे ? ।।टैर।।

दरश परस करि, सरस वचन सुन, सैन दई बतलाऊँ कैसे ?।। 1।।

सुन्दर छवि लख रवि शशि लाजे, बसहुँ हृदय बिसराऊँ कैसे।। 2।।

वाणी मौन बेसुध तन-मन भये, प्रेम की बात बताऊँ कैसे।। 3।।

ममता गई भई दिल समता, औरन के मन भाऊँ कैसे।। 4।।

कह ''सुखदेव'' लखे कोई पागल, पागल को समझाऊँ कैसे ?।।5।।

भजन

भगवान से प्रेम, कलह

तर्ज– सदा सतसंग की महिमा............

नजरिया डाल दो मुझ पर, प्रिय मुख क्यों छिपाते हो
दिया दिल आपको दिलवर, यार अब क्यों रुलाते हो ।।टेर ।।

जगत को चाहना मेरी, मुझे है चाहना तेरी।
करो फिर और क्यों देरी, प्रिय यदि हमको चाहते हो।
नजरिया डाल दो...................................

भूल ना भूलना तेरा, भूल जा भूलना मेरा।
भूलकर भोलो को प्रीतम, नहीं दिल से लगाते हो।
नजरिया डाल दो...................................

लगी लत तुमको रूठन की, चाहे जब रूठ जाते हो।
रूठना छोड़कर क्यों ना, नजर हम से मिलाते हो।
नजरिया डाल दो...................................

गुणों अरु ज्ञान की मूरत, सूरत दिल में बसी मेरे।
हुये ''सुखदेव'' हम तेरे, करो जो तुम कर पाते हो।
नजरिया डाल दो...................................

भजन

गुरुवर से प्रेम हुआ साँचा

तर्ज : दीन दयाल दया करके.........

गुरुवर से प्रेम हुआ साँचा, दुनिया के प्रेम का करना क्या।
चरणामृत पीकर अमर हुई, विषया रस पीकर मरना क्या ।। टैर ।।
गुरुवर से प्रेम........................

जग में सुख मान बहुत भटकी, बैचेन रही, नहीं चैन मिला।
जब चैन गुरु के चरणों में, फिर दुनियाँ के पग परना क्या ।। 1 ।।
गुरुवर से प्रेम........................

धन दौलत देह कुटुम्बी सभी, बह जायेंगे बहने वाले।
गुरुदेव सदा रहने वाले फिर, झूँठे जग का शरना क्या ।। 2 ।।
गुरुवर से प्रेम........................

ये छूटने वाले छूटेंगे, अरु रूठने वाले रूठेंगे।
पुनि टूटने वाले टूटेंगे, चिन्ता की आग में जरना क्या ।। 3 ।।
गुरुवर से प्रेम........................

सतसंगत संतन की करके, जब आतम ज्ञान विचार मिला।
परमानन्द पाकर मौज भई पुनि कूसंगत में गिरना क्या।। 4 ।।
गुरुवर से प्रेम........................

ब्रह्मज्ञान के सागर में नहावें, जग ताल तलैया तरना क्या।
'सुखदेव' मिले सुख सागर में, अब जनम मरण से डरना क्या ।।5 ।।
गुरुवर से प्रेम........................

भजन

प्रेम व्यथा (प्रश्न)

क्यों प्रिय नैनन नीर टरे रे।

है किम बात छिपावत क्यों करि, सत्य कहो दिल जात जरे रे।।टैर।।

गाल पे सुन्दर औस से मोती, रह रह अँसुवन जात ढरे रे ।। 1।।

चाँद सा मुख, मृग नयन सलोने, जाह्नवी के सम जात बहे रे।।2।।

क्या उर बीच लगा कोई काँटा, तिनते शोक अपार करे रे।। 3।।

मों से भूल भई कछु खोया, कहत नहीं क्यों वचन खरे रे ।।4।।

कह ''सुखदेव'' कहो हो निर्भय, सुनहुँ तभी मन धीर धरे रे ।।5।।

भजन

निर्मल प्रेम (उत्तर)

यों मम नैनहु नीर टरे रे।

प्रेम प्रवाह बहे उर अन्दर, जब छलकत तब नयन भरे रे।। टेर।।

गागर बीच समाया सागर, प्रेम पयोधिहु फूट परे रे ।।1।।

नैन ससीम रु प्रेम असीमहु, प्रीतम प्यार अपार झरे रे ।। 2।।

हर्ष न शोक कछु दुःख नाहीं, प्रेम के सागर जाय गरे रे ।। 3।।

मो सम प्रीत भई सोई जाने, निर्मल चित्त ये भाव धरे रे ।।4।।

कह ''सुखदेव'' बने नहीं कहना, पागल हो जग में विचरे रे ।।5।।

भजन

प्रेम बिना सब निष्फल

प्रेम बिना जग में सुख नाहीं।

जप, तप, दान, तीरथ, गुरु सेवा, प्रेम बिना सब निष्फल भाई।।टैर।।

प्रेम को पाय पशु पक्षीन भी, नर तेरे काज में होत सहाई ।। 1।।

दुर्जन नर सज्जन बन जावे, नर से नारायण बन जाई ।। 2।।

प्रेम बिना जीवन है नीरस, प्रेम बिना राक्षस बन जाई ।। 3।।

तन, जग में नेह मोह पहिचानो, गुरु हरि से नेह प्रेम कहाई ।। 4।।

साधू, संत, ऋषि, मुनि, सद्गुरु, प्रेम के वश रहते नित साँई ।। 5।।

सब जग जीव जान निज आतम, आपस में नित प्रेम बढ़ाई ।। 6।।

कह ''सुखदेव'' प्रेम सब राखो, सर्व जगत की होत भलाई ।। 7।।

भजन

(कामभाव व प्रेम भाव में अंतर)

तर्ज– कह देना उधो इतनी सी.....

कामभाव अरू प्रेम भाव में, अंतर है बड भारी।
समझें कोई विरला, अद्भुत बात हमारी ।। टेर।।

काम में राग, प्रेम में त्याग है, इक बांधे इक तारी।
काम भाव सुख चाहवे हमेशा, प्रेम सकल सुख वारी।। १।।

प्रेमी से बस लेना ही लेना, कामभाव व्यभिचारी।
प्रेम भाव में देना ही देना, जैसे पतिव्रत नारी ।। २।।

अंत कामरस देत निरसता, प्रेम सरस उपकारी।
कामी काम निकाले पर, प्रेमी परकाज सुधारी।। ३।।

आतमभाव प्रेमवश बरते, जीवन होय सुखारी।
जो ''सुखदेव'' कामवश बरते, दुःख पावे संसारी।। ४।।

भजन

अव्यक्त प्रेम

प्रेम की बात कहूँ मैं कैसे,

प्रीत भई प्रीतम से साँची, कह ना सकूँ दिल हो गया ऐसे।। 1।।

है जो अव्यक्त, व्यक्त करूँ, किस विधि, गर्भ शिशु ज्यों अन्तर पेसे।।2।।

लिख, पढ़, कह, सुन, क्या समझाऊँ, हो मुझ सा लखे अनुपम रहसे ।।3।।

नाहीं ढिंढोरा ना कछु ज्ञापन, है मुझ में जैसे का तैसे ।। 4।।

मन, मति, वाणी, मूक भई सब, प्रेम नयन कहते कुछ जैसे।। 5।।

कह ''सुखदेव'' लखे कोई प्रेमी, मोहित के उर कबहूँ न टैसे ।।6।।

भजन

प्रेम योग

प्रेम का रुप लखे कोई योगी,

दीप पतंग से हो कोई प्रेमी, क्या जाने विषयों के भोगी ।। टैर।।

ज्यों सरिता का नाम न रुपा, जब जायहु सागर में खोगी।। 1।।

काँच किरंच पे मरने वाले, क्यों कर हीरे पाये रे लोभी ।। 2।।

नित्य, प्रकाश, विमल, सुखकारी, तहाँ न कछु संयोग, वियोगी।।3।।

ज्ञान रु कर्म प्रेम बिना फीके, सदा शान्ति सत प्रेम से होगी।। 4।।

प्रेम हरि, हरि प्रेम स्वरूपा, यह जिन जाना भये निरोगी।। 5।।

है 'सुखदेव' प्रेम सुख सागर, जहँ नहीं भय, दुःख शोक रु रोगी।।6।।

प्रेमी प्यारा रे
ताल– धमाल

हाँ रे प्रमी प्यारा रे।
प्रण राखे दे प्राण, प्रेम हित जीवन वारा रे ।। टैर।।
प्रेमी प्यारा रे.........................
देख परेवी[1] फँसी जाल में, मरे परेवा[2] लारा रे।
डरने का क्या काम प्रेम हित मौत स्वीकारा रे ।। 1।।
प्रेमी प्यारा रे.........................
देख श्याम घन[3], मोर, प्रेम से, पीहु-पीहु करत पुकारा रे।
मोर पंख घनश्याम शीश पर प्रेम से धारा रे ।। 2।।
प्रेमी प्यारा रे.........................
देश प्रेम हित देश भक्त वीरों ने प्रण नहीं हारा रे।
देकर के बलिदान किया जग जय - जयकारा रे ।। 3।।
प्रेमी प्यारा रे.........................
जल बिन मछली, स्वाति नीर बिन प्राण पपीहा वारा रे।
खावे आग चकोरा, चातक चन्द्र निहारा रे ।। 4।।
प्रेमी प्यारा रे.........................
कह 'सुखदेव' गुरु पद पंकज, शीश काट जिन डारा रे।
वो है सच्चे शूर, जिन्होनें मौत को मारा रे ।। 5।।
प्रेमी प्यारा रे.........................

कबूतरी[1], कबूतर[2], बादल[3]

भजन

मांगे केवल प्यार तेरा

तर्ज– बस्ती बस्ती नगरी–नगरी गाता जाये बंजारा

बहुत प्रतीक्षा हुई नाथ, अब दिखलादे दीदार तेरा।
मांगे केवल प्यार तेरा – प्यार तेरा ।। टैर।।

सोना, चाँदी, हीरे, मोती, धन दौलत या धाम कोई।
महल अटारी मांगन हारा, होगा नमक हराम कोई।।
तन भी तेरा, मन भी तेरा, खुशियों का संसार तेरा ।। 1।।
मांगे केवल...........

ख्याति, प्रतिष्ठा, नाम न चाहिये, ना चाहिये सुत वाम कोई।
स्वर्ग और मुक्ति नहीं चाहिए, ना चाहिये सुखधाम कोई।।
देना हो तो खुद को दे दो, मानेंगे उपकार तेरा।। 2।।
मांगे केवल...........

सबका है तो मेरा भी है, बनता यों अधिकार मेरा।।
जन ''सुखदेव'' अतः बिन देखें, छोड़े ना दरबार तेरा।।
दीन दयाल दया करि आना, कब से है इन्तजार तेरा ।।3।।
मांगे केवल...........

भजन

राग – आसावरी

मेरे, गुरु रहत प्रेम के वश में।
धार समत्व, रमत्व, सर्वहित, प्रेम दृष्टि सरवस में।।टेर।।

आधि, व्याधि, उपाधि हरण है, शब्द बाण तरकस में।
शिक्षण,रक्षण करत मातृवत, जोश भरे नस–नस में।।१।।

राग–दोष कछु रोष न तोषहि, मगन रहे हरि रस में।
मानामान, सुख दुःख द्वंद्व पुनि,अविचल यश–अपयश में।।२।।

मन रंजन, व्यंजन, पुनिअंजन, रीझत नहीं वरचस[1] में।
ताके वश "सुखदेव" रहे नित, पूर्ण प्रेम अंतस में।।३।।

वरचस[1]= वर्चस्व

भजन – विरह

राग–आसावरी

सखी री मोहे जक न परत दिन रैन ।
पीव बिनु हिय तरफत जानहु ज्यूं, जल बिन मछ बैचेन।।टेर।।

बाट जोय रो रोय पुकारूं, कौन सुने मम बैन ।
मैं दर्शन बिन भई रे बावरी, अश्रु ढरत दोऊं नैन ।।१।।

मो कूं तज कित गये द्वारिका, काशी या उज्जैन ।
प्राण हमारे प्राण प्रिय संग, पल भर परत न चैन ।।२।।

उनहु के गुण कबहुं न भूलहुं, आय बतावे सैन ।
जन "सुखदेव" प्यार प्रीतम संग , जग से लेन न देन ।।३।।

भजन

प्रेम में डूबे चतुर सुजान

(दोहा)

डूबे सो बोले नही, बोले सो अनजान।
प्रेम समध गहरो अति, डूबे चतुर सुजान।।

प्रेम में डूबे चतुर सुजान।
डूबे बिरले संत, भक्त खुद प्रेम सिन्धु भगवान।।टैर।।

भौतिकता के आकर्षण में काम, क्रोध, मद, लोभ रहे।
गुरु पद परम प्रीति हो जब ही, चित निर्मल निर्दोष रहे।।
प्रेमी को नहीं रहे प्रेम में ऐश्वर्य का ध्यान।।
प्रेम में डूबे चतुर..........।।१।।

ज्ञान भये अज्ञान गये, निज आनंद नित्य अखण्ड बहे।
जिज्ञासा पुनि शोक मिटे पर प्रेम प्रवाह प्रचंड रहे।।
पल-पल वृद्धिगत परम प्रेम में अष्ट पहर गलतान।।
प्रेम में डूबे चतुर.........।।२।।

दो से एक एक से दो बन, अद्‌भुत लीला करते हैं।
चरम दृष्टि से भेद न पावे, मूरख पचि-पचि मरते हैं।।
सहज क्रिया हो कर्म न करता, ज्ञे ज्ञाता नहीं ज्ञान।।
प्रेम में डूबे चतुर.........।।३।।

कमी दिखे आनंद भी आये, यही अनिर्वचनियता है।
होय अभिन्न परस्पर बरते, प्रेमी में ही प्रियता है।।
डूब रहा ''सुखदेव'' क्या बोले, बोले सो अनजान।।
प्रेम में डूबे चतुर..........।।४।।

भजन

राग– मारवाड़ी

मेरे सतसंग मन भावे रे।
निश दिन राम चरण चित लागा, और न चावे रे ।। टैर।।
खर से नर, नर से नारायण, रुप बनावे रे।
तीनों ताप मिटाय जीव की, जलन बुझावे रे।। 1।।

सद्‌गुरु, संतन की सेवा में, आनन्द आवे रे।
आतम रुप लखाकर, आवागमन मिटावे रे ।। 2।।

जाति वर्ण, मत, पंथों का, सब भेद मिटावे रे।
माया, जीव, जगत, ईश्वर का मर्म बतावे रे।। 3।।

एक अनेक, अनेक में एकहि रुप दृढ़ावे रे।
कह ''सुखदेव'' जीव सुखसागर मांहि समावे रे ।। 4।।

भजन

तर्ज– झीणी झीणी उड़े रे...

झीणा झीणा मिले ब्रह्म ज्ञान, गुरु सा के सतसंग में ।। टैर।।

आवे रे कई भक्त जिज्ञासु, हरि दर्शन के प्रेम पिपासु।।
कर रहे हरि रस पान, गुरु सा के सतसंग में ।। 1।।

संत कई विद्वान पधारे, सुनके ज्ञान हृदय में धारे।
हो जावे कल्याण, गुरु सा के सत्संग में ।। 2।।

गावे भजन वाणियाँ बोले, भिन्न – भिन्न कर अर्थ हि खोले।
नाशे भरम अज्ञान, गुरु सा के सतसंग में ।। 3।।

ढोलक, झांझ, मजीरा बाजे, सुन मन मयूर मस्त हो नाचे।
गाय रहे गुणगान, गुरु सा के सतसंग में ।। 4।।

हो 'सुखदेव' हृदय में भक्ति, जाग उठे पुनि आतम शक्ति।
मिल जावे भगवान, गुरु सा के सतसंग में ।। 5।।

भजन

तर्ज– म्हारे गुरुदेव घर आया रे

सतसंग निज हॉस्पिटल में, गुरु वैद्य बड़े होशियार।
जो जन्म मरण के रोगी, वो करवाले उपचार ।। टेर ।।

रोगी हो वो आवे, अरु सांची बात बतावे।
नहीं कुछ भी बात छिपावे, दे औषध सही विचार ।। 1 ।।

दवा कान से लीजे, फिर पच्च परहेज से रीजे।
हो अभय जुगों जुग जीजे, नर समझ यथारथ धार ।। 2 ।।

जब शल्य चिकित्सा चाले, रह अडिग जरा मत हाले।
महा रोग की गाँठ निकाले, दुःख शोक मिटे चित्कार ।। 3 ।।

है वैद्य परम उपकारी, कई जीवन दिया सुधारी।
'सुखदेव' मिले सुख भारी, बोलो मिल जय-जयकार ।। 4 ।।

भजन

तर्ज– घूमर

म्हाने सतगुरु ज्ञान सुणाव य माय, सत री संगत मांहि म्हे जास्या ।।टेर ।।

राम नाम का लावा लेस्याँ, हिलमिल प्रेम बढास्याँ ये माय ।।1 ।।

मात पिता, गुरु संत जनों की, सेवा कर सुख पास्याँ ये माय ।।2 ।।

काम क्रोध, मद, मोह, लुटेरा, सबने ही मार गिरास्याँ ये माय ।।3 ।।

संत गुरा न शीश नवास्याँ, पाप गठरिया गिरास्याँ ये माय ।।4 ।।

कह ''सुखदेव'' छोड़कर कूसंग, ज्ञान गंग में नहास्याँ ये माय ।।5 ।।

भजन

तर्ज– सुन ऊधो प्यारे कर कोनी जाणी प्रीत

सतसंग से प्यारे प्रेमी परम सुख पाय।
ऊपजे प्रेम हृदय में भारी, जन्म सफल हो जाय।। टेर।।

कोटि कल्प का बंधन छूटे, पाप रु ताप नशाय।
जीव बने शिव, भूल मिटे, पर ब्रह्म स्वरुप समाय।। 1।।

उलझी कोटि गुत्थियाँ सुलझे, जब गुरु शब्द सुनाय।
कामना, ममता, अहं स्पृहा, देवे सकल मिटाय ।। 2।।

संतन की सेवा शोभत से, हृदय ज्ञान प्रकटाय।
संत समागम बिन तिरने का, है नहीं और उपाय।। 3।।

जो सत्संग करे सुख पावे, बहुरि जन्म नहीं आय।
कह 'सुखदेव' शंक मत करिये, संत ग्रन्थ फरमाय।। 4।।

भजन–सत्संग महिमा

तर्ज– ऊधो म्हाने प्यारी लागे जी.......

सत्संग बेचारे जीव को, शिव रूप पलक में करदे।
देकर ब्रह्म विचार फाड़ दे, मोह माया के परदे।। टेर।।

जो चाहवे कल्याण प्रेम से, गुरु चरणां सिर धरदे।
अहम् बहम सब भरम मिटा, निज ज्ञान हृदय में भरदे।। 1।।

चन्दन करे सुगंध सभी, कुगंध बनी की हरदे।
पारस परस भयो लोह कंचन, संत आप सम करदे ।। 2।।

पंच भेद सब खेद हरे, सब प्रश्नों के उत्तर दे।
आतम तत्व लखाकर साँचा, अटल अचल निज घर दे ।। 3।।

परम पिया से भेंट करावे, अजर अमर प्रिय वरदे।
कह "सुखदेव" करो सत्संगत, भवसागर से तरदे।। 4।।

भजन

सत्संग में आने का मजा

तर्ज- कव्वाली

प्रेम भाव से सत्संग में, आने का मजा कुछ और ही है।
सद्‌गुरुचरणों में परमानन्द, पाने का मजा कुछ और ही है ।। टेर।।
बीड़ी कई सिगरेट पीवे, कई गांजा भांग पीवे लाकर।
कई व्यर्थ वितण्डा वाद करे, संतो का खून पीवे आकर।
ब्रह्म ज्ञान सुधा रस का प्याला, पीने का मजा कुछ और ही है।। 1।।

कोई धन पाकर के मस्त हुआ, कोई नारी संग अलमस्त हुआ।
कोई यश पाकर, षट् रस पाकर, कोई देह श्रृंगार में मस्त हुआ।
यह नर तन पा परमातम को पाने का मजा कुछ और ही है।। 2।।

कई त्रेत की तिकड़म को चाहवे, कोई द्वैत के धौरों में नहावे।
कोई द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत, कई तीरथ ठोरों में नहावे।
वेदान्त ज्ञान के सागर में, नहानें का मजा कुछ और ही है।। 3।।

कोई राग, रागनी गाने में, कई माहिर भजन सुनाने में।
उपदेश सुनाने मे माहिर, कई माहिर साज बजाने में।
पर प्रेम में पागल हो हरि गुण गाने का मजा कुछ और ही है ।। 4।।

मात, पिता, सद्‌गुरु सेवा, चाहने का मजा कुछ और ही है।
अपराधी चोर उच्चकों को, थाने की सजा कुछ और ही हैं।
यम दूत के टाट पे जूत पड़े, खाने की सजा कुछ और ही है।। 5।।

नर जीवन को औरो के लिये, जीने का मजा और कुछ और ही है।
पर ब्रह्मज्ञान से भरम ज्ञान, ढहाने का मजा कुछ और ही है।
''सुखदेव'' ज्ञान बिन चौरासी जाने की सजा कुछ और ही है।। 6।।

भजन

राम रस पीना आनंद से जीना

सतसंगत में आकर के, सद्‌गुरु शरणे जा करके।
मानव तन को पाकर के, बस एक काम नित किया करें।
राम नाम रस पिया करें, सदा खुशी से जिया करें।। टेर।।

सतसंगत में आकर के ....

संध्या सुमिरन करना है, मृत्यु से नहीं डरना है।
भवसागर से तरना है, फिर एक काम तो किया करें।
सार-सार को लिया करें, सदा खुशी से जिया करें।। 1।।

सतसंगत में आकर के ....

एक बात फिर कहना है, कष्ट पड़े तो सहना है।
मिलजुल करके रहना है, पर एक काम नित किया करें।
दुखियों को सुख दिया करें, सदा खुशी से जिया करें।। 2।।

सतसंगत में आकर के ....

संतों का सम्मान करें, परमातम का ज्ञान करें।
'सुखदेवा' कल्याण करें बस एक काम तो किया करें।
आतम पद में रिया करें, सदा खुशी से जिया करें।। 3।।

सतसंगत में आकर के ....

भजन

संतों की विलक्षण रहनी

तर्ज–चल हंसा उण देश

संत की रहनी को कोई जाने संत सुजान।
मूरख लोग मर्म नहीं जाने, भटकत फिरे अजान।। टैर।।

कबहूँ भजन वाणियाँ बोले, ईश्वर, जीव, जगत को तोले।
कबहू मौन नहीं मुख खोले, समता धार जगत में डोले।
कभी खुद जाकर दे ज्ञान।। 1।। संत की रहनी..................

कबहू बिना बुलावै आवे, कबहूँ बुलावे तो नहीं आवे।
कबहू आप लेय कर खावें, कबहूँ थाल सजा तज धावें।।
रहे प्रेम के वश भगवान।। 2।। संत की रहनी..................

कबहूँ उमंग हृदय भरि नाचें, कबहूँ जाय जिज्ञासुन जाँचें।
कबहू शास्त्र किताबें बाँचें, कबहूँ किंचित मन नहीं राचें।
कभी गावें हरि गुणगान।। 3।। संत की रहनी..................

कभी स्तुति निन्दा सुन भागे, कबहूँ दोनों में मन लागे।
कबहु गावे नारिन के सागे, कबहूँ अकेला पीछे न आगे।।
ब्रह्म दृष्टि सकल जहान।। 4।। संत की रहनी..................

कभी तीरथ मूरत नहीं भावे, कभी नहावे कभी शीश झुकावे।
कबहूँ सरगुण राम बतावे, कबहूँ निर्गुण तत्व लखावे।।
कभी आप ही ब्रह्म कहान।। 5।। संत की रहनी..................

कबहूँ क्षमा दया दिल धारे, पास बिठा दे प्यार दुलारे।
कबहू क्रोधित हो फटकारे, अहं अरु अभिमान संहारे।।
दे निज भक्तन हित प्राण ।। 6।। संत की रहनी..................

ज्ञानी की गति ज्ञानी ही जानी, अगम अगोचर है निर्बानी।
बिरला साधु संत पिछानी, सुखसागर ''सुखदेव'' समानी।।
निज आतम में गलतान।। 7।। संत की रहनी..................

भजन

सच्चे सद्गुरु के लक्षण

राग– आसावरी

सद्गुरु साँचा, ब्रह्म लखावे
शीतल हो, समदृष्टि, दयालु ब्रह्म निरन्जन ध्यावे।। टैर।।

मान, प्रतिष्ठा, भेंट न चाहवे, न कोई शिष्य बनावे।
देकर ज्ञान मुमुक्षुजनों को, घट में राम दिखावे।। 1।।

कहनी जैसी रहनी है, नहीं नकली भेष धरावे।
दुर्व्यसनी, कामी, अरु क्रोधी, नरकों में ले जावे।। 2।।

ज्यां घट प्रेम, ज्ञान, प्रभु भक्ति, संशय सकल मिटावे।
ईश्वर, जीव, जगत का, तात्विक अर्थ खोल समझावे।। 3।।

हूँ ''सुखदेव'' दास मैं उनका, पाँचो भेद नशावे।
जग मिथ्या, सत् ब्रह्म, जीव को एक ही रूप दृढ़ावें ।। 4।।

सत्संग महिमा

तर्ज – सदा सत्संग की महिमा

अगर दिल चैन चाहते हो, सदा सतसंग करि भाई।।टैर।।

मिले दुर्व्यसनों से मुक्ति, पलट दे जीवन की धारा।
समुन्नत वंदनीय होवे, विमल सब अंग करि भाई।।१।।

शिष्टता, शील, गुरु भक्ति, दया संतोष प्रगटावे।
रखे मन राम के सन्मुख, जगत से असंग करि भाई।।२।।

विपरय, संशय हर के, करे ब्रह्म रूप में स्थित।
शोक, भय, भेद, सब नाशे, हृदय उमंग भरि भाई।। ३।।

गुरु ब्रह्मनिष्ठ, श्रोत्रिय, वेद सिद्धांत समझावे।
एक ''सुखदेव'' ब्रह्म लखकर, द्वैत मति भंग करि भाई।।४।।

भजन

सच्चे संत
राम– आसावरी

जग में संत बड़े उपकारी
दुःख दे उनको भी सुख देवे, शीतल परम सुखारी।। टैर।।
पर्वत डाल किया जल मन्थन, सागर वक्ष दुःखारी।
चौदह रत्न दिये बदले में, साक्षी है त्रिपुरारी ।। 1।।
जग में संत.........................

सीपी मर के दे निज मोती, वृक्ष, फूल, फल, डारी।
निन्दा कटु वचन सहकर भी, दुर्जन का दुःखटारी।। 2।।
जग में संत.........................

पारस करे लोह घन कंचन, चोट सहे बहुभारी।
मेहन्दी पिसकर लाली दे त्यों, देकर ज्ञान उबारी।। 3।।
जग में संत.........................

प्राण तजे, नहीं तजे बुराई, दुर्जन नर अरु नारी।
संत भले नहीं तजे भलाई, दया, क्षमा, घट धारी ।। 4।।
जग में संत.........................

ऐसे संतन के चरणन में, जीवन है बलिहारी।
'सुखदेवा' प्रणाम करूँ नित, भगवत रूप निहारी।। 5।।
जग में संत.........................

भजन

शूरा संत

राग- हरियाणवी

शूरा संत अनंत प्रभू का, नाम रसायन पीते है।
जान हथेली पर रख कर के, औरों के हित जीते हैं ।। टेर।।
नेकी कर दरिया में डाले, प्रभुता पाय कोई मद ना।
ज्योति से ज्योति जलादे घट-घट, प्रेम बढ़े जिसकी हद ना।।
अंगारों पर चले पैर रख, अंगारे ही पीते हैं।।1।।
जान हथेली.....................
मुँह में राम बगल में छूरी, उनके घोड़े थकते है।
एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रख सकते हैं।।
साँचे राचे राम गुरु पद, जो भजते प्रीतिते हैं।। 2।।
जान हथेली.....................
दर-दर की ठोकर खावे नर, जनमों में पापड़ बेले।
राह दिखावे भूलों को, निज सीने पर पत्थर झेले।
जग में दीप जलाकर के, नित घट-घट के पट सीते है।। 3।।
जान हथेली.....................
क्रोधादि से लोहा ले, नहीं रण में पीठ दिखाते हैं।
मूंग दले छाती पर रिपु के, नाकों चने चबाते हैं।।
लगा ठिकाने शत्रु को, गढ़ जीते, ना भयभीते हैं।। 4।।
जान हथेली.....................
आग लगादे पानी में जो, पर्वत को राई कर दे।
दूध का दूध पानी का पानी, गागर में सागर भर दे।।
चैन की बंशी बजे उर में, पर निगुरों के घट रीते हैं।। 5।।
जान हथेली.....................
साँप मरे लाठी नहीं टूटे, थाह अथाह की पाते हैं।
सिंह के कान कतर के, जय का डंका संत बजाते हैं।।
''सुखदेवा'' संतों का जीवन परमारथ में बीते हैं।। 6।।
जान हथेली.....................

पुस्तक में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ ! मुहावरें एवं उनके अर्थ :-

1. जान हथेली पर रखना :- जिन्दगी की परवाह किए बिना खतरनाक कार्य करना।
2. नेकी कर दरिया में डाले :- दूसरे की भलाई करके उसे भूल जाना एवं दूसरे से उसके प्रतिदान की अपेक्षा नहीं करना।
3. प्रभुता पाहि कोहि मद नाहि :- उच्च पद प्राप्त करके जिसे घमण्ड नहीं होता।
4. ज्योति से ज्योति जलाना :- एक से अनेकों का निर्माण।
5. अँगारे पर चलना :- संकट पूर्ण कार्य करना।
6. अँगारे पीना :- कटु वचन एवं प्रतिकूलताएँ सहन करना।
7. मुँह में राम बगल में छूरि :- कपट पूर्ण व्यवहार।
8. घोड़े थकना : हार मान लेना।
9. एक म्यान में दो तलवारें नहीं रहना :- एक ही स्थान पर दो समान वर्चस्व वाले प्रतिद्वन्द्वी नहीं रहना।
10. साँचे राचे राम :- सत्य के साथ भगवान।
11. दर दर की ठोकरें खाना :- बहुत कष्ट उठाना।
12. पापड़ बेलना : दीर्घ समय तक दुःख पाना।
13. सीने पर पत्थर झेलना :- अविचलित भाव से औरों के कष्टों को अपने ऊपर लेना।
14. लोहा लेना :- डटकर मुकाबना करना।
15. पीठ दिखाना :- मैदान छोड़कर भगना।
16. छाती पर मूँग दलना :- निरन्तर कष्ट देना।
17. नाकों चने चबाना :- बहुत कष्ट देना।
18. शत्रु को ठिकाने लगाना :- मार गिराना।
19. गढ़ जीतना :- विजय प्राप्त करना।

20. पानी में आग लगाना : असम्भव को सम्भव करके दिखाना।

21. पर्वत को राई करना :- विशाल कठिनाइयों को सरलतम करना।

22. चैन की बंशी बजना :- सदा आनन्द ही आनन्द।

23. साँप मरे लाठी भी ना टूटे :- बिना नुकसान उठाये कार्य सफल करना।

24. थाह पाना :- यथार्थ को जानना, गूढ़ रहस्य को जानना।

25. गागर में सागर भरना :- थोड़े शब्दों में अधिक समझाना।

26. जय का डंका बजाना :- विजय श्री प्राप्त करना।

27. सिंह के कान कतरना :- अधिक चतुर होना।

28. दूध का दूध पानी का पानी :- सही न्याय करना।

29. आँखों का तारा :- परम प्रिय होना।

30. आँखों की किरकिर :- मन से उपेक्षित।

31. आँख चुराना :- आँख बचाना।

32. आँख फिराना :- उपेक्षा करना।

33. आँख दिखाना :- रोब मारना।

34. आँखों में धूल झोंकना :- धोखा देना।

35. आँखें बिछाना :-प्रेमपूर्वक स्वागत करना।

36. आँखे खुलना :- सजग होना।

37. आँखों में खून उतरना :- बहुत क्रोध में होना।

38. आँखों में चरबी छाना :- घमण्ड होना।

39. आँखों से गिरना :- किसी का विश्वास खो देना।

40. अँगूठा दिखाना :- मदद करने से मना कर देना।

भजन

सत्संग महात्म्य

काम भलो तूं नट मत रे, सतसंग में चालां झटपट रे
ब्रह्मज्ञान सुण ला डट, जाये लख चौरासी कट
फटाफट फट-फटाफट फट रे साथीड़ा
अमृत बरसे मोकळो ।। टेर ।।

विषय भोगां में फँसकर, कांई जी-म पूवा पापड़ी।
जनम जनम में जमड़ा, छाती में रांधे राबड़ी।।
गुरु शरणां होजा झट, नहीं जम मारेला लठ।
बटाबट बट, बटाबट बट रे साथिड़ा अमृत बरसे मोकळो ।। 1 ।।
काम भलो....................

बिन ज्ञान पड़ला फोड़ा, बण जास्यो गाजी ऊँटड़ा।
छगड़ा में भार घणेरो, वैषाख का तपता टीबड़ा।।
फिर करो अल्डाटा डट, जद प-ड़ कामड़ी सट
सटासट सट, सटासट सट रे साथिड़ा अमृत बरसे मोकळो ।। 2 ।।
काम भलो....................

दुर्गुण न दूरां करके, सद्गुण का भरस्या कोठळा।
सन्ता न शीश नवाया, पापां का पड़सी पोटळा।।
''सुखदेव'' छोड़ दे हट, अब लारे होजा झट
फटाफट फट, फटाफट फट रे साथिड़ा अमृत बरसे मोकळो ।। 3 ।।
काम भलो....................

भजन

तर्ज– बनी का मोरिया

सतसंगत ने छोड़कर मत कुसंगत में जाय,

प्रभु का नाम लेरे थारो भव दुःख टारे रे थारो भव दुःख टारे रे ।।टैर।।

डूबतड़ो गजराज भज्यो जद, ग्राह सूं लीन्यो रे बचाय।।1।।

प्रहलाद बचा हिरणाकुश मारे, ले नरसिंह अवतार ।।2।।

ध्रुव भज्यो वन मांयन, कर कृपा दियो सुख धाम ।।3।।

मीरां बाई हुई दीवानी, विष अमृत कियो डार ।।4।।

राम भक्त हनुमान जी, ज्याने जाणें सब संसार ।।5।।

कह ''सुखदेव'' गुरू चरणां में, तन मन धन दियो वार।।6।।

भजन

आनंद आया रे

राग – मारवाड़ी

प्यारे सतगुरु की सत्संग में भारी आनंद आया रे।
आनंद आया रे ज्ञान का रंग बरसाया रे।। टेर।।

बोले बैन नैन मम खोले सैन बताया रे।
ऐन केन मिट गई रैन, दिल चैन छवाया रे।। १।।

तजा कुसंग, कुढंग, प्रत्यंग, सुरंग लगाया रे।
धार सुसंग, सुढंग, उमंग से गंग नहाया रे।। २।।

पंथ अनंत का तंत बता, जग कंत लखाया रे।
शोक हनंत, गिनंत कहां गुण, अंत न पाया रे।। ३।।

कोहम ? सत्य शिवोहम्, सोहम रूप दृढ़ाया रे।
है ''सुखदेव'' एक नहीं दोहम, वो हम पाया रे।। ४।।

भजन

तर्ज – सदा सत्संग की महिमा.....

सदा सत्संग करने से जिंदगी मस्त रहती है।। टैर।।

युक्ति व्यतिरेक – अन्वय से, सतासत् का करे निर्णय।
नित्य स्वाध्याय, सेवा में, जिंदगी व्यस्त रहती है।। १।।

जले घट ज्ञान के दीपक, बहे नित प्रेम की गंगा।
शोक, मोह चिंता अरु भय की, तो हालत खस्त रहती है ।। २।।

पाप, त्रिय ताप हर पल में, करावे बोध आतम का।
चिदानंद, साक्षी लख सोहम, खुशी जबरदस्त रहती है।। ३।।

ब्रह्मातम एक बतलावे, जगत को झूठ दर्शावे।
करे निज रुप में स्थित, वृत्ति अलमस्त रहती है।। ४।।

बने विद्वान ब्रह्म ज्ञानी, सर्व हित मुक्त हो विचरे।
कहे ''सुखदेव'' उन सन्मुख, मौत भी पस्त रहती है।। ५।।

भजन, तर्ज – सदा सत्संग करने से..

सदा सत्संग करने से, परम पद पाएगा भाई।। टैर।।

दोष त्रय अंतः करण भीतर, मिटावे वासना सारी।
फांस चौरासी की काटे, भरम गढ़ ढहाएगा भाई।। १।।

श्रीमद् भागवत वाणी, वेद सद्शास्त्र सब टेरे।
मिले निज ज्ञान से मुक्ति , हर्ष अति छाएगा भाई।। २।।

बतावे मोक्ष का मार्ग, लखावे रूप ईश्वर का।
परम दुख जाय जीवन से, परम सुख आएगा भाई।। ३।।

देय पंच भ्रांति टारन को, प्रबल वेदांत की युक्ति।
जान ''सुखदेव'' ब्रह्म सोहम, सदा मुसकायेगा भाई।। ५।।

भजन

राग– पारवा

भाई सतसंगत में आयके, क्यों बिरथा मूण्ड पचावे।। टैर।।
मूरख सभा में ऐसे कड़के, जैसे चना भाड़ में भड़के,
सन्तो से शठ जावत लड़के, पी दारू चिलम लगायके,
जन बेसुध हो बरड़ावे।।१।। क्यों बिरथा.........

गुरु ज्ञान की चाली चकरी, भागे पूंछ दबा ज्यों बकरी,
आपहि जाल फंसी अब मकरी, मुख म्याऊँ जेहि बनायके,
सब दाँत होठ चिप जावे।।२।। क्यों बिरथा........

अभिमानी दिल धक-धक धड़के, ले गुरु शरण चरण मंहि पड़के,
पूछें प्रश्न पुनः बेधड़के, देवे सब शंक मिटायके,
खुशियों के कमल खिलावे।। ३।। क्यों बिरथा.........

सत्संग पाप विनाशिनी गंगा, जो जन न्हावे हो मन चंगा,
चले निरंतर कथा प्रसंगा, श्रवण करे चित लायके,
''सुखदेव'' परम पद पावे।।४।। क्यो बिरथा........

भजन, तर्ज– हुई सफल कमाई महाराज

सतसंग सर्व सुख खान जगत में भाई।
मेटहि सब सशंय शोक पलक के मांहि।। टैर।।

चाहे जप तप करले, दान यज्ञ सुर पूजा।
पर मोक्ष का साधन, ज्ञान बिना नहीं दूजा।। १।।

महाऋषि, मुनि, अवतार, संत जन टेरे।
सद्ग्रंथ सर्व मत पंथ, साख सब दे रे।। २।।

जग, माया, ईश्वर, जीव बंध क्या मुक्ति।
सब मर्म बतावे सहज, सरलतम युक्ति।। ३।।

सुन महावाक्य के बैन, लखे गुरु सैन, चैन चित छावे।
''सुखदेव'' पलटके जीव परमपद पावे।। ४।।

उपदेश – चेतावनी विभाग
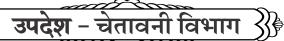
दोहे

सद्गुरु आवत देखि के, करि मन चरण प्रणाम।
सेवा करि–करि पाइये, 'सुखदेवा' सुख धाम।। 1।।
सद्गुरु आवत देखि के, हे मन ! मग मत टाल।
मग टाले मुक्ति टले, गिरे चौरासी नाल ।। 2।।
सद्गुरु शरणे होय कर, मन बेमुख मत होय।
सन्मुख रह सुख पावसी, 'सुखदेवा' कहि तोय।। 3।।
गुरु चरणन् शुभ आचरण, प्रेम बढ़े भरपूर।
'सुखदेवा' सुखरूप का, घट–घट झलकत नूर।। 4।।
संग्रह अरु जग भोग में, मिला न कछु आराम।
सद्गुरु चरणन् में मिले, जीवन को विश्राम ।। 5।।
मगन रहो हरि प्रेम में, मिटा जगत की काण।
भला बुरा जग जो कहे, लगा इष्ट में प्राण ।। 6।।

श्रद्धेय
अर्जुनसिंहजी महाराज

भजो गुरुदेव सदा

श्रद्धेय
श्री भूरादासजी महाराज

गुरुदेव को रोज प्रणाम करो, मनवा घट ध्यान धर्या कर रे।
श्रद्धा दिल में विश्वास बढ़ा चरणामृत पान कर्या कर रे।।
नित प्रेम बढ़ा अभिमान घटा, गुरुदेव के चरण पर्या कर रे।
''सुखदेव'' भजो गुरुदेव सदा, भव सागर नीर तर्या कर रे।। 1।।
जगदीश के शीश टिका पग में, निर्भय जग में विचर्या कर रे।
निज मात-पिता, वृद्ध, मित्रन को, कर जोरि प्रणाम कर्या कर रे।।
बन सेवक दीन दुःखी निबलों के, संकट कष्ट हर्या कर रे।
''सुखदेव'' भजो गुरुदेव सदा, भव सागर नीर तर्या कर रे।। 2।।
नित साधन भक्ति में ध्यान लगा, मत वाद-विवाद कर्या कर रे।
रह नम्र सुशील रू शान्त सदा, मत क्रोध की आग जर्या कर रे।
घट को शुद्ध और विशाल रखो, ब्रह्मज्ञान का नीर भर्या कर रे।
''सुखदेव'' भजो गुरुदेव सदा, भव सागर नीर तर्या कर रे।। 3।।
नित साधन भक्ति में ध्यान लगा, मत वाद -विवाद कर्या कर रे।
रह नम्र सुशील रू शान्त सदा, मत क्रोध की आग जर्या कर रे।।
घट को शुद्ध और विशाल रखो, ब्रह्मज्ञान का नीर भर्या कर रे।
''सुखदेव'' भजो गुरुदेव सदा, भव सागर नीर तर्या कर रे।। 4।।
घन घोर अज्ञान अंधेरन में, बन ज्ञान का दीप जर्या कर रे ।
घट काम रू क्रोध, मोह रिपु है, तु भयंकर युद्ध लर्या कर रे।।
जब पीठ तेरे गुरुदेव खड़े, यमराज से नाहीं डर्या कर रे।
''सुखदेव'' भजो गुरुदेव सदा, भव सागर नीर तर्या कर रे।। 5।।
निज धर्म अरु निज देश के हित, रण खेत के बीच लड़्या कर रे।
रिपु के धड़ से झट शीश हटा, नित जय की ओर बढ़्या कर रे।
हो भूल यदि अपनी गलती, कर ठीक न भूल अड़्या कर रे।
''सुखदेव'' भजो गुरुदेव सदा, भव सागर नीर तर्या कर रे।। 6।।

भजन

राग – आसावरी

मन तू राम भरोसा कर रे।
दीनदयाल सर्व का रक्षक पालनहार जबर रे।। टैर।।

सिरजनहार जगत के स्वामी, वे है विश्वंभर रे।
चींटी को कण कुंजर को मण, देकर भरे उदर रे।।१।।

चौंच समान हीं चूंण देय, पशु पक्षी कीट अजगर रे।
उनके खेत न हाट बगीचा, तिनका करे गुजर रे।।२।।

बिन विश्वास भटकता दर-दर, मांगत फिरे टुकर रे।
राम सुमिर नित राम प्रभु के, सदा रहो निर्भर रे।। ३।।

जग में आय जगतपति बिसरे, मूरख पचि-पचि मर रे।
करि ''सुखदेव'' गोविंद भरोसा, भवसागर से तर रे।। ४।।

भजन

राग – आसावरी

कर मन राम सगाई सांची।
माला, तिलक, भेष धर चोटी, स्वांग सगाई काची।। टैर।।

जगत रिझावण गाय बजावे, धूम धड़ाकम माची।
ताली पटकम कर-कर मूरख, लोग लुगायां नाची।। १।।

कथा करे आतम नहीं चीन्हा, खोल किताबे बांची।
पूछे बात जीभ चिप जावे, आगी होय न पाछी।। २।।

बैठ भजन में चाय तंबाकू, भर-भर सुल्फी खांची।
जन्म अमोलक व्यर्थ गवावे, राम भक्ति नहीं राची।। ३।।

तज पाखंड, प्रपंच, भेष सब, विषय हलाहल छाछी।
कर ''सुखदेव'' गोविंद गुरु संग, ज्ञान कमाई आछी।। ४।।

भजन

सब साधन संपन्न होय

तर्ज – १. झीणी–झीणी उडे रे........
२. चल हंसा उण देश........

सब साधन संपन्न होय, ज्ञान फिर करिये रे ।।टैर।।
मल, विक्षेप न मात्र अज्ञाना, तत्व पिपासा प्रबल रहाना,
सो उत्तम अधिकारी माना, चैन परे नहीं कोय,
कौन भ्रम हरिये रे ।।१।। सब साधन संपन्न होय........

विवेक, वैराग, षट संपत्ति जानो, मुमुक्षता चव साधन मानो,
सकल संत, सद्ग्रंथ बखानों, ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय गुरु सोय,
शरण जा परिये रे ।।२।। सब साधन संपन्न होय........

ईश्वर से गुरु अधिक कहावे, दृढ गुरु भक्ति हृदय मंहि आवे,
दृष्टादृष्ट दोय फल पावे, पुनि पी चरणामृत धोय,
काज सब सरिये रे ।।३।। सब साधन संपन्न होय........

गुरु ब्रह्मा, हरि, हर, रवि, गंगा, दोष दृष्टि तज रहे नित संगा,
लगा चरण रज उत्तम अंगा, तन मन धन वचन संजोय,
सेवा चित्त धरिये रे ।।४।।सब साधन संपन्न होय........

खुश होकर महावाक्य सुनावे, सच्चिदानंद स्वरूप बतावे,
लख तत्काल स्वरूप समावे, कुछ प्रश्न उठे पुनि तोय,
करो मत डरिये रे ।।५।। सब साधन संपन्न होय........

द्वय संशै पुनि विपरय हरिये, श्रवण मनन निदिध्यासन करिये,
तत त्वं पद का शोधन वरिये, "सुखदेव" वासना खोय,
सिंधु भव तरिये रे ।।६।।सब साधन संपन्न होय........

भजन

मानव तन पाकर करले आतम ज्ञान

मानव तन पाकर करले आतम ज्ञान ज्ञान ज्ञान।
सब महापुरुषों का निर्णय अब तो मान मान मान।। टैर।।

पूजा तीर्थ करो चाहे जप तप दान दान दान।
मुक्ति का साधन ज्ञान बिना, नहीं आन आन आन।। १।।

क्यों करता मूढ मते विषयारस पान पान पान।
आतम बेमुख गिरै, चौरासी खान खान खान।। २।।

तू सत चित आनंद ब्रह्म सदा करि ध्यान ध्यान ध्यान।
नित व्यापक अजर अमर है, मन में ठान ठान ठान।। ३।।

''सुखदेव'' की विनती सुनियो देकर कान कान कान।
सब संशय शोक मिटेंगे, खुद को जान जान जान।। ५।।

भजन

राग - आसावरी

रे मन भजन राम का करिये ।
बीतत श्वांस रैन-दिन पल-पल, इक दिन निश्चित मरिये ।। टैर।।

बालपना, तरुणापन बीतत, वृद्धापन दुख परिये।
कंचन देह निरोग रहे तब, सुख में राम सुमरिये।।१।।

धन, दौलत, रंगमहल सुहाने, इक दिन देख बिछुरिये ।
मूछ मरोड़ अकड़ता डोले, जम जालिम से डरिये।।२।।

मात-पिता बंधु वनिता संग, हो निर्लेप विचरिये।
नित स्वाध्याय, करो सतसंगत, भेद, भरम सब हरिये ।।३।।

जन ''सुखदेव'' प्रीत रख सांची, गुरु चरणन चित्त धरिये।
आत्म बोध शोध करि सेवा, भव सागर से तरिये।।४।।

भजन

त्याग परे नर दीनता

तर्ज – राम सरिषा सुख है नहीं

त्याग परे नर दीनता, कर आतम दीदारा ।
सत, चित, आनंद रूप तू, जग सिरजनहारा ।। टैर ।।

देह, दशा त्रिय दृश्य है, पंचकोश से न्यारा ।
अजर अमर तू है आत्मा , सबका जाननहारा ।। १ ।।

सुख-दुख जनम ना मरण है, कल्पित संसारा ।
अटल, अचल, सर्व साक्षी, है स्वरूप हमारा ।। २ ।।

करम, क्रिया नहीं काल है, नही पंच पसारा ।
युक्ति अन्वय-व्यतिरेक से, तुम करो निर्धारा ।। ३ ।।

सद्गुरु ''भूरादासजी'' दिया तत्व विचारा ।
जन ''सुखदेव'' जब भूल मिटी, हुआ हर्ष अपारा ।। ४ ।।

भजन

तर्ज–मन लागा मेरा यार फकीरी में

रे मन भज ले दीनानाथ दयाल हरी ।टैर ।।

जगत विषयरस विष सम जानहु, नाम सुधारस अमर जरी ।। 1 ।।

मात-पिता युवती सुत बांधव, मोह वश प्रीत करे सगरी ।। 2 ।।

धन, यौवन, यश, महल रु माया, कंचन देह रहे धरी की धरी ।। 3 ।।

नाम निरंतर भजि उर अंतर, भजत- भजत भव पार करी ।।4 ।।

जन ''सुखदेव'' हरि गुरु विमुखहि, फेरि- फेरि भव परत मरी ।। 5 ।।

भजन

क्यों सूता पांव पसार

राग – पारवा

क्यों सूता पांव पसार, तोहे काल अचानक मारे ।। टैर ।।

जन्म लिया है तबसे मरना , इक दिन होय चिता में जरना,
समझ विचार कहो क्या करना, ले राम नाम तत्त सार,
सब काल जाल अघ जारे। तोहे काल....... ।।१ ।।

ज्यों तीतर को बाज पछारे, मिनकी धाय चूहे को मारे,
सर्प आय दादुर संहारे, त्यों काल करें नहीं बार,
तोहे देखत तुरत डकारे। तोहे काल....... ।।२ ।।

शूट बूट धर चले अकड़ के, गर्दन से यम तोहे पकड़ के,
बेड़ी में ले जाय जकड़ के, फिर मारे भयंकर मार,
लख चौरासी में डारे। तोहे काल...... ।।३ ।।

कर सत्संग कुसंग तजो रे, कुकर्मों से भ्रात लजो रे,
सेवा सुकृत राम भजो रे, अब ब्रह्मनिष्ठ गुरु धार,
पुनि आतम तत्व विचारे। तोहे काल...... ।।४ ।।

भजन

तर्ज – सदा सत्संग करने से.....

धधकती आग मुक्ति की, चेतन मन हो तो ऐसा हो।
वार दे शीश गुरु पद पर, सरल मन हो तो ऐसा हो ।। टैर।।

गुरु से महा वाक्य सुनकर, ब्रह्म सो हम सो ब्रह्म लखिकर।
सकल भय द्वैत हर पल में, सहज मन हो तो ऐसा हो।। १।।

हरे प्रतिबंध चारि विषयासक्ति, द्वय संशय विपरय को।
धरें वैराग, श्रवणादिक, सजग मन हो तो ऐसा हो।। २।।

करें तत त्वम पद का शोधन, समाधि निर्विकल्प धारे।
सहज जीवन बने निश्चित, तरल मन हो तो ऐसा हो।। ३।।

ब्रह्मातम एक लख विचरे, सर्व की सेवा में हाजिर।
सदा ''सुखदेव'' आनंद में, मगन मन हो तो ऐसा हो।। ४।।

भजन

तर्ज – घणा दिन सो लियो रे.....

चेत मन बावरा रे, इक दिन काल अचानक खाय।
काल अचानक खाय बावरा, राम नाम गुण गाय।। टैर।।

ज्यों बक-मीन, बाज-तीतर को, देखत ही गटकाय।
मिनकी धाय पछाड़ि परेवा, त्यों तोहे छांड़िहु नाय।।१।।

धन दौलत मेरा कुटुंब कबीला, ममता करि उरझाय।
सबको तजि नर जाय अकेला, करनी का फल पाय।।२।।

आया है सो जाएगा रे, जन्मै सो मर जाय।
यही जगत की रीत पुरानी, केहि विधि कहूं समझाय।।३।।

गुरु भक्ति सेवा कर सुकृत, सत्संग में चित लाय।
कह ''सुखदेव'' अमर निज आतम, काल पास नहीं आय।।४।।

भजन

राग - आसावरी

जियरा राम शरण काहे छोड़ें।
बंधन हरण तिरण भव तारण, ताहि चरण चित जोड़ें।।टेर।।

काम, क्रोध, मद, राग-द्वेष संग, पाय रहा नित फोड़े।
ताहि न छोड़त हे मन मूरख, प्रीत राम से तोड़े।।
जियरा राम शरण................।।१।।

दुख भंजन भज राम निरंजन, विषयन में काहे दौड़े।
झूठी प्रीत सकल जग झूठा, संत कहे सब चौड़े।।
जियरा राम शरण...............।।२।।

सांचे राम प्रीत कर सांची, भूल काहे मुख मोड़े।
कह ''सुखदेव'' रहे हरि सन्मुख, सो जन जग में थोड़े।।
जियरा राम शरण...............।।३।।

भजन

जियरा राम बिना नहीं चैना।
विश्वपति विश्वंभर को अब, सुमिर सदा दिन रैना।।टैर।।

राम बिसर विचरत विषयन में, मृग तृष्णा सुख है ना।
जिंहि भज राम आराम मिला तिहि, देख खोलकर नैना।।१।।
जियरा राम.........

दादू, देव, कबीर, गुसांई, धन्ना, भगत अरु सैना।
नानक,निश्चल,सुंदर आदिक संत जनों का कहना।।२।।
जियरा राम.........

सत्यम, शिव, सुंदर आनंद घन, के नित शरण मे रहना।
अभिअन्तर ''सुखदेव'' निरन्तर, परम प्रेम में बहना।।३।।
जियरा राम.........

भजन

राग – आसावरी

हरिजन सो हरि के मन भावे ।
निज घर फूंक निकरमा डोले, घर–घर आग लगावे ।। टैर।।

ऊपर पाव शीश करि नीचे, आसन अचल जमावे।
साज न बाज बिना मुख जिव्हा, भीम पलासी गावे ।। १।।

पीवे नीर जनन इन्द्रिय से, बिन कर पहाड़ उठावे।
आंखिन दीखत झूठ कहे, अण दीखत सांच बतावे।। २।।

दूर रखे दासी ने हरदम, नवयुवती संग चाहवे।
भोगत भोग सम्पती संचै, अष्ट पहर सुख पावे।। ३।।

मुख से उगल, गुदा से निगले, सुणत अचम्भो आवे।
कह ''सुखदेव'' मर्म वाणी का, संत खोल समझावे।। ४।।

भजन

तर्ज – घणा दिन सो लियो र............

भजन करि राम का रे, मनवा जन्म सफल हो जाय।
जन्म सफल हो जाय रे मनवा, रोज राम गुण गाय ।।टैर।।

छिन–छिन काया छीज रही रे, चेत न समय गवाय।
सेवा, सुकृत राम सुमिर तोहे, संत सकल समझाय ।। १।।

धन, दौलत हित भटक रह्यो रे, रोज चहू दिश धाय।
कौड़ी साथ चले नही तेरे, अंत समय पछिताय ।। २।।

मात, पिता बान्धव सुत नारी, कोइ न करिये सहाय।
मोह, माया वश भयो बावरो, छूटे कौन उपाय ।। ३।।

ले गुरु शरण करो सत संगत, घट में राम मिलाय।
जन ''सुखदेव'' निजानंद प्रकटे, सहज मोक्ष पद पाय ।। ४।।

भजन

समझ पंच भ्रांति रूप संसार

राग – आसावरी

समझ पंच भ्रांति रूप संसार।
आतम ज्ञान बिना नर भटके, पावे कष्ट अपार।।टैर।।

भेद भ्रांति, कर्ता भोक्तापन, है संग भ्रांति विकार।
ब्रह्म से भिन्न जगत सत माने, पांचो भ्रांति विडार।। १ ।।
समझ पंच......

ईश्वर–जीव, जीव–जड़ आदिक, भेद है पांच प्रकार।
बिंब और प्रतिबिंब युक्ति से, सकल भेद परिहार।। २ ।।
समझ पंच.......

अंतः करण कर्ता भोक्ता , पर आतम ले स्वीकार।
लाल वस्त्र स्फटिक युक्ति से, सकल भेद परिहार।। ३ ।।
समझ पंच........

आतम में देह रु गेह संग ते, भासत संबंध अपार।
घट आकाश की युक्ति प्रबल ले, संग भ्रांति परिहार।। ४ ।।
समझ पंच........

दूध विकार दही सम ब्रह्म से, जीव जगत विस्तार।
भ्रांति विकार निवारण युक्ति, रज्जू, भुजंग की धार।। ५ ।।
समझ पंच.........

ब्रह्म से भिन्न जगत सत माने, ते नर मूरख गिंवार।
कनक कुंडल की युक्ति लखे जन, रहे न भरम लिंगार।। ६ ।।
समझ पंच........

अब भी समझ परी नहीं तो, कर चिंतन बारंबार।
जन "सुखदेव" परमसुख पावे,गुरु मुख ज्ञान विचार।।७।।
समझ पंच........

भजन

तर्ज – १–वो जीवन भी क्या जीवन है.....
२ – दीन दयाल दया करके.....

इस जीवन में सुख चाहिये तो, इक राम निरंजन ध्याइये रे।
सर्वोत्तम जो सर्वातम है, उस मालिक के गुण गाइये रे।। टैर ।।
इस जीवन में सुख............

जिसने यह सृष्टि रची सुंदर, जड़ चेतन विविध प्रकारा है।
सुंदर–सुंदर सब भोग रचे, वह प्रियतम प्राण आधारा है।।
सर्वत्र, अखंडित, व्यापक भजि, अन्यत्र कहीं मत जाइये रे।।१।।
इस जीवन में सुख............

कई देवी देव भजे कोई, पैगंबर पीर मनावत है।
कई भूत , पिशाच रु प्रेत भजे, जन तिहि लोकन में जावत है।।
नहीं जनम–मरण की पीर मिटे, मन क्यों विरथा भटकाइये रे।।२।।
इस जीवन में सुख............

कई योग करे कई यज्ञ करे, जप तप कई कर्म करे नाना।
कई तीरथ चारों धाम फिरे, सत्संग बिना नहीं सुख पाना।।
''सुखदेव'' गुरु शरणागत हो, झट घट में राम मिलाइये रे।। ३।।
इस जीवन में सुख............

भजन

नित फेर निरंजन माला

नित फेर निरंजन माला। भव बंध मिटे तत्काला ।। टैर।।

काठ, सूत, रूद्राक्ष फिराये, होत न ज्ञान उजाला।
देह, इन्द्री, मन बुद्धि से पर, फिरे तो होय निहाला ।। १।।

होठ न दांत हिले नही जिव्हा, समझ गुरु का बाला।
हम सो ब्रह्म, ब्रह्म सो हम जप, कटे करम का जाला ।। २।।

स्वांसोस्वास फिरे घट सोहम्, सोहम् मंत्र निराला।
आठ पहर जप जागत सोवत, भैंटहि दीन दयाला ।। ३।।

सोहं जाप अखण्ड जपे, नित जीवन होय खुशाला।
लख ''सुखदेव'' ब्रह्म निज आतम, होय मगन मतवाला ।। ४।।

भजन, तर्ज-हुई सफल कमाई..

कहुँ सब साधन का सार, काहे दुःख पावै।
नित गुरु मुख ब्रह्म विचार, परम सुख पावे ।।टैर।।

तीरथ, व्रत करि, उपवास देवता ध्यावे।
ब्रह्मज्ञान बिना नही, जीवन मुक्ति आवै ।। १।।

आन साधना सकल, देत भय भ्रम है।
पर ब्रह्म विचारे जीव, होत पुनि ब्रह्म है ।। २।।

भया जड़-चेतन संयोग, प्रकट अज्ञाना।
सोई पावत दुःख यों, भाखत संत सुजाना ।। ३।।

लखि पंचकोश त्रिय, देह अवस्था तीनों ।
ये मिथ्या जड़ सचिदानन्द आतम चीन्हों ।। ४।।

ब्रह्म सोहम् हम सो ब्रह्म, मिटा सब भम्र, एक करि जाना।
हो सहज मुक्त ''सुखदेव'' स्वरूप समाना ।। ५।।

भजन

तर्ज- चल उड़जा रे पंछी.....

तुम देखो रे साधो घट में, दीया अगम का जलता।
नित्य, सर्वप्रकाशक, साक्षी, सूरज कभी ना ढलता ।। टैर ।।

अगम दीप की ज्याति जरे नित, बुझे न धूम निकलता।
बिन बाती बिन तेल प्रकाशे, नित्य अखण्डित झलता ।। १ ।।

जिससे रवि, शशि, दीप प्रकाशित, पिण्ड ब्रह्माण्ड है पलता।
ऊठत, बैठत, जागत, सोवत, हरदम हाजिर मिलता ।। २ ।।

साक्षी सोई स्वरूप हमारा, निराकार निर्मलता।
करि ''सुखदेव'' ज्योति के दर्शन, निर्भय होय विचरता ।। ३ ।।

भजन

राग - आसावारी

मनुज तन मिला मोक्ष का द्वार।
भक्ति योग नित संत संगत करि, आतम तत्व विचार ।।टैर ।।

सुबह शाम संध्या सुमिरन करि, संग सकल परिवार ।
मात पिता गुरु वृद्धजनों को, प्रणवहु बारंबार ।। १ ।।

पशु, मृग, खग, जग, पीड़ित मनुज में, ईश्वर अंश निहार ।
दया धर्म करुणा रख दिल में, करहुँ बहुत उपकार ।। २ ।।

सब घट आतम राम निरखकर, रखो परस्पर प्यार ।
करि ''सुखदेव'' गुरुदेव शरण में, जीवन का उद्धार ।। ३ ।।

भजन

तीन प्रकार के दान

श्री कृष्ण कहे निर्धारा, यह दान है तीन प्रकारा।।टेर।।

जो प्रत्युपकार न चाहवे, बस निज कर्तव्य निभावे,
सत पात्र मिले तो पावे,यह सात्विक दान उचारा।।१।।

जो प्रत्युपकार को चाहते, महिमा मंडन करवाते,
दे दान बहुत पछताते, यह राजस दान पुकारा।।२।।

जहां तिरस्कार अपमाना, नहीं देश, काल का ज्ञाना,
कूपातर को दे दाना, यह तामस दान विचारा।।३।।

कर शुद्ध सात्विक दाना, उर प्रेम भक्ति प्रकटाना,
''सुखदेव'' परम सुख पाना,करि आतम तत्व दीदारा।।४।।

भजन

तीन प्रकार का तप

श्री कृष्ण कहे सुन प्यारा, यह तप है तीन प्रकारा।।टेर।।

मन अष्ट विषय से मोड़े, हरि, ज्ञान मनन में जोड़ें।
रख प्रेम तार नहीं तोड़ें, मन का तप यही विचारा।।१।।

कह मधुर वचन हितकारी, प्रिय सत्य सर्व सुख कारी।
नित भगवद् नाम उचारी, वाणी तप यही पुकारा।।२।।

वृद्ध मात पिता गुरु देवा, कर दीन दुखी की सेवा,
रह सहज सरल ''सुखदेवा'' तन का तप यही उचारा।।३।।

भजन

पंच पाप एवं पंच महायज्ञ

तर्ज-हुई सफल कमाई महाराज......

हर गृहस्थी से नित पंच पाप हो भाई।
करि पंच महायज्ञ शांति रहे घर माही।।टेर।।

जल पात्र, ऊखली, चूल्हा चाकी बुहारी।
इनसे हो हिंसा, भये जीव दुखियारी।।1।।

इनकी निवृत्ति हित, पंच महायज्ञ करना।
नित सुख, समृद्धि हित, संत वचन हिय धरना।।2।।

ब्रह्म यज्ञ पितृ यज्ञ, देव यज्ञ समझाऊं।
पशु यज्ञ पुनि नर यज्ञ का भेद बताऊं।।3।।

नित पढ़ें पढ़ाएं वेद शास्त्र अरु गीता।
ब्रह्म यज्ञ यही करि परमेश्वर से प्रीता।।4।।

निज पितामह, गुरू, माता-पिता की सेवा।
करि तर्पण, श्राद्ध यह पितृ यज्ञ कह देवा।।5।।

देव यजन पुनि, होम, हवन नित करना।
यह देव यज्ञ करि स्वच्छ,स्वस्थ हो फिरना।।6।।

गौ, चींटी, श्वान कइ भूखे प्यासे प्राणी।
अन्न जल से सेवा करिए भूत यज्ञ जानी।।7।।

''सुखदेव'' द्वार गुरु, संत, अतिथि पधारे।
सेवा सत्कार करै, नर यज्ञ उचारे।।8।।

भजन

राग-भीमपलासी

रसना थकित भई कह-कह के।
सुन-सुन कान पके मन उन्मत्त, धीठ भया सह-सह के।।टेर।।

ज्यों अंजुलिका नीर अमोलक, आयु जाय बह-बहके।
राम भजन सुकृत नहीं कीना, संत संगत रह-रह के।।

ब्रह्म सोहम यह धार हिय, गिरे भरम भींत ढह-ढ़हके।
हंस पैठकर ज्ञान सरोवर, मोती चुन चह-चहके।।

जीव-ब्रह्म है एक समझ ले, जीवन बगिया महके।
कह ''सुखदेव'' पुनः क्यों मरता, काल अगन दह-दहके।।

भजन

राग- पारवा

भाई सुमिरन कर भगवान का, दिल राख भरोसा मोटा ।। टैर।।

श्रद्धा, प्रेम हृदय में धरके, तन, मन, धन सब अर्पण करके,
भाव सकाम सकल परि हरके, तज ठरका मान गुमान का,
कोई काम करे मत खोटा ।। 1।। भाई सुमिरन..........

संत समागम में चित्त दीजे, कर सेवा सद्गुरु पद पूजे,
राम मिलन का मार्ग बुझे, लख साधन प्रभू के ध्यान का,
लौ लगा रहे नहीं टोटा।। 2।। भाई सुमिरन..........

जग से राग रखे नहीं मन में, लगे निरन्तर राम भजन में,
चिन्ता शोक मिटे इक क्षण में, उपदेश ले आतमज्ञान का
''सुखदेव'' गुरुपद लौटा ।। 3।। भाई सुमिरन..........

भजन

मानव तन पाकर बैठे क्यो ?

कई चले गए कई जाय रहे मानव तन पाकर बैठे क्यों?
सतसंगत, सुकृत, सेवा करि हम पांव पसारे लेटे क्यों?।।टेर।।

अहंकार के तिनके नैनों में, ले ज्ञान का दर्पण देख जरा।
है कष्ट बहुत नहीं चैन परे, गुरु सैन समझ कर फेंक जरा।।
महा दुर्जन संग में दुख पावे पर गुरु पद पंकज चैठे क्यों।।1।।

जग में जीने की राह मिले, संतों की वाणी समझ जरा।
कूसंगत दुःख बहुत पावे, अब संतसंगत में रमझ जरा।।
करि ज्ञान समंदर में विचरण, बन कूप का मेंढक ऐंठे क्यों।।2।।

विषया रस पीकर जन्म मरे, अब ज्ञान अमीरस पीव जरा।
महामाई, भैरव, भूत भजे, इक परमेश्वर ने सेव जरा।।
'' सुखदेव'' असुर अरू पामर नर, पुनि गहरे पानी पैठे क्यों।।3।।

भजन

सर्व शिरोमणि ज्ञान

सर्व शिरोमणि ज्ञान तो वेदांत छेरे।
ब्रह्म सत्य, जग मिथ्या को सिद्धांत छेरे।। टैर।।

भेद ज्ञान भय दुःख प्रदाता, भ्रमित जनों को और भ्रमाता।।
भेदवादी लोग सब भ्रांत छेरे।।१।। ..... सर्व शिरोमणि

स्वर्णाभूषण की युक्ति लखावे।ब्रह्म जगत को एक बतावे।।
कार्य कारणवाद को वृतांत छेरे।।२।। ..... सर्व शिरोमणि

उपनिषद चाहे पढ़ो भागवत, अष्टावक्र, वशिष्ठ,व्यास सुत।।
श्री कृष्ण, शंकराचार्यजी को मान्त[1] छे रे।।३।। ..... सर्व शिरोमणि

ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु समझावे, अद्वय, व्यापक ब्रह्म लखावे।।
''सुखदेव'' ब्रह्मज्ञान करें शांत छेरे।।४।। ..... सर्व शिरोमणि

मत[1]

भजन

सर्वोपरि ब्रह्मज्ञान

तर्ज – जीवन है पानी की बूँद

सबसे ऊँचा दुनियाँ में, ब्रह्म ज्ञान होता है।
जाने तो कण–कण, ही भगवान होता है।। टेर।।

गुरु मूरत का ध्यान ही, सच्चा ध्यान होता है।
मुक्ति का गुरुचरणों में स्थान होता है।
सच्चे गुरु भक्तों का कल्याण होता है ।। 1।।
सबसे ऊँचा....................

नारायण का नर तन खास मकान होता है।
मन का मैल मिटेगा, तब स्नान होता है।।
सबसे है मीठा, हरि रस पान होता है ।। 2।।
सबसे ऊँचा....................

सबसे उत्तम गायन हरि गुण गान होता है।
हरि भक्तों के कहाँ आँधी तूफान होता है।।
ज्ञानी के सुख–दुःख एक समान होता है।। 3।।
सबसे ऊँचा....................

अभय दान ही दुनियाँ में, महादान होता है।
"सुखदेवा" सत्संग से जीव महान् होता है।।
बैमुख हरि गुरु से मूढ़–अजान होता है।। 4।।
सबसे ऊँचा....................

भजन

जीवन तेरा गुलाब है

जीवन तेरा गुलाब है, नित खिलखिलाके चहक रे।
सबकी खुशी के वास्ते, चंदन बनके महक रे ।। टैर।।
बकरी भेड़ नहीं तू, बबरी शेर महा है।
अपना रूप पिछान ले, फिर भय तुझे कहाँ है।
आतम तू परमात्मा, ऐसे ही खुद को देख रे ।। 1।।
जीवन तेरा गुलाब......................
दीन न हीन नहीं तू, दुनिया का सम्राट है।
जाग जरा तू देख रे, तेरा रूप विराट है।
राम तू ही भगवान है, तेरे रूप अनेक रे।। 2।।
जीवन तेरा गुलाब......................
केवल भरम अज्ञान का, छाया हे अँधियारा।
ज्ञान के दीप जलाय ले, जग मग हो उजियारा।
खुद ही खुदा है जानले, व्यापक सदा अलेख रे ।। 3।।
जीवन तेरा गुलाब......................
संतों की सतसंग से, अपनी भूल मिटाय ले।
गुरुपद होय समर्पित, परमानन्द को पाय ले।
सुख सागर सुखरुप तू, 'सुखदेवा' यूँ पैख रे।। 4।।
जीवन तेरा गुलाब......................

भजन

तर्ज– नर सेवा नारायण सेवा...........

खुशियाँ दे उसके दिल में, नित कमल खिला करते है।
दीन दुःखी की सेवा से, भगवान मिला करते है।। टेर।।
नर सेवा, नारायण सेवा.................

दुःखियों के आँसू पोंछे जो, होठों पर देता मुस्कान।
बन के दास करे सेवा तो, उनके दास बने भगवान।।
निर्मल सेवा के वश में, भगवन रहा करते हैं।। 1।।
दीन दुःखी की..........

जो करता आराम उसे ना, राम मिलेगा जीवन में।
जो देता आराम उसे आ, राम मिलेगा जीवन में।
करे भलाई तो उसका, भगवान भला करते हैं।। 2।।
दीन दुःखी की..........

जो जग का उपकार करे, खुद राम उसे ही स्वीकारे।
जो जग का अपकार करे, खुद राम उसे ही आ मारे।।
जैसा कर्म करे वैसा फल, आप भरा करते हैं।। 3।।
दीन दुःखी की..........

औरों का कल्याण करें जो, अन्तर में रहते निष्काम।
घट में प्रेम दया हो उनके, रोम-रोम बस जावे राम।।
धन्य वही ''सुखदेव'' जो, सबके लिए जिया करते हैं।। 4।।
दीन दुःखी की..........

भजन

सतसंग में शिष्टाचार

संत संगत में आकर के, शुभ शिक्षा धारण करना।
जो सजग, सरल, हो सुनते, वो सहज ही पार उतरना।। टैर।।

है सही बैठना वो ही, जहँ उठा सके नहीं कोई।
संतों के दर्शन जोई, कर नमन् चरण चित धरना।। 1।।

मिथ्या अभिमान को छोड़ें, दुर्व्यसनों से मुंह मोड़ें।
सत सार शब्द चित जोड़ें, सब भरम तिमिर परि हरना।। 2।।

सविनय पूछना चाहवे, उन्हें संत हर्ष समझावे।
मूरख से मौन लगावे, भाई व्यर्थ विवाद न करना।। 3।।

धर धीर तितिक्षा सहना, अरू मर्यादा में रहना।
''सुखदेव'' यही बस कहना, लेना सद्गुरु का शरणा।। 4।।

भजन

है कर्ता तीन प्रकारा

श्री कृष्ण कहे निर्धारा, है कर्ता तीन प्रकारा ।।टेर।।

रहे ''सात्विक'' निर अहंकारी, है धीर परम उपकारी,
सिद्धा सिद्धी में रहे निर्विकारा।।१।।

''राजस'' विषयों का रागी, दिल कर्म फलेच्छा जागी,
अति लोभ, लाभ दिल धारा।।२।।

जिद्दी कर ऐंठ, निःकरमा, आलसी, कृतघन बेशर्मा,
यह ''तामस'' कर्ता पुकारा।।३।।

है शुद्ध सातविक कर्ता, नित शील विनय दिल धरता,
''सुखदेव'' राम का प्यारा ।।४।।

गजल

संकट मे रख साहस

यदि नभ में घटाये घिर गई तो, क्या तम में दिशायें खो गई तो,

युक्ति से मुक्ति कर लेना, चित्त प्रभू चरणों में धर लेना

बोलो राम हे राम ! हे राम जय जय राम राम-राम ।। टैर ।।

तू परमेश्वर का अंशज है, ऋषि संत जनों का वंशज है।

निज दिल में साहस भर लेना, पर याद प्रभु को कर लेना ।। 1 ।।

बोलो राम हे राम ! हे राम जय जय राम । यदि नभ में......................

हे नर नाहर ! रवि सम चमको, दुःख, चिन्ता, निराशा मिटा गम को

दिल में कुछ धीरज धर लेना, हरि नाम से सागर तर लेना ।। 2 ।।

बोलो राम हे राम ! हे राम जय जय राम । यदि नभ में......................

घन घोर घटा को हटना है, सूरज उगते तम मिटना है।

''सुखदेव'' कर्म शुभ कर लेना, मन से रट श्री हरि, हर लेना ।। 3 ।।

बोलो राम हे राम ! हे राम जय जय राम । यदि नभ में......................

भजन

''निंदक तुमको बधाई''

राग– आसावरी

निंदक तुझको मेरी बधाई।
खुद गैलो नरकां को करके, हमको रिया चेताई ।। टैर।।

नीर बिना साबुन मेरे दिल की, पल पल करत सफाई।
धन–धन थारो त्याग समर्पण, कहाँ तक करुँ बड़ाई।। 1।।
निंदक तुझको......................

नित उठ निन्दा घण्टी बजा के, सावधान कर जाई।
पंथ बुहार में बाट उडीकूं, बेगि पधारो म्हारा भाई।। 2।।
निंदक तुझको......................

खुद का पग बळताँ न भूल, म्हारे सिर की लाय बताई।
सद्गुण, कर्म, ज्ञान की करता, कनक समान तपाई।। 3।।
निंदक तुझको......................

निन्दा, वन्दन में सम रहना, सद्गुरु सैन बताई।
मूरख आगे मौन लगावे, सोई सदा सुख पाई।। 4।।
निंदक तुझको......................

यम का दूत जूत मारेला, कर्मों का फल पाई।
''सुखदेवा'' सतसंगत कर ले, सहज भलो हो जाई।। 5।।
निंदक तुझको......................

भजन

मनवा विषयाँ में क्यूं भटके रे

राग- पहाड़ी ताल- कहरवा

मनवा विषयाँ में क्यूं भटके रे
करले आतम ज्ञान आज हो जा बेखटके रे।। टैर।।
मिनख्या जूणी है अनमोलक देव लोक भी तरसे।
करले चोखा काम राम, नारायण बणजा नर से।।
बीरा राम सुमरले झटके रे ।। 1।।
करले आतम ज्ञान.......................

विषयासक्ति मौत है प्यारा, है सब दुःख की खान।
हरि चरणां में लाग जाग तेरी भली करे भगवान।।
नंगी मौत शीश पर लटके रे ।। 2।।
करले आतम ज्ञान.......................

विषय वासना छोड़ जोड़ चित गुरु चरणां में जोले।
कण-कण में भगवान देख तेरे घट नारायण बोले।।
क्यूं ना पाप की पौटाँ पटके रे ।। 3।।
करले आतम ज्ञान.......................

निष्कामी निर्लिप्त रहे फिर करें जगत की सेवा।
ना कछु वाद-विवाद मस्त रह अर्ज करें ''सुखदेवा''।।
यूँ परमानन्द लूटो डटके रे ।। 4।।
करले आतम ज्ञान.......................

पौटाँ - गठरिया

''सच्चा प्रेम''

दोहा

खल कूटे से क्या मिले, तेल तिलों में होय।
तर्क भरे नर बुद्धि में, प्रेम दिलों में जोय।।

भजन

जिसके हो भगवान, भाग फिर रुठेगा कैसे।
सच्चा प्यार प्रभु से हो तो टूटेगा कैसे।। टैर।।
अन्यायी के सन्मुख झुकना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
लक्ष्य से पहले ही रुकना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
रण में पीठ दिखाकर भगना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
नुगरों की संगत में लगना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
बिना प्यार नयनों से सागर फूटेगा कैसे।। 1।।
सच्चा प्यार प्रभु.........................

कनक आक को अमृत पाना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
मूर्खो को उपदेश सुनाना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
सूते सिंह को तुरन्त जगाना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
दुर्व्यसनों में समय लगाना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
भोग विलासी गहरे पानी पैठेगा कैसे।। 2।।
सच्चा प्यार प्रभु.........................

जयचन्दों से प्रीत बढ़ाना अच्छा है क्या? ना भाई ना।
संकट में दे पीठ मीत वो सच्चा है क्या? ना भाई ना।
आत्म बोध कराने वाला बच्चा है क्या? ना भाई ना।
''सुखदेवा'' हरिप्रेम का धागा कच्चा है क्या? ना भाई ना।
पहरा हो सशक्त खजाना लूटेगा कैसे ।। 3।।
सच्चा प्यार प्रभु.........................

भजन

बोलो राम राम सा

मिनख्या जूणी पाय बोलो राम राम सा।
भारत खण्ड में आय बोलो राम रामसा।।
जनम जनम दुःख पावो क्यूँ, अब ओर दचेड़ा खाओ क्यूँ।
पाओला सुख धाम बोलो राम राम सा ।। टैर।।
कागलिया रे साथ मेळ मत करियो।
बुगलाँ री संगत जाय हंसा मत मरियो।।
शोभत करणी सुगराँ री, मत जुरत राँख जे नुगराँ री,
यो सन्ता रो आह्यान बोलो राम राम सा ।। 1।।
मिनख्या जूणी...............

अम्बर माँही जदाँ बिजली चमके है।
गधियाँ मा–र लात रोष में तमके है।
रणभूमि में डरपों क्यूँ विपदा में पाछा सरको क्यूँ,
करले चोखा काम बोलो राम राम सा ।। 2।।
मिनख्या जूणी...............

डूमड़ियाँ चूँचाव, चिड़ियाँ, घुरसलियाँ।
ना हाथी बद–ले चाल मस्ती री गलियाँ।
गैल गण्डकड़ा घुसबा दे भाई, लोग हँस तो हँसबा दे,
करले आतम ज्ञान बोलो राम राम सा।। 3।।
मिनख्या जूणी...............

थारी डूबी जावे नाव, गहरा पाणी में।
बिन राम भजया स्यूं जमड़ा पी–से घाणी में।।
दुनियां री इ खटपट में बीरा, काम बणाल झटपट में।
''सुखदेव'' हो रही शाम, बोलो राम राम सा ।। 4।।
मिनख्या जूणी...............

भजन

अभिमान तजो श्री राम भजो
तर्ज– हरियाणी

दुनियाँ में अभिमानी नरकों, बीच पड़ा होता है।
चले निभाकर जो सब को, वो हृदय बड़ा होता है।। टेर।।
घृणा निन्दा का जल भरिया, दुर्जन का दिल गागर है।
प्रेम–प्यार से भरा लबालब, ज्ञानी का महासागर है।।
शीश मुकुट देवों का सद्गुण, रत्न जड़ा होता है।। 1।।
चले निभाकर जो सबको.................
बिच्छू मारे डंक संतजन, बारम्बार बचाते है।
संत दयालु दुःख सहकर भी, सबके कष्ट मिटाते है।।
ज्ञानी के घट ज्ञान नशा, परवान चढ़ा होता है।। 2।।
चले निभाकर जो सबको.................
कोई भी नर अभिमानी को, पचा नहीं सकता है।
होगा पतित अवश्य कोई, बचा नहीं सकता है।।
बुद्धि पर स्वार्थ का भारी, टोल[1] पड़ा होता है ।। 3।।
चले निभाकर जो सबको.................
लंकापति रावण को देखो, सब वेदों का ज्ञानी था।
शिव शंकर का भक्त बड़ा ही, किन्तु वह अभिमानी था।।
सच है दुर्जन के मन में, अभिमान अड़ा होता है।। 4।।
चले निभाकर जो सबको.................
स्वार्थ अरू अभिमान तजो, श्री राम भजो सुख पायेगा।
पर सेवा प्रभू भक्ति करो, नहीं ऐसा अवसर आयेगा।।
''सुखदेवा'' सज्जन के संग, भगवान खड़ा होता है।। 5।।
चले निभाकर जो सबको.................

टोल – पत्थर

भजन

राम-राम बोल

दोहा

खटपट में झटपट सदा, करता रह शुभ काम।
पर सेवा हरि बंदगी, भज लेना हरि नाम।।

(राग मारवाड़ी)

बीरा राम राम बोल तेरा क्या लागे है मोल ।। टैर।।
उल्टो लटक्यो गर्भवास में करयो प्रभू से कोल।
बाहर आकर होगो क्यूं विषया में डावाँ डोल।। 1।।
बीरा राम-राम बोल ....
बारम्बार मिले नहीं बीरा मानव तन की चोल।
कर ले भक्ति, ज्ञान, कर्म शुभ मौको है अनमोल।। 2।।
बीरा राम-राम बोल ....
परमारथ को काज करे ना बण्यो फि-रे छ टोल।
कर्मा को फल पाणो पड़सी मत ना सम-झे पोल ।। 3।।
बीरा राम-राम बोल ....
कान खोलकर सुण ले प्यारा कांई बजावाँ ढोल।
भव सागर सूं तिरणो हो तो सद्गुरु सही टटोल।। 4।।
बीरा राम-राम बोल ....
आत्म ज्ञान हुआ पाछे चाहे जग में निर्भय डोल।
कह ''सुखदेव'' मिले मुक्ति तो फेर धरे नहीं खोल।। 5।।
बीरा राम-राम बोल ....

भजन

चार दिवस री चाँदनी फेर अन्धेरी रात

तर्ज– कौन खड़ी शमशान घाट पर

राग– हरियाणवी

नर तन है अनमोल रतन मन, कर लेना प्रभु प्राप्त है।
चार दिवस री चाँदनियाँ है, फेर अन्धेरी रात है।।
प्रभु से करूण पुकार करे, जब मात गर्भ में झूल रहा।
माया बीच फँसा अब भूला, ''मै'' ममता में फूल रहा।।
जन्मोजन्म दुःखी होकर क्यो ? खावे यम की लात है ।। 1।।
चार दिवस.......................

बालपना हँस खेल गँवावे, गई जवानी भोगो में।
अन्जुलि के पानी की जैसे, गया बुढ़ापा रोगों में।।
बीत रही आयु, नित पल–पल भजले श्री रघुनाथ है।। 2।।
चार दिवस.......................

विद्या, धन, यौवन सब नाशे, मूरख मन में अकड़े क्यूं।
जगत पति को भूल मुसाफिर, जग जंगल में जकड़े क्यूं।।
जो गुरु सैन लखे सुख पावे, फेर जनम नहीं पात है।। 3।।
चार दिवस.......................

मात–पिता, सत्गुरु की सेवा, शीश गुरु पद धर लेना।
संतों की सत संगत करके, भवसागर जल तर लेना।।
खुद को जान पिछान हरि फिर, क्या चिन्ता की बात है।। 4।।
चार दिवस.......................

देखत ही मिट जायेगा इक, पल में झाग जवानी का।
जीवन तेरा ओ रे ! मनवा, देख बुदबुदा पानी का।।
कह ''सुखदेव'' भजो बनवारी, तो ब्रह्म रूप समात है।। 5।।
चार दिवस.......................

भजन

लघुता से प्रभुता

राग- पारवा

लघुता में लाभ अपार है, दिलधार पड़े नहीं घाटा।। टैर।।

बालक को सब गोद खिलावे, दूज के चांद को शीश नवावे।
लघु अंगुल मुद्री पहिनावे, लघुता से सबको प्यार है।
हो चैन प्रभु सम थाटा।। लघुता में लाभ ....।। 1।।

वृक्ष फले झुके, सजल घटायें, बाट रखा पलड़ा झुक जाये।
भक्त, गुणी, झुक शीश नवायें, जे दया, क्षमा दिल धार है,
यमराज को मारे चाँटा।। लघुता में लाभ ....।। 2।।

जो लघु, नम्र रू शीतल होवे, जड़ से सर्व गर्व को खोवे।
हो सबका प्रिय सुख से सोवे, अभिमानी के अहंकार का,
दिल बीच चुभे नित काँटा।। लघुता में लाभ ....।।3।।

धन, यौवन, सुत, मान, बड़ाई, सुन्दर, तन बुद्धि, चतुराई।
ये सब नश्वर क्यों इतराई, सब कल्पित यह संसार है,
जरा खोल नयन का पाटा।। लघुता में लाभ ....।।4।।

फूल से मक्खी शहद निकाले, रेत से चींटी चीनी निकाले।
अनल पक्षी का जोर न चाले, लघु हो ले जग में सार है,
'सुखदेव' रहे नित ठाटा।। लघुता में लाभ ....।। 5।।

भजन

''क्यों अभिमान करे रे''

राग– आसावरी

मनवा क्यों अभिमान करे रे।।टैर।।
घृणा, निन्दा, क्रोध अगन में दिन और रैन जरे रे।

गुरु प्रेरक, मगदर्शक[1], अपने सम्मुख जात डरे रे।
नुगरे, भोन्दू, दुर्जन संग में तेरी दाल गरे रे।। 1।।
मनवा क्यों...............................

विद्या, धन, यौवन के मद में, बक–बक करत फिरे रे।
पूँछ दबाय भगे बकरी जब, सिंह हु आय भिरे रे।। 2।।
मनवा क्यों...............................

रावण, कंस दुर्योधन की गति, क्यों नहीं याद करे रे।
ऐंठ, अकड़, सब मिला धूल, भगवन ने प्राण हरे रे।। 3।।
मनवा क्यों...............................

इक दिन याद करेगा भाई, सुन ले वचन खरे रे।
लघुता से प्रभुता मिलती, प्रभुता से प्रभु परे रे ।। 4।।
मनवा क्यों...............................

धर्म, कर्म और ज्ञान हीन, पशुवन की ज्यों विचरे रे।
''सुखदेवा'' गुरु भक्ति भाव बिन, नरकों बीच परे रे।। 5।।
मनवा क्यों...............................

मागदर्शक[1]

भजन

बस इतना करो

दुर्लभ नर तन पाकर के अब प्रभु का ध्यान धरो भाई।
मैं सबका, सबमें, सभी जगह बस इतना ज्ञान करो भाई।।टैर।।
ब्रह्ममुहुर्त में जागकर के याद प्रभु को कीजिये।
वसुधा, मात-पिता, गुरु का आशीष भी नित लीजिये।
शान्त रह एकान्त में स्वाध्याय में चित्त दीजिये।
श्रवण (पठन) मनन कर निदिध्यासन यूं ज्ञानामृत नित पीजिए।
निज देश, धर्म, संस्कृति हेतु सब, मिलकर कर्म करो भाई।।1।।
दुर्लभ नर तन.......................

आलस नींद प्रमाद हटा अब तो शुभ कृत्य करो भाई।
काम, क्रोध आदिक सर्पों के, फन पर नृत्य करो भाई।।
शील, विनय, आदर्श शिष्टता, हरदम चित्त धरो भाई।।
तन, मन, वचन, बुद्धि का सारा मैला दूर हरो भाई।।
अंधियारा घनघोर रहे, बन दीपक नित्य जरो भाई।। 2।।
दुर्लभ नर तन.......................

धन, यौवन, परिवारादिक, नदियाँ सम बहने वाले हैं।
स्वप्नमयी इस दुनियाँ के, सब महल तो ढहने वाले हैं।।
कई चले गये कई जाय रहे, हम कब तक रहने वाले हैं।
परहित में व्यस्त रहे जीवन, बस इतना कहने वाले हैं।।
जीवन है संघर्ष यदि तो, जमकर जंग लरो भाई।। 3।।
दुर्लभ नर तन.......................

मान, प्रतिष्ठा, पद, यश में, मत फँसना, मिटने वाले है।
महाकष्टों में निश्चिंत रहो, ये टिके न टिकने वाले है।।
मृत्यु केवल वस्त्र बदलना, तो फिर काहे डरो भाई।

तूं तो अजर अमर अविनाशी, जन्मों नहीं मरो भाई।
साहस युक्त, धैर्य संयम से, अपना लक्ष्य वरो भाई।। 4।।
दुर्लभ नर तन......................

सब ज्ञानों में ब्रह्मज्ञान सो तो है ज्ञान खरो भाई।
ब्रह्मनिष्ठ, श्रोत्रिय सद्गुरु के जाकर चरण परो भाई।।
सेवा, श्रद्धामय रहकर, हो निर्भिक प्रश्न करो भाई।।
यूं दृढअपरोक्ष ब्रह्मज्ञान करके भव सिन्धू तरो भाई।।
'सुखदेवा' कुछ भी नहीं हो तो जन्मों और मरो भाई।। 5।।
दुर्लभ नर तन......................

भजन

''नित्य सुख प्राप्ति का मार्ग''

जैसा फल पाना हो वैसा बीज बोना चाहिये।
जे नित्य सुख चाहो तो हरि से प्रेम होना चाहिये।। टैर।।
भटकता धन के लिए, मेहनत करे दिन रात तू।
जब एक कौड़ी लाया ना, ले जायेगा क्या साथ तू।
क्या सुखी हुआ है आज तक, धन से बता दे बात तू
अब यूं ही जग से जायेगा, खाली पसारे हाथ तू
जग वस्तुओं के हेतु धन, नहीं व्यर्थ खोना चाहिए।। 1।।
जे नित्य सुख........................

काँच में नित देखकर, निज देह को भी जान ले।
कब मिट्टी मे मिल जायेगी, इस बात को सच मान ले।।
सुगन्धों से कर युक्त, नित्य स्नान, देह अभिमान ले।
त्रिदेह में सुख है नहीं, सुख रूप को पहिचान ले।।
जग वस्तुयें तन के लिए, उपयोग होना चाहिए।। 2।।
जे नित्य सुख........................

जन्म से ही जान ले, होता निरन्तर मरण रे।
मन वचन को रख शुद्ध, पकड़ो संतजन के चरण रे।।
तजि देह का अभिमान झट, त्रिदोष को परिहरण रे।
यह देव दुर्लभ तन मिला, उपकार सेवा करण रे।।
सतसंग कर निज ज्ञान, भव से पार होना चाहिए।। 3।।

जे नित्य सुख........................

कामिनी संग भोग, भोगे, तन का बिगड़ा हाल रे।
इक दन्त मुख में है नहीं, सब श्वेत हो गये बाल रे।।
दर्द घुटनों में रहे, सलवट पड़े सब खाल रे।
कछु दीखाता सुनता नहीं, अब पिचके तेरे गाल रे।।
आसक्ति तज हरि रूप भज, नहीं व्यर्थ रोना चाहिए।। 4।।

जे नित्य सुख........................

संगी साथी नाती सब, शमशान तक ही जायेंगे।
(निज) स्वार्थ मोह से अजगरी, कछु अश्रुधार बहायेंगे।।
चिनके चिता फिर रख तुझे, झटपट ही आग लगायेंगे।
फिर बारहवें पर लड्डू पेड़े, साथ मिलकर खायेंगे।।
मोह माया के इस भार को नहीं और ढोना चाहिए ।। 5।।

जे नित्य सुख........................

छोड़ परमार्थ जो स्वार्थ, काज से ही चैंठा है।
गुरु संत जन माता-पिता से, जो भी जग में ऐंठा है।।
बहुजन्म में दुःख पायेगा, यमदूत पकड़े घेंठा है।
तूँ काँपेगा थर - थर खड़ा, तब देंगे मुँह पर फेंटा है।।
उठ जाग निज कल्याण कर, नहीं निर्भय सोना चाहिए।। 6।।

जे नित्य सुख.........................

ज्ञान अध्यात्म की दाता, विश्व को माँ भारती।
कर चमन और नित नमन, सेवा रोज करिये आरती।।
है देव भू! अरु धर्म भूमि, तो बनो पुरुषार्थी।
माँ, गंगा, गो, गायत्री, अपने पुत्रों को ललकारती।।
आगे बढ़ो अब जाग कर, नहीं और सोना चाहिए।। 7।।

जे नित्य सुख.........................

यह कर्म योनि पाय कर क्यों? सोया खूंटी तानकर।
अब जिन्दगी कर दे शुरू, गुरू ब्रह्म ज्ञानी मानकर।।
जे कर भला तो हो भला, यह भाव मन में ठानकर।
प्रभु भक्ति कर शुभ कर्म, या निज आत्मा का ज्ञानकर।।
''सुखदेव'' ब्रह्मानन्द पाकर, मस्त होना चाहिए।। 8।।
जे नित्य सुख चाहो तो हरि से प्रेम होना चाहिए।
जैसा फल पाना हो वैसा बीज बोना चाहिए।।

भजन

सारग्राही बनें

राग- हरियाणवी

इस जगत पसार असार में सत सार ही ग्रहण करो रे ।। टैर।।
जैसे हंसा नीर तज, क्षीर-क्षीर पीवे आय।
मधुमक्खी सुमन में, मधु ही निकाले जाय।।
मट्टी महीं लोह कण, चुम्बक निकाले ताय।
विष तजकर अमृत पीजिये, जग में निर्भय विचरो रे।। 1।।
इस जगत पसार.............................
जैसे अली तजे कली, कुसुम पे मण्डराय।
फूल-फूल तोड़ माली, सूल-सूल छोड़े जाय।।
कीच तजि ताल तीर, नीर-नीर पीवे जाय।
अवगुणी से भी गुण लीजिये, सद्गुण भण्डार भरो रे।। 2।।
इस जगत पसार.............................
वृक्ष ही के सूल दीसे, छाया बिच कछु नाय।
बच्छ पीवे दूध-दूध मन में न बच्छ गाय।।
सूप राखि अन्न कण, तुस तुस फटकाय।
कीचड़ से कनक उठावते, त्यूं दिल में ज्ञान धरो रे।। 3।।
इस जगत पसार.............................
तज तीन देह, देही आत्मा को जान लेहु।
पंचप्राण कोश परे रूप पिछान लेहु।
गुरु के समीप रहके, प्यारे ब्रह्मज्ञान लेहु।
''सुखदेव'' प्रपन्च को बाध कर, शुद्ध ब्रह्म ही रहत खरो रे।।
इस जगत पसार.............................

अली - भँवरा, बच्छ - बछड़ा

भजन

गुरुदेव द्वारा साधना, कष्ट देकर शिष्य का निर्माण

राग- पारवा

सद्‌गुरु जी साधन कष्ट दें, सब भवदुःख दूर हरे है।। टेर।।
कुम्भकार ज्यूं कुम्भ घड़े है, भीतर अपना हाथ धरे है,
बाहिर अनगिन चोट करे है, कूट पीट दे आग में,
करे सुन्दर कलश खरे है ।।1।। सद्‌गुरु जी........

लोह - लुहार आग में ओटे, बारम्बार अलोट पलोटे,
खींच-खींच दे घण की चोटें, मन भावे जैसा रूप दे,
शस्तर निर्माण करे है।।2।। सद्‌गुरु जी........

जब धोबी कपड़ो को कूटे, तब सब दाग मैलापन छूटे,
कर उज्जवल मन में सुख लूटे, फिर दाबे गरम परेस से,
सब सलवट होत परे है।।3।। सद्‌गुरु जी........

सोनी पीटत कंचन रूपा, गाळ झाळ दे अद्‌भुत रूपा,
काठ को खाती घड़े अनूपा, डंक सहे बिन कीट भी नहीं,
भँवरा रूप धरे है ।।4।। सद्‌गुरु जी........

जो सहवे सद्‌गुरु की चोटां, दिल में प्रेम भरोसा मोटा,
परमानन्द का पड़े न टोटा, 'सुखदेव' मिटा भ्रमजीव का,
ब्रह्मरूप ही करत खरे है।।5।। सद्‌गुरु जी........

भजन

सद्गुरु की आवश्यकता

सद्गुरु का लेले आसरा नर कहना मेरा मान।
गुरु बिन ज्ञान, ज्ञान बिना तेरा होवे ना कल्याण।। टैर।।

साहित्य, संगीत, कला, हर विद्या का गुरू जान।
ब्रह्मविद्या अति गोप्य महा, ना गुरु बिन पड़े पिछान।। 1।।
सद्गुरु का लेले..........................

गुरु बिन दान, गान, सुर, पूजन, जप तप निष्फल ज्ञान।
ब्रह्मवेता, ब्रह्मनिष्ठ गुरु के, कर चरणामृत पान।। 2।।
सद्गुरु का लेले..........................

श्रद्धा, प्रेम, समर्पण, सेवा, वचन सुनो दे कान।
मनन करे घट धार, पिपासु, विचरे निर अभिमान।। 3।।
सद्गुरु का लेले..........................

गुरु मूरत का ध्यान धारो, नित सेवा करो हरि मान।
विधिवत नमन करो सत् संगत, उपजे आतम ज्ञान।। 4।।
सद्गुरु का लेले..........................

''भूरादासजी'' सद्गुरु मेरे, सदा धरूँ मै ध्यान।
''सुखदेवा'' अलमस्त भया, अब मिट गई खेंचातान।। 5।।
सद्गुरु का लेले..........................

भजन

कल्याण में बाधक तत्व

राग- पारवा

भाई मिलने को भगवान से, कोई सीधी नहीं सड़क है।। टैर।।
पथ उपहास, विरोध का काँटा, पुनि प्रारब्ध दे आकर आँटा,
काम-क्रोध दे कसकर चाँटा।
जो चलते गर्व गुमान से, रपटा कर मे-टे रड़क है।। 1।।
भाई मिलने को...............................

पंच विषय की धधके अग्नि, भरमावे माया महा ठगनी,
ग्रन्थ पंथ जग में बहु सजनी।
तापों की तिरगुन तान से, गिरे बिजली कड़क - कड़क है।। 2।।
भाई मिलने को...............................

जब होवे निगुरों का संगा, छुटहि जात पुनि सतसंगा,
भक्ति ज्ञान का लगे न रंगा।
पुनि विषयां के रसपान से, दिल अग्नि जाय भड़क है।। 3।।
भाई मिलने को...............................

रपट पड़े कई सुन-सुन निन्दा, मान, बड़ाई पायके विन्दा,
कायर जग में खाय गड़िन्दा।
गिर जावे शिखर मचान से, नरको में जाय पड़क[1] है।। 4।।
भाई मिलने को...............................

जे भगवन का दर्शन करना, शूरवीर लो गुरु का शरणा,
यम से जंग लड़ो नहीं डरना।
मत डर से मौत मशाण से, लो कर में ज्ञान खड्ग है।। 5।।
भाई मिलने को...............................

पग-पग पर है रपटण भारी, रपट पड़े अनगिन नर नारी,
कमर कसो चल होश सँभारी।
''सुखदेव'' हरि के ध्यान से, पहुँचेगा बैधड़क है।। 6।।
भाई मिलने को...............................

गिरे, पड़े[1]

भजन

''सात्विक, राजस एवं तामसी की भोजन से पहिचान''
राग– मारवाड़ी

करले भोजन से पहिचान, सात्विक, राजस, तामस नर की।। टेर।।
आयु, बल, सुख बढ़े सतोगुण, रोग निकट ना आवेरे।
चिकने रस से युक्त पदारथ, सात्विक मानव पावे रे।।
दूध, दही, फल मिलियहि, जैसा, खाय दाल अरु फलकी।। 1।।
करले भोजन से पहिचान....................

कड़वे अधिक लवण वाले तीखे दाहकारक रुखे रे।
खट्टे, गरम पदार्थ खावे, राजस नर नहीं चुके रे।।
दुःख अरु शोक बढ़े जीवन में, चले रोग की चरखी।। 2।।
करले भोजन से पहिचान....................

दुर्गन्धित, अधपके पदार्थ रस से रहित रहे झूँठे।
महा अपावन बासी खाकर, तामस नर आनंद लूटे।।
मदिरा, माँस, लहसुन, अण्डे, अरु दे मछली के जरकी।। 3।।
करले भोजन से पहिचान....................

राजस तामस छोड़ हमेशा, सात्विक भोजन करना रे।
हरि भक्ति सतसंगत करके भव सागर से तरना रे।।
''सुखदेवा'' पढ़ गीता जी यह बात सही ईश्वर की ।। 4।।
करले भोजन से पहिचान....................

चरखी–चक्र, जरकी–काटना

भजन

ये सहेंगे जीवन भर कष्ट

राग- हरियाणवी

इतने सब होंगे नष्ट रे-जीवन भर कष्ट सहेंगे।। टैर।।
घर-घर डोले ऐसी लज्जाहीन नारी जान।
आज्ञा नहीं माने ऐसी उच्छ्रृंकल संतान।।
गुप्तचरहीन राज, व्यभिचारी इंसान।
रिश्वत लेने वाले अधिकारी पहिचान।।
बहती नदियाँ के तीर पर सुनो कब तक वृक्ष रहेंगे।। 1।।
इतने सब होंगे..............................

आलसी का यश नाशे, ओछे नर की प्रीत जाय।
नपुंसक का कुल नाशे, क्रोधी की सुमति जाय।।
व्यसनी की विद्या नाशे, कामी का विवेक जाय।
खरपतवार नाशे, फसल में देख जाय।।
नर नारी नष्ट हो भोग से, बिन योग न चैन लहेंगे।। 2।।
इतने सब होंगे..............................

विषय विलास किये, सर्व ज्ञान ध्यान जाय।
ज्ञान का प्रकाश भये, घट का अज्ञान जाय।।
सतसंग बिना जीव चौरासी की खान जाय।
कामिनी के संग भाई संत की पिछान जाय।।
''सुखदेव'' बात है ज्ञान की डंके की चोट कहेंगे।। 3।।
इतने सब होंगे..............................

भजन

ज्ञान बिना कल्याण नहीं

तर्ज– जीवन है पानी की बूंद

श्री गुरु चरणों में प्रेम बिना निज ज्ञान कहाँ होगा।
ज्ञान बिना इस जीवन का कल्याण कहाँ होगा।। टैर।।
गुरुमूर्ति के ध्यान से उत्तम ध्यान कहाँ होगा।
गुरुपद जैसा पूजन का स्थान कहाँ होगा।
संतो की सत्संग जैसा सुखधाम कहाँ होगा।। 1।।
श्री गुरुचरणों में.....................

गुरु मंत्र से उत्तम प्रभु का नाम कहाँ होगा।
गुरु सेवा से अच्छा जग में काम कहाँ होगा।
गुरुदेव से भिन्न भला भगवान कहाँ होगा।
श्री गुरुचरणों में.....................

बिन श्रद्धा, विश्वास के वेद पुराण कहाँ होगा।
बिन आदर सम्मान दिये, सम्मान कहाँ होगा।
प्रेम भाव बिन मानव का उत्थान कहाँ होगा।। 3।।
श्री गुरुचरणों में.....................

आतम ज्ञान प्रकाश भये, अज्ञान कहाँ होगा।
''सुखदेवा'' दुख नाश भये, हैरान कहाँ होगा।
ब्रह्मज्ञान बिन नित्य सुखी इन्सान कहाँ होगा।। 4।।
श्री गुरुचरणों में.....................

भजन

पीवो अमृत की झारी

तर्ज– पहरो पहरो ये सुहागण सुरता....

पीवों–पीवों ये बड़भागन सुरता अमृत की झारी।
अमृत की झारी, सुरता हरि रस की झारी ।।टैर।।

बिन सेवा, बिन स्वारथ, पावे सद्गुरु उपकारी।
पी–वे सोहि अमर हो जावे, मत चूको बारी।। 1।।

जिसने टेकी ओक, रोग अरु शोक मिटे भारी।
प्यासा पी–वे आय, पास नहीं फट–के संसारी।। 2।।

मीराँ, सहजोबाई पीकर हो गई मतवारी।
पीव सू लागी लोर, डोर जद खींची बनवारी।। 3।।

पीवत ज्ञान अमीरस, मिटगी दुःख दुविधा सारी।
''सुखदेवा'' सद्गुरु चरणां पर जीवन बलिहारी।। 4।।

भजन

तर्ज– मनुष जनम को खो दिया...........

प्रणाम से प्रभु प्राप्त हो तुम्हें याद होके न याद हो।। टैर।।

अभिवादन सेवा करें, अहं बहम ममता टरे।
आयु, मति, बल, यश सरे, तुम्हें याद होके न याद हो।। 1।।

नयन, मन, वच, भैंटकर हस्त, पद संग लेटकर।
घुटने, उर, सिर टेक कर, तुम्हें याद होके न याद हो।। 2।।

श्रद्धा अरू विश्वास हो, अरु सविनय अरदास हो।
पूर्ण उसकी आश हो, तुम्हें याद होके न याद हो।। 3।।

''सुखदेव'' जो दिल धारते, है प्रभु उन्हें स्वीकारते।
करि मेहर भव से तारते, तुम्हें याद होके न याद हो।। 4।।

भजन

सूतोड़ा प्राणी जाग–जाग

तर्ज– छाती पर पैणां पड़या नाग

सूतोड़ा प्राणी जाग–जाग, रे मोहमाया री नींद त्याग ।। टैर।।
आ मिनख्या जूण मिली दोरी, तू गाफिल व्है कांई सो–व है।
आयु, धन, विद्या, धर्म, तेज, सब क्यूं भोगां में खो–व है।
तू मीठा सपना देखा–देखा, खो गयो सुहाणी रातां में।
हिवड़े री आँख्या खोल देख, कई जनम रूला दिया बातां में।।
मिलियोड़ो मौको चूक मति, अब राम भजन में लाग लाग।। 1।।
सूतोड़ा प्राणी जाग जाग.................

सुण माल माजणो जीवन धन, मिल पाँच धाड़ायति लू–ट है।
सो–व सो खो–व दुनियाँ में, जा–ग जद छाती कूट है।।
कंचन सी काया रा भांडा, तू देख भड़ाभड़ फूट रिया।
शीशे रा महल अटारी सब, तू देखा तड़ातड़ टूटरिया।।
धूँ धूँ कर लाय लगी सगळ, अब भाग सके तो भाग भाग।। 2।।
सूतोड़ा प्राणी जाग जाग.................

साधा री संगत कर कर ने, तन मन वाणी न शोध जरा।
हिवड़े रो कष्ट मिटे सगळे, तू कर ले आतम बोध जरा।।
गुरु मात पिता री सेवा कर, जग बीच भलाई ले ले रे।
मायड़ रो जायो पूत असल, छाती पर संकट झेले रे।
'सुखदेवा' सुख दे सगळ ने, स्वारथ रो करदे त्याग त्याग।। 3।।
सूतोड़ा प्राणी जाग जाग.................

भजन

दृढ़ गुरु भक्ति

राग- मारवाड़ी

सगळा सतसंग्या न खीज्यो रे।
जे चाहवे कल्याण गुरु आज्ञा मँ रीज्यो रे ।। टैर।।
पूत बाप की आज्ञा माने, नर आज्ञा न नारी।
गुरु आज्ञा न शिष्य माने, चैन मिले बड़ भारी।।
गुरु का चरण खोळकर पीज्यो रे ।। 1।।
जे चाहवे.........................

हलवाई की हाट छोड़ ज्यूं मांखी कठै न जावे।
बैठे फिर-फिर आय सेठजी, उड़ा-उड़ा थक जावे।
काठो गुरु चरणाँ चित्त दीज्यो रे ।। 2।।
जे चाहवे.........................

मालिक को संकेत न मा ने, चले आप बल घोड़ो।
थर-थर कांपे होय दुःखी जद, प-ड़े पीठ कर कोड़ो।।
कदै मत नुगरा संग भरमीज्यो रे ।। 3।।
जे चाहवे.........................

गुरु उपदेश शब्द पर चालो, गुरुबे मुख नहीं रहणो।
साधन कष्ट मिले ''सुखदेवा'' प्रेम भाव से सहणो।
मुक्ति पाय जुगाँ जुग जीज्यो रे ।। 4।।
जे चाहवे.........................

भजन

तर्ज– गायां हाळा कानजी रे...

रे उड़जा पंछी बावळा रे,
थारे पैरा मं पड़ग्यो जाळ, काळ सिर गाजता रे ।। टेर।।

चाले त्यों पांव फँसावणा रे, दाणे-दाणे में भरियो हलाल,
गाफिल क्यों नाचता रे।। 1।। थारे पैरा में...........

कुछ पल का पंछी पाहुणारे, फाड़े पांव, पंख सिर खाल,
शिकारी आवता रे।। 2।। थारे पैरा में...........

सुण हँस बटेऊ डावड़ा रे, उड़ मान सरोवर चाल,
राम गुण गावता रे।। 3।। थारे पैरा में...........

झट जाळ चूहों ने काटिया रे, दिया बधिक बाज को मार,
बधिक अहि काटता रे।। 4।। थारै पैरा में...........

''सुखदेव'' संभालो सांवरा रे,मेटे सब दुःख काळ जंजाळ नगारा
बाजता रे।। 5।। थारै पैरा में...........

भजन, तर्ज– दीन दयाल दया करके

कौन जगत में बड़भागी? जिसने नित सतसंग पाया है।
कौन जगत में दुरभागी? जिसके चित कुसंग छाया है।। टैर।।

कौन जगत में शुभ दिन है? जिस दिन सद्गुरु घर आया है।
चरण कमल में करे दण्डवत, सब अभिमान मिटाया है।। 1।।

कौन घड़ी पल शुभ माने? जब सदगुरु ज्ञान सुनाया है।
सुन सुन ज्ञान करे ब्रह्म चिन्तन, संशय सकल मिटाया है।। 2।।

कौन घड़ी पल अशुभ जगत में? दुर्दिन कौन कहाया है?
विषयों का चिन्तन चित्त में, नहीं गुरु पद शीश नवाया है।। 3।।

बंधिया कौन मुक्त जग में? सुन संतों ने फरमाया है।
''सुखदेव'' अज्ञ जन बंधन में, ज्ञानी जन मुक्त रहाया है।। 4।।

भजन

तर्ज- बिनजारी ये हँस-हँस बोल

बीरा म्हारा रे राम-राम बोल, हरि हरि बोल दुःख सब मिट जासी ।।टेर ।।

राम भजे आ राम मिले रे, मिटे जगत में राग।
प्रबल प्रेम से जो भजे रे, हो भव बन्ध का त्याग ।। 1 ।।

नाम जपे दोनों मिले रे, माया अरू भगवान।
पल-पल राम समारिये रे, कोड़ी लगे नहीं दाम ।। 2 ।।

वेद, संत, साधू कहे रे, सकल शिरोमणी नाम।
हर पल हरि धुन जब लगे रे, तब पावे निज धाम ।। 3 ।।

नाम लिखे पत्थर तिरे, तेरे तिरने में क्या शंक।
रो रो राम पुकारिये रे, जीवन होय निशंक ।। 4 ।।

प्रेम भक्ति सुख ऊपजे रे, चित्त निर्मल हो जाय।
"सुखदेवा" सुख हो सदा, नर जन्म सफल हो जाय ।। 5 ।।

भजन

राग- कालिंगड़ा

हे मन हरि गुण गाते रहिये ।। टेर ।।

विष सम जान सकल विषयों को,हरदम ध्यान हटाते रहिये ।। 1 ।।

कूसंगत को छोड़ पियारे, सत संगत में जाते रहिये ।। 2 ।।

मात, पिता, गुरुदेव के सन्मुख, अपना फर्ज निभाते रहिये ।। 3 ।।

ईश्वर अंश सकल जीवों की, सेवा कर सुख पाते रहिये ।। 4 ।।

दीन दयाल प्रभू आते हैं, रख दृढ़ प्रेम बुलाते रहिये ।। 5 ।।

जन "सुखदेव" हरी भज, हर पल, हरि पद बीच समाते रहिये ।।5 ।।

भजन

निगुणों का कौन धणी है ?

तर्ज– भव तारण कारण आवो जी

भगवान तेरी दुनियाँ में निगुणों का कौन धणी है।। टेर।।

सतसंगत में नहीं बैठे, क्यों बात ज्ञान की चैंठे।
संतों से जाकर ऐंठे, भावे नहीं भक्त गुणी है।। 1।।
भगवान तेरी..................................

जो संत हरि गुण गावे, जा उनको दोष लगावे।
नित झूंठी बात बनावे, जन–जन मन राड़ ठणी है।। 2।।
भगवान तेरी..................................

कृतघनि उपकार न माने, मुढ बैर गुरु से ठाने।
जड़ काटत छाने–छाने, चुभता ज्यों शैल अणी है।। 3।।
भगवान तेरी..................................

सगुणा गुरु शरणे सुख पावे, निगुणा नरक पड़े दुःख पावे।
गुरु गीता साफ सुनावे, उनका नहीं राम धणी है।। 4।।
भगवान तेरी..................................

खल मार सज्जन को तारे, हरि गीता मांही पुकारे।
''सुखदेव'' गुरु दिल धारे, उनके नित मौज बणी है।। 5।।
भगवान तेरी..................................

निगुणा = गुण, उपकार को नही मानने वाला

भजन

भगवत प्राप्ति हेतु सड़क

तर्ज– पारवा

भाई मिलने को भगवान से यह सीधी पड़ी सड़क है।। टेर।।
पहले सच्ची लगन लगाओ, सच्चे गुरु के शरणे जाओ,
दिल में श्रद्धा प्रेम बढ़ाओ, मिल गुरुवर में दिलजान से
किन्चित नहीं रहे फरक है।। 1।।

भाई मिलने को...............

हर दम गुरु आज्ञा में रीजे, सेवा कर चरणामृत पीजे,
शिक्षा ज्ञान हृदय धर लीजे, भगवन सम सद्गुरु ध्यान से,
नित नयना नीर ढ़रक है।। 2।।

भाई मिलने को...............

नित सतसंग करो दूँ हेला, मत करना निगुरों संग मेला,
चाहे रहना पड़े अकेला, रह दूर देह अभिमान से,
करना मत व्यर्थ तरक है।। 3।।

भाई मिलने को...............

सद्गुरु घट में राम मिलावे, सत, चित, आनन्द रूप लखावे,
बिरला भक्त जिज्ञासु पावे, ''सुखदेव'' यथारथ ज्ञान से,
सुख सागर बीच गरक है।। 4।।

भाई मिलने को...............

भजन

कपटी साधु

तर्ज– ब्याव बीनणी बिलकूं

बुगला भक्त घणा जग में, नहीं खुद का खुद को बेरा रे।
घर का पूत कंवारा डो ल, पाड़ोस्यां का फेरा रे।।टेर।।
पढ़-पढ़ वेद पुराण रू गीता, अर्थों पर ना अमल किया।
भेष बनाके करे ठगाई, सारे जग में भ्रमण किया।।
मूंड मुंडावे भेंट धरावे, खूब मूंड लिया चेला रे।।
घर का पूत कंवारा डो ल.........................

आंधलिया गुरु आंधा चेला, धजा बांध दी मूसळ क।
अपने-अपने मतलब कारण, धोक लगावे लुळ-लुळ क।।
डू-ब काली धार डूबोवे, लख चौरासी गेरा रे।। 2।।
घर का पूत कंवारा डो ल.........................

दीपक ज्यों परकाश करे है, नीचे हो अंधियारा रे।
मीठी बात करेगा सांगी, घट में ना उजियारा रे।।
कहणी रहणी एक बने बिन, तिरणा ना हो तेरा रे।। 3।।
घर का पूत कंवारा डो ल.........................

सतसंगत बिन सतगुरु कोन्या, बिन सतगुरु के ज्ञान नहीं।
ज्ञान बिना भई मोक्ष मिले ना, संतों का प्रमाण यही ।।
''सुखदेवा'' गुरुदेव बतावे, झट मुक्ति का सेरा रे।। 4।।
घर का पूत कंवारा डो ल.........................

भजन

खटपट में झटपट पी ले

खटपट में पीले झटपट रे पीछे पछतायेगा।
जो समय गया वो प्यारे, वापस नहीं आयेगा।। टेर।।

जो डरता है लहरों से, कैसे नहा पायेगा।
नहाने वाला हो निर्भय, छीलांग लगायेगा।। 1।।
खटपट......................

बिन ज्ञान अमोलक हीरा, मुढ़ यूँ ही गँवायेगा।
कर परख पारखीजन से, हर पल हरषायेगा।। 2।।
खटपट......................

कर योग, यज्ञ, सतसंगत, जो हरि गुण गायेगा।
ब्रह्मज्ञान भये हो मुक्ति, बहुरि नहीं आयेगा।। 3।।
खटपट......................

संग कामिनी कंचन काया, कुछ भी नहीं जायेगा।
कर राम भजन नित सेवा, परमानंद पायेगा।। 4।।
खटपट......................

''कर लेंगे'' कहता वो कुछ, भी नहीं कर पायेगा।
''सुखदेव'' अमोलक जीवन, जाने कब मिट जायेगा।। 5।।
खटपट......................

भजन

गर्व मर्दन

तर्ज– थारे घट में विराजे

थारो गर्व मिटावे भगवान, गर्व बीरा काहे को करे।। टेर।।

ज्योति पाकर गर्वे अग्नि, सूरज चाँद, सितार।
जुगनू की गुद में रख ज्योति, सर्व मिटाया अहंकार।। 1।।
गर्व बीरा काहे को करे.................................

गर्वे इन्द्र धनुष अम्बर में, विविध बिखेरे रंग।
रंग बदलता गिरगिट देखा, सकल घमण्ड हुआ भंग।। 2।।
गर्व बीरा काहे को करे.................................

अमृत पा महासागर गर्वे, गर्वायो नभ चंद।
मधुमक्खी के मुख मधु रहवे, सोच जरा मतिमंद।। 3।।
गर्व बीरा काहे को करे.................................

जिन-जिन गर्व किये ते ही डूबे, मूरख मूढ अजान।
ऐंठ, अकड़ अभिमान को प्यारे, नष्ट करे भगवान।। 4।।
गर्व बीरा काहे को करे.................................

मान, प्रतिष्ठा, पद, यश नाशे, क्यों करियो अभिमान।
धर ''सुखदेव'' विनयता दिल में, सहज होय कल्याण।। 5।।
गर्व बीरा काहे को करे.................................

भजन

सद्‌गुरु भक्ति

तर्ज- सांवरा आओ तो सही

ध्यान धर सद्‌गुरु का बंदा।
देकर आतमज्ञान काट दे चौरासी फंदा ।। टेर।।
गुरु मन्तर का जाप करो, गुरु चरण कमल ही पूजो।।
ईश्वर के महाईश, गुरु सम देव नहीं है दूजो।।
करो नित सद्‌गुरु का संगा ।।1।। देकर आत्मज्ञान.......

कई खरगोस्यां पा-छ भाग, एक हाथ नहीं आ-वे।
हो जावे बर्बाद जिन्दगी, टेम गया पछतावे।।
चेत नर हीया का अंधा।।2।। देकर आत्मज्ञान.......

जड़ सींच्या सू डाल, पान, फल, फूल फ-ळ ला भाई।।
गुरु भक्ति से ज्ञान होय जद, राम मि ले खुद मांही।।
गगन घट उग आवे चंदा ।।3।। देकर आत्मज्ञान.......

श्रद्धा, प्रेम, भरोसा, करियो, एक गुरु की सेवा।
निश्चित हो कल्याण सुनो, खरी खंट कही ''सुखदेवा''।
जगत में विचरो स्वच्छन्दा।।4।। देकर आत्मज्ञान.......

भजन

तर्ज–मेरे मालिक की दुकान में

तेरा जीवन सफल बनेगा, होजा राम का दिवाना।। टेर।।

धन दौलत और महल अटारी, पाकर क्या इतराना।
इनके साथ रहे नहीं इक दिन, होगा छोड़ रवाना।। 1।।

मेरे राम, राम का मैं हूँ, सब कुछ हरि का माना।
रोम–रोम कहे राम–राम तो, राम ही बीच समाना।। 2।।

बादल बिन बरसात नहीं, बरसात बिना नहीं दाना।
गुरु बिन राम लखे नहीं कोई, होय दुःखी मर जाना।। 3।।

गुरु चरणों में होय समर्पित, करले आतम ज्ञाना।
कण–कण ही भगवान दिखे, ''सुखदेव'' परम पद पाना।। 4।।

भजन

राग– आसावरी

मन रे निगुणा संग मत जाइये।
पीकर जहर डूब मर जाना, जे तुमको सुख चाहिये।। टेर।।

निगुणा गुण उपकार न माने, विषयानन्द मन भाईये।
ज्ञानामृत तज पी विषयारस, जहर सदा बरसाइये।। 1।।

मल का कीट, कीच में राजी, इत्र मिले दुःख पाइये।
दम घुट कर मर जायेगा, जे चन्दन संग लिपटाइये।। 2।।

हंसा संग चूही का करके, खुद के पंख कटाइये।
कृतघन करे प्रेम का नाटक, उसको तुरत हटाईये।। 3।।

होय कृतज्ञ रहो गुरु सन्मुख, गोविन्द के गुण गाईये।
कह ''सुखदेव'' मिले परमानन्द, सतसंग में नित आइये।

भजन

तर्ज– तेरे पूजन को भगवान

सती जो करे सत्य का ज्ञान, किया जिन जीते जी कल्याण।। टेर।।

जग में उत्तम पतिव्रत नारी, पति को भगवत रूप निहारी।
पर नर देखे नारी समान।। 1।। किया जिन....................

खुद से छोटे भ्रात समाने, हो नर बड़े पिता कर माने।
मध्यम देय पति हित प्राण।। 2।। किया जिन....................

जो भय, लाज, शरम परिहारी, राखो पर पुरूषों से यारी।
करे पति सेव कनिष्ठा जान।। 3।। किया जिन....................

करती पर पुरूषों संग सैर, राखे प्राणपति से बैर।
जग में अधम नार सोई मान।। 4।। किया जिन....................

पति जो मिलिया करम गति से, प्रीति केवल प्राणपति से,
वो "सुखदेव" जगत में महान्।। 5।। किया जिन....................

भजन

राग– ललित ताल

रतन बिन जतन रतन मत खोना।
रतन रतन में राम रतन है, रतन पाय मत सोना।। टेर।।

नरतन रतन पाय सद्गुरु के, चरन कमल चित जोना।
तन, मन, धन कर सेवा वचन से, पूर्ण समर्पित होना।। 1।।

हो अविचल चल कंटक पथ पर, पथ कंटक मत बोना।
नित सत्संग सरोवर जल में, मलिन वासना धोना।। 2।।

गुरु संकेत शब्द पर चलना, इधर, उधर मत होना।
पाले परमानंद मिटेगा, अनंत जनम का रोना।। 3।।

कह "सुखदेव" दिया सुर दुर्लभ, प्रभु ने रतन सलोना।
परमारथ कर समय खोय मत, नश्वर खेल खिलौना।। 4।।

भजन

ज्ञान बिना मुक्ति असंभव

तर्ज– थारे घट में विराजे भगवान

हंसा ले ले गुरु से ब्रह्म ज्ञान, मिले ना मुक्ति ज्ञान बिना।। टेर।।

ज्यों घर में घनघोर अंधेरा, नशे न बिन परकाश।
त्यों घट में अज्ञान तिमिर का, ज्ञान बिना नहीं नाश।। 1।।
मिले ना........................

ज्यों रज्जू[1] में सांप कल्प नर, भय से अति दुःख पाय।
रज्जू ज्ञान बिना सुख नाहीं, करि चाहे बहुत उपाय।। 2।।
मिले ना........................

तू सत, एक, आत्मा, चेतन, कल्पित यह संसार।
सद्गुरु सैन समझ निश्चय कर, पावे हर्ष अपार।। 3।।
मिले ना........................

सद्गुरु चरण शरण हो करके, गुरु भक्ति दिल धार।
सतसंग नाव बिठाकर प्यारे, तुरत करे भव पार।। 4।।
मिले ना........................

जप, तप, बरत करे सुर पूजन, भव दुःख नहीं नशाय।
आपहि, आपको, आपमें जानो, ''सुखदेवा'' सुख पाय।। 5।।
मिले ना........................

जेवरी[1]

भजन

राग– आसावरी
तर्ज– साधो भाई सहज समाधि भली

बन्नू प्यारे हरदम हँसमुख रीजे।
आतम ज्ञान, सेवा, गुरु भक्ति, खूब प्रेम से कीजे।। टैर।।
बन्नू प्यारे................

रोज समय पर सोना जगना, सात्विक भोजन लीजे।
प्राणायाम, व्यायाम करो नित, साधन तन को कीजे।। 1।।
बन्नू प्यारे................

अभिमान, अहंकार, ईर्ष्या, काम, क्रोध तज दीजे।
शील, विनय आदर्श, शिष्ट बन, ज्ञानामृत नित पीजे।। 2।।
बन्नू प्यारे................

कर सुमिरन, स्वाध्याय रू सन्ध्या, मन, मति निर्मल कीजे।
नित सत्संग करो ब्रह्म चिन्तन, आतम पद गह लीजे।। 3।।
बन्नू प्यारे................

सबकी सुन गुन सार शबद लख, वाद विवाद न कीजे।
विषम समय में आपा राखो, हँसकर उत्तर दीजे।। 4।।
बन्नू प्यारे................

प्रदर्शन तज स्व दर्शन कर, प्रेमादर नित दीजे।
कह ''सुखदेव'' जगत में ऐसे, सफल जिन्दगी जीजे।। 5।।
बन्नू प्यारे................

भजन

ज्ञान का डंका

राग-पारवा

प्यारे सतगुरु के दरबार में, नित बजे ज्ञान का डंका।
नित बजे ज्ञान का डंका रे, नित बजे ज्ञान का डंका।।टेर।।

नारायणी देह पाय विषयों में खोवे मति।
सिर पे खड़ा है काळ खूंटी तान सोवे मति।
बीड़ी, सिगरेट, चाय, चरसादि पीवे मति।
गांजा, भांग, चंडू, मद्य मुँह के लगावे मति।।
रावण बन कर इस जीवन की, नर काहे डूबोवे लंका।। 1।।
प्यारे सतगुरु के......................

गुरु मात पिता से तू कपट चलावे मति।
हृदय की बात गुरुदेव से छिपावे मति।
करो दण्डवत मन मूरख लजावे मति।
सन्ध्या, सुमिरन सतसंग बिसरावे मति।।
हो बड़भागी वो लाभ ले श्री सतगुरु ज्ञान की गंग का।। 2।।
प्यारे सतगुरु के......................

दीनों को खिलाये बिन, आप पहले खाओ मति।
दास बन सेवा करो, हुकम चलावो मति।।
करके भलाई फिर दिल शरमाओ मति।
देके विश्वास कभी पीछे हट जावो मति।।
दिल प्रेम, दया सद्भाव हो, तब लाभ मिले सतसंग का।। 3।।
प्यारे सतगुरु के......................

देख के पराई नार, प्रीत तू लगावे मति।
दगाबाज नीच को तू पास में बिठावे मति।।
थोथी मान बड़ाई में धन को लुटावे मति।
निगुरों का संग पाय, मन भरमावे मति।
हरदम रहना होशियार रे, परिणाम बुरा कुसंग का।। 4।।
प्यारे सतगुरु के......................

दुखियों की सेवा करि, भूल के सतावे मति।
तेरी कमजोरी जाय औरों को बतावे मति।।
आव नहीं आदर नहीं उस घर जावे मति।।
हिल मिल रहो सब बैर को बढ़ावे मति।
मिल बैठ समस्या दूर कर परिणाम बुरा है जंग का।। 5।।
प्यारे सतगुरु के.....................
घर आये किसी के भी दिल को दुखावे मति।
बिना पूछे किसी की भी वस्तु को उठावे मति।।
घर की कलह को लेय, न्यायालय में जावे मति।
वैदिक धर्म सत इसे बदलावे मति।।
निज देश धर्म हित प्राण दे, कोई महाशूर बलिबंका।। 6।।
प्यारे सतगुरु के.....................
सड़ी गली चीज भगवान को चढ़ाओ मति।
समय चुकाय फिर आवो चाहे आवो मति।।
बिना देश काल राग रागनी सुनाओ मति।।
सतसंग बीच तज प्रसंग को गावो मति।।
दुनिया के सब रंग छोड़ कर, तेरा चोल रंगा हरि रंग का ।। 7।।
प्यारे सतगुरु के.....................
गुरु ब्रह्मनिष्ठ हो तो और देव ध्यावो मति।
मिलने जाओ तो कभी खाली हाथ जावो मति।।
गुरु सेवा रत रहो बिना पूछे आओ मति।
जो भी गुरुदेव देवे हाथ को हटाओ मति।।
गुरु भक्ति बिना नहीं ज्ञान हो, बिन ज्ञान मनुज बेढंग का।। 8।।
प्यारे सतगुरु के.....................
हरि तेरे घट में है, वन मांहि जावे मति।
न्यारे-न्यारे मत पंथ, उनमें फँसावे मति।।
झूँठा जग ब्रह्म सत्य चित को डोलावे मति।
समता को धार भाई व्यर्थ दुःख पावे मति।
''सुखदेव'' स्वयं सुख रूप है, कर ज्ञान रहे नहीं शंका।। 9।।
प्यारे सतगुरु के.....................

भजन

तर्ज– जीवन है पानी की बूंद

प्रभु से ऊँचा जग में प्रभु का नाम होता है।
सुमिरे जो दिल से, तो आराम होता है।। टेर।।
मूर्खों में कहाँ भक्तों का सम्मान होता है।
कमबख्तों में भक्तों का बदनाम होता है।।
जिसका ना कोई उसका राम होता है।।1।।
प्रभु से ऊँचा जग में..................
भक्ति करने वाला यदि निष्काम होता है।
फिर जो भी चाहेगा वो हर काम होता है।।
संतों का सच्चा यह पैगाम होता है।।2।।
प्रभु से ऊँचा जग में..................
वन्दन रोज किसी से दुआ सलाम होता है।
सन्ध्या कर दोपहर सुबह अरु शाम होता है।।
सबका यह अन्तिम सुख का धाम होता है।। 3।।
प्रभु से ऊँचा जग में..................
निगुरों के कल्याण का रस्ता जाम होता है।
है ''सुखदेव'' के राम अतः सब काम होता है।।
प्रेमी प्यारों का तो विश्राम होता है।।4।।
प्रभु से ऊँचा जग में..................

भजन

राग– आसावरी

रे मन अति मतिमंद भयो रे।
जगपति बिसर जगत में विचरे, शठ तोहे मोतिया बिन्द भयो रे।। टैर।।

हरि, गुरु, ग्रन्थ, पंथ नहीं चाले, विषयों में लिपटन्त रह्यो रे।
अमृत छाँड़ि हलाहल पीवे, फिर–फिर काल के गाल गयो रे।। 1।।

पूंछ मगर की पकर मूढ़ मति, कबहूँ न सागर पार गयो रे।
हरि गुरु चरण शरण जिन पकरी, तिनके कालहि जाल दह्यो रे।।2।।

अवसर पाय चेत मत चूके, संत सभी समझाय कह्यो रे।
जन ''सुखदेव'' परमसुख पावे, राम निरंजन राख हियो रे।। 3।।

तर्ज : सुनो–सुनो ध्यान से प्यारा

सुनो–सुनो बन्नू[1] निज ज्ञाना। सम चेतन तू निर्वाना।।टैर।।

यह नाम, रुप, जग, माया, नहीं तेरी तू नहीं काया।
तू आतम अमर कहाना।। 1।। सुनो–सुनो..........................

नहीं स्थूल, सूक्ष्म, कारण, तुरिया का होत निवारण।
है तुरियातीत ठिकाना।। 2।। सुनो–सुनो..........................

स्पर्श, रुप, रस, गंधा, नहीं शब्द विषय का फंदा।
तुम गुण, गोतीत रहाना।। 3।। सुनो–सुनो..........................

तू जीव जगत नहीं ईशा, पर ब्रह्म नहीं जगदीशा।
निरपेक्षित आप कहाना।। 4।। सुनो–सुनो..........................

पुनि लौटे, मन, मति वाणी, भया गूँगा काँख पिदाणी।
आप हि में आप समाना ।। 5।। सुनो–सुनो..........................

तू '' है'' जो ही ''है'' लख सैना, नहीं शेष बचा अब कहना।
' सुखदेव' रहो मस्ताना ।। 6।। सुनो–सुनो..........................

बन्नू[1] – जिज्ञासु

भजन

राग– कव्वाली
तर्ज– कभी प्यासे को पानी

गुरु चरणों में चित्त तो लगा ही नहीं
झूँठे जग में लगाने से क्या फायदा ।। टेर।।
जब कि दिल ही दाता का दीवाना नहीं,
झूँठे नखरे दिखाने से क्या फायदा।
देह सुन्दर मिली, नारी सुन्दर मिली,
बेटे पोते मिले घर सुन्दर मिला।
मेरु पर्वत के तुल्य मिला धन जिसे,
सारी दुनियां में छाया है वो यश मिला।।
गुरु पद रज में प्रीति अनन्य नहीं
प्रीति औरों में करने से क्या फायदा।।1।।

सदाचार पालन करें जो सदा
स्वदेशे विदेशों में आदर मिला।
जिसे वेद वेदांगादि कंठस्थ हैं,
काव्य सृजन से जग में समादर मिला।
गुरु चरणों में आसक्ति के बिन मना,
लाखों सद्गुण कमाने से क्या फायदा।।2।।

महारत है गाने बजाने में तू,
भया प्रवीण भाषण सुनाने में तू।
लगा शिष्यों की संख्या बढ़ाने में तू,
सारी दुनियाँ से पूजा कराने तू।।
गुरु चरणन की पूजा करी ही नहीं,
प्यारे औरों के पूजन से क्या फायदा।। 3।।

जग से सब कुछ मिला,
तो भी कुछ ना मिला, गुरु पद कण मिला,
पल में सब कुछ मिला।
गुरू पद को हर पद में धर पद रचे,
हर पद पद पे, पद-पद में आनन्द मिला।
''सुखादेवा'' मिला पद से पद में प्रिय।
आगे पद को सुनाने से क्या फायदा।। 4।।

भजन

अष्ट मद

तर्ज– भला किसी का कर ना सको तो

आठ मदों का त्याग करे, वो दुनिया में सुख पायेगा।
अभिमानी मद अंध अज्ञानी, जनम–जनम दुःख पायेगा।। टैर।।
विद्या[1] मद में अंध होय, गुरु मात पिता से लड़ता है।
माया[2] मद में अंध धर्म हित, कोड़ी खर्च न करता है।
पर हित में विद्या धन खर्चे, वो सबके मन भायेगा।। 1।।
अभिमानी मद अंध...............

राज[3] मदान्ध पायकर पद, ना नीति धर्म उपकार करे।
योवन[4] मद में अन्ध नीच, माँ बहिनों संग व्यभिचार करे।
जीवन बिन्दु धर्म गँवाये, आखिर में पछितायेगा।। 2।।
अभिमानी मद अंध...............

जाति[5] मद में अन्धा नर, पर जाति को नीची माने।
खोटे कर्म करे फिर भी, स्व जाति को ऊँची माने।
कुल[6] मद अंध सदा निज कुल को, सबसे श्रेष्ठ बतायेगा ।। 3।।
अभिमानी मद अंध...............

गोरे तन को देख लुभावे, रूप[7] मदान्ध हि इतरावे।
सबसे नीच सुरामद[8] हैं, जो पीवे उसको पी जावे।
जो ''सुखदेव'' अष्ट मद त्यागे, सो विद्वान कहायेगा।। 4।।
अभिमानी मद अंध...............

भजन

ज्ञान कमल को खिलते देखा

तर्ज– प्रबल प्रेम के पाले पड़कर

पश्चिम में नहीं भानु उदय हो, पूरब में नहीं ढलते देखा।
बगुला हंस बने सतसंग में, कृष्ण कंस नहीं बनते देखा।। टेर।।

सोना सज्जन टूट मिले पर, दुर्जन को नहीं मिलते देखा।
निर्मल, साफ हृदय में हमने, ज्ञान कमल को खिलते देखा।। 1।।
पश्चिम में नहीं...............

अभिमानी की फूंक से किन्चित, हिमगिरी को नहीं हिलते देखा।
प्रेम के वश भगवान भगत के, चरण कमल को मलते देखा।। 2।।
पश्चिम में नहीं...............

पापी, नीच, कुटिल, खल को भी, गुरुचरणन सिर धरते देखा।
गणिका, सदन कसाई से तिर गये, गुरु बेमुख नहीं तिरते देखा।। 3।।
पश्चिम में नहीं...............

यह जग, तन चल रहा निरन्तर, आतम अचल न चलते देखा।
कह "सुखदेव" सन्त जन को नहीं, परमारथ से टलते देखा।। 4।।
पश्चिम में नहीं...............

भजन

दीपक जलाने से क्या फायदा

तर्ज– कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

सच्चे गुरुवर का सत्संग मिला हो जहाँ, वहाँ चित को हिलाने से क्या फायदा।
अंधियारे में सूरज खिला हो जहाँ, वहाँ दीपक जलाने से क्या फायदा।। टेर।।

सच्चे गुरुवर...............

गुरुचरणों का अमृत मिला हो उसे, पानी तीरथों का पीने से क्या फायदा।
गुरु, ईश्वर के भजनों का गायन वहाँ, अन्य गीतों के गाने से क्या फायदा।।

सच्चे गुरुवर................

जिसके घर में पारसमणि हो धरी, उसे दौलत कमाने से क्या फायदा।
भव तिरने को नावें, जहाजें खड़ी, वहाँ तिरकर के जाने से क्या फायदा।।

सच्चे गुरुवर................

सेवा संतों की पूजा करें जो सदा, देवी, देवों के पूजन से क्या फायदा।
देव दुर्लभ यह नर तन मिला है उसे, विषयों में लगाने से क्या फायदा।।

सच्चे गुरुवर................

लौ लागी है दिल में हरिनाम की, नाम औरों का लेने से क्या फायदा।
दिल में निगुरों के गुरुवर की भक्ति नहीं, गुरु गीता सुनाने से क्या फायदा।।

सच्चे गुरुवर................

हुआ ज्ञान आतम का दर्शन जहाँ, देव दर्शन को जाने से क्या फायदा।
'सुखदेवा' गुरु कृपा से सब मिला, उनको पलभर भुलाने से क्या फायदा।।

सच्चे गुरुवर................

भजन

तर्ज– ऐ मेरे वतन के लोगों

गुरुदेव चरण में मस्तक जो काट के धर सकता है।
सतसंगत से वो प्राणी, तत्काल सुधार सकता है ।। टेर।।

गुरु प्रेम भक्ति में खोकर, कर नमन उन्हीं का होकर।
पी चरणामृत पद धोकर, कर याद सदा रो-रोकर।।
गुरुदेव जिसे अपनाले, यमराज क्या कर सकता है।। 1।।

सब कष्ट तितिक्षा सहकर, आज्ञा में रहे निरन्तर।
संध्या सुमिरण सेवा कर, गुरु तत्व लखे अभिअन्तर।।
व्यापक परब्रह्म को लखकर, संसार से तर सकता है।। 2।।

हो दृढ़ इच्छा दृढ़ भक्ति, तब सहज होय दृढ़ ज्ञाना।
सुख-दुःख जय और पराजय, समझे फिर एक समाना।
ब्रह्मआतम एक समझकर, भय रहित विचर सकता है।
''सुखदेव'' परमपद पाकर अब जन्म न मर सकता है।। 3।।

भजन

गुरु द्रोहियन से दूर

बन्नू मत करिजे रे गुरु द्रोहियन से मेल।
भक्ति, ज्ञान, वैराग विनाशे, निज अवगुण दे भैल।। टैर।।

कूकर व्यर्थ हि भौंकत डोले, ज्यों गजराज की गेल।
विष के बाण चलावे मूरख, कटू वचन के सेल।।

हंस काग का मेल न बैठे, मिले न जल में तेल।
कर सत्संग कुसंग मत करना, करे तो भव दुख झेल।।

दुःख पावे दुःख देय अंत में, पड़े चौरासी जेल।
जो कोई संग रहे उस जन को, पहिले देय धकेल।।

गुरु बेमुख निगुरों के संग से, होय जिन्दगी फेल।
जन ''सुखदेव'' करो सत्संगत, गुरु गोविन्द संग खेल।।

भजन

राम–आसावरी

सतगुरु शरण इहीं विधि लीजे।
ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय गुरु सन्मुख जाय प्रार्थना कीजे।। टेर।।

चारों साधन सहित होयकर, सद्गुरु शरण गहिजे।
कर में भेंट लेय कर दण्डवत्, पुनि चरणामृत पीजे।। 1।।

तन, मन, धन, वाणी अर्पण कर, सेवा में नित रीजे।
होय विनम्र संवाद करे, जब सतगुरु हृदय उमीजे।। 2।।

मैं हूँ कौन? कौन जग ईश्वर? माया कौन कहीजे।
जीव ब्रह्म का मर्म समझकर जीवन मुक्त रहीजे।। 3।।

जब गुरु कसै, करे जग निन्दा, पीछे पग मत दीजे।
यों ''सुखदेव'' परम पद पाकर, फेरि युगों युग जीजे।। 4।।

भजन

भगवान सभी में एक है

टुक ज्ञान नयन से देखे, भगवान सभी में एक है।
माया के खेल निराले, रंग रुपहि नाम अनेक है।। टेर।।

ये सूरज चांद सितारे, जुगनू, दीपक, अंगारे।
जिससे होते उजियारे, वो तेज सभी में एक है।। 1।।

ये हाथी घोड़े, गैया, सुत मात पिता अरु भैया।
जिसके बल से विचरैया, वो राम सभी में एक है।। 2।।

शिव, दादू ऊँ ऊचारे, कोई सीता राम पुकारे।
बस नाम है न्यारे न्यारे, नामी तो सब में एक है।। 3।।

ये जीव, जगत के सारे, दीखत है न्यारे न्यारे।
निज आतम रूप विचारे, आधार सभी का एक है।। 4।।

'सुखदेव' जीव, जग, ईशा, ब्रह्मा हरि हर जगदीशा।
मूरख को न्यारे दीसा, ज्ञानी को दीसे एक है।। 5।।

भजन

तर्ज– गर्व नहीं कीजिये रे......

करत नर छाने–छाने रे, गुरु घट–घट की जाने रे।
गुरु घट–घट की जाने रे, ज्ञान दे भरम मिटाने रे ।। टैर।

मिटावे वो अभिमाने रे, जीया तेरा बुरा माने रे।
जीया तेरा बुरा माने रे, गिरे चौरासी खाने रे।। 1।।

गावे अर्पण के गाने रे, स्वार्थ मद मांही डूबाने रे।
स्वार्थ मद मांही डूबाने रे, क्रोध करि बैरहि ठाने रे।। 2।।

प्रेम विश्वास न आने रे, द्वेष वश मारत ताने रे।
द्वेष वश मारत ताने रे, लगा जग को भरमाने रे।। 3।।

राम सम गुरु को जाने रे, वही हो राम समाने रे।
वही हो राम समाने रे, जगत ब्रह्म रुप पिछाने रे।। 4।।

कहे ''सुखदेव'' जो प्राणे रे, सैन सत्गुरु जी की माने रे।
सैन सत्गुरुजी की माने रे, वही परमानन्द पाने रे।। 5।।

भजन

तर्ज– दीनदयाल दया करके.........

क्या जग से आश करे सुख की, अपने सुख रुप को भूल गया।
मोहजाल में फँस हैरान हुआ, जब से गुरुदेव को भूल गया।।टेर।।

सोने, चाँदी के टुकड़ों में, सुख ढूँढत है धन दौलत में।
बन निर्धन दर दर पे भटके, जब आतम धन को भूल गया।। 1।।

सुन्दर तन में क्या सुख ढूँढे, मुट्ठी भर राख बने पल में।
जिससे जग, तन सुन्दर भासे, उस ब्रह्म, आतम को भूल गया।।2।।

सुन्दर नारी में सुख माना, भोगा पर खुद ही भोगा गया।
है सत्यम शिव सुन्दर सबसे, निज सुन्दर रुप को भूल गया।। 3।।

नहीं सुख है कुटुम्ब रू. बंगलों में, नहीं मान बड़ाई जग पद में।
तू सुख सागर 'सुखदेव' स्वयं, अविनाशी पद को भूल गया।।4।।

भजन

तर्ज– चल हंसा उण देश......

नर समझ यथारथ धार, भव जल तिरना रे।। टैर।।

देह तीन है दृश्य विनाशी, तीन अवस्था मिथ्या पासी,
आतम दृष्टा है अविनाशी, यों करि–करि ब्रह्म विचार
अनुभव करना रे।। 1।। नर समझ................

पाँच कोश का जाननहारा, अनुभव कर्ता आप है न्यारा
सत, चित, आनंद परम पियारा, तू साक्षी सर्वाधार,
जनम नहीं मरना रे।। 2।। नर समझ..................

पंचभूत त्रिगुण विस्तारा, साक्षी में कल्पित संसारा।
अस्ति, भांति प्रिय रूप हमारा, लख होवे हर्ष अपार,
मगन हो फिरना रे ।। 3।। नर समझ..............

दृश्य अपेक्षित दृष्टा होई, साक्ष्य अपेक्षित साक्षी सोई।
स्व निरपेक्षित द्वन्द्व न कोई, ''सुखदेव'' अवाच्य, अपार
काहे अब डरना रे।। 4।। नर समझ..............

भजन

राम– आसावरी

साधो भाई आतम धन सोई धन रे।
जिन पाया धनवंत कहाया, शेष सभी निर्धन रे ।। टैर।।

सोना, चाँदी, हीरे, मोती, संचै लोभी जन रे।
सब तज इक दिन जाय अकेला, संग चले नहीं कण रे।।1।।

जले, गले नहीं चोर चुरावे, पास रखे सब जन रे।
मरजीवा पावे बिरला जब, शीश करे अर्पण रे।।2।।

लक्ष्मी पति आ चरण पखारे, भैंट करे तन मन रे।
जन ''सुखदेव'' परम सुख पा कर, मस्त रहे हर क्षण रे।।3।।

भजन

राम– आसावरी

आतम पंच कोश ते न्यारा।
पाँच कोश जड़ आतम चेतन, सबका जाननहारा।। टेर।।

अन्नमय, प्राण, विज्ञान, मनोमय, आनंद पंच प्रकारा।
स्थुल, सूक्ष्म, कारण देह भीतर, पंचकोश विस्तारा।। 1।।

स्थुल देह सोई अन्नमय जानहु, जन्मादिक है विकारा।
सूक्ष्म देह में प्राण, विज्ञान, मनोमय कोश विचारा।। 2।।

कोश प्राणमय कर्मेन्द्रिय संग, पंच प्राण स्वीकारा।
ज्ञानेन्द्रिय संग मति विज्ञानमय, मन संग मनोमय धारा।। 3।।

कारण देह है कोश आनंदमय, सुख प्रतिबिम्ब पियारा।
रूप प्रमोद, मोद, प्रिय बिरती, आतम बिम्ब आधारा।। 4।।

इनको ''मैं'' ''मेरा'' करि समझे, सो नर मूढ़ गँवारा।
लख ''सुखदेव'' विवेक दृष्टि, से बिम्ब स्वरूप हमारा।। 5।।

भजन

राग– आसावरी

जग में सो है वाचक ज्ञानी।
ज्ञान कथे पर खुद नहीं चाले, करता फिरे मनमानी।। टेर।।

पी गांजा, बिड़ी, सिगरेटें, धुँआ धोर मचानी।
चण्डू, चरस, चाय नहीं छूटे, लतसंगी हम जानी।। 1।।

काम, क्रोध, मद, लोभ न छूटे, 'मैं' 'ममता' उलझानी।
मत और पंथवाद में अटके, मतसंगी हम मानी।। 2।।

आदर, मान, भैंट के भूखे, धन, दारा मन भानी।
साँच कहे मारिन को दौड़े, लठसंगी हम ठानी।। 3।।

सेवारत, प्रेमी, निर्व्यसनी, आतम पद ठहरानी।
कह 'सुखदेव' कहे ज्यों चाले, सो सतसंगी प्राणी।। 4।।

भजन

श्रुति षडलिंग

श्रुतिन को समझे षड लिंगन के द्वारा।
असंभाव, विपर्य नाशे, घट में हो उजियारा।। टैर।।
चव साधन से युक्त जिज्ञासु, सद्गुरू शरण गहे जाकर।
साक्षात ज्ञान का साधन है, पुनि अंगी श्रवण करे आकर।।
मनन पुनि निदिध्यासन कर, जीते जी होय उद्धारा।। 1।।
श्रुतिन को समझे......................
आदि अंत, मधि वेद कहे, यह आतम ब्रह्म स्वरूपा है।
षड़लिंगन से करि अंग श्रवण, तब प्रगटे ज्ञान अनूपा है।।
श्रवण बिना नहीं मनन, निध्यासन, मोक्ष मिले नहीं प्यारा।। 2।।
श्रुतिन को समझे......................
अद्वैत ब्रह्म का प्रतिपादन हो आदि अंत प्रकरण महे।
उपक्रम-उपसंहार दोऊँ मिल, प्रथम लिंग विद्वान कहे।।
अभ्यास लिंग, अद्वैत अर्थ नित पढ़िये बारम्बारा।। 3।।
श्रुतिन को समझे......................
प्रकाश स्वरूप अलौकिकता, अपूर्वता लिंग तृतीय कहा।
श्रुति से भिन्न प्रमाणों की, अविषयता का भाव जहाँ।।
अद्वैत ज्ञान से मिले मोक्ष, फल लिंग चतुर्थ उच्चारा।। 4।।
श्रुतिन को समझे......................
अभेद ज्ञान की स्तुति, जहाँ भेद ज्ञान की निन्दा हो।
अर्थवाद लिंग पंचम लख, ''सुखदेव'' बोध घट जिन्दा हो।।
उपपति युक्ति उदाहरण से, करे प्रतिपादन विस्तारा।। 5।।
श्रुतिन को समझे......................

ज्ञान की सप्त भूमिका

राग-पारवा

है सप्त भूमिका ज्ञान की, सब संत ग्रन्थ फरमावे।। टैर।।
शुभ इच्छा, सुविचरना भाई, तनुमनसा, सत्वापति गाई,
असंगसक्ति पंचम बतलाई, पदार्थ अभाविनी तूरीयगा,
कर भिन्न-भिन्न समझावे।।1।। हे सप्त भूमिका......
मल, विक्षेप, रहित मन होवे, चहुँ साधन सम्पन्न जन होवे,
सद्गुरु चरण शरण चित जोवे, हो दृढ़ इच्छा कल्याण की,
यह प्रथम भूमिका गावे।।2।। हे सप्त भूमिका......
तू है ब्रह्म दिया गुरुज्ञाना, चिन्तन, मनन करो धर ध्याना,
द्वितीय यही भूमिका गाना, भेद की बाध, अभेद की साधक,
युक्ति जनों मन लावें।।3।। है सप्त भूमिका.....
मन की सूक्ष्म अवस्था जब हो, निदिध्यासन परिपक्वित तब हो,
वृति ब्रह्माकार गजब हो, तनुमानसा भूमिका तीसरी,
व्यवधान रहित चित्त थावे।।4।। है सप्त भूमिका.....
निदिध्यासन को पक्का करके, संशय विपर्य भाव को हरके,
निर्विकल्प समाधी धरके, हो अनुभव शुद्ध स्वरुप का,
सत्वापति भौम कहावे।। 5।। है सप्त भूमिका.....
जब अहंकार मिटे पुनि ममता, संगातीत रहे दिल समता।
अनआसक्त स्वरुप में रमता। यह ज्ञान भूमिका पांचवीं
आसक्ति सकल नशावे।।6।। है सप्त भूमिका.....
सर्व पदारथ नाही प्रपंचा, व्यापक ब्रह्म शेष है टंचा,
मति विज्ञान परम पद रंचा, यह षाष्ठ भूमिका ज्ञान की,
सर्वत्र ब्रह्म दर्शावे।। 7।। है सप्तभूमिका.....
द्वैताद्वेत न मेरा तेरा, स्वपर से पर दूर न नेरा,
भावाभाव नहीं गुरु चेरा, ''सुखदेव'' लखे कोई सैन में
तूरीयगा जाय समावे।। 8।। है सप्त भूमिका.....

भजन

राग– आसावरी, सोरठ

साधो भाई वाणी पांच प्रकारा
मधा, बेखरी और पश्यन्ति, परा, अवाच्य विचारा।। टैर।।

शिष्य करे प्रार्थना, विनती गुरु से करुण पुकारा ।
सोई लखो मध्यमा वाणी, बालक सम व्यवहारा ।।1।।

सद्गुरु शब्द सुनाय जगावे, भिन्न-भिन्न विस्तारा।
समझो सोई बैखरी वाणी, बरसे ज्ञान अपारा ।।2।।

समरथ शिष्य मुदित हो बोले, निज अनुभव ततसारा ।
सोई जान पश्यन्ति वाणी, वरणै गुरु उपकारा ।।3।।

साक्षी की महिमा गावे जो, नहीं नहीं करत उचारा ।
जग का बाध करे सिद्ध चेतन, परा जगत से पारा ।।4।।

वचनातीत सदा ज्यों की त्यों, करती मात्र ईशारा।
यह "सुखदेव" अवाच्य वाणी, गावहि संत पियारा।। 5।।

भजन

राम मिलन की राय

राग– सोरठ

जियरा राम मिलन यदि चाहवे।
जग ते विमुख रहे हरी सन्मुख, हर दम हरी गुण गावे।। टैर।।
धर विश्वास मगन रहे मन में, अतिशय लगन लगावे।
पूर्ण प्रेम के वश परिपूरण, राम मिलन खुद आवे।। 1।।

ईश के शीश मुकुट मणि जग में, संत संगत में जावे।
सेवा करे, हुक्म में रहवे, वो प्रभु के मन भावे।। 2।।

सद्गुरु हृदय उमंग दया करि, घट में राम लखावे।
लख "सुखदेव" राम निज आतम, राम ही बीच समावे।। 3।।

भजन

परमातम प्राप्त सदा ही

तर्ज– सुनो–सुनो ध्यान से प्यारा..........................

भटके मत जग में भाई, परमातम प्राप्त सदाई।।टेर।।

दे ध्यान वचन सुन मेरा, प्रभु से नित योग है तेरा।
मन, बुद्धि से जाना न जाई।। 1।। भटके मत जग......

सृष्टि पर दृष्टि अटके, नहीं परमातम पर फटके।
बहु जनम जनम दुःख पाई।। 2।। भटके मत जग......

जब हो उत्कट अभिलाषा, हो जग आसक्ति विनाशा।
दर्शे तुझ में तुझ सांई।। 3।। भटके मत जग......

केवल तुम दृष्टि डारो, निज सहज स्वरूप सँभारो।
तत्काल परम पद पाई।। 4।। भटके मत जग......

सपने सुत ढूँढे माई, जागी जहाँ का तहाँ पाई।
यह प्राप्ति की प्राप्ति कहाई।। 5।। भटके मत जग......

है केवल भूल मिटाना, फिर आना कहीं नहीं जाना।
'सुखदेव' सदा सुख पाई।। 6।। भटके मत जग......

भजन

आत्म विचार कैसे करें ?

तर्ज– मना तू कर जे रे सत पुरुषां को संग

मना नित करजे रे आतम ज्ञान विचार।
ज्ञान किये भव बन्धन छुटे, सहज होय भवपार।। टैर।।
सद्गुरु शरण विधिवत होकर, तन, मन, धन दे वार।
शब्द मंत्र उपदेश दिया, जिन सुमिरों बारम्बार।। 1।।
मना नित..........................
मल, विक्षेप, हटाले आवरण, ज्ञान हृदय में धार।
देह जग वस्तुन में मोह ममता, सकल कामना टार।। 2।।
मना नित..........................
संतन की सत संगत करके, भेद भरम परिहार।
वाद–विवाद कभी नहीं करना, ले लेना तत्सार।। 3।।
मना नित..........................
जाति वर्ण अरु जन्म मरण, सब है काया के लार।
अजर, अमर, तू आतम चेतन, दृष्टा अपरम्पार।। 4।।
मना नित..........................
काल तीन, तन चार अवस्था, पंच कोश के पार।
गोतित, प्राण, बुद्धि का साक्षी, तू ब्रह्म जग आधार।। 5।।
मना नित..........................
साँप जेवरी में कल्पित, त्यूं चेतन में संसार।
बोध भये 'सुखदेव' अभय हो छावे हर्ष अपार।। 6।।
मना नित..........................

भजन

''स्वरुप बोध''

अपने स्वरुप को याद करो।
धूल हटा निज भूल मिटा नर, क्यों जीवन बर्बाद करो।।टैर।।
हे सिंह जगाले सिंहपना, इस भेड़पने को दूर हटा।
हे भूप स्वरुप की भूल ही से, जीवन में छायी दुःख की घटा।
अज्ञान अन्धेरा बाद करो।।१।।

अपने स्वरुप............

श्वान चबाता हड्डियों को, निज मुख से खून उतरता है।
उसकी ना भूख और प्यास मिटे, अपने प्राणों को हरता है।।
जीवन में ना अपराध करो।।२।।

अपने स्वरुप............

दोनों हाथों से पेड़ पकड़, चिल्लाये वृक्ष ने पकड़ लिया।
ब्रह्मा भी कैसे छुड़ायेंगे, अपनी बाँहों से जकड़ लिया।।
अब क्यों झूँठी फरियाद करो।।३।।

अपने स्वरुप............

चिड़ियाँ प्रतिबिम्ब को और जान, नित चोंच मारती दर्पण पर।
अज्ञान मिटेगा ज्ञान ही से, गुरु के तन-मन-धन अर्पण कर।।
इस द्वैत ज्ञान को बाद करो।।४।।

अपने स्वरुप............

मैं सबका सब में सभी जगह, यह बोध यथार्थ कर लेना।
सद्गुरू उपदेश समागम से, दुःख जन्म मरण का हर लेना।।
''सुखदेव'' ना वाद-विवाद करो।।५।।

अपने स्वरुप............

भजन

ज्ञान से ही मुक्ति संभव

तर्ज– उड़–उड़ रे म्हारा.............

सुन–सुन रे मन ज्ञान पियारा।

ज्ञान सुण्याँ, अति सुख पावे, ज्ञान बिना अति दुःख पावे।। टैर।।

संत गुरु पद शीश टिकाना, क्रोधादि अभिमान मिटाना।

जे निश दिन हरि गुण गावे, ज्ञान सुण्याँ अति सुख पावे।। 1।।

सुन–सुन रे............................

हो आसक्त गुरु के चरणाँ, प्रेम भाव से सेवा करना।

विषय आसक्ति मिट जावे, ज्ञान सुण्याँ अति सुख पावे।। 2।।

सुन–सुन रे............................

सद्गुरूजी ब्रह्मज्ञान लखावे, तत्वमसि उपदेश सुनावे।

जीव परम पद को पावे, ज्ञान सुण्याँ अति सुख पावे।। 3।।

सुन–सुन रे............................

व्यष्टि, समष्टि, रूप प्रपंचा, इनसे पर परमातम टंचा।

ब्रह्म जाने ब्रह्म होई जावे, ज्ञान सुण्याँ अति सुख पावे।। 4।।

सुन–सुन रे............................

दृढ़ इच्छा, साधन दृढ़ भक्ति, हो दृढ़ज्ञान मिले झट मुक्ति।

''सुखदेवा'' आनंद छावे, ज्ञान सुण्याँ अति सुख पावे।।

सुन–सुन रे............................

भजन

निज आतम रूप पिछानले

निज आतम रूप पिछानले, मत भूल भरम में भटके।
गुरु उपदेश समझ हिय धरले, हो जावे बेखटके।। टैर।।
चार्‌यूं साधन धार हिया में, गुरु चरणां सिर पटके।
मन में प्रेम राम सम राखे, ज्ञान सुणे फिर डटके।। 1।।
निज आतम रूप....................
तु नहीं देह, देह नहीं तेरी, ममता में मत अटके
सत, चित्त, आनन्द आतम तू है, देह धर्मो से हटके।। 2।।
निज आतम रूप....................
ईश्वर, जीव जगत तेरी फुरणा, समझ आप को झटके।
तत्वमसि में, भाग त्याग की, सैन समझले सटके।। 3।।
निज आतम रूप....................
बंधन मान लिया ज्यों घट में, हाथ बंधे मरकट के।
है नित मुक्त बंधा नहीं किन्चित, खुद को देख पलटके।। 4।।
निज आतम रूप....................
चुप-चुप सैन दई तोहे चुप की, वचन पास नहीं फटके।
चुप-चुप लख 'सुखदेव' चुपी को, तो चुपचाप व्है चटके।। 5।।
निज आतम रूप....................

भजन

तेरे घट में है भगवान

तेरे घट में है भगवान धरो मन में विश्वास है।
क्या ढूँढे दूर अजान यार वो तेरे पास है।। टेर।।
कोई ढूँढ रहा जल थल में, कोई ढूँढे नील गगन में।
कोई तापे ताप अगन में, कोई ढूँढे वन उपवन में।
ज्यों सूँघे मृग अज्ञान, सदा वन वन की घास है।। 1।।
तेरे घट में है भगवान..................

कोई सद्ग्रन्थों को रटके, पुनि मत पंथों में भटके।
कोई देवन के सिर पटके, कोई उलटा मुँह कर लटके।।
कभी हुआ न हो बिन ज्ञान, हृदय में भ्रम का नाश है।। 2।।
तेरे घट में है भगवान..................

बिन प्रेम कोई नहीं पावे, चाहे पचि-पचि के मर जावे।
श्री सद्गुरु सैन बतावे, दिल में दिलदार मिलावे।
जब हो आतम का ज्ञान, लखे घट-घट में वास है।। 3।।
तेरे घट में है भगवान..................

अब जान सको तो जानो दर-दर की धूल न छानो।
तत्काल उसे पहिचानो, 'सुखदेव' कहे सच मानो।
अभिन्न सदा भगवान, जिहि फूलों में बास है।। 4।।
तेरे घट में है भगवान..................

भजन

तर्ज– दीनदयाल दया करके

वेदान्त ज्ञान है सर्वोपरि महासागर से भी गहरा है।
घट में चट ज्ञान प्रकाश करें, झट मेटे घोर अँधेरा है।। टेर।।

ब्रह्मज्ञानी मर्म बताते हैं, मूरख सुनकर चकराते है।
कोई भेद जिज्ञासु पाते हैं, मुरझाया खिलता चेहरा है।। 1।।

दिव्य अनुभव युक्ति बता करके, सब में इक तत्व लखा करके।
सब द्वैत का भरम मिटा करके, दिया विश्व विजय ध्वज लहरा है।।2।।

मत पंथ अनेकों भिदवादी, भ्रम भेद बढ़ावे जिदवादी।
जहाँ गरजे सिंह अभिदवादी, तहाँ स्याल कबहूँ नहीं ठहरा है।। 3।।

यह वैदिक धर्म सनातन है, अविनाशी परम पुरातन है।
जहाँ बंध मोक्ष दिन रात न है, केवल सत्ता का पहरा है।। 4।।

सब भेद मिटाय अभेद करे, पुनि भेदाभेद से करत परे।
जिज्ञासुन का सब खेद हरे, 'सुखदेव' परम सुख रह रहा है।। 5।।

भजन

तर्ज– दीन दयाल दया करके

जो ज्ञान की भौम चढ़ा सप्तम, वो हिमगिरी शिखर चढ़े क्यों करि ?
जिसने खुद को पढ़ लीना है, वो वेद, पुराण पढ़े क्यों करि।। टेर।।

सद्गुरु पद ही गंगा, यमुना, अरु तीरथ राज, गया, पुष्कर।
चरणामृत पीकर मस्त भये, वो तीरथ नीर पिये क्यों करि।। 1।।

तज मान, प्रतिष्ठा, पद, यश को, वो स्व पद बीच प्रतिष्ठित है।
जो ब्रह्म पद देत मुमुक्षन को, वो जग पद हेतु लरे क्यों करि।। 2।।

स्वाभाविक कर्म बने जिनसे, निर्लिप्त, अभय होकर विचरे।
जिनके सब कर्म अकर्म भये, वो कर्म निषेध करे क्यों करि।। 3।।

''सुखदेव'' रहे सुख सागर में, भवसागर बीच परे क्यों करि।
जीते जी जीवन मुक्त हुआ, पुनि जन्में और मरे क्यों करि।। 4।।

भजन

''ज्ञानीकी निर्लिप्तता''

तर्ज– श्री कृष्ण की माला

ब्रह्मवेता की वाणी, नहीं समझे मूढ़ अज्ञानी।
ज्ञानी की गति ज्ञानी, जाने अज्ञ भये हैरानी।। टेर।।
रमता जग मस्त फकीरा, सब दुनियाँ का महापीरा।
है क्षमाशील महाधीरा, रहे शीतल गहन गम्भीरा।।
जिज्ञासु समझे सुख पावे, सहज स्वरूप समानी।। 1।।
ब्रह्मवेता की वाणी.....................

सूंघे पर कुछ नहीं सूंघे, बोले पर कुछ नहीं बोले।
भोगे पर कुछ नहीं भोगे, डोले नहीं किन्चित डोले।।
सब कुछ करे, करे नहीं कुछ भी, अविगत अलख अबानी।।2।।
ब्रह्मवेता की वाणी.....................

जिनके न विधेय निषेधा, कुछ पक्ष न भेद अभेदा।
निकले वाणी से वेदा, ब्रह्म दृष्टि भई भ्रम छेदा।
लखे प्रेम से प्रेम दिवाने, सद्गुरुदेव लखानी।। 3।।
ब्रह्मवेता की वाणी.....................

जिनके कुछ कर्म न किरिया, हो सहज जगत में फिरिया।
जिन सैन लखी वो तिरिया, भया बेमुख भव में गिरिया।।
संत, ग्रन्थ ''सुखदेव'' कहे, निर्लिप्त जगत में ज्ञानी ।। 4।।
ब्रह्मवेता की वाणी.....................

भजन

(राग- आसावरी)

जिसने खुद को नहीं पहिचाना।
हो भयभीत परम दुःख पावे, अन्त अधोगति जाना।। टेर।।

मैं हूँ कौन? कहाँ से आया? कहाँ मेरा स्थाना?
अपना कौन? पराया है, नहीं मालूम ठौर ठिकाना।। 1।।

प्राणी और पदार्थ के संग, ममता कर उलझाना।
अभिमानी अहंकार युक्त हो, निज कर्त्तव्य भुलाना।। 2।।

गाफिल सोय रहा बरड़े, त्यूं अज्ञानी बरड़ाना।
जगा हुआ नर आय जगावे, तब होवे निज ज्ञाना।। 3।।

मान, बडाई, कंचन, कामिनी, पाय परम सुख माना।
''सुखदेवा'' गुरुदेव कृपा बिन, परमानंद न पाना।। 4।।

भजन

राग- हरियाणवी

व्यापक ब्रह्म स्वरूप सदा तू, स्थित रहना योग में।
बस अपना कर्त्तव्य निभावे डूब न जाना भोग में।। टेर।।

सुख नहि किंचित मांस पिण्ड के, सपरस और संयोग में।
शक्ति क्षय हो तब सुख भासे, मन को वस्तु वियोग में।
कल्पित सुख में जीव बंधा, फिरता है चिन्ता शोक में।। 1।।

माया रंग असंग हो बरते, पावे सुख इहि लोक में।
परमारथ को पीठ न देना, रहना गुरु की कौख में।
सच्चे गुरु का सच्चा बालक, मुक्त फिरे त्रिलोक में।। 2।।

ज्यों मधु खाय उड़े मधुमक्खी, त्यों खेलो जग चोक में।
सर्व हितारथ बाण शब्द का, दिया कलेजे ठोक में।
थोड़ी कहि 'सुखदेव' रे भैया, तुम समझो इसे थोक में।। 3।।

भजन

तेरा ब्रह्म स्वरूप पिछानले

राग- पारवा

तेरा ब्रह्म स्वरूप पिछानले, है चेतन मुक्त सदाई ।।टेर।।

चार अवस्था तीन काल में, तेरी कमी नहीं किसी हाल में,
झूँठ ही माना फँसा जाल में, हैं सत, चित आनन्द ठान ले,
सब भूल भरम मिट जाई।।1।। तेरा ब्रह्म................

जग अज्ञान का कारज भाई, वस्तु का विवर्त कहाई,
ज्ञान भया जग गया विलाई, अब है सोई मुक्त है मान ले,
कहाँ बन्धन आ ठहराई।।2।। तेरा ब्रह्म................

तू ही जगत का सार सही है, तेरे बिन संसार नहीं है,
और कोई करतार नहीं है, तू आतम सबको जान ले,
तेरा जाननहार न कोई।।3।। तेरा ब्रह्म................

ब्रह्मवेता सद्गुरु समझावे, गोप्य वेदान्त सिद्धांत लखावे,
लख 'सुखदेव' मुक्त पद पावे, खुद से खुद को पहिचान ले,
खुद से भिन्न जगत न सांई।।4।। तेरा ब्रह्म................

भजन

राग- माड

ऐसे योगी को डर नाही रे,

दुनियाँ में ऐसे योगी को डर नाहीं ।। टैर।।

माता क्षमा अरु धैर्य पिता हो, संयमी मन जैसा भाई रे।।1।।

सत्य सखा अरु बहिन दया हो, शान्ति वाम जिन पाई रे।। 2।।

जिनके दस दिश वसन भये हो, भूमि पर सो जाई रे।।3।।

ज्ञानामृत (तत्व ज्ञान)है भोजन जिनका,चित्त पर ब्रह्म समाई रे ।।4।।

कह "सुखदेव" लखे कोई योगी, योग परम सुखदाई रे।।।।

भजन

ज्ञानी जन बैचेन

राग– माड

दुनियाँ में देखे ज्ञानीजन बेचैन,

ज्यों भृंग लट को भृंग बनाने, विचरत है दिन रैन ।। टेर ।।

शीतल नैन, बैन मधुमय जो, समझावत कर सैन ।। 1 ।।

सजग, सरल है सहज स्वाभाविक, परहित परत न चैन ।। 2 ।।

हो निष्काम करे नित सेवा, प्रेम के वश सब देन ।। 3 ।।

कह ''सुखदेव'' जगा सोई भागा, देख खोलकर नैन ।। 4 ।।

भजन

तर्ज– दीन दयाल दया करके......

निज अमर स्वरूप लखा जिसने, उसे मरने की परवाह नहीं।
वो परम सुखी है दुनियाँ में, जिसे जीने की भी चाह नहीं।।टेर ।।

मरने वाला तन मरता है, बहने वाला जग बहता है।
रहने वाला नित रहता है, सत्ता का कहीं अभाव नहीं।।१ ।।

लघुतामय जीवन है जिनका, प्रभूपद को पाय प्रसन्न रहे।
ममता तज समता में रमता, उसके पर दूजा शाह नहीं।।२ ।।

''मैं'' को तज ''मैं'' में स्थित है, पुनि ''मैं'' तू दोऊ बिसार दिये।
अब है सो है नहीं सो तो नहीं, जहाँ जनम मरण की छांह नहीं।।३ ।।

लखकर खुद से खुद को खुद में, संतुष्ट तृप्त आनंदित है।
''सुखदेव'' महा सुखसागर की, मिले गुरु कृपा बिन राह नहीं।।४ ।।

भजन

आतम है भगवान

था अकेला है अकेला रहे अकेला।
तू आतम है भगवान जगत में है अकेला।। टेर।।
निज ज्ञान बिना यह जगत अनेकों रूप में भासे।
ज्यों सोना कंगन, हार नथनियाँ चूंप में भासे।।
सब टूट गले अब देखो सोना है अकेला।। 1।।
तू आतम है भगवान.....................
ज्यों रज्जू में साँप, सीप में चाँदी दरशे।
त्यों आतम में जीव, जगत अरू ईश्वर दरशे।।
है व्यापक सर्वाधार सदानन्द है अकेला।। 2।।
तू आतम है भगवान.....................
देह, सृष्टि के पहले भी तो तू था अकेला।
देह, सृष्टि है तो भी तो तू है अकेला।।
देह, सृष्टि के नाश भये भी रहे अकेला।। 3।।
तू आतम है भगवान.....................
यह जड़ कल्पित संसार बताता हूँ है कैसा?
करले खुद की पहिचान, दिखेगा तेरे जैसा।
तू सत, चित, आनन्द रूप निजानन्द है अकेला।। 4।।
तू आतम है भगवान.....................
नहीं जनम नहीं है मौत बने नहीं आना जाना।
''सुखदेव'' रहे भय मुक्त होय जब आतम ज्ञाना।।
अब छाये परमानन्द खुशी से रहे अकेला।। 5।।
तू आतम है भगवान.....................

भजन

निगुणों को राम मिले

मत करो अचम्भा भाई, निगुणों को राम मिले हैं।
बिन कान सुणे सोइ समझे, अग्नि में कमल खिले है।। टेर।।

महानीच गुरुपद पावे, ऊँचे सब नरक सिधावे।
ज्ञानीजन गोता खावे, विषयी जग बीच तिरे है।। 1।।

है मरा हुआ वो मारे, प्यासों के शीश उतारे।
जो तृप्त भये उन्हें टारे, शूरों संग दाल गले है।। 2।।

नव युवती के संग रंचे, अरु सम्पति जग में संचे।
सोई साध जगत में टंचे, दासी से न नैन मिले है।। 3।।

जो आप काल को खावे, दुनियाँ को आग लगावे।
अपनों को मार भगावे, ''सुखदेव'' वो मस्त दिले है।। 4।।

भजन

तर्ज– केसरिया बालम
राग– माड

नजरिया खुद पर डारो नी, संभारो अपनो देश ।। टैर।।

सत् चित् आनन्द ब्रह्म स्वरुपा, जहँ नहीं राग रु द्वेष।
परमानंद निजानन्द रुपा, नहीं दुख का लवलेश।। 1।।

भावातीत निरंजन है, नहीं जन्म मरण अवशेष।
तू महासागर लहरें तेरी, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।। 2।।

एकं नित्य निरन्तर तू शिव, सुन्दर जगत नरेश।
सर्वाधार सकल में व्यापक, विमलम् अचल हमेश।। 3।।

ईश, जीव, जग कल्पित तुझ में, सुन वैदिक संदेश।
तू ''सुखदेव'' सदा सुख सागर, यह सतगुरु उपदेश।। 4।।

भजन

आत्म ज्ञान से, जन्म मरणादिक का अंत
तर्ज– दीन दयाल दया करके

जिसने भगवान को जान लिया, वो दर दर बीच फिरे क्यों करि।

जिन आतम रुप पिछान लिया, वो जन्मे और मरें क्यों करि ।।टैर।।

जिसने भगवान ....

जिन प्रेम सुधा रस पान किया, विषया रस पान करे क्यों करि।

जो मानव पर हित प्राण देय, औरन के प्राण हरे क्यों करि।। 1।।

जिसने भगवान ....

जो हरदम हरि का ध्यान करे, वो और का ध्यान धरे क्यों करि।

अद्वैत ब्रह्म का ज्ञान करे, वो और का ज्ञान करे क्यों करि।। 2।।

जिसने भगवान ....

सद्गुरु प्रभु के गुणगान करे, वो फूहड़ गान करे क्यों करि।

जो गुरु चरणामृत पान करे, तीरथ जल पान करे क्यों करि।। 3।।

जिसने भगवान ....

सम सुख दुख हानि लाभ सकल, चित मान अमान धरे क्यों करि,

''सुखदेव''गरक सुख सिन्धु में, अब व्यर्थ बखान करे क्यों करि ।।4।।

जिसने भगवान ....

भजन

व्यापक राम हृदय में बोले

तेरे दिल में राम बसे हैं, फिर क्यों वन-वन में डोले रे।
सब दुनियाँ में है व्यापक, वो राम हृदय में बोले रे।। टैर।।
तेरे दिल में ....

यदि जो कोई मिलना चाहवे, नित हरि से प्रीत लगावे।
सब तजकर लाज शरम को, सतसंगत में चित लावे।।
हो पूर्ण समर्पित भाई सच्चे सद्गुरु का होले रे।। 1।।
तेरे दिल में ....

धरती में व्यापक पानी ज्यों कुँए से मिलता है।
कण-कण में व्याप रहा जो हरि हिरदे में मिलता है।।
कर निर्मल सरल हृदय को नित प्रेम नीर से धोले रे।। 2।।
तेरे दिल में ....

घी व्यापक दूध दही में, पर मंथन से हम पावे।
चन्दन में अग्नि व्यापक, ज्यों मंथन से प्रकटावे।।
कर ब्रह्मज्ञानी संग चिन्तन, भगवान के दर्शन जोले रे ।। 3।।
तेरे दिल में ....

देखन हारे को देखे, जानन हारे को जाने।
लिखने वाले को लखले, है राम वही पहिचाने।।
सब राम ही राम दिखेंगे, जब ज्ञान नयन को खोले रे।। 4।।
तेरे दिल में ....

काया मायामय जग का आधार तू ही इक राम है।
आपहि से आपको जानो मिल जायेगा आराम है।।
'सुखदेव' मिले सुखसागर है पर्वत राई ओले रे ।। 5।।
तेरे दिल में ....

भजन

तर्ज- समद जहाँ मोती रे......

चल पंछी उण देश, अचल पद प्रेम मिले।। टैर।।

जब गुरु मिले, मिलो गुरुवर में, ज्यों जल बूँद मिले सागर में।
अहं बचे नहीं शेष ।। 1।। अचल पद..................

चल पंछी सतसंग सरोवर, मोती चुग ब्रह्म ज्ञान धरोहर।
भय, शोक रहे नहीं लेश।। 2।। अचल पद..................

तीरथ, व्रत, मत में मत भटको, द्वैत, अद्वैत वाद को पटको।
रहो सत्ता मात्र हमेश ।। 3।। अचल पद..................

पद, बिन पंख चले सो ही पावे, आतम पद में सहज समावे।।
मिटे ''सुखदेवा'' सब क्लेश।। 4।। अचल पद..................

भजन

बोलो सोहं-सोहं

देश न बदलो वेश न बदलो केश न बदलो बावरे।
निश्चित ही भगवान मिलेंगे बदलो मन का भाव रे ।। टैर।।
बोलो सोहम् सोहम् बोलो शिवोहम् शिवोहम्।

तन मत बदलो, मन मत बदलो, मत बदलो धन धाम रे।
रुप न रंग ढंग मत बदलो, मत बदलो चाहे नाव[1] रे।। 1।।

तन नहीं अपना, मन नहीं अपना, नहीं अपना धन धाम रे।
आश्रम, रुप, रंग नहीं अपना, अपने गुरु भगवान रे ।। 2।।

जनम न अपना मरण न अपना, वरण न अपना गांव रे ।
तू आतम परमातम चेतन, सो कहीं आव न जाव रे।। 3।।

शव, संसार निरन्तर बदले, नहीं बदले शिव सांव रे।
ले ''सुखदेव'' सैन सद्गुरु से, परमानन्द को पाव रे।। 4।।

नाव[1] = नाम

निजानन्द फकीरी

भजन

तर्ज– सखी म्हारे मन भायो ये मदन गोपाल

यूं परम पिया संग राची रे, परम पियारी नार।
परम पियारी नार, पाई परम पिया को प्यार ।। टैर।।
जब प्रेम बांसुरी बाजी, हो मस्त छमाछम नाची।
भई प्रीत पिया से सांची, दिल में भयो हर्ष अपार।। 1।।
यूँ परम पिया ....

पंच भूत के पूत पच्चीसा, पथ पाँच लूटेरा दीसा।
ली काट सभी का शीशा, भगी पांच कोश के पार।। 2।।
यूँ परम पिया ....

रिपू तीन की फोड़ कपाळी, तिरकाल को खा गई काळी ।
झट मार चूड़ेल को चाली, मिली कर सोलह सिणगार ।।3।।
यूँ परम पिया ....

चढ़ सात पेड़ियां शूरी, पर्वत की करके चूरी।
जा मिली नूर में नूरी, ''सुखदेव'' समाधि धार ।। 4।।
यूँ परम पिया ....

भजन

अद्भुत देश हमारा
राग-प्रभाती

अद्भुत देश हमारा संतो अद्भुत देश हमारा रे।।टेर।।

सत, चित, आनंद, नित्य, अखंडित, नाम रूप आधारा रे।
सुख-दुख द्वंद्व रहित अविनाशी, अद्वय परम पियारा रे।।

धरणी, अगन, गगन, जल नाही, नहीं जगत विस्तारा रे।
है सुख राशि स्वयंप्रकाशी, चंद्र सूर्य नहीं तारा रे।।

भेदाभेद न ज्ञान अज्ञाना, नहीं हल्का नहीं भारा रे।
है ''सुखदेव'' निरंतर व्यापक, जन्म-मरण से न्यारा रे।।

भजन

आनंदरूप हमारा
राग- भीम पलासी

संतो आनंद रूप हमारा।
आतम नित्य सनातन पूरण, सब सुख प्राण आधारा।।टेर।।

ज्यों मृग नाभि बसें कस्तूरी, वन-वन खोजत हारा।
त्यों निज आनंद रूप भुलाकर, दुख पावत संसारा।।१।।

विषयन में सुख मानत सोई, मम प्रतिबिंब निहारा।
बिन विषयन लखि नींद समाधि में, आनंद रहत अपारा।।२।।

अपने नाते प्रिय लगत धन, धाम, कुटुम्ब, परिवारा।
जिस के नाते प्रेम है जिससे, वह है अधिक पियारा।।३।।

मैं सब का, सबसे प्रियतम हूं, गुरुमुख किया विचारा।
सुखसागर ''सुखदेव'' निरंतर, रहे मगन मतवारा।।4।।

भजन

ब्रह्म अद्वैत पिछान लिया
तर्ज – निज आतम रुप हमारा है....

ब्रह्म अद्वैत पिछान लिया फिर, द्वैतभाव का करना क्या।
अमर,अभय पद जान लिया, फिर काल जाल से डरना क्या।।टेर।।

गुरु मुख से वेदांत पढ़ा, फिर भेद वचन हिय धरना क्या।
सत, चित, आनंद आतम सोहम्, जन्म नहीं फिर मरना क्या।।
ज्ञान समंदर नहाय रहे फिर, ताल तलैया तरना क्या।
प्रेम नीर गलतान रहें, फिर जाय हिमाचल गरना क्या।।१।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

ज्ञान का रंग लगा जब पक्का, भेख रंगीले धरना क्या।
मन का मस्तक मूंड लिया, फिर मूंड मुंडाकर फिरना क्या।।
मन घोड़े असवार हुये, गज बाज सवारी करना क्या।
ज्ञान खड़ग ले युद्ध लड़े, फिर आन शस्त्र से लड़ना क्या।। २।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

ज्ञान, प्रेम की चढ़ी खुमारी, और नशों का करना क्या।
हरदम सहज समाधि रहे, फिर ध्यान गुफा में धरना क्या।।
सत्य शिवोहम् धार लिया, काया में हमता करना क्या।
त्याग दिये घर बार सकल, मठ में पुनि ममता करना क्या।। ३।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

मूल गहा जब वृक्ष पान, फल फूल के फेर में पड़ना क्या।
नित्य निरंजन देव भजे, फिर आन देव चित धरना क्या।।
ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव मिले, फिर ईश्वर आन सुमिरना क्या।
सेवा, गुरु उपदेश छोड़कर, मंदिर, मस्जिद फिरना क्या।।४।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

संतन की सतसंगत कर के, कूसंग जाय बिगड़ना क्या।
काम, क्रोध रिपु मार लिये, फिर आन शत्रु से डरना क्या।।
सत्य सनातन धर्म हमारा, ऊंच नीच फिर करना क्या।
जाति, प्रांत, मत, पंथवाद ले, भाषावाद झगड़ना क्या।। ५।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

परमारथ मग पर पग धरकर, किंतु परंतु करना क्या,
ऊखल में सिर दे ही दिया, फिर चोट पड़े तो डरना क्या।।
सोहम जाप अखंड चले, कर काठ की माला धरना क्या।
ज्ञान गुफा विश्राम किया, तीरथ वन-वन में फिरना क्या।। ६।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

घट में है संतोष सबुरी, लोभ - लाभ फिर करना क्या।
निज घर आय किया जब वासा, फिर घर-घर में फिरना क्या।।
भोगो से वैराग हुआ फिर, बहुत पसारा करना क्या।
संगातीत हुआ जग से फिर, स्वर, लय, ताल उचरना क्या।। ७।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

गोरा काला करता भरता, जनम-मरण की फुरना क्या।
आतम देह धर्मों से न्यारा, करके ज्ञान बिसरना क्या।।
सब घट में ब्रह्म ज्योति जरे, तहं दीप मशाल का जरना क्या।
सुख सागर ''सुखदेव''शिवोहम्, जग सुख देख विचरना क्या।।८।।
ब्रह्म अद्वैत पिछान.....

भजन

राग – आसावरी

अब हम निज घर किया निवासा।
सुखमय अधर सैज नित पौढ़त, सकल भरम दुःख नाशा।।टैर।।

बहुत काल घर-घर भटकायो, फंसिया भोग विलासा।
पंचकोश के पार भवन है, अटल, अचल, अविनाशा।। १।।

उडगन, चंद्र, दीप बिन सूरज, हरदम रहत प्रकाशा।
आपो आप ताप त्रिय नाही, नहीं काल यम त्रासा।। २।।

रैन-दिवस तहं जन्म-मरण नहीं, व्यापे भूख पियासा।
हरदम मगन आनंदित रहवे, मेट जगत की आशा।। ३।।

अजर अमर सुखधाम पठाये, सद्गुरु ''भूरादासा''।
है ''सुखदेव'' असीम निरुपम, व्यापक ज्यों आकाशा।। ४।।

भजन

राग – आसावरी

अब मम प्रीत भई इक रब से।
नयन श्रवित,दिल द्रवित रहे तन, पल-पल पुलकित तब से।।टैर।।

शेष, गणेश, धनेश, ब्रह्मादिक, पूज रहे थे कब से।
अब मन राम निरंजन सन्मुख, विमुख हुआ इन सब से।। १।।

क्रोधादि रिपु काल भयंकर, मुक्त भये यम ठग से ।
सुमिरन नित्य करे सतसंगत, भये असंगत जग से।। २।।

पंच विषय विष तजा काम रस, मिला राम रस जब से।
अटल, अचल ''सुखदेव'' अमर हरि, भजे निरंतर अब से।। ३।।

भजन

हम देख बड़े हैरान है

राग – पारवा

हम देख बड़े हैरान है कहां बंधन है जो खोलें ।।टैर।।

तू निर्गुण, निर्मल, अविकारा, सत, चित, आनंद ब्रह्म अपारा,
अधिष्ठान है सर्व आधारा, नहीं खुद की सही पिछान है,
हो दुखी जगत में डोले ।।१।। हम देख बड़े .....

ज्यों घट मरकट के कर अटके, सूवा उलटि नली पर लटके,
फटकि शिला गज मस्तक पटके, निज भूल सर्व दुख खान है,
बस खुद को जरा टटोलें ।।२।। हम देख बड़े .....

तू सब पर तुझसे यह सब है, तुझ पर और कोई नहीं रब है,
निरबंधन व्यापक जो नभ है, नहीं ध्याता ध्येय न ध्यान है,
है मुक्त सदा चित जोले ।।३।। हम देख बड़े .....

सद्गुरु सैन समझ ले युक्ति, खुद में बंध नहीं कोई मुक्ति,
लख "सुखदेव" बात ये पुख्ती, जिसके घट आत्मज्ञान है,
है शांत व्यर्थ नहीं बोले ।।४।। हम देख बड़े .....

भजन

राग – मालकोष

साक्षी ब्रह्म स्वरूप हमारा।
सब घट एक, भेद नहीं किंचित, व्यापक अनंत अपारा ।।टैर ।।

त्रिय देह पंचकोश नहीं माया, बुद्धि न मन नहीं पंच पसारा।।१ ।।

शब्द, रुप, रस है नहीं गंधहि, नाम न रुप, इंद्रिय व्यवहारा।।२ ।।

शुन्य अज्ञान, अहं, चिद् नांहि, दृष्टा सबका जानन हारा।।३ ।।

नही''सुखदेव''जीव, जग, ईश्वर, अविनाशी, अज, सर्व आधारा।।४।।

भजन

भव बंधहरण गुरूदेव

तर्ज– अँधियारा मिटने वाला है

भव बंधन का भय मेट दिया, गुरुदेव कहाने वाले ने।
गुरुदेव कहाने वाले ने, भगवान कहाने वाले ने।। टेर।।

जीवन गुरुपद में पेश किया, मुझे तत्वमसि उपदेश दिया।
अज्ञान अन्धेरा लेश किया, ब्रह्म ज्योति जलाने वाले ने।। 1।।

मुझे श्रवण, मनन, निधिध्यास करा, पुनि तत त्वं पद का शोध करा।
दिया आतम पद का बोध खरा, ब्रह्म रूप लखाने वाले ने।। 2।।

बड़भाग मिला सत्संग मुझे, आया जीने का ढंग मुझे।
रंग डारा अपने रंग मुझे रंगरेज कहाने वाले ने ।। 3।।

कभी मार कभी दे प्यार मुझे, तत्काल लखाया सार मुझे।
''सुखदेव'' दिया भवतार मुझे, अवतार कहाने वाले ने।। 4।।

भजन

राग-मालकोष, यमन

ब्रह्म अद्वैत रहा सब ठांई।
अचल, असंग, विमल,अविकारी, व्यापक नभ सम आव न जाई ।।टैर।।

नाम रूप यह जगत प्रभासे, उपादान कारण के मांई।
ब्रह्म बोध, भ्रम बाध भया तब, कारण-कार्य एक दर्शाई।।
ब्रह्म अद्वैत रहा.........।।१।।

ठूंठ में चोर, रज्जू में सर्प लख, भेद मान जन व्यर्थ डराई।
यों कल्पित जग, जीव, ईश लखि, ब्रह्म से भिन्न कबहुं नहीं पाई।।
ब्रह्म अद्वैत रहा.........।।२।।

भेद करे सो खेद को पावे, ज्ञान अभेद परम सुखदाई।
जन ''सुखदेव'' अद्वैत रूप लखि, सुख सागर सुख रूप समाई।।
ब्रह्म अद्वैत रहा.........।।३।।

भजन

गोविंद गुरु सब रूप तुम्हारे।
तेरी कृपा बिन दरश न पावे, होइ कृपा सब और निहारे।। टैर।।

आदि अंत मधि व्यापक तुम ही, कारण-कारज व्याप्य पुकारे।
अधिष्ठान तुम ही हो अधिष्ठित, तिरणहार तुम तारण हारे।। १।।
गुरु गोविंद सब.......

दृष्टा, दर्शन, दृश्य तुम्ही हो, ध्याता ध्यान, ध्येय अविकारे।
ज्ञाता, ज्ञान तुम ज्ञेय निरंजन, रंजन ईश जगत विस्तारे।। २।।
गोविंद गुरु सब........

सत्य, असत्य, चराचर तुम हो, अपरा, परा, परापर पारे।
भक्ति, भक्त, भगवंत तुम्ही से, ''सुखदेव'' निरंतर है बलिहारे।।३।।
गोविंद गुरु सब.......

भजन

ज्ञानी अज्ञानी दीखत एक समान

तर्ज– प्रेम में डूबे चतुर सुजान

ज्ञानी अज्ञानी दीखत एक समान।
अंदर में अंतर बहु तेरा, ज्यों धरणी असमान।टैर।।

चरमदृष्टि इक ब्रह्मदृष्टि मय, दोऊ जगत में फिरते हैं।
भेद, खेद, संशय युक्त इक, हो भय मुक्त विचरते हैं।।
मन माया वश कर विचरे इक, मन माया वश जान।। १।।
ज्ञानी अज्ञानी दीखत.....

देह आसक्त हो सुखी दुखी, इक द्वंद्व युक्त इक मुक्त सदा।
ममतामय इक समतामय इक बंध मुक्त इक युक्त सदा।।
नित्य सुखी इक नित्य दुखी हो, घुट- घुट कर दे प्राण।। २।।
ज्ञानी अज्ञानी दीखत.....

निष्कामी दूजा कामी, संतृप्त एक अतृप्त सदा।
योगी इक भोगी जग से, अलिप्त एक संलिप्त सदा।।
अज्ञ देह विकार तज्ञ के ब्रह्म विचार प्रधान।। ३।।
ज्ञानी अज्ञानी दीखत....

ब्रह्म रूप इक देह रूप, निर अभिमानी इक अभिमानी।
परमारथ इक स्वारथरत है, ब्रह्मज्ञानी इक भ्रम ज्ञानी।।
कह ''सुखदेव'' ज्ञानी की महिमा, गावे वेद पुराण।। ४।।
ज्ञानी अज्ञानी दीखत....

भजन

समझो तो भैया

राग- सारंग

समझो तो भैया हम तुम एक है जानी।
चर्म दृष्टि से नीर-तरंग है, ज्ञान दृष्टि से पानी ।।टेर।।

गुरु-शिष्य इक भक्त रु भगवन, एक है दास रु स्वामी।
ज्यों रवि-किरण अभिन्न सदाई, भेद उपाधि से मानी ।।१।।
समझो तो भैया.......

जीव-ब्रह्म में भेद बतावे, सो नर मूढ़ अज्ञानी।
आतम-प्रेम तत्व इक चीन्हा, सो पंडित महा ज्ञानी।।२।।
समझो तो भैया...

वात्सल्य, माधुर्य, साख्य कभी दास्य भाव फुरानी।
कह ''सुखदेव'' प्रेम दृग बिंदू, सिंधू बीच समानी।।३।।
समझो तो भैया.....

भजन

तर्ज – वो जीवन भी क्या जीवन है।

निज आतम रूप हमारा है, फिर काल जाल से डरना क्या?।
माया के दल-दल में फंसकर,पुनि तड़प-तड़प कर मरना क्या?
निज आतम रूप...........।।टैर।।

हम देह नहीं सत आतम है, तन नश्वर हम अविनाशी है।
यह क्षण भंगुर जड़ दुःख रूप, हम अजर अमर सुख राशी है।।
निज देश धर्म की सेवा करि,विषयों की आग में जरना क्या?
निज आत्म रुप...........।। १ ।।

शंकर, मंसूर, विवेकानंद, दयानंद, झांसी की रानी।
तुलसी, मीरा, महावीर, बुद्ध, पढ़ गोरख, दादू की वाणी।।
शिव, राणा, नानक, राम, कृष्ण, सुण गीता ज्ञान पिछरना क्या?
निज आतम रूप...........।। २ ।।

लो शपथ चले परमारथ पथ, सुख-दुःख या मान अमान मिले।
है कंटक बहुत अडिग रहना, चाहे आंधी क्या तूफान चले।।
बलिदान करन की बेला पर, अब किंतु परंतु करना क्या?
निज आतम रूप...........।। ३ ।।

चाहे गोली तोप चले भाले, खंजर से भले बदन छोले।
गल फांस लगे धरती गाढे, रह निर्भीक अनहलहक बोले।।
''सुखदेव'' ज्ञान के नयनों में, ममता के आंसू भरना क्या?
निज आतम रूप...........।। ४ ।।

भजन

पाया रे जब परम पुरुष दीदारा

राग – आसावरी

पाया रे जब परम पुरुष दीदारा ।
नित्य प्रकाश प्रकट भया उर में, गिरा भरम अंधियारा।।टैर।।

मैं हूं कौन? जगत? परमातम?, गुरु मुख किया विचारा ।
जीव–ब्रह्म इक शाश्वत चेतन, मिथ्या सकल संसारा ।। १।।

पंचकोश, त्रिय देह, अवस्था, करम क्रिया से न्यारा ।
साखी आप सकल का दृष्टा, आतम परम पियारा ।। २।।

कौन करे पूजा व्रत तीरथ, योगाभ्यास करारा ।
सहज समाधि, सहज सुख शैया, पौढ़त पांव पसारा ।। ३।।

स्वर्ग–नरक, सुख–दुःख, पंच भ्रम, संशय सकल निवारा ।
लख ''सुखदेव'' चिदानंद सोहम, भया मगन मतवारा ।। ४।।

भजन

तर्ज– संत जन यों समझावे रे

मुक्त की रहनी ऐसी रे।
आपा चीन आप में स्थित, है जहाँ तैसी रे।। टैर।।

कुछ भी लेय न देय, कबहुँ लेसी और देसी रे।
ऊँच न नीच मेरा नहीं तेरा, कमी न बेसी रे ।। 1।।

मान अमान जन्म अरू मृत्यु, एक ही जैसी रे।
अन्तर नांही बहिर मुख विरती, निज पद पेसी रे।। 2।।

निदंक से दुःख नही, नही विदंक सुख लेसी रे।
मृत्यु खेल बनी जिनके, समभाव में रहसी रे।। 3।।

ज्ञाता ज्ञान न ज्ञेय रहे नहीं, त्रिपुटी शेषी रे।
'सुखदेवा' निज बोध भया, फिर चिन्ता कैसी रे।। 4।।

भजन

राग- कव्वाली

हम राम नाम रस पीते हैं, कोई जहर पिये तो हम क्या करें।
हम अमर अभय हो जीते हैं, कोई मर-मर जीये तो हम क्या करें ।।टैर।।

हम भक्त जिज्ञासुन के संग में, सतसंग करे हरि गुण गावे।
रहे शीतल गहन गंभीर सदा, कोई क्रोध करे तो हम क्या करें।। 1।।

दिल भक्ति, ज्ञान वैराग्य जगा, निज अनुभव पद लिख कर गावे।
है प्रेम किसी से बैर नहीं, कोई बैर रखे तो हम क्या करें ।। 2।।

प्रारब्ध में जैसा मिलता है, निश्चिंत रहे उसको पाकर।
कुछ जिकर न फिकर नहीं मन में, कोई फिकर करे तो हम क्या करें।।3।।

गुरुदेव कृपा से मस्त रहे, सुख रूप परम पद को पाकर।
''सुखदेव''जगत में निगुरे जन, नित होय दुखी तो हम क्या करें।। 4।।

भजन

तर्ज- दीन दयाल दया करके
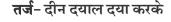
जिन आतम राम लखा घट में, वो ऐश आराम को छोड़ चला।
दुनियाँ के नश्वर भोगों से, मतवाला मुँह को मोड़ चला।। टैर।।

धन-दौलत महल अटारिन में, नहीं मोह ममता नर नारिन में।
यह नश्वर देह नहीं मेरी न मैं, सब कल्पित बन्धन तोड़ चला।। 1।।

संयोग वियोग रू हर्ष शोक, सम सुख दुःख लाभ रू हानि में।
अपमान मान की परवाह क्या, अहंकार का मस्तक फोड़ चला।।2।।

है सेवारत परमारथ में, दुखियों के कष्ट मिटाने को।
ब्रह्मज्ञान की ज्योति जलाने को, निर्भिक हो सरपट दौड़ चला।।3।।

सूते हुये जीव जगा करके, ''सुखदेव'' स्वरूप लखाकर के।
भ्रम का महाभूत भगाकर के, समता से दिल को जोड़ चला।।4।।

भजन

कण-कण में भगवान

दुनिया में भगवान नहीं, यह कहते मूढ अजान रे।
ज्ञान नयन से देखें तो है, कण कण में भगवान रे।।
यह जग आदि अन्त मध्य में, था नहीं है नहीं होगा रे।
जग आधार सत्य परमेश्वर, 'था' 'है' और रहेगा रे।।
सबके, सबमें, सर्व समय हरि रहते सर्व स्थान रे।। 1।।
ज्ञान नयन..................

लकड़ी में है व्यापक अग्नि, जैसे तेल तिलों में है।
तैसे जड़, चेतन सब में, ढूंढे तो सर्व दिलों में है।।
परम प्रेम गुरु ज्ञान बिना नहीं होती है पहिचान रे।।2।।
ज्ञान नयन..................

दूध की हर कणिका में जैसे, घी व्यापक पर दीखे ना।
त्यों कण-कण ही राम रूप है, ज्ञान दृष्टि बिन दीखे ना।।
ब्रह्मनिष्ठ के हो शरणागत, करले आतम ज्ञान रे।। 3।।
ज्ञान नयन..................

अनुभव सिद्ध संत जन कहवे, नानक दादू की वाणी।
वेदान्त कहे डंके की चोट मद्भगवत् गीता की वाणी।।
अटल सत्य ''सुखदेव'' कहे, मत भरमित हो इन्सान रे।। 4।।
ज्ञान नयन..................

भजन

तर्ज– सरवरिया के पाल खड़ी

जो कुछ याद मुझे था अब तक गुरुवर ने सब भुला दिया।
चुपके से बसकर मेरे दिल में जाग रहे को सुला दिया।।टैर।।

विषया रस पीकर मरते को, ज्ञानमृत पा जिला दिया।
निवृत कर अज्ञान, ज्ञान का कमल हृदय में खिला दिया।। 1।।

मुझको प्रभु से मिलना था, कृपा कर उनसे मिला दिया।
तरस रहा जिस पद को पाने, वो पलभर में दिला दिया।। 2।।

भोगो में सुख मान हँसा, दे ज्ञान यथारथ रुला दिया।
कर्म, कीच मल था दिल भीतर, प्रेम नीर से धुला दिया।।3।।

बन्धन मान रखा जन्मों से, सैन बताकर खुला दिया।
कह 'सुखदेव' भया परमानन्द, ज्ञान सिन्धु में न्हुला दिया।। 4।।

भजन

स्वरूप बोध

प्रिय निज रूप है रे सत्ता मात्र हमेश।
होत ही बोध परम दुःख मिटिया, सत, चित्त, आनन्द शेष।। टेर।।
'जग है कल्पित' ज्ञान हुआ, तब छुट गया अपनेश।
नहि सो नहि अब 'है' सो ही 'है' व्याप रहा सब देश।। 1।।

दृश्य-द्रष्टा, साक्ष्य रू साक्षी, सुख - दुःख नहीं लवलेश।
पुण्य न पाप, जन्म नहीं मृत्यु, जहँ नहीं हर्ष क्लेश ।।2।।

ईश्वर-जीव, जगत सब लहरें, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सत्ता से भिन्न है नहीं कोई, शक्ति, धनेश, गणेश।। 3।।

माया-ब्रह्म, जीव, अरू ईश्वर, जड़ चेतन सापेक्ष।
पक्षापक्ष, बंध अरू मुक्ति, है सबसे निरपेक्ष ।। 4।।

कहना-सुनना, खोना-पाना, है नहीं द्वैत अद्वैत।
जन ''सुखदेव'' मौन धरि बैठहि, पा सद्गुरु संकेत।। 5।।

भजन

मार दे मौत को थप्पड़

(गजल ताल धमाल)

जानले ठीक से खुद को, वो भव में गिर नहीं सकते।
मार दे मौत को थप्पड़, वो जग में मर नहीं सकते।। टेर।।

कटे नहीं शस्त्र से किन्चित, वो जल से गल नहीं सकते।
सुखा सकती नहीं वायु, अगन से जल नहीं सकते।। 1।।

सच्चिदानन्द तू प्यारे, है प्राणाधार प्राणिन का।
होय निष्प्राण बिन तेरे, प्राण कोई हर नहीं सकते।। 2।।

रहे भयभीत भय तुमसे, डरे डर भी तेरे डर से।
तू ही महाकाल है सबका, काल से डर नहीं सकते।। 3।।

कहे "सुखदेव" गुरु चरणन, जो मस्तक धर नहीं सकते।
मारती मौत बस उनको, वो कुछ भी कर नहीं सकते।। 4।।

भजन

गुरु पद लोट परम पद पाया।

जग से लौट, लोट पद पावन,लोट पलोट, लोट घर आया।।टेर।।

बेघर होय फिरा घर घर में, घर-घर-घर में निज घर थाया।। 1।।

भाव फुरा हुआ ईश, जीव जग,भाव फुरा पुनि आप रहाया।।2।।

गुरुवर से मिल, मिल गुरुवर में,मिल गया सब परमानन्द छाया।।3।।

नहीं 'सुखदेव' आप बिन दूजा,आप में आप हि आप समाया।। 4।।

भजन

आत्मा आनंद स्वरूप

मैं आतम आनंद रूप यथारथ जान लिया।
यथारथ जान लिया, सत्य पिछान लिया।। टेर।।

अज्ञानी नर आतम बेमुख, भ्रम से माने विषयों में सुख।
कूकर ज्यों हड्डिया चूंस, दुःखी हो प्राण दिया।। 1।।

विषयों में किन्चित सुख नाहीं, मिटे कामना निज सुख पाई।
निज आनन्द का प्रतिबिम्ब विषयों में मान लिया।। 2।।

जे विषयों में आनन्द होवें, एक को त्याग और क्यों चाहवे।
मुढ़ पच-पच गिरे भव कूप, चौरासी खान गया।। 3।।

नींद, समाधि में विषय कहाँ है, बिन विषय निजानंद रहा है।
'सुखदेव' आप सुख रूप, गुरु मुख ज्ञान लिया।। 4।।

भजन

घट में ही राम

तर्ज- मैंने अवगुण बहुत किया।

गुरु दाता मेरे घट में दिखाया राम।।
भूल भरम में बाहिर भटका, मिला नहीं विश्राम।। टेर।।

जप, तप, व्रत, तीरथ कर थकिया, समय गया बेकाम।
भूल मिटा निज रूप लखाया, सुख सागर सुख धाम।। 1।।

घट में लख घट, घट में लखिया, फिर लखिया सब ठाम।
देह संसार झूँठ सपने सम, है सत आतम राम।। 2।।

''भूरादास जी'' सद्गुरु मेरे, दिया मोहे निज नाम।
अब 'सुखदेव' हुआ निज अनुभव, मिला अटल आराम।। 3।।

भजन

तर्ज – चिरमी

मोहे बोध भया गुरु सैन से,
मैं तो पूरण ब्रह्म अद्वैत, द्वैत का नाम नहीं।। टेर।।

बुद–बुद, फैन, भँवर, बहु लहरें, सागर जल में कल्पित है रे।
आदि अन्त मध्य जल देखा, और का काम नहीं।। 1।।

हाथ, पांव, मुख, नैन, रू काना, भ्रम से भासत तन में नाना।
इनका इक देह आधार, द्वैत को ठाम नहीं।। 2।।

माटी के घट, घट में माटी, कारण, कारज एक है जाँची।
मैं व्यापक सत्य स्वरूप, लखा निज धाम यही ।। 3।।

सोने के गहनों में सोना, त्यूं मुझमें जग कल्पित होना।
''सुखदेव'' आप से भिन्न, जीव, जग, राम नहीं।। 4।।

भजन

राग– आसावरी

साधो भाई जीव, ब्रह्म है एके।
वाद विवाद करो मत कोई, ज्ञान दृष्टि से देखे।। टेर।।

जल में बूँद–बूँद में पानी, ओत–प्रोत अभिलेखे।
नीर ही नीर भँवर, लहरों में, द्वैत कछु नहीं पेखे।। 1।।

वृक्ष में बीज, बीज में वृक्ष है, समझ देख ठिक ठेके।
सद्‌गुरु सैन लखे बिन भाई, भरम भींत नहीं ढहके।। 2।।

माँटी में घट, घट में माँटी, नहीं भेद की रेखे।
जीव, ब्रह्म दो नहीं एक है, खरी सुनाऊँ कहके।। 3।।

भाग त्याग की सैन लखी जिन, सो जन क्यों कर बहके।
कह 'सुखदेव' समझ चुप रहवे, निज आनंद में गहके।। 4।।

भजन

तत् त्वं पद का शोधन

तर्ज– दीन दयाल दया करके.....

तत् त्वं पद ईश्वर जीव दोऊ, शोधन कर देखा एक ही है।
जब भाग त्याग की सैन लखी, परमातम–आतम एकही है।। टेर।।
तत् त्वं पद..................

तत् पद का वाच्य अर्थ ईश्वर, अरु लक्ष्य अरथ परमातम है।
त्वं पद का वाच्य जीव अरु, लक्ष्यारथ आतम एक ही है।। 1।।
तत् त्वं पद..................

है माया उपाधि ईश्वर अरु, अविद्या उपाधि जीव कहा।
कर माया–अविद्या भाग त्याग, लख उभय अंश तो एक ही है।। 2।।
तत् त्वं पद..................

इक, व्यापक, समरथ सर्वज्ञ, स्वाधीन, सशक्त, परोक्षपना।
मायोपाधि ये धर्म त्याग, लक्ष्यार्थ में ब्रह्म एक ही है।। 3।।
तत् त्वं पद..................

सामर्थ्यहीन, अलपज्ञ, जीव, नाना, परिछिन्न, अपरोक्ष कहा।
अविद्यादि ये धर्म त्याग, लक्ष्यार्थ आतम एक ही है।। 4।।
तत् त्वं पद..................

देश, काल, वस्तु, कार्य, अभिमान, धर्म का भाग त्याग।
अविरोधी भाग लख, ब्रह्म आतम दोनों में अनुगत एक ही है।। 5।।
तत् त्वं पद..................

मैं आतम हूँ परब्रह्म सदा, परब्रह्म सोई मैं आतम हूँ।
''सुखदेव'' कहे करि दृढ़ निश्चिय, कुछ द्वैत नहीं अद्वैत ही है।। 6।।
तत् त्वं पद..................

भजन

पलट निज रूप पिछाना

तर्ज– म्हारो दीनानाथ दयाल

म्हानें सद्‌गुरु दीनी सैन पलट निज रूप पिछाना रे।
हुआ दुःखों का अन्त, खुशी का नहीं ठिकाना रे ।। टैर।।

रज्जू भूजंग, सीप में चांदी भासित माना रे।
त्यों मुझमें कल्पित है ईश्वर, जीव जहाना रे।। 1।।

साक्षी, चेतन, नित्य, अचल, व्यापक सब ठाना रे।
खण्ड, ब्रह्मांड प्रकाशित है, मुझसे शशि, भाना रे।। 2।।

हर्ष, शोक, अपरोक्ष-परोक्ष, आवरण-अज्ञाना रे।
सात अवस्था चिदाभास की, भ्रान्ति नशाना रे।। 3।।

चिन्मय, तुरीयातीत, आपहि आप रहाना रे।
लखा ''सुखदेव'' आपको, आप में आप समाना रे।। 4।।

भजन

राग–आसावरी

साधो भाई अनुभव कर हम पाया।
जीव, जगत, जगदीश सर्व में पूरण ब्रह्म समाया।। टैर।।

घट मठ में महाकाश है जैसे, पट में सूत बताया।
पट में सूत, पुनि घट मठ में, महाकाश थिर थाया।। 1।।

चिदाभास, माया संग चेतन, ईश्वर जगत रचाया।
पालक अरू संहारक आपहि, पुनि निर्लेप कहाया।। 2।।

चिदाभास, चित्त, अन्तः करण मिल, जीव भाव कहलाया।
स्व वीवर्त अज्ञान का कारज, मिथ्या जगत बताया।। 3।।

आपहि है सर्वत्र, सर्वगत, सद्‌गुरु सैन बताया
जन ''सुखदेव'' अचल स्थिर नित, गया कहीं नहीं आया।। 4।।

चित्त = चेतन

भजन

राई के पर्वत ओले

राज-बंजारा ताल-3

सब संत सदा यूं बोले, राई के पर्वत ओले।
राई के पर्वत ओले समझे सो निर्भय होले।। टैर।।

नलिका पर तोता लटके, घट हाथ बंधे मरकट के।
घट हाथ बंधे मरकट के, गुरू बिन कुण बंधन खोले।। 1।।

छोटी सी भूल हमारी, दुःख दर्द देत बड़ भारी।
दुःख दर्द देत बड़ भारी, गुरू शब्द सुरत ने पोले।। 2।।

सब संशय शोक मिटावे, निज आतम रूप लखावे,
निज आतम रूप लखावे, गुरू ज्ञान से दीपक जोले।। 3।।

जब आतम रूप प्रकाशै, परमातम भिन्न न तासे।।
परमातम भिन्न न तासै, "सुखदेव" मगन हो डोले।। 4।।

भजन

राग- आसावरी

साधो भाई अनुभव कर हम जाना।
ब्रह्मविलास सोई निज आनंद, सर्व विलास निधाना ।। टैर।।

मायाकृत परपंच युक्त है, नाना भेद दिखाना।
जगत विलास मान मन भटके, सपने सुख नहीं पाना।। 1।।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधाहि, पंच विषय दुःख खाना।
इन्द्रिय सकल मान मन भटके, जल-मृग ज्यों पछिताना।। 2।।

वेद, पुराण सकल ग्रन्थों में, बचन भरा विधि नाना।
वचन विलास कई जन अलूझे, भूले ठौर ठिकाना।। 3।।

स्वयं प्रकाश सदा सुख राशि, ब्रह्म विलास बखाना।
लख "सुखदेव" सैन सतगुरु की, ताही मध्य समाना।। 4।।

भजन

षट मुक्ति वर्णन

राग- आसावरी

साधो भाई षट मुक्ति हम जानी।

स्वर्ग्य, सालोक, समीप, सारूप्य, सायूज, केवल बखानी।। टैर।।

स्वर्ग्य यज्ञ, करहिं दान तप, बसहि स्वर्ग स्थानी।
विनशे पुण्य लौट पुनि आवे, स्वर्ग्य मुक्ति यहु मानी।। 1।।
साधो भाई.....................

मुक्ति सालोक मिले जबहि, कोई ध्यान प्रतीक लगानी।
ईष्ट लोक सुख भोगत कबहुँ, दर्शन करि हर्षानी।। 2।।
साधो भाई.....................

मुक्ति समीप ध्यान धरि संपद, ईष्ट के निकट रहानी।
जानहु यू करि जेहि नृप चाकर, क्षणिक समय सुख पानी।। 3।।
साधो भाई.....................

रूप चतुर्भुज धार बैकुण्ठहु, भोगत सुख कोई ध्यानी।
ध्येयानुसार ध्यान से पावे, मुक्ति सारूप्य पिछानी।। 4।।
साधो भाई.....................

मुक्ति सायुज्य मिले जो धरते, ध्यान अहंग्रह प्राणी।
भूप के ज्येष्ठ पुत्र सम जानहु त्यों सुख महि ठहरानी।। 5।।
साधो भाई.....................

जीवन मुक्ति मिले ब्रह्मज्ञान से, सद्गुरु कर ब्रह्म ज्ञानी।
जन ''सुखदेव'' शोक सब संशय, आवागमन मिटानी।। 6।।
साधो भाई.....................

भजन
गुरू शब्दा रा तीर

मेरे घट लागा रे गुरू शब्दां रा तीर।
संशय, शोक, मिटा पल में, दिल हो गया मस्त फकीर।। टैर।।

वाणी बाण दिया निर्वाणी, लागा गहन गंभीर।
पाप, ताप, संताप, मिटा अब, शीतल भया शरीर।। 1।।

आया होश मिटी बेहोशी, जला अविद्या चीर।
कायल को घायल कर दीन्हा, अमृत निर्मल नीर।। 2।।

मिट गया अहं, बहम् दुःख दुविधा, बची न भरम लकीर।
ब्रह्म खलक में, जान पलक में, झलक पड़ी तस्वीर।। 3।।

सद्गुरु देव कृपा से पल में, पलट गई तकदीर।
जन ''सुखदेव'' मिटाई दाता, जनम मरण की पीर।। 4।।

भजन
तर्ज- अरे द्वारपालों

सुनो मेरे प्यारे ! दुनियाँ में सारे, प्रभों के अलावा कुछ भी नहीं है।।टैर।।
खुद ही से खुद में, खुद को निहारे,खुदा के अलावा कुछ भी नहीं है।

सत्य-असत्य, निराकार निर्गुण,चेतन वही जड़ साकार सहगुण।।
कई रंग बदले गिरगिट परन्तु,उसके अलावा कुछ भी नहीं है।। 1।।

वही जीव-ईश्वर, वही दास-स्वामी, कई नाम उसके वही है अनामी।।
मिले ज्ञान दृष्टि, दिखे सारी सृष्टि,सत्ता से न्यारा कुछ भी नहीं है।।2।।

गहनों में कंचन,घड़े में ज्यों कणिका, सूत की माला, सुमेरू व मणिका।।
पानी में सागर, लहर, बुद बुदे, जल के अलावा कुछ भी नहीं है।।3।।

''सुखदेव''सुख में वो दुःख में समाया, संत अनेकों ग्रंथो ने गाया।।
कहे कृष्ण अर्जुन !''वासुदेव सर्वम''कहने को आगे कुछ भी नहीं है।।4।।

भजन

शंका-समाधान
राग- भीम पलासी
ताल- कहरवा

शिष्य सुन ज्ञान विचार प्रिय चित् धार, सकल दुःख हर लेना।
घट छाया आवरण दोष हटा, झट ज्ञान उजारा कर लेना।। टैर।।
भय, मोह तो अंश सदा नभ के, ये ''चल'' तू ''अचल'' अविनाशी है।
सम्बन्ध हटा, झट हो निर्भय, भय मेट अभय पद वर लेना।। 1।।
शिष्य सुन..........................
मुमुक्षु ज्ञान का अधिकारी, बद्ध जीव की मुक्ति ज्ञान से हो।
अपना-अपना, पर-पर जानो, हो स्वस्थ[1] युक्ति अति सरलेना।। 2।।
शिष्य सुन..........................
तू आतम है परमातम का, भगवान तेरे तिहूँ देह नहीं।
पंच कोष, प्राण नहीं तेरे तू, ले ज्ञान गगरिया भर लेना।। 3।।
शिष्य सुन..........................
यह स्थूल देह पुनि जनम मरे, तिहूँ काल अवस्था चारों में।
मन वाणी मति तक अपरा है, इनसे पर[2] विद्या पर लेना।। 4।।
शिष्य सुन..........................
अविद्या उपाधि जीव कहा, शुद्ध माया उपाधि ईश्वर है।
परपंच जगत ब्रह्म में कल्पित, तू सर्व उपाधि हर लेना।। 5।।
शिष्य सुन..........................
है जीव, ईश, जग, ब्रह्म तू ही, नहीं सो तो नहीं बस है जो ही है।
''सुखदेव'' रहो चुप निर्विकल्प, यह सैन यथार्थ धर लेना।। 6।।
शिष्य सुन..........................

स्वरूप में स्थिति[1], परा[2]

भजन

तर्ज–सुनलो चतुर सुजान

आतम सत्य सुजान जगत सब झूँठा है।। टैर।।

पाँच भूत तिरगुन विस्तारा, जाग्रत आदि देहादिक सारा।
दीखत सुनियत आन जगत का बूँटा है।। 1।।

दर्पण में भासे ज्यूँ नगरी, जल में सूरत उल्टी लगरी।
ठूँठ में मानुष भान, मनुष नहीं ठूँठा है।। 2।।

अम्बर दरशत नीला–नीला, कल्पित नीर मरूस्थल टीला।
हुआ यथारथ ज्ञान, भरम सब ऊठा है।। 3।।

सीप में रजत रजू माहि साँपा, अधिष्ठान में कल्पित भाँपा।
होत हि आतम ज्ञान, सकल दुःख छूटा है।। 4।।

साक्षी में ज्यूँ सपनो भासे, जागत हि सब खेल विनाशे
साक्षी नित्य रहान, भ्रान्ति क्रम टूटा है।। 5।।

चेतन में जग भ्रान्ति से भासे, कह 'सुखदेव' वेदान्त का आशे।
सुन गुरु मुख से ज्ञान, बड़ा ही अनूठा है।। 6।।

भजन

हमको नमन हमारा

तर्ज– सुमिरूँ प्रथम नित

हर दम हमको नमन हमारा, अस्ति, भांति प्रिय रूप निहारा।।टैर।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवादिक, लहर मेरी मैं अब्धि अपारा।।1।।

जीव, जगत ज्यों सीप में रूपा, अधीष्ठान हम सर्व आधारा।।2।।

ईश्वर भी कल्पित है मुझ में, नित्य सत्य हम परम पियारा।। 3।।

हम ही देव, जीव, जग, ईश्वर, कोऊ हमसे किन्चित नहीं न्यारा।।4।।

नित्य मगन "सुखदेव" मौन गहि, महावाक्य का समझ इशारा।।5।।

भजन

अवर्णनीय का वर्णन मुश्किल

तर्ज- भक्तों ने कैसा नाच नचाया है

मुश्किल है साधो अकथ कथन कर कहना।
अपरा-परा परापर से पर कहत सके नहीं बैना।। टेर।।

दृष्टा-दृश्य वही है साक्षी, साक्ष्य सर्वाधार वही।
अधिष्ठान अरु वही अधिष्ठित, निराकार-साकार वही।
निगुण-सगुण वह गुणातीत है, वहीं कंचन वही गहना।। 1।।
मुश्किल.......................

अव्यक्त वही है व्यक्त वही, चर-अचर चराचर पार वही।
जगत वही जगदीश वही, दुनियाँ में सारासर वही।
अलख लखे घट में कोई योगी, समझ गुरु की सैना।। 2।।
मुश्किल.......................

आश्चर्य की भांति कहे कोई, आश्चर्य से श्रवण करें।
वर्णन से अतीत बतावे, आश्चर्य से वर्णन करें।
गूढ़ ज्ञान सुन मूढ अधिक हो, दोष हमें मत देना।। 3।।
मुश्किल.......................

पास वही सुदूर वही, बाहर भीतर भरपूर वही।
गुप्त वही मशहूर वही, है नूरानी अरु नूर वही।
जन ''सुखदेव'' हटा चर्म दृष्टि, लगा ज्ञान के नैना।। 4।।
मुश्किल.......................

भजन

गूंगे गुड़ सी गति हमारी

राग-भैरव

स्व अनुभव किम कौन कहे रे।

अद्वय, द्वन्द्वातीत, अवाच्य, नित्य मुदित मन मौन भये रे।।टेर।।

साध्य न साधक सिद्ध न साधन,बोध अबोध न उत्पति लय रे।। 1।।

ज्ञान, प्रमेय, प्रमाण, प्रमाता, अस्ति, नास्ति, यह, वो न रहे रे।।2।।

नही स्वरुप, रुप स्व नाहीं, तुरीयातीत यह सैन लहे रे।। 3।।

गति ''सुखदेव'' मूक गुड़ जैसे, हरदम आनन्द श्रोत बहे रे।।4।।

भजन

मस्त फकीरी

राग-आसावरी

अब मैं मस्त फकीर भया रे।
मौत को मार फिरूँ जग में, परमानंद चित्त छया रे।। टेर।।

काया ''मैं'' मेरापन करके, कष्ट अनन्त सह्या रे।
आत्म बोध भया भय भागा, सब दुःख शोक गया रे।। 1।।

करना था वो कर लीना, पाना था पाय लिया रे।
जानन हारे को जान लिया, छक अमृत पान किया रे।। 2।।

मान, अमान क्षणिक सुख-दुःख में, दिल समभाव भया रे।
शत्रु न मित्र भई ब्रह्म दृष्टि, हो गई राम दया रे।। 3।।

हो निर्लिप्त कमलवत् जग में, रहता शान्ति शैया रे।
''सुखदेवा'' सुखरूप भया, आपहि में आप गह्या रे।। 4।।

भजन

अनुभव फकीरी

राग–आसावरी

फकीरी संतन को अति प्यारी।
''मैं'' ममता नहीं, है दिल समता, शीतल पर उपकारी।। टेर।।

पाँच पच्चीस, काल, तिरगुण अरु, पंच कोश के पारी।
चिन्ता, शोक, फिकर सब छूटा, आतम रूप निहारी।। 1।।

सद्गुरुदेव के चरण कमल में, धरिया शीश उतारी।
काम, क्रोध, मद, लोभ, वासना, ज्ञान अगन से जारी।। 2।।

मस्त फकीर प्रेम जल पीवे, पावे भर–भर झारी।
सन्त शूरमा चढ़ छाती पर, दिया मौत को मारी।। 3।।

करूणा, प्रेम, दया की मूरत, भेदभाव को टारी।
कह ''सुखदेव'' अभेद एक ब्रह्म, व्यापक रूप निहारी।। 4।।

भजन

राग–आसावरी

फकीरी पूरण ब्रह्म पिछानी,
अक्षय, अचल, अभय, पद संस्थित, जीवन मुक्त रहानी।। टेर।।

सर्वहितारथ नित मुख निकसे, अनुभव अमृत वाणी।
घर, घर, घर में निज घर बैठे, मौत भरे जहां पाणी।। 1।।

निर्मल, ज्ञान, कर्म सब निर्मल, निःसंशय निरवाणी।
निर्मल मति, गति निर्मल, जिनकी, सफल भई जिन्दगानी।। 2।।

हर्ष, अमर्ष, उद्वेग रहित नित, सहज समाधि लगानी।
आप सर्वथा, आप सर्वदा, आप सर्वगत जानी।। 3।।

गुरु पद कमल कृपा से पावे, दुर्लभ मोक्ष निशानी।
धरि ''सुखदेव'' गुरू पद मस्तक, गुरु पद बीच समानी ।। 4 ।।

भजन

प्रेम फकीरी

राग–आसावरी

फकीरी प्रेम परम सुखधारा।
आनंद में गलतान निरन्तर, रहे मगन मतवारा।। टैर।।

प्रेम में अहम् बहम् नहीं स्वारथ, ना कोई भेद विकारा।
सर्व सम्बन्ध प्रेम बिन फीके, प्रेम जगत में सारा।। 1।।

घट–घट प्रेम, प्रेम कण–कण में प्रेम का सकल पसारा।
दानव, मानव, संतजनों को, प्रेम ही परम पियारा।। 2।।

प्रेम ही जीव, प्रेम ही शिव है, प्रेम ही ईश विचारा।
प्रेम ही सत्य सर्व से सुन्दर, प्रेम ही सर्व आधारा।।

गुरूपद प्रेम, बिना नहीं पावे, सुर, नर मुनि अवतारा।
है "सुखदेव" प्रेम सत चेतन, आनंद रूप हमारा।। 2।।

भजन–ज्ञान फकीरी

राग–आसावरी

फकीरी अनुभव पद ठहरानी
वाद विवाद द्वन्द्व नहीं कोई, समता भाव समानी।। टैर।।

निःस्पृही रहे सुख में दुःख में उद्वेग न आनी।
राग–द्वेष, भय क्रोध न व्यापे, है सम लाभ रू हानी।।1।।

अन आसक्त, करम रत रहवे, विचरे निर अभिमानी।
हरदम मगन राम रंग राते, परम प्रेम के दानी।।2।।

मैं–तू, मौर–तौर, यह–वह की, है नहीं नाम निशानी।
गमनागमन, परापर से पर, सत्ता मात्र रहानी।।3।।

सद्गुरु सैन लखे बिन कोई, पद का मरम न जाणी।
मर्म लखो "सुखादेव" सहज ही, पावे पद निर्वाणी।।4।।

भजन

आत्म ज्ञान की मस्ती
तर्ज– राम दशरथ के घर जन्में

मिला निज ज्ञान जब मुझको, हुआ भरपूर मस्ताना।
मिटी जग कल्पना सारी, शिवोहम रूप पहिचाना।। टेर।।

नहीं शव, तु सदा शिव है, जगत नहीं तू जगत पीव है।
सच्चिदानन्द ही जीव है, दिया गुरूदेव ने ज्ञाना।। 1।।
मिला निज ज्ञान जब मुझको.......................

मेरा नहीं जन्म अरू मरना, काहे फिर मौत से डरना।
रमण निज रूप में करना, कहीं नहीं आना अरू जाना।। 2।।
मिला निज ज्ञान जब मुझको.......................

घृणा, अपमान, बदनामी, कहीं पूज्य कहीं नामी।
रहूँ इकसार सुखधामी, भले जग मारता ताना ।। 3।।
मिला निज ज्ञान जब मुझको.......................

ऊँच, अरू नीच ना मेरे, नहीं सुख दुःख के घेरे।
कोई अब दूर ना नेरे, कहाँ अब लाभ अरू हाना।। 4।।
मिला निज ज्ञान जब मुझको.......................

मिली गुरूदेव से युक्ति, नहीं बंधन नहीं मुक्ति।
कहूँ मैं बात यह पुख्ती, आप ही आप सब ठाना।। 5।।
मिला निज ज्ञान जब मुझको.......................

लखी गुरूदेव की सैना, कहीं नहीं जा सके बैना।
मिला ''सुखदेव'' को चैना, बचा नहीं और कुछ गाना।। 6।।
मिला निज ज्ञान जब मुझको.......................

श्री दादू सम्प्रदाय के प्रसिद्ध तीर्थ

साखी विभाग

सवैया, कुण्डलियाँ, चौपाईयाँ, दोहावली, अरिल एवं विविध पद्य

'है' जो ही 'है'

नाम न रूप, न देह सरूप न जाति, वरण, कुल मैं हूं न तू है।
जीव न ईश क्रिया न ही कर्म ही, कर्ता न भोक्ता अद्वेत न दू है।।
साक्ष्य न साक्षी न दृश्य न दृष्टा, न सत्य असत्य न तेरा न मू हैं।।
सद्‌गुरु सैन ले सहज समाधिहु, ''है जो ही है'' सुखदेव न हूँ है।।

इन्दव सवैया छन्द

श्री गुरुदेव को नमन्

राम निरंजन, ब्रह्म, अलेखहि, द्वन्द्व अतीत, अभेद, अनामी।
आप हो निर्गुण-सर्गुण आपहि, शान्त सदा हो अन्तर्यामी।।
मेरे तो आप, मैं हूँ बस आपका, कृपा करो मम सद्‌गुरु स्वामी।
जन ''सुखदेव'' हो पूर्ण समर्पित, सद्‌गुरु बारम्बार नमामी।। 1।।

सुनो गुरुदेव

काल कराल महा विकराल, निहाल करो मम हाल बिहाला।
त्रिगुण ताप से हो संताप हि, कांपत जात गिरा भव नाला।।
मैं अधमी तुम अधमोद्धारक, जान के सहाय करो तत्काला।
कह ''सुखदेव'' सुनो गुरुदेव, अनाथ के नाथ करो प्रतिपाला।। 2।।

हे नाथ संभारो

हे गुरुनाथ ! बहा भव जात, करो दृगपात अनाथ को तारो।
आप ही मात पिता अरू भ्रात, लो हाथ को हाथ में हाथ पसारो।।
डूबत जात किसी का न साथ, हे नाथ ! मोहे भर बाथ उबारो।
हो ''दृगपात'' बिल्लात सदा ''सुखदेव'' के तात के नाथ सँभारो।।3।।

सुनो गुरुदेव !

ईश्वर, जीव, ब्रह्म, जग, माया, कौन हूँ मैं किसका ? कौ ? मेरे।
त्रेत रु द्वैत कहो क्या अद्वैत, मैं वाद विवाद फसाँ दृढ़ घेरे।।
दास निराश धरूँ विश्वास, मैं चरणन् पास पड़ा प्रभु तेरे।
कह ''सुखदेव'' सुनो गुरुदेव जी, दूर करो सब संशय मेरे।। 4।।

गुरु शरण परम आवश्यक

जंगल के शरणे बहु जंत, अनंत हि सागर में शरणावे।
प्राण शरीर के देह तु प्राण के, वृक्ष के शरणन पंछी हु आवे।।
काष्ठ में पावक आग में काष्ठ हि, सिंह गुफा शरणे सुख पावे।
जन ''सुखदेव'' रहे गुरु शरणन, लाज सदा गुरुदेव बचावे।। 5।।

मेरे गुरुदेव नमो

मात पिता सत मित्र नमो, जिन डाल दिया सत पन्थन को।
निज शीश नऊँ सब संतन को, जिन भेद लखायो ग्रन्थन को।।
तव हे जगदीश प्रणाम मेरा, गुरु, वेद मिलाया संतन को।
''सुखदेव'' मेरे गुरुदेव नमो, जिन मेट दिया भव बंधन को।। 6।।

''केवल गुरुदेव के चरणों की शरण चाहिए''

दुष्टन का सिर मोर महा मैं, दुर्गुण राशि हूँ सत्य बखानूं।
ज्ञान न ध्यान वैराग न भक्ति, शक्ति न युक्ति कछु नहीं जानूं।।
कोटिक जरणम् हो चाहे मरणम, ना मोहे परम हि धाम सिधानूं।
हे करूणाकर ! करि करूणा, ''सुखदेव''को चरणन शरण रखानूं।।7।।

लाज बचावन बेगि पधारो

दीनदयाल खयाल करो, मम जीवन नाव फँसी मझधारो।
औरन का विश्वास न आशहि, दास की नाव को आप उबारो।।
देर करी तौ खैर न मेरी, तो पे जगत हँसेगो सारो।
''सुखदेवा'' भगवान ! भक्त की, लाज बचावन बेगि पधारो।। 8।।

आँखों का तारा

वो है मम आँखों का तारा, यह आँखो की किर-किर भारी।
आँख चुरावे, आँख फिरावे, आँख दिखावे कैसी यारी।।
धूल झोंककर आँखों में झट, आँख बिछादे स्वारथ भारी।
आँख खुली जब आँख के आँसू, ''सुखदेवा'' पीवे बनवारी।। 9।।

अहेतु कृपालु गुरुदेव

जन्म अनंत के पाप रु ताप से, तन मन आदिक आग जरे है।
दीन के दीन दयाल निहाल करो, तोहे चरणन शीश धरे है।।
ज्यों रवि से तपती धरती को, आय शशि झट शान्त करे है।
त्यों ''सुखदेव'' अहेतु कृपालु, गुरूवर से सब काज सरे है।। 10।।

गुरुकृपा सवैया छन्द

सद्गुरु देव दया करके, सुन दीन की अर्ज शरण में लीना।
काकपने को मिटाय अनाथ को, नाथ ने साथ ले हंस हि कीना।।
भ्रम अज्ञान मिटा करके, परब्रह्म स्वरुप बताय ही दीना।
जन ''सुखदेव'' भया अति आनंद, प्रणहुँ मैं गुरु ज्ञान प्रवीणा।।11।।

''आँख में आँख लगी''

आँख में 'आँख लगी' प्रभू से, जग से तब 'आँख लगी' मुँह फेरा।
आँख का अन्धा नाम नयन सुख, आँख खुलावन आप को हेरा।।
आँख चुराय फिराय के बैठिहु, क्या तव आँखन ठौर न मेरा।
है ''सुखदेव'' तू आँख का तारा, तो तारण का प्रभू काम है तेरा।।12।।

आत्मा स्वसंवैद्य

ध्यान धरे, गुणगान करे, कई तत त्वं पद का अर्थ बखाने।
ग्रन्थ अनेक करे कई कंठथ[1], धारा प्रवाह लगे है सुनाने।।
केइक पंथ, स्वमत्त में उन्मत, पंडित वाद विवाद को ठाने।
अंत में तो ''सुखदेव'' निजातम, आपहि, आपमें आपको जाने।।13।।

कठस्थ[1]

गृहस्थी संत महिमा

शोभा बहुत करे उनकी जग, त्यागि बने मुख मौन गहे है।
रूण्डन, मुण्डन, केश बढ़ा, चित में नित स्वारथ काम लहे है।।
स्वारथ, राग न द्वैष कछु, सद् गृहस्थ है आतम ज्ञान लहे है।
''सुखदेव'' सुनो ! उन संतन की, शोभा कोई बिरला संत कहे है।।14।।

ब्रह्मातम अभेद

आतम ज्ञान बिना मन मूरख, है जग झूँठहि सत्य बखाने
देह के धर्म शीतोषण सुख-दुःख, आप में मानि के होत हैराने।।
मुक्त, असंग सभी जग व्यापक, सत्य चिदानंद रूप न जाणे।
धन्य वही ''सुखदेव'' ब्रह्मातम, एक, अभेद, अलेख पिछाने।।15।।

जो जिनके चित में तिहि चाहत

मोही[1] रहे न कुटुम्ब बिना, अरु अर्थ बिना नहीं लोभी को चैना।
कामिनी के बिन कामी रहे नहीं, नीर बिना कभी मीन रहे ना।।
जो जिनके चित्त में तिहि चाहत, योग बिना मन चैन परेना।
मैं दुखिया गुरुदेव बिना, 'सुखदेव' कहे मम् बरसत नैना।। 16।।

आतम ज्ञान अज्ञान विनाशे

रज्जू न होत विरोधी, भूजंग की, रज्जू के ज्ञान भूजंग न भासे।
बंधन का न विरोधी निजातम, आतम ज्ञान अज्ञान विनाशे।।
ब्रह्म अज्ञान ते ही जग भासत, ब्रह्म के ज्ञान से ही जग नाशे'।
जन ''सुखदेव'' होवे ब्रह्मज्ञान तु सर्वम ब्रह्म ही ब्रह्म प्रकाशे।। 17।।
नाशे' – बाध रूप नाश

राम तेरे तू राम का

बेटी अमानत जान जवांई की, बेटा बहु की अमानत मानो।
देह अमानत है शमशान की, दौलत धाम यहीं रह जानो।।
पाय रहा दुःख हो ममतावश, छाँड़ि परे सत तत्व पिछानो।
राम तेरे तू सदा से है राम का, कह 'सुखदेव' यही दिल ठानो।। 18।।

ज्ञानी को प्रपंच की प्रतीति क्यों?

दर्पण ज्ञानी को जैसे प्रतिबिम्ब, भासे भूना कण धान की न्याहि।
मरुस्थल ज्ञान से नीर नशे, पुनि ज्ञानी को भासत नीर की न्याहि।।
रज्जू के ज्ञान से साँप नशे पुनि कंपन भासत ज्यों उर मांहि।
ऐसे प्रपंच प्रतीत हो ज्ञानी कू, सैन सही ''सुखदेव'' बताई।। 19।।

हम ''है'' जो ही ''है''

(1)

कोई ऊँच कहे कोई नीच कहे, कोई मीच कहे हम है जो ही है।
कोई रोगी कहे कोई भोगी कहे, कोर्ह योगी कहे हम है जो ही है।
अज्ञानी कहे अभिमानी कहे, कोई ज्ञानी कहे हम है जो ही है।
''सुखदेव'' रहे अलमस्त सदा, नित स्वस्थ सदा हम है जो ही है।।20।।

मोही = मोहित

(2)

कोई कामी कहे, कोई नामी कहे, कोई स्वामी कहे, हम है जो ही है।
अनादू कहे कोई आदू कहे, कोई साधू कहे हम है जो ही है।।
कोई गुप्त कहे, कोई लुप्त कहे कोई सुप्त कहे हम है जो ही है।
''सुखदेव''रहे अलमस्त सदा नित स्वस्थ सदा हम है जो ही है।।21।।

(3)

कोई दृश्य कहे कोई दृष्टा कहे, कोई सृष्टा कहे हम है जो ही है।
कोई द्वैत कहे कोई त्रैत कहे, अद्वैत कहे हम है जो ही है।।
कोई जीव कहे कोई पीव कहे कोई शीव कहे हम है जो ही है।
''सुखदेव''रहे अलमस्त सदा, नित स्वस्थ सदा हम है जो ही है ।।22।।

सेवा पथ

कर सत्संग सदा संतनकी, सद्गुरु से नित मिलते रहिये।
गुरु द्रोही गुरु बेमुख नर को, देख दूर से टलते रहिये।।
संकट विकट मिले मग में, रख संयम धीर संभलते रहिये।
कह 'सुखदेव' फिसल मत जाना, सेवा पथ पर चलते रहिये।। 23।।

बेपरवाह

सन्मुख राम गुरु, प्रभु से, जन वो किसी वक्त भी आये तो आये।
बेमुख राम गुरु प्रभु से नर, वो जिस वक्त भी जाये तो जाये।।
निंदक, विंदक श्रीमुख से, निज भाव से जो कछु गाये तो गाये।
जन''सुखदेव''रमे सुख सागर, अज्ञ भच्छीड़ को खाये तो खाये।।24।।

सच्ची प्रीत

दौलत धाम, मुकाम सभी, कल छूटत आज अभी चाहे छूटे।
बांधव, बंधु सम्बन्धी भले, सुत भ्रात रू तात सभी चाहे रूठे।।
किन्चित शोक नहीं मन में, सब कंचन देह धाड़ायति लूटे।
पर ''सुखदेव'' मेरे गुरुदेव के, चरणों में प्रीत कभी नहीं छूटे।। 25।।

"संगत का प्रभाव"

मूढ़ के संग हराम बने, अरू ज्ञानी के संगत राम रमेगो।
साध के शुक[1] भजे हरिनाम, असाध के गाली देय तनेगो।।
धूल चढ़े नभ वायु के संग, नीर की संगत कीच सनेगो।
"सुखदेवा" संग ऊँचते ऊँच हि, नीच की संगत नीच बनेगो।।26।।
शुक[1] = तोता

"सत्संग सरोवर में सज्जन, दुर्जन की पहिचान"

हंस चुगे सर में निज मोती, किम करहु पामर बगु कौवे।
घोंघे मेंढ़क, एक मिले ना, होय निराश चले या सोवै।।
हरिरस पान करे नित सज्जन, दुर्जन मन विषयां रस जोवे।
जन "सुखदेव" सोई बडभागी, सतसंग मध्यहु कलिमल धोवे।।27।।

सत्संग सरोवर में कौए और बगुलों की दशा

हंस चूगे निज मोती सरोवर, काक बगु सिर फोड़ेंगे ही।
मेंढ़क मच्छ रु, कच्छ कूं भाखत, निश्चत इत उत दौड़ेंगे ही।।
भक्ति, बैराग न ज्ञान जेही घट, दुष्ट विषय से चित जोड़ेंगे ही।
कह "सुखदेव" सरोवर सतसंग, खल खग आखिर छोड़ेंगे ही।।28।।

"सज्जन, दुर्जन की बोलने से पहिचान"

हंस के बोलत ही बगु मिलकर, कें कें करि उपहास उड़ावे।
बोलत आय पपैया तु मैंढ़क, कर टर्राटहि शोर मचावे।।
कोयल की मधू कूंक सुने तब, काकहूं काँव ही काँव चिल्लावे।
कह "सुखदेव" सुने संत वाणी, दुर्जन व्यर्थ हि गाल बजावे।।29।।

"ज्ञानी और अज्ञानी की वृत्ति में अन्तर"

1

लीन रहे परमारथ में, इक स्वारथ में जीवन खोता है।
इक भँवरा बाग गुँजार करे अरु, दूजा नित मल ही ढ़ोता है।।
इक शास्त्र हि वेद पुराण पढ़े, इक विषयों के पढ़ते पोथा है।
ज्ञानी जगे "सुखदेव" जभी, तब संसारी निर्भय सोता है।। 30।।

2

सन्मुख काल को देख हँसे, इक भय से जीवन भर रोता है।
फूल बिछावत मारग में, इक मारग में काँटे बोता है।
भवसागर से पार करे इक, भव में बहु खावे गोता है।
ज्ञानी जगे ''सुखदेव'' जभी, तब संसारी निर्भय सोता है।। 31।।

''चरित्रहीन महा दुःखदायी''

हो अपमान मिले बहु अपयश, अग्नि बीच खड़े हो तपना।।
साँप डसे गजराज नशे, जे हिमगिरी में पड़ जाये कँपना।
खंजर से चाहे शीश कटे या, धरती में कोई दो चाहे दफना।
दुर्जन संग महा दुःखदाई, जन 'सुखदेव' न मानहु अपना।। 32।।

निर्भय हो घमसाण मचाएं, जो रण बीच पड़े चाहे खपना।।
चौरासी में जन्म मरण के, दुःख को भी मानो इक सपना।
क्या दुःख है अति भूख रू प्यास का, बात कहुँ सत किन्चत गपना।
दुर्जन संग महा दुःखदाई, जन 'सुखदेव' न मानहु अपना।। 33।।

'' सद्चरित्र का महत्व''

धन खोये किन्चित गम नाही, चोर डकैत लूट ले जावे।
कठिन परिश्रम करके सज्जन, लक्ष्मी के भण्डार भरावे।।
हो तन क्षीण तो चिन्त करो कछु, सब साधन का मूल कहावे।
जन''सुखदेव''दे प्राण भले ही, पर अपना सद्चरित बचावे।।34।।

''खटपट में झटपट पी ले''

1

बहुभाँतिन देह श्रृंगार करें, नित खाय मलीदे चटपट रे।
दुर्व्यसनों में संलिप्त रहें, विषयों में दौड़े सरपट रे।।
जग वस्तुन की भोगासक्ति से, रहती मन में खटपट रे।
जन ''सुखदेव'' प्रेम प्याला खटपट में पी ले झटपट रे।। 35।।

2

धन-धाम खजाने पड़े रहे, यह आयु जाय फटाफट रे।
स्वाध्याय सदा सत्संग करें, नहीं लागत काल की चरपट रे।।
तू दृष्टा, नित, अविनाशी है, विनसे जग की यह खटपट रे।
कह ''सुखदेव'' प्रेम प्याला खटपट में पी ले झटपट रे।। 36।।

भाव का महत्व

अवगुण दृष्टि भई घट भीतर, तो सृष्टि तोहि शुभ कैसे दिखेगी।
जैसे भाव रहे दिल में, अपनी सूरत तो वैसी बनेगी।।
द्वेष भाव से लिप्त हृदय में, माँ अपनी चूड़ैल दिखेगी।
जन ''सुखदेव'' मिले हरि जबहि, भाव भरे उर भक्ति टिकेगी।।37।।

''महामूर्ख''

भीतर पाप रहे संताप, न किन्चत बात ज्ञान की चैंठे।
ले अभिमान न जान पिछान, अज्ञान नहीं सज्जन से भैंटे।
ले प्रतिशोध, अबोध महा, कर क्रोध हि कान गधे के ऐंठे।
जन ''सुखदेव'' सो है महामूरख, ज्ञानी के संग कबहुँ नहीं बैठे।।38।।

''महादुष्ट''

आश्रय पाकर शीश चढ़े जो, ज्ञान सुने झट मुड़ कर बैठे।
आदर पाय खुशामद मानहु, प्रेम आघात करे जब सैठें।।
माफ करें तिहि दुर्बल समझहि उपकारी की पकड़हि गैठे।
विश्वासी से घात करै, महादुष्ट वही सज्जन से ऐंठे।। 39।।
सैठे'-मिलना, गैठे'-गर्दन

''नहीं लात के भूत बात से मानें''

1

रावण, कंस, दुर्योधन को हरि, पहले खूब लगे समझाने।
क्रोध में पूर नशे में चूर, घमण्डी उल्टे मारत ताने।।
हित की बात लगे नहीं गात, वो मूरख आय लड़ाई ठाने।
है ''सुखदेव'' सही जग में, नहीं लात के भूत बात से मानें।। 40।।
गात 'हृदय

2

बात करे तो कहे खुशामद, सज्जन की दुर्बलता जाने।
काँटे से निकले जब काँटा, क्यों मूरख से मूढ़ पचाने।।
हो निष्पाप कहूँ मैं साफ हि, ना मुझको रखना कछु छाने।
है ''सुखदेव'' सही जग में, नहीं लात के भूत बात से मानें।। 41।।
गात'–हृदय

''सफलता का रहस्य – नित्य साधना''

1

शैल शिखर पर जाना हो, तो पाँव जमा कर चढ़ते रहना।
होगी विजय अवश्य पर, हे वीर! निरन्तर लड़ते रहना।।
जीवन के इस गुलदस्ते में फूल गुणों के जड़ते रहना।
कह ''सुखदेव'' हो सफल अवश्य, लक्ष्य तक नित पढ़ते रहना।।42।।

2

दर्पण चमक रहे तो जरूरी, धूल कणों को झड़ते रहना।
पीछे मुड़ मत देख पथिक तू, निज पथ पर ही बढ़ते रहना।
योजकता ले करो परिश्रम, उत्तम जीवन गढ़ते रहना।
कह ''सुखदेव'' हो सफल अवश्य, लक्ष्य तक नित पढ़ते रहना।।43।।

प्रेम बिना नर धूल जमारा

जाँ घट प्रेम प्रीति नेह हित का, भानु उगा तो भगा अँधियारा।
नवधा भक्ति के नेम आचार, छिपे नभ के सब नो लख तारा।।
सेवक स्वामी बने स्वामी सेवक, प्रेम स्वरूप लगे अति प्यारा।
प्रेम से प्रेमी मिले ''सुखदेव'' हि, प्रेम बिना नर धूल जमारा।। 44।।

शीश दिये जगदीश मिले

ओ महाशूर! विजय नहीं दूर, खड़ी अरि फौज करो संहारा।
ज्ञान के तीर चला तलवार, बजा पुनि गाण्डीव की टंकारा।।
लोभ, मोह, पुनि काम रु क्रोध के काट दे शीश मिटा अहंकारा।
शीश दिये जगदीश मिले, ''सुखदेव'' रहे नित जय जयकारा।।45।।

"निर्माण कर्ता"

अवसरवादी रहे रत स्वारथ, व्यक्तिनिष्ठ अरू हो जो कामी।
औरों का निर्माण करे किम? विषयी भोगी नमक हरामी।।
सेवा के पथ बढ़े निरन्तर, तत्व निष्ठ अरू हो निष्कामी।
नर को वो नारायण करते, यश अपयश में हो उपरामी।। 46।।

"संयोजक ही दुर्लभ है"

ऐसा कोई अक्षर है क्या, जो मंत्रों में काम न आवे।
जड़ी बूटियाँ बतला दो जो, औषध में उपयोग न लावे।।
अयोग्य पुरुष कहाँ इस जग में, अवगुण अरु कई सद्गुण पावे।
जन "सुखदेव" संयोजक दुर्लभ, हर मानव से काम करावे।। 47।।

पी ज्ञान अमीरस

जाऊँ कहाँ? जा सद्गुरु शरणे, क्या करहुँ? साष्टांग प्रणामा।
क्या देखूँ? देखो गुरूपद रज क्या मांगू? गुरू भक्ति रू नामा।।
क्या सुनहुं? सुनियो ब्रह्म ज्ञान हि, मानहुँ क्या? मानो इक रामा।
क्या पीऊँ? पी ज्ञान अमीरस, कह "सुखदेव" मिले निज धामा।।48।।

कर आतम निश्चय

क्या पढहुं? पढ़ियो सद् ग्रन्थ हि, गीता पढ़े कही नटवर नागर।
क्या जांनू मैं? "मैं" को ही जानिले, हो तत्काल ही ज्ञान उजागर।।
निश्चय क्या? कर आतम निश्चय, क्या भरहुं भर ज्ञान से गागर।
नहाऊँ कहाँ? "सुखदेव" नहा, सतसंग महा, ब्रह्म ज्ञान के सागर।।49।।

यमराज भी धूजहि

क्या जपहुं? गुरु मंत्र जपो, नित, क्या पूजूं? गुरु के पद पूजहि।
किसका ध्यान? गुरु मूर्ति का? होय कृपा मग मोक्ष का सूझहि।।
ठानहुं क्या? प्रभू प्राप्ति की ठानहु, बुझु कहाँ? ब्रह्मज्ञानी से बुझहि।
तिरहुं क्या? तिरिये भवसागर, कह "सुखदेव" खड़ा यम धूजहि।।50।।

"अधिकारी के लक्षण"

होय विवेक वैराग जिसे, षट सम्पत्ति युक्त मुमुक्ष भारी।
तर्क वितर्क में कुशल मतिमां, गुरु शरणें जा तत्व विचारी।।
देश अरू काल भी होत सहायक, हो विद्वान कोई नर-नारी।
ये लक्षण "सुखदेवा" जे ही घट, वो ही ब्रह्मज्ञान अधिकारी।। 51।।

आत्म दृष्टि

अज्ञान से कल्पित देह इन्द्रियादिक, आतम सर्व उपाधि ते न्यारा।
ज्यों आकाश, कलश, घट, सुई, करोड़ उपाधि ते रहित अपारा।।
बुदबुद, फैन, भँवर, बहु लहरें, तत्वतः तो जल ही जल सारा।
है "सुखदेव" ब्रह्म ही व्यापक, ईश्वर, जीव, जगत, नहीं न्यारा।।52।।

आप से भिन्न कछु नहीं दीसे

आप ही ब्रह्मा आप ही विष्णु, आप महेश्वर, इन्द्र दीसे।
आप ही भीतर आप ही बाहर, आप ही आगे आप ही पीछे।।
आप ही दाहिन आपही बाहिन, आपहि ऊपर आपहि नीचे।
है "सुखदेव" आप ही व्यापक, आप से भिन्न कछु नहीं दीसे।।53।।

सच्चे सतगुरु दुर्लभ

भोग रु भैंट में चित लगा, जिन रंग बिरंगे भेष हु धारे।
पंथ रु ग्रन्थन में ममता, समता बिन जीवन कोहु बिगारे।।
हो ब्रह्मनिष्ठ गुरु ब्रह्मवित्त मुमुक्षन को भव पार उतारे।
है "सुखदेव" ऐसे गुरू दुर्लभ, शिष्य की शंक मिटावन हारे।। 54।।

गुरु शब्द की चोट

वेद अरु शास्त्र अनेक पढ़े, अपरा कर ज्ञान विवाद करे है।
गुरु बिन ज्ञान, ज्ञान बिन मुक्ति, हुई न होय मुनि उचरे है।।
हेम को सोनी लोहे को लुहार त्यूं, सद्गुरु शिष्य को करत खरे है।
कह "सुखदेव" बिना गुरू चोट, भरा दिल खोट कबहू न हरे है।।55।।

कामना के त्याग से नित्य सुख की प्राप्ति

दौड़त है दिन रैन न चैन हि, कर धन धाम मुकाम घनेरा।
जीभ के स्वाद फँसा नित खावत, माल मलीद बना बहुतेरा।।
मात–पिता, सुत बांधव, मित्र, अनित्य सम्बध महासुख हेरा।
तू सुख सागर है ''सुखदेव'' हि, कामना त्याग करो मन मेरा।।56।।

तू काल का बाप बड़ा है

मूषक ताक रही मिनकी अरू, शीश कपोत के बाज अड़ा है
मच्छर मक्षिक खाय निरन्तर, मैंढ़क साँप के गाल पड़ा है।।
खोलि के आँख कूं झाँक जरा, यम कालबली तव शीश खड़ा है।
भज ''सुखदेव'' हरि जिनके डर, काल डरे महाकाल बड़ा है।।57।।

देखन हारे को देख सदा

मोद के हेतु न, देख तू मोद से, दीखत है उसे प्रेम से देखो।
देख खुशी से, न देख खुशी हो, राग रू द्वेष को बाहर फैंको।।
आनंद हेतु न, देख आनंद से, दृश्य असत्य न किन्चित बहको।
देखन हारे को देख सदा, ''सुखदेव'' तू आत्म ब्रह्म है एको।।58।।

जीव ब्रह्म की स्वरूप से एकता

स्वरूप ''प्रमाद'' से दुःख रहे, स्वरूप ''प्रमोद'' से सुख लहे।
यह दौड़त नीर ही नाल, नदी, मिल सागर बीच समंद कहे।।
जब नाल, नदी हूँ उपाधि हटे, न उपाधि तो नीर हुँ नीर थहे।
''सुखदेव'' उपाधि ते जीव रु ब्रह्म, उपाधि बिना इक ब्रह्म रहे।।59।।
प्रमाद – भूल, प्रमोद – साक्षात्कार''

भाव से पूर हाजिर हुजूर

वेद, पुरान, कुरान पढ़ा, खुद को न पढ़ा किम भ्रम बिलायें।
शीश जटा तो बढ़ा या कटा, जगदीश न रीझत भेष रंगाये।।
ज्ञान बढ़ा भवबन्ध कटा, गुरु भक्ति के रंग हृदय रंग जाये।
है ''सुखदेव'' जो भाव में पूर, हुजुर है हाजिर क्यों दुख पाये।।60।।

सुख रूप हरि है

भोगत भोग विचारत लोग, सभी सुख शांति इसी में धरि है।
कूकर के मुख खून गिरे, वो मानत हाड़ में चूस मरि है।
वस्तु मिली झट चाह मिटी, चट आतम रूप प्रकाश करि है
है ''सुखदेव'' सभी सुख कल्पित, आतम आनंद रूप हरि है।।61।।

असंगता से नित्य तत्व की प्राप्ति

होय अधीन पदारथ, प्राणी के संग किया दुःख हो भरपूरा।
ना सपने सुख पाय परतंत्र, स्वतंत्र भये सब हो दुःख दूरा।।
संत की संग करो सत संग, जे होय असंग बजे सुख तूरा।।
तू ''सुखदेव'' सदा सुख सागर, यह गुरू सैन लखे कोई शूरा।।62।।

अभेद ज्ञान

देही ही देह स्वरूप बना, उपजा अहंकार करे बहु भेदा।
तन, जग वस्तुन से अपनापन, यह ममता संघर्ष हो खेदा।।
वस्तुन त्याग तो होवत है, जिन ''मैं'' ''मेरापन'' भाव को छेदा।
जन ''सुखदेव'' मिटे सब खेदहि, भेद मिटे चट होय अभेदा।।63।।
देहि'–आत्मा

आँखों देखा झूँठ

आँखिन देखिहु साँच कहे जग, झूँठ प्रपंचहु आँखिन देखी।
दृश्य असत्यहु सत्य अदृश्य, दृष्टा है चेतन वस्तुहि पेखी।।
कल्पित वस्तुन में सुख कल्पित, आनन्द रूप ''मैं'' बात मजे की।
जन''सुखदेव''भया सुख रूप, यह मौज मिली गुरुदेव भजे की।।64।।

कर्म योग

शक्ति, पदार्थ, ज्ञान, समय, हर मानव के नित पास रहावे।
औरन के हित में रत हो, तित केशव कर्मन योग बतावे।।
पास हुँ जित लगाना है, उतहु और तो कित कहाँ से हूँ लावे।
तू ''सुखदेव'' सदा सुख दे, मित हो निष्काम परम पद पावे।।65।।

रह मस्त आतम ज्ञान में

1

हे रतन! रत रह रात दिन, निज राष्ट्र के उत्थान में।
स्वरूप में स्थित रह, लग जगत के कल्याण में।।
हम क्या हँसे रोवे पुनि, नित मान अरु अपमान में।
''सुखदेव'' तू सुख रूप है, रह मस्त आतम ज्ञान में।। 66।।

2

यह जगत ''मैं'' मेरापना, ममता अविद्या भ्रम है।
सत, अजर, आतम अमर, तू चैतन्य व्यापक ब्रह्म है।।
कर और का उपकार नित, सुख प्राप्ति का ही मर्म है।
निष्काम हो कर्त्तव्य पालन, जिन्दगी का धर्म है।। 67।।

वेदान्त का सिद्धान्त

ब्रह्म की सत्ता से सत्य सा दीखत, जग कल्पित सत भ्रान्ति से भासे।
कंचन भूषण की युक्ति लख, ज्ञान से एक ही ब्रह्म प्रकाशे।।
दीखत सो तो कहा जग झूँठ है, व्यापक ब्रह्म कि सत्य उजासे।
यह''सुखदेव''जाना गुरु के मुख, सत्य सिद्धान्त वेदान्त का आशे।।68।।

तीन वस्तु अति दुर्लभ

मर्म की बात कहूँ मम भ्रात, सुनो निज गात धरो धर ध्यानो।
दुर्लभ है जग में तिहूँ वस्तुन, सूलभ ईश्वर मेहर से मानो।।
नर तन, शुभ इच्छा सत संगत, आन मिले बड़ भाग्य पिछानो।
सद् उपयोग करे''सुखदेव''जो, वो तत्काल ही ब्रह्म समानो।।69।।

''विचार से ही तत्व उपलब्धि''

तीरथ, दान, करें व्रत पूजन, प्राणायाम, कर्म शुभ प्यारे।
चित्त की शुद्धि के हेतु है सर्व, अज्ञान तो ज्ञान हि से परिहारे।।
गुरु उपदेश समाहित होकर, भोगन की सब वासना टारे।
कर''सुखदेव''विचार निरन्तर, ब्रह्म मिले नित ब्रह्म विचारे।।70।।

अनेक में एक तभी दर्शेगा

होइ वैराग करे मद त्याग, कोई ब्रह्मज्ञानी के जो पद परसे।
श्रद्धावान, सेवारत होय तो, गुरुमुख ज्ञान अमीरस बरसे।
संशय, भेद मिटे सब खेद, अखण्ड निजानंद पायके हर्षे।
है ''सुखदेव'' जो एक अनेक, अनेक में एक वही फिर दर्शे।। 71।।

श्री कृष्ण-अर्जुन संवाद

उतिष्ठत् ! जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

अर्जुन उवाच (1)

मन भ्रमित मुख सूख रहा, तन काँप रहा सब अंग थके रे।
मामा, पिता, पितामह, गुरूजन, सब मम प्रिय सम्बन्धी सगे रे।।
कैसे युद्ध करूँ अब भगवन्, दोनों ओर कुटुम्बी मेरे।
''सुखदेवा'' रण बीच खड़ा हो, शोकाकुल अर्जुन यू टेरे।। 72।।

(2)

कुल नाशे अधर्म फले, नहीं जाति व कुल का धर्म टिके रे
मर जाऊँ मारूँगा नहीं, इस रण में न कछु लाभ दिखे रे।
किसके हेतु करूँ महापाप, त्रिलोक के राज की चाह न मेरे।
''सुखदेवा'' भय शोक से व्याकुल, यों अर्जुन भगवन् से टेरे।। 73।।

श्री कृष्ण उवाच

(1)

युद्ध करण को आकर के हे गाण्डीव धार क्यों नैन भरे रे।
(हे) पार्थ ! कायरता और नपुसंक भाव को घट से राख परे रे।।
रणभूमि के बीच बहादुर, मोहित हो क्यों शोक करे रे।
छोड़ हृदय की दुर्बलता, हे अर्जुन ! क्यों नहीं युद्ध लरे रे।। 74।।

(2)

सुख-दुःख हानि लाभ जय हार में, समबुद्धि रख कर्म करे रे।
किन्चित पाप लगे ना पारथ, क्यों अपने दिल शंक धरे रे।।
मही का राज मिले जय हो तो, स्वर्ग मिले रण बीच मरे रे।
निर्भय होकर युद्ध करो, अब फल की इच्छा त्याग परे रे।। 75।।

(3)

मरने जीने वालों के हित, पण्डित जन नहीं शोक करे रे।
मैं और तू राजा जन आदिक, पहले थे आगे भी रहे रे।।
बढ़-बढ़ बात करे मत पण्डित, देहधारी नहीं जन्म मरे रे।
ज्यों तन बाल, युवा, वृद्ध होवे, त्यूं देही देह और धरे रे।। 76।।

"आतम तत्व"

देह से भिन्न शरीरी आतम, जन्म मरण से रहित अनूपा।
मन, बुद्धि, इन्द्रियन, त्रिदेह का, दृष्टा साक्षी सत्य स्वरूपा।।
सूखे, कटे, जले न गले, है काल अनादि से जग भूपा।
नित्य निरन्तर है अभिअन्तर चेतन है परमानन्द रूपा।।
मारे मरे नहीं यह देही, देह अभिमान फँसा वो चूका।।
"सुखदेवा" निज ज्ञान बिना, नर बारम्बार पड़े भव कूपा।। 77।।

अर्जुन का महत्वपूर्ण प्रश्न (2)

हे भगवान ! सुनो दे ध्यान, मेरे मन संशय एक फुरावे।
निज कर्त्तव्य, धर्म का पालन, पर धर्मो से श्रेष्ठ बतावे।
न चाहवे फिर भी मानव को, पाप कर्म में कौन लगावे ?।।
जन "सुखदेव" कहो गुरुदेव लखे मन भेव तभी सुख पावे।। 78।।

भगवान श्री कृष्ण का उत्तर

(1)

रज गुण से उत्पन्न काम ही, पाप कराये है महापापी।
क्रोध का बाप, विवेकीजन, अरु साधक का महा बैरी तापी।।
इन्द्रियाँदिक से मोहित करके, देहाभिमानी के ज्ञान को ढाँपी।
कह "सुखदेव" आप मन वश कर, दुर्जय शत्रु को मार प्रतापी।।79।।

(2)

तन, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि से पर, काम महाशत्रु सुन हंसा।
(कर्ता) अहं में काम निवास करे, है अहं के जड़ चेतन दो अंशा।।
चेतन अंश मिले प्रभू में, जड़ अंश बढ़ावे जगत प्रपंचा।
जड़ के अंश में काम रहे, अरु चेतन में सत प्रेम है टंचा[1]।। 80।।

टंचा[1]–खरा

''अन्तः करण की कृपा बिन सर्व कृपायें व्यर्थ''

उद्यम, साहस, धैर्य, सुबुद्धिहु, शक्ति, पराक्रम जे नर धारे।
मद, मोह, क्रोध, लोभ अरु काम हि, जीवन से सबको परिहारे।।
वाहिकू वेद, गुरु अरू ईश्वर, करहिं कृपा भव पार उतारे।
स्वयं कृपा बिन सर्व कृपाये, जन ''सुखदेव'' विफल हो सारे।।81।।

''निज बोध बिना आत्म शान्ति कहाँ''

कौटिक पन्थ रु ग्रन्थ अनेकहु, सुनकर ज्ञान अधिक अलुझावे।
बिन गुरु के पढ़ ज्ञान बखाने, वाद–विवाद कुतर्क हि भावे।।
और की बात सुने नहीं किन्चित, अपनी बात मनाना चाहवे।
गुरु भक्ति, निज बोध बिना, ''सुखदेव'' नहीं परमानंद पावे।।82।।

''ज्ञानी की गति ज्ञानी जाने''

महल अटारिन, कामिनी, कंचन, भोगन में जिनकी प्रवृत्ति।
दौड़ रहे नित पंच विषय पथ, ज्ञान, विचार, विवेक न धृत्ति।।
सदगुण भूल करे नित अवगुण, क्या जाने वो संत की वृत्ति।
ज्ञानी का मर्म लखे कोई ज्ञानी, जन ''सुखदेव'' गंभीर प्रकृति।।83।।

''आत्म और ब्रह्म की एकता के बोध बिना मुक्ति असंभव''

वेद अरु शास्त्र वदे बिन देखहि, बोलत कोटि सुभाषित सुक्ती।
भेष रू शिष्य बनाय अनेकहुँ, करत है परत अज्ञान की पुख्ती।।
तीर्थ, दान करे सुर पूजन, करि बहु व्रत लगावत युक्ती।
आतम ब्रह्म के एक्य बिना, ''सुखदेव'' असंभव जीवन मुक्ती।।84।।

“ज्ञानी की रहनी”

अकारण लोग करे निंदा, स्तुति करे हर पल क्षण रे।
कीरती यश प्रतिष्ठा मिले, अपयश के रोज बजे घण रे।।
सुखदायक गद्दे मखमल के, चाहे शयन करें नित रज कण रे।
“सुखदेव” रमे परब्रह्म सदा, अलमस्त फिरे यूं हरिजन रे।। 85।।
कीरती-कीर्ति

अपमान मान से हो उपराम, जे ही घट पाप नहीं पुन रे।
नित जाप जपे अजपा का पुनि, परब्रह्म से डोर लगी धुन रे।।
परहित में व्यस्त रहे जीवन, उस ज्ञानी की बात जरा सुण रे।।
“सुखदेव” रमे परब्रह्म सदा, अब मौत को सोच करे कुण रे।। 86।।

“सब जगह भगवान है, तो मूर्ति में क्यों नहीं”

है सर्वत्र, सभी, अरू सब में, व्यापक ब्रह्म हु मानत यूँकर।
खड़्ग में खम्भ में, जो परिपूरण संतन, मूढ, ज्ञानी खर कूकर।।
कण-कण में भगवान बतावत, दानव मानव हो चाहे सूकर।
जन “सुखदेव” देव प्रतिमा में, ब्रह्म नहीं फिर कहते क्यों कर।। 87।।

सगुण भी वो ही है निर्गुण भी वो ही है

गुरु पद परस नमन् कर जोरहि, भोजन वसन[1] करें जल अर्पण।
सगुण उपासक बन करियहुँ जब, तन, मन, धन गुरुदेव हु समर्पण।।
सहगुण से निर्गुण पुनि सहगुण, एक ही ब्रह्म रहा जग थर्पण[2]।
जन “सुखदेव” न भेद कछु पर, देख जरा ले ज्ञान का दर्पण ।। 88।।
थर्पण[2]-अधिष्ठान, आधार, वसन[1]-वस्त्र

“दैवी सम्पत्ति”

धैर्यवान, क्षमा दिल समता, निश दिन प्रेम हरि से राखे।
दानी, दमन करें इन्द्रियों का, तन, मन, वचन शुद्ध हो ताके।।
अक्रोधी, अहंकार मुक्त हो, सहनशील, सरलता जाके।
“सुखदेवा” शुभ कर्म करे यू, गीता देव सम्पत्ति भाखे।। 89।।

"आसुरी सम्पत्ति"

प्राणी रू वस्तुन में ममता करि, सज्जन से अभिमानी लरियहु।
मन वाणी बर्तावादि में, नित्य कठोरता भाव हि धरियहु।।
दम्भ रखे नित क्रोध महा, नहीं सत्य असत्य का ज्ञान हि करियहु।
है "सुखदेव" सो आसुरी सम्पत्ति, निःसंशय भव कूपहि परियहु।।90।।

"दृढ़ निश्चय से समता, समता से तत्व प्राप्ति"

ठीक यह बेठीक जगत में, राग अरु द्वैष भरा है घट-घट।
हानि, लाभ, स्तुति, निन्दा, हर्ष शोक की हो जब खटखट।।
हम तो है परमार्थिक साधक, समता धार चले पथ सरपट।
"सुखदेवा" दृढ़ निश्चय कर, पर ब्रह्म से जाय मिलेंगे झटपट।।91।।

"जगत् सिनेमा"

जगत सिनेमा पर्दे[1] पर लखि, शान्ति दीखे कभी होत लड़ाई।
कबहु आग भयंकर बारिष, पर्दा जले गले नहीं भाई।।
अज्ञान अन्धेरे में दर्शे, अरु ज्ञान उजारा होत विलाई।
माया खेल तजो "सुखदेवा" ब्रह्महु जान ब्रह्म हो जाई।। 92।।

आत्मा[1]

"स्थिर, अस्थिर पदार्थ विवेचन"

अस्थिर जग, तन में हरि, आतम, नित स्थिर कहीं आवे न जावे।
रहते है भगवान सदा, फिर बहते जग में क्यों? भरमावे।।
सब जग में जो व्याप रहा, नहीं खाली स्थान कहो कित जावे।
जन "सुखदेव" सदा सुख सागर, निश्चय कर परमानंद पावे।।93।।

"स्वरुप बोध"

तू सुख सागर आप हमेशा, फिर जग से सुख मिलियहु कैसे?
मिलता वो तो बिछुड़ेगा ही, आया वो जायेगा जैसे।।
सुख-दुःख है मन बुद्धि तक पर, इनसे पर परमातम रहसे।
"सुखदेवा" तत त्वं असि, कर मौज कहाँ दुःख बचियहु शेषे।।94।।

“जगत की सत्यता का भ्रम निवारण आत्म बोध बिना सम्भव नहीं”

सीपी चमक देख हो भ्रमित, हुआ न होगा है नहीं रुपा।
जल सम जान मरु मृग भटके, प्यास मिटे ना है रवि धूपा।।
सारहीन जग मन माने का, यूं मानों ज्यो कदली रूंका।
“सुखदेवा” यह भ्रम मिटे जब, जानहू निज आतम जग भूपा।।95।।

“अद्वैत बोध के बाद द्वैत कहाँ?”

कनक आभूषण बहुत बने, वो स्वर्ण से भिन्न नहीं दर्शावे।
चेतन में जग कल्पित जानहु, अधिष्ठान से अभिन्न रहावे।
व्यापक ब्रह्म सदा परिपूर्ण, अनुभव बिन कछु समझ न आवे।
ब्रह्म अद्वैत लखे “सुखदेवहि”, द्वैत का ज्ञान कहाँ ठहरावे।। 96।।

“विषयासक्त और हम”

विषयी पंच विषय में आनन्द, लूट रहा और लूटेगा ही।
मोह ममता में फँसकर छाती, कूट रहा और कूटेगा ही।।
मात-पिता सुत बन्धु सखा संग, छूट रहा और छूटेगा ही।
जन “सुखदेव” सदानंद है, क्यों कष्ट करें जग रूठेगा ही।। 97।।

वर, वरियान व वरिष्ठ ज्ञानी

इक क्षण सत्य सा मान जगत को , लौट पुनि निज रूप में आवे ।
ज्यों जल त्याग बसे तट दादुर, यह स्थिति वर मोक्ष कहावे ।।
ब्रह्म सिन्धु के मध्य रमे नित, यह स्थिति वरियान बतावे ।
जल तल बैठ वरिष्ठ सदा, “सुखदेवहि” ब्रह्म स्वरुप समावे ।।98।।

अन्योन्य अध्यास

दु:खा रु द्वैत अनातम लक्षण, आतमानंद अद्वैत कूं ढांपे ।
मैं हूं दुखी ईश आदि से भिन्नहु, होय प्रतीत अध्यास से वांपे ।।
आतम के सत चित्त विशेषण, ढांपत जाड्य-असत्य को यांपे ।
कह “सुखदेव” अन्योन्य अध्यास ते, मिथ्या जगत सत्य सा भांपे ।।99।।

सन्ध्या विज्ञान का फल

सन्ध्या विज्ञान करे प्रभू सुमिरन,जो नर काल त्रिय नित ध्यावे।
तन, मन स्वस्थ रहे मति निर्मल, आयु बढ़े दुःख, शोक नशावे।।
साम्राज्य, स्वराज्य मिले, सम्राट बने सब थाट कूं पावे।
कह''सुखदेव''मिटे भव बंधन, सो हरिजन हरि के मन भावे।।100।।

भगवान प्रेम के प्यासे

जाति, वर्ण, कुल, रूप न देखत, देखत नाहि आचार विचारे।
धर विश्वास लगी उर आशहि, श्वासन श्वास हि राम पुकारे।।
प्रेम बिन्दु दृगपट देखतहि, प्रेम सिन्धु झटआय संभारे।
जन''सुखदेव''सरल, निश्छल, निष्कपट भक्त भगवान को प्यारे।।101।।

कृपा करो करूणानिधि कान्हा

काकुल, कुन्चित, कंठन कंठी, कंचन, कंकण, कुण्डल कान्हा।
कटि के हरि, हरि के कर कम्बुक, कोकिल कंठ, पीताम्बर बाना।
काल के काल सूनो करूणाकर, केशव काम करे कल्याणा।
कह''सुखदेव''विनय कर जोरि हि, करहुँ कृपा करूणानिधि कान्हा।।102।।

मनहर सवैया छन्द
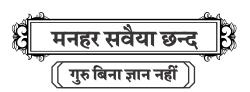
गुरु बिना ज्ञान नहीं

ब्रह्मा जी के गुरुदेव हयग्रीव अवतार,
महादेव गुरू ऋषि अंगीरा बताईयो
कृष्ण के संदीपनी हु राम के वशिष्ठ मुनि,
नारद के सनत कुमार मन भाइयो।।
सप्त ऋषियों के गुरु मतसय अवतार,
सनकादि हँस अवतार गुरु ध्याइयो।
सुखदेव गुरु "भूरादास" जी हमारे उर
गुरु बिन ज्ञान अहो ! कहो किन पाइयो।। 1।।

तुलसी के सद्गुरु नरहरि दास भये,
नचिकेत यम की शरण मांहि जाइयो।
भृगु के वरुण, सुखदेव के जनक राज,
जनक के गुरु अष्टावक्र ऋषि गाइयो।
पीपा, रवीदास जी, कबीर जी के रामानंद,
दादू जी के वृद्ध भगवान चित छाइयो।
" सुखदेव" गुरु "भूरादास" जी हमारे उर
गुरु बिन ज्ञान अहो ! कहो किन पाइयो।। 2।।

वालमीक बामदेव जी के गुरु सनकादि,
इन्द्रादि देव गुरु, ब्रहस्पति कहाइयो।
राक्षसहु के गुरु, शुक्राचार्य भये,
भगत प्रहलाद मन दतात्रेय भाइयो।।
रज्जब, सुन्दर द्वय, निश्चल दासजी के,
गुरुदेव संत श्री दादू जी रहाईयो।
"सुखदेव" गुरु "भूरादास जी" हमारे उर
गुरु बिना ज्ञान अहो ! कहो किन पाइयो।। 3।।

सद् शिष्य के लक्षण

गुरुजी का ध्यान धरि, नित्य गुण गान करि,
देत सोई ज्ञान धरि, राम रूप मानिये।
सरस वचन, तन सरल, तरल मन,
अतिशय प्रेम राखि भेद भ्रम भानिये।।
मांगत न रिद्धि सिद्धि जगत प्रसिद्धि कछु,
माँगे पद प्यार, सार उर माँहि आनिये।
विवेक, वैरागवान, गुण ग्राही, त्यागवान,
''सुखदेव'' सोई सद् शिष्य करि जानिये।। 4।।

करूण कृपाल गुरू, दीन के दयाल गुरू,
राखि के खयाल गुरू ज्ञान को विचारिये।
हरदम सेवारत हुकम बजावे नित,
उर में तमस, भेद भ्रम को निवारिये।।
गुरूजी को मानें पर गुरूजी की मान यार,
सुपने ही गुरू के वचन मत टारिये।
''सुखदेव'' गुरूदेव कसत कसौटी जब,
शीश पद वारते हिम्मत मत हारिये।। 5।।

सद्गुरू लक्षण

सद्गुरू करिये तो समझ विचार देख,
ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्रिय भव तारि दे।
पंचभेद खेद जारि, देत सब वेद सारि,
देत ब्रह्म का विचार द्वैतभाव टारि दे।
भरम करत हरि, जीवत ही मुक्त करि
सत चित आनंद, स्वरूप मांहि गारि दे।।
सहज, सरल, अरू सजग रहत नित
''सुखदेव'' सर्व को आनंद निज प्यार दे।। 6।।

आत्म योग की महत्ता

बिनु लोभ भाव के हु सुख नहीं होत कभी,
पदारथ, प्राणियों के सहज संयोग में।
तात, मात, भ्रात, मीत, युवती आदि के संग,
मोह बिनु आनंद न भासे इन लोग में।।
दौलत, अटारी, धन संग्रह करत अति,
लालच से सुख मान डूब रहै भोग में।
तज लोभ, काम, क्रोध, स्वारथ, लालच यार,
''सुखदेव'' सुख तो है आत्मा के योग में ।।7।।

कामना दुःख का कारण

सुनने की चाह से, न सुनने का दुःख होय,
देखने की चाह से, न दीखने का दुःख है
सबलता चाहे उसे निर्बलता का दुःख,
जवानी को चाहे उसे बुढ़ापे का दुःख है।।
पदवी की चाहना से पद बिना दुःख होय,
जिन्दगी की कामना से मौत हूँ का दुःख है।
''सुखदेव'' दुःख नहीं वस्तु के अभाव भये,
दुःख रूप ''कामना'' मिटे तो पावे सुख है।। 8।।

सदुपयोग बड़ी बात

धनी धन, ज्ञानी ज्ञान, पाइये हु वरदान,
करके गुमान व्यर्थ समय गँवात है।
साहित्य, संगीत, गान, वेदहु, पुराण, ज्ञान,
पाय सन्मान, पद, फूला न समात है।।
राम सम देह प्राण, सुन्दर बनी है शान,
गुरु भगवान साथ फिर क्यों अनाथ है।
''सुखदेव'' दूर-उपयोग सेवा, प्रेम बिन,
सद् उपयोग करें यही बड़ी बात है।। 9।।

गौ माता

1

गौ से ही, गोविन्द, गोपाल गोपीनाथ भये,
गोकुल[1], में गोकुल[2], गोधन[3], हु बढ़ाया है।
गोधुलि[4], गोपति[5], गोजी[6], गहि कर गाय पुच्छ,
गोधून[7], गोजई[8], गौ ग्रास हु खिलाया है।।
गोरस[9] हि पान कर इन्द्र का गुमान हरा,
गौ के गोपन[10] हेतु गोवर्धन उठाया है।।
आज दुःखी गाय-गाय मच रही हाय-हाय,
गाय ''सुखदेव'' जग दुःख अति छाया है।। 10।।

कठिन शब्दार्थ – गाँव का नाम[1]', गो वंश[2], ''गाय, बछड़े, बैल[3]' आदि''सायंकाल[4]'
श्री कृष्ण[5]' गाये हाँकने की लाठी[6], गेहूँ[7], ''गैहूँ व जौ की मिलावट''[8]
''छाछ, दूध, इही आदि[9], रक्षा[10]।''

2

गोतमी[1], गोतम ऋषी[2], गोरख[3] हु गो गोठ[4] बिच,
गोरांग[5], गोरीश[6], गोरी[7], गोरस[8] पिलाया है।
गोरीपति[9], शीश गंग, गोमती, गोदावरी हु,
गुरूमुख गौमुख, प्रेम नीर पाया है।।
गोरस, गोबर, गोद पाय गौ सेवा करि,
गौ सेवा करि जिन गौपुर पाया है।
गौकुशी[10], बन्द करो, गोमर[11], पाबन्द करो,
''सुखदेव'' करुणा से, दिल भर आया है।। 11।।

कठिन शब्दार्थ :– गौतम ऋषि की पत्नी[1], गौतम ऋषि[2], गोरख नाथ जी[3],
गौशाला[4], भगवान विष्णु[5], भगवान शिव[6], पार्वती जी[7], ''दुध, दही, घी
आदि[8], शिव शंकर[9], गौ हत्या[10], कसाई[11]''

"ज्ञान, प्रेम, उपकार बिन नर देह व्यर्थ"

रूप देख देख नित फँसे रू फँसाय रहे,
रूप तो कुरुप गुण ज्ञान बिना भाई रे।
अरब, खरबपति बन इतराय रहे,
सद् उपयोग बिन धन व्यर्थ जाई रे।।
अस्त्र-शस्त्र राखिबो तो व्यर्थ है साहस बिन,
भूख बिना भोजन भी विष बन जाई रे।
आत्मा के ज्ञान, हरि प्रेम, उपकार बिन,
"सुखदेव" नर देह व्यर्थ ही गँवाई रे।। 12।।

होश बिना जोश, समझ बिन काम सब,
श्रद्धा भाव रहित नमन् व्यर्थ जाई रे।
कंठ बिना गायन व्यर्थ लय ताल सब,
बिना तुक अर्थ काहे जोरि जोरि गाई रे।।
तेल बिन दीप व्यर्थ, मणि बिन अहि फणि,
शूरवीरता के बिन शूर कहाँ भाई रे।
आत्मा के ज्ञान, हरि प्रेम, उपकार बिन,
"सुखदेव" नर देह व्यर्थ ही गँवाई रे।। 13।।

तरू छाँव सुबह शाम, पूरव पीछम मांहि,
मध्यकाल देख छाँव आप पे रहात है।
सुख-दुःख, हानि-लाभ, जय अरू पराजय,
मान-अपमान सब जीवन के साथ है।।
सब ये अनित्य नित रहे निज आत्मा,
अज्ञ हँसेंगे कभी आँसू भी बहात है।
कभी भूप रंक होय रंक कभी भूप बने,
''सुखदेव'' यह तो समय-समय की ही बात है।। 14।।

शिशु बन रोये कभी गूंजी किलकारियाँ,
वृद्धपने में नहीं मुख माँही दाँत है।
कभी मीत टोलियाँ भी घूमती थी चहुँ दिश,
आज निज सुत नार कहाँ तेरे साथ है।।
परिवर्तनशील तन, जग का विचार कर,
कबहुँ तो दिन बड़े कभी बड़ी रात है।
जनम-मरण, यश अपयश जान सब,
''सुखदेव'' यह तो समय-समय की ही बात है।। 15।।

रण बीच अर्जुन शोक से व्याकुल होय,
नयन में नीर भरे कछु ना दिखात है।
सारथी से ज्ञान लेय युद्ध किया घमशान,
भीषम के नीचे सेज बाणों की बिछात है।।
गोपियों को लूटे एक समय काबा भील तब,
कहाँ वीर अर्जुन रण में टिकात है।।
सबल, निबल कभी धनी-निर्धन होय,
''सुखदेव'' यह तो समय-समय की ही बात है।। 16।।

भूप हरिचन्द दानी, सतवादी एक वक्त,
नारि सुत बेच घर नीच के बिकात है।
एक समय खूंटी ने निगल लिया गलहार
भुने हुये नल के तीतर उड़ जात है।।
खून के पियासे एक समय राणा-शक्तिसिंह,,
समय सबल भाई-भाई से मिलात है।
लात खाय विभीषण राम के शरण गये,
''सुखदेव'' यह तो समय-समय की ही बात है।। 17।।

"राम के बिना हराम"

भजिये न राम नाम, लगे नहीं कछु दाम,
सर्व सुखों के धाम, सरे सब काम है।
सियाराम, दादूराम, आदि अनादि राम,
सगुण निगुण जग एक ही तो राम है।
बैठत उठत राम चलत फिरत राम,
सोवत जागत राम जपो, सुबह शाम है।
राम जैसी देह पाय, राम को ही भूल गया,
"सुखदेव" जान वो तो बड़ो ही हराम है।। 18 ।।

"राम को रिझायें"

गाये सारी रैन चैन लेत नहीं एक पल,
नाच कूद किये साज बाज हु बजायके।
ताली पीट-पीट दीठ फँस्यो तान-मान मांहि
ज्ञान ध्यान छोड़ राजी जगत रिझायके।
होय वृद्ध तन अब दीखे नहीं सूझे कछु,
जाय खड़े यम द्वार शीश हुँ झुकायके।
राम को रिझाय जहाँ पावते परम पद,
"सुखदेव" रोय अब समय गँवायके।। 19।।

योग में परम सुख

बार बार सोय नर नींदहु पे वश चाहे।
नींदहु के वश होय बने महा आलसी।
घृत की आहुति दिये अनल न वश होय।
भभके अधिकाधिक अंग अंग जारसी।।
बार बार भोग किये कामिनी पे वश चाहे।
कामिनी के वश होय जीवन बिगारसी।
कह "सुखदेव" सुन भोग में परम दुःख।
योग में परम सुख संयमी विचारसी ।। 20।।

सच्चे दाता, पण्डित, शूरा

रण में विजय से ही शूरवीर होत नहीं,
इन्द्रियों को वश करे शूर सोई जानिये।
शास्त्र अनेक पढ़ पण्डित कहावे नर।
पण्डित तो धर्माचरण युक्त मानिये।
वक्ता न होत कभी वाणी की चतुरता से
वक्ता तो परहित भाव से पिछानिये।
धन दान किये नहीं दाता होय ''सुखदेव''।
ज्ञान, मान, प्रेम देय सोई दाता ठानिये।। 21।।

राम रस पीव

चाय पीव, बीड़ी पीव, गाजा भांग मद्य पीव,
पीवत न राम रस, पीव कहाँ पाइये।
जर्दा फटक कर, गुटके गटक कर,
सुपथ भटक कर, कुपथ पे धाइये।।
गजल कव्वाल गाय, होली के धमाल गाय,
गावत खयाल तु खयाल[1] चित लाइये।
छीजत है तन मन, पल - पल क्षण-क्षण।
''सुखदेव'' हरि भज हरि में समाइये।। 22।।

विचार[1]

ज्ञानी को कर्तव्य नहीं

ज्ञानी भोग करे कैस? प्रारब्ध रहे शेष।
देह अवशेष, नहीं ज्ञान से, मिटात है।
ज्ञान से अज्ञान नशे, दृढ़ राग अहं मिटे,
बलात हि प्रारब्ध कर्म भोग को भोगात है।।
परेच्छा, अनिच्छा, इच्छा तीन प्रकार जहाँ
मन्द, तीव्र, तीव्रतर प्रारब्ध कहात है।
खान, पान खेल रति कर्म सब सहज होय,
''सुखदेव'' ज्ञानी कुछ, करे न करात है।। 23।।

संचित, आगामी भले, ज्ञान की अग्नि से जले।
प्रारब्ध तो भोग को भोगाय के नशात है।
सिंह जान छूटा बाण, बाद हुआ गऊ ज्ञान।
जाय लक्ष्य भेदे, नहीं बीच में रूकात है।
देह निरपेक्ष, दृढ़ राग भाव बिन ज्ञानी,
प्रारब्धवश सर्व भोग को भोगात है।।
''सुखदेव'' ज्ञानी के कर्म सब लीला मात्र।
असंग, अलेप कुछ करे न करात है।। 24।।

आत्मा अक्रिय

चलत फिरत अरू जागत सोवत आदि,
तन के करम, तन पावत है खेद कूं।
कबहुं क सत्य पुनि कबहु असत भखे,
जिव्हा के करम, जिव्हा पावत है वेद कूं।।
ध्यान धारणादि पुनि संकल्प विकल्प करि
मन के करम, मन पावत है भेद कूं।
यहु सब तज ''सुखदेव'' सुख रूप भयो,
छेद भ्रम खेद, वेद, भेद रु अभेद कूं।। 25।।

ब्रह्म के उपाधि से अनेक रूप

परमाणु स्वरूप जल निरगुण ब्रह्म सोई,
भाप रूप जल ब्रह्म सगुण बखानिये।
मेघ रूप जल जान कारक पुरुष ब्रह्मा,
बूंद बूंद जल कूं सामान्य जीव मानिये।।
बारिस को जल सृष्टि सृजन स्वरूप क्रिया,
बर्फ रूप जल सोई पंचभूत ठानिये।
कहि ''सुखदेव'' जेहि जल के विविध रूप
ब्रह्म के उपाधि से अनेक रूप जानिये।। 26।।

सद्गुरु साधारण मनुष्य नहीं

गंगा जी न नदी मात्र, वृक्ष नाहि कल्पवृक्ष ,
अमृत न मात्र पेय पदारथ मानिए ।
धेनु मात्र कामधेनु, कांच नाहिं चिंतामणि,
शेष जी न नाग मात्र सुजन बखानिये ।।
बैकुण्ठ न वास मात्र, सुमेरू ने गिरी मात्र ,
भक्त हनुमान मात्र कपि न पिछानिए ।
कह ''सुखदेव'' गुरुदेव न मनुज मात्र,
ईशन के ईस ब्रह्म रूप करि जानिये ।।27।।

मध्यमा, बैखरी, पश्यन्ति, परा, निरवाक वाणी की पहिचान

गुरू से विनती करे, विनय से युक्त होय,
पद मांहि सोई वाणी ''मध्यमा'' पिछानिये।
शिष्य की विनती सुण गुरू उपदेश करे
सोई वाणी ''बैखरी'' है, दृढ़ करि मानिये।।
पाय घट ज्ञान शिष, अनुभव गान करे,
आनंदित होय वाणी ''पश्यन्ति'' बखानिये।
नाही नाही जग ''परा'' साक्षी को सिद्ध करे,
''सुखदेव''''निरवाक''ज्यों की त्यों ही जानिये ।।28।।

जाग्रत में जाग्रत, स्वपन, सुषुप्ती, तुरीय, उन्मनी अवस्थायें

गुरू सेवा ध्यान करि, आत्मा का ज्ञान करि,
याही कोहू जाग्रत में, जाग्रत बखानिये।
जागतिक विषयों की लालसा करत मन,
जाग्रत में सुपन है बस यही जानिये,
जाग्रत में सुपति है वृति शुन्याकार भई,
जाग्रत में तुरीया है ''शिवोहम'' ठानिये।
स्वपन की न्याई माने जाग्रत का ताम झाम,
जाग्रत में उनमनी ''सुखदेव'' मानिये ।। 29।।

स्वपन में उक्त सर्व अवस्थायें

स्वपने में ज्ञान करे, हरि गुणगान करे,
सुपने में जाग्रत है यही चित धारिये।
जेवरी में साँप सम भ्रान्ति भरम भयो
स्वपन में स्वपन है, बात को विचारिये।।
सुपने में देखा जिन सुपने में भूल गये,
सुपने में सुपती है ''सुखदेव'' गारिये।
शिवोहम ज्ञान होई सूपने में तूरीय सोई,
उनमनी जग से उदास मन मारिये।। 30।।

सुषुप्ति में सर्व अवस्थायें

उठत रहत तन हल्का प्रसन्न मन,
सत्तोवर्ती सुपती में जाग्रत कहाइये।
भारी-भारी बदन, अप्रसन्न उदास मन
रजोवृती सुपती में सुपन बताइये।।
ऐसी मोहे नींद आई, रहा नहीं होश भाई,
तमोवृती सूपती में सूपती लहाइये।
आत्मा ''मैं'' सत, चित, आनंद हूँ ज्ञान भया,
''सुखदेव'' सुपती में तूरीया रहाइये।। 31।।

तूरीय अवस्था में सर्व अवस्थायें

एकोहम बहुस्याम तूरीया में जागृत है
अहंकार लय भाव सुपति है गानिये।
जगत सृजन भाव तूरीय में स्वपन है,
तूरीया में तूरीया स्वरूप मांहि आनिये।।
जगत प्रलय भाव तूरीया में उनमनी,
तूरीया अतीत सोई निज रूप ठानिये।
तन, मन, मति नाहि, वचन की गति नाहि,
''सुखदेव'' सैन लख चुप ही रहानिये।। 32।।

चौरासी के सात हेतु

नर-मादा [1], पाप-पुण्य [2], अशुभ कर्म शुभ [3],
अनु-प्रतिकूल ज्ञान [4], राग-द्वेष [5], जानिये।
भेद ज्ञान, स्वरूप के अज्ञान [6], सप्त हेतु से ही,
भोगत चौरासी जीव यूं ही करि गानिये।।
स्वरूप के ही ज्ञान से अज्ञान भेद खेद जाय,
विपरीत क्रम से अभाव करि ठानिये।
''सुखदेव'' अधिष्ठान साक्षी स्वरूप नित,
ता में लख चौरासी को मिथ्या करि मानिये।। 33।।

ब्रह्मज्ञान से परम सुख

ब्रह्म ही जगत, यह भ्रम से दीसत और
जैसे रज्जू सांप सीप रूप कर जानिये।
संकट सकल भय, आफत परी है यह,
ब्रह्म के अज्ञान ते परम दुःख आनिये।।
माया अरू अविद्यादि, प्रकृति निवृत होय,
ब्रह्म से संबंध, जीव, ईश भाव भानिये।
जीव ईश भेद ''सुखदेव'' सब खेद जाय,
ब्रह्म के ही ज्ञान से परम सुख मानिये।। 34।।

भ्रम, अध्यास और विवर्त

उपादान कारण के समान स्वभाव अरू,
अन्यथा स्वरूप परिणाम पहिचानिये।
मिथ्या सर्प आदि पुनि उनका जो ज्ञान ताहि,
कहत अध्यास पुनि भ्रमहु बखानिये।।
विपरीत भाव अधिष्ठान से अन्यथा रूप,
कहत विवर्त वेदान्त मांहि गानिये।
ब्रह्म का विवर्त जग, अविद्या का परिणाम,
मिथ्या ''सुखदेव'' आप सत्य ब्रह्म ठानिये।। 35।।

दुःख का कारण कामना

बारबार ध्यान किये विषयों के संग होय,
संगते विकार मन कामना धरतु है ।
कामना की पूर्ति के विविध उपाय करें ,
विफल भये ते जन क्रोध से जरतु है ।।
क्रोध से सम्मोह पुनि स्मृति, विवेक जाय,
करना था और, और औरहि करतु है ।
कहे ''सुखदेव'' मन हरि से विमुख होय,
हाय-हाय करत दोजख में परतु है ।।36।।

चार प्रकार के ज्ञानी

इक ज्ञानी जनक के जिहिं राग मांहि रत,
इक सुखदेव सम त्यागवान मानिये ।
इक जमदग्नी सा शांत शीतल अति,
महा घोरि दुर्वासा के सम इक ठानिये ।।
भिन्न-भिन्न क्रिया पुनि देह व्यवहार भिन्न,
अनुभव मांहि नांहि भेद कुछ जानिये ।
अज्ञ हो भ्रमित तज्ञ श्रद्धा सेवारत होय ,
''सुखदेव'' ज्ञान पाय भेद भ्रम भानिये ।।37।।

लय योग

सकल जगत लय पंचीकृत भूतन में ,
पंचीकृत को अपंचीकृत में मिलाइये ।
क्रमशः मही, जल, तेज, वायु, व्योम मध्य,
प्रकृति प्रधान शक्ति ब्रह्म की कहाइये ।
ब्रह्म सो अहम नित व्याप रहा सब ठोर,
कार्य कारण में न भेद कछु पाइये,
यह लय योग सद्गुरु मुख जानकर,
''सुखदेव'' सुख के समंद में समाइये ।।38।।

परम प्रिय आत्मा

संपत्ति लागत प्रिय जाय पर देश नर,
धन से है प्रिय पुत्र हित खर्चात है ।।
पुत्र हि ते प्रिय देह पालन को बेच देय,
देह हि ते प्रिय इंद्री चोट से बचात है ।
इंद्रियन से प्रिय प्राण संकट परत गाय,
चाहे काटि नाक कान नैन अरु हाथ है।।
दुख मांहि प्राण से वियोग कूं चाहत यातें ।
''सुखदेव'' परम प्रिय आत्मा कहात है ।।39।।

ब्रह्म के अज्ञान से दुःख एवं ज्ञान से सुख

कोऊ तो कहत तुम ईसाई तुरक, हिंदू,
कोऊ कहे जीव लख चौरासी में जाय रे।
कोऊ बंदा राम का, भगत कोई दास कहे ,
भगति के विविध स्वरूप समझाय रे ।।
कोऊ कहे देह तुम, जन्म मरण हार,
ब्रह्म के अज्ञान ते करत हाय-हाय रे।
कह ''सुखदेव'' तुम अखंड व्यापक ब्रह्म,
ब्रह्म के ही ज्ञान से परम सुख पाय रे ।।40।।

रामजी हमारे हम रामजी के

जगत को सत्ता अरु महत्ता देय मूढ जन,
होय पराधीन नित अति दुःख पाइये ।
रामजी है नित्य प्राप्त जीव के संगाती नित,
हृदय में धार के विमल जश गाइये ।।
रामजी हमारे, हम रामजी के प्यारे लाल,
हरदम प्रेम, विश्वास मन लाइये ।
कह ''सुखदेव'' फिर दूर नहीं देर कछु,
जित हु पुकारे तित दौरि चलि आइये ।।41।।

गोबर गणेश आप अकल का दुश्मन,
नित खाय-खाय गुड़ गोबर करतु है ।
नयन से अंध फिर नाम है नयन सुख,
अगन में घृत डारि डारि के जरतु है ।।
ऊंच पग शीश तल गगन से बात करे,
जुगनु ज्यूं लात जाय सूर के धरतु है ।
''सुखदेव'' राम पुनि काल से डरतु नांहि,
कालहुं को चारो बन दोजख परतु है ।।42।।

घृत हु से अन्न शुद्ध, धन शुद्ध दान किये,
मन शुद्ध नित्य हरि नाम को संभारिये ।
चित शुद्ध हेतु प्राणायाम कूं करहि नित,
कर्म शुद्ध नित सेवा भाव दिल धारिये ।।
योग से शरीर पुनि ध्यान से आतम शुद्ध,
भजन से भाव शुद्ध विपत्ति निवारिये ।
शुद्ध सरल तन मन हो तरल अति,
''सुखदेव'' गुरु के वचन मत टारिये ।।43।।

करुण कृपाल गुरुदेव

करुण कृपाल गुरु , दीन के दयाल गुरु,
सर्व प्रतिपाल गुरु वेदन का सार दे।
परम उदार गुरु जीवन सुधार गुरु,
करत उद्धार गुरु आतम विचार दें।।
सुप्त को जगाय गुरु, ध्यान में लगाय गुरु,
स्वरूप लखाय गुरु जगत बिसार दे।
''सुखदेव'' आय गुरु, करके सहाय गुरु,
राम से मिलाय गुरु भव दुःख टार दे।।44।।

दीन के दयाल दीन जानके खयाल करि,
टारि मायाजाल भव बंधन हरतु है।
ज्ञान, गुण, बुद्धि हीन, विषयों के रस लीन,
तो भी गुरुदेव दया दृष्टि करतु है।।
बिना प्रतिफल, दलदल से उबार लेय,
संगति किये ते, सब संशय टरतु है।
महिमा अनंत गुरुदेव की कही ना जाय,
''सुखदेव'' पांव परि वंदन करतु है।।45।।

हरि बरषत हरि कूं हरि दरशत,
हरि भक्षत हरि कूं हरि फारे ।
चंचल हरि मन तापत हरि तन,
हरि कृष्णान दर्शन भये भारे ।।
हरि मय कीच खिलत हरि सुन्दर,
हरि-हरि कूदत तरु हरि डारे ।
हरि जन दुख ''सुखदेव'' हरिहुं हरि ,
नित हरि हरि हरि हरिहुं पुकारे ।।46।।

१. मेह, २. सांप, ३. मेंढक, ४. सांप, ५. घोड़ा, ६. सिंह, ७. वायु, ८. कामदेव, ९. सांप, १0. पानी, ११. कमल, १२. वानर, १३. वानर १४. हरियाली (वृक्ष की डालें), १५. भक्त, १६. दूरि करो, १७.प्रभो,भगवन, १८-१९.परमात्मा

भावार्थ : बरसते मेह में सांप ने मेंढक को देखते ही भक्षण कर लिया और देखिये घोड़े को देखते ही सिंह ने अपने नखो से फाड़ डाला ।यह मन वायु के समान चंचल है , कामदेव कामाग्नि से देह को जला रहा है।सन्मुख भयानक काले सिर्फ को देखकर अत्यंत भय लग रहा है ।उधर कीच संयुक्त जल में सुंदर कमल खिल रहे हैं ।

वृक्षों की हरी-भरी डालियों पर बंदर ही बंदर अठखेलियां कर रहे हैं ।सुखदेवजी कह रहे हैं कि संसार में यह अनुकूल-प्रतिकूल, सुख - दुख आदि दृश्य वर्ग में मन स्थाई चैन नहीं पाता है । अत: हे परमात्मा आपके दर्शन से ही अविनाशी सुख प्राप्त हो सकता है ।इसलिए सर्व दु:खों की निवृत्ति एवं स्थाई शांति प्राप्ति हेतु मैं निरंतर हे हरि !हे हरि !हे हरि !ही पुकार कर रहा हूं ।

कुण्डलियां छन्द

अब सुनियो दीनानाथ

दीनानाथ अनाथ की, करियो बेगि सम्भाल।
चरण कमल नित वन्दहुँ, सहाय करो तत्काल।।
सहाय करो तत्काल, काल से मुझे बचाओ।
कटे अविद्या जाल, वही निज ज्ञान सुनाओ ।।
बहा जात भव सिन्धु में, पकड़ निकालो हाथ।
अर्ज दास ''सुखदेव'' की, सुनियो दीनानाथ।। 1।।

शरणागति

शरणागत वत्सल प्रभो! नमन् करूँ मैं तोय।
कर कृपा भव सिन्धु से, पार करो अब मोय।।
पार करो अब मोय, आप बिन कौन सहारा।
आप ही तात रू मात, सगा सुत मीत हमारा।।
बिन मांझी इस नाव का, कैसे हो तरना।
आश लगा ''सुखदेव'' ने लीना तव शरणा।। 2।।

तेल फुलेल लगाय कर छीदो मत व्है यार।
काल सिराणे गाजतो, मारण न तैयार।।
मारण न तैयार, चेत कर चालो भाई।
सुकृत, सेवा, राम, राख जे दिल के मांही।।
दिल में राखो राम न, क–टे चौरासी जेल।
दीयो जले 'सुखदेव' क्यूं बिन बाती बिन तेल।। 3।।

''सुखदेवा'' तू देख–ल, अ रोई का रोझ।
कर्म गांगल्या तेली सा, बणरिया राजा भोज।।
बणरिया राजा भोज, फि–रे अ अकल बिहूणा ढोर।
ज्ञान, ध्यान, सब छोड़कर, क–रे और की और।।
क रे और की और, लूळ नहीं करता सेवा।।
ठूँठ या गाजी ऊँट, कहो कुछ भी ''सुखदेवा''।। 4।।

कौवे, बगुले असल में बण्या फि रे है हंस।
अहं कृष्ण कहता फिरे, आप असल में कंस।।
आप असल में कंस, सदा ठगबाजी करते।
कामी, कपटी, धूर्त, जन्मते फिर-फिर मरते।।
''सुखदेवा'' फल पाय, बीज तू जैसा बोवे।
चले हँस की चाल असल में बगुले कौवे।। 5।।

औगुण दे-ख खोड़ला, गुण नही दे-ख एक।
प्यासा मरता कीच में, रोड़ रिया मुख देख।।
रोड़ रिया मुख देख, नीर नही पीवे थोड़ा।
आ लखणां तो यार, घणा पावोला फोड़ा।।
''सुखदेवा'' दे सीख तो पासा उलटा फैं-क।
गुण नहीं दे-ख एक, खोड़ला औगण दे-ख।। 6।।

''सुखदेवा'' इक बात कहूँ कर हाथा जोड़ी।
जीणो है दिन चार करो मत माथा फोड़ी।।
माथा फोड़ी करो मति, सब सूँ राखो प्रेम।
सन्ध्या, सुमिरन, ज्ञान कर, सकल मिटावो बेम।।
सकल मिटावो बेम, करो नर सबकी सेवा।
जीवन मुक्ति पाय, फिरो निर्भय ''सुखदेवा''।। 7।।

दुर्जन पगचम्पी क-रे, निवण क-रे शिर नाय।
ज्यों चीता संग हरिण के, लोट पोट हो जाय।।
लोट पोट हो जाय, हृदय में बूरी ची त।
काढ कालजो खाय, बहुत ही बूरी बी त।।
कहे दास ''सुखदेव'' सुनो हे सगळा सज्जन।
कदे न करनी प्रीत, यदि मिल जावे दुर्जन।। 8।।

जिसको ढूँढन जाय, यार तू वो का वो ही।
सत चित आनंद रूप, राम जी साँचा सो ही।।
साँचा सो ही राम जी खुद की कर पहिचान।
सबका, सब में, सर्व समय, है हाजिर सर्व स्थान।।
हाजिर सर्व स्थान, कौन फिर ढूँढे किसको।
''सुखदेवा'' है ''आप'', ढूँढने जावे जिसको।। 9।।

साक्षी चेतन आत्मा तेरे सम नहीं ओर।
ज्ञान बिना भटकत फिरे, वस्तु ठोड की ठोड।।
वस्तु ठोड की ठोड, सदा है ज्यों की त्यों हीं।
व्यापक है नित प्राप्त गुरु बिन जाने क्यों ही।।
करले ब्रह्म विचार, होय जब भ्रम का छेदन।
''सुखदेवा'' सुखरूप 'आप' है साक्षी चेतन।। 10।।

निंदक मित्र

निंदक मेरा सिर धणी, करे सदा उपकार।
निंदा सुन-सुन होत है, मन में हर्ष अपार।।
मन में हर्ष अपार, निवारे दुर्मति दुर्गुण।
जले ईर्ष्या आग निखारे, मेरे सद्‌गुण।
सद्‌गुण ज्ञान निखारदे, खुद डूबे भवधार।
''सुखदेवा'' मम मित्र को, वन्दन बारम्बार।। 11।।

''साधक''

साधक तेरी साधना साध्य से बहु दूर।
साधन सबल लेकर चलें तो पहुँचे अंत जरूर।।
पहुँचे अन्त जरूर त्याग दे आलस निन्द्रा।
मेहनत कर भरपूर भगा प्रमाद रू तन्द्रा।।
स्पर्श, रुप, रस, गंध, शब्द विषय है बाधक।
''सुखदेवा'' ले ज्ञान जाग रे अब तो साधक ।। 12।।

कामी

कामी, क्रोधी रे मना, छोड़ कपट, छल, मान।
वशीभूत मोह, लोभ के, करता गर्व गुमान।।
करता गर्व गुमान, मान इक दिन रोयेगा।
पायेगा फल वही, बीज जैसा बोयेगा।।
शकुनी, रावण कंस, दुर्योधन जैसे नामी।
''सुखदेवा'' ले ज्ञान सुधरता क्यों नहीं कामी।। 13।।

मना[1]-मन

''मूर्ख के साथ बर्ताव''

मूर्ख सूं हामी भली, या फिर साधो मौन।
दादुर करें टर्राट, कोकिला अब ते पूछत कौन।।
अब ते पूछत कौन, हीरा तो जोहरी परखे।
गैला[1] पीसण जाय, गले जा बांधे खर के।।
जन मन माँचे राड़, छोड़ते ऐसी सूरख[2]।
''सुखदेवा'' निज ज्ञान, सुण्या, दुःख पावे मूरख।। 14।।

गैला[1]-मूर्ख, सूरख[2]- अपपर्चा

आज पधारे संत

संत पधारे गांव में, खबर पड़ी मोहे आन।
रोम-रोम पुलकित भये, तृप्त भये मोहे कान।।
तृप्त भये मोहे कान, नैन किम चैन उपावे।
छोड़ जगत के काज, पाद निज पथ को धावे।।
दर्शन कर प्रसन्न भये, दिल में खुशी अनन्त।
''सुखदेवा'' सुख देन को, आज पधारे सन्त।। 15।।

किम होसी भव पार

पूँछ मगर की पकड़ कोई, किम होवे भव पार।
संकट विकट है सामने, गाज रहे मुँह फार।।
गाज रहे मुँह फार, आय अब कौन बचावे।
पंच विषयों को टार, राह सब संत बतावे।।
करले ब्रह्म विचार नर, होय अधम से ऊँच।
''सुखदेवा'' यदि हो संशय, तो गुरु संतों से पूछ।। 16।।

''सत्संग की महिमा''

संतसंगत में बैठ ऐंठ, मत राखो मन में।
कपट, ईर्ष्या छोड़, जोड़ चित्त राम भजन में।।
राम भजन चित जोड़, ज्ञान कछु सुणो सुणावो।
सद्गुरु के दरबार आय निज फर्ज निभावो।
कहे दास ''सुखदेव'', महा बुरो है कूसंग।
जन्म-जन्म की पीड़, मिटावे पल में सत्संग।। 17।।

''दुर्जनों पर दया दिखाना व्यर्थ''

हंस देखिके मूषिका, घिरी अनल के बीच।
बिठा पीठ पर उड़ चला, पंख कुतरिया नीच।।
पंख कुतरिया नीच, हंस अब मन में चौंका।।
दुर्जन ऊपर दया दिखा कर खा गया धोखा।
हिरणाकुश, दुर्योधन, रावण, समरासुर और कंस।
''सुखदेवा'' दुर्नीति नरों से, सावधान रह हंस ।। 18।।

''क्रोध में निर्णय विनाश का कारण''

क्रोध में पागल मेंढ़का, गया निकट के ताल।
बोला काले नाग जी, चलो बताऊँ माल।।
चलो बताऊँ माल, टाल तुम मेरी करना।
मेरे बन्धु अनेक, खाय नित पेट हि भरना।
सब दादुर खा सर्प ने, मारा दुष्ट अबोध।
''सुखदेवा''मत निर्णय लो, जब आया हो क्रोध।। 19।।

''ब्रह्मचर्य''

तन सब साधन मूल है, ईश्वर का प्रसाद।
वीर्य नाश करके हुए, बहुत लोग बर्बाद।।
बहुत लोग बर्बाद, नपुंसक हुये दुःखारी।
कुसंग में लग रहे, दवा क्या करे बिचारी।।
ब्रह्मचर्य तप के बिना डूबा जाय वतन।
संयम धार सँवार ले, यह अनमोल रतन।। 20।।

गिद्ध कच्छप से बोला

बोला कच्छप गिद्ध से, गगन उड़ूँ मैं आज।
पंख बिना नहीं उड़ सके, बोले गिद्ध महाराज।।
बोल गिद्ध महाराज, चलो क्षमता अनुसारा।
कच्छप मानी न एक, गया बेमौत ही मारा।।
क्षमता के प्रतिकूल, अपेक्षा में मन डोला।
दुःख पावे ''सुखदेव'', गिद्ध कच्छप से बोला।। 21।।

गुरु शब्दां रा तीर

जिसके घट आकर लगा, गुरु शब्दां रा तीर।
मैं, ममता, तज कामना, हो गया मस्त फकीर।।
हो गया मस्त फकीर, फिक्र नहीं संशय कोई।
चिज्जड़ ग्रन्थि मेट, अभय पद आतम जोई।
सेवक है ''सुखदेव'', खड़ा यम सन्मुख सिसके।
गुरु शब्दां रा तीर आय घट लागा जिसके।। 22।।

ज्ञानी की दशा

ज्ञानी जन संसार में, ज्यों पीपर का पात।
टूट गिरा जब धरण पर, कहीं आवत नहीं जात।।
कहीं आवत नहीं जात, हवा संग भासे क्रिया।
त्यों प्रारब्ध के वेग धीर नर इत उत फिरिया।।
प्रेमी से ''सुखदेव'' नही कुछ राखे छानी।
परमारथ में रत्त रहे नित आतम ज्ञानी ।। 23।।

''सच्चे ज्ञानी''

अपने अनुभव ज्ञान में, हरदम रहते मस्त।
निष्कामी निर्लिप्त हो जग सेवा में व्यस्त।।
जग सेवा में व्यस्त हो, ना कछु वाद विवाद।।
भक्त मुमुक्षु संग में, बैठ करे संवाद,
आत्म बोध कराय, मिटा दे सब जग सपने।
''सुखदेवा'' समभाव रखे, नित दिल में अपने।। 24।।

सामान्य और विशेष ज्ञान

स्वसंवैद्य नित ज्ञान है, करण जन्य है विशेष।
अन्तः, बाह्य करण से, भेद दिखे सब देश।।
भेद दिखे सब देश, पाय सत्ता आतम से।
ज्ञान स्वरूप अभेद एक रस परमातम से।।
पाय परम सुख, दुःख कहाँ, आप अछेद्य अभेद्य।
''सुखदेवा'' दो ज्ञान, ''करण जन्य'' स्वसंवैद्य।।25।।

आँखे

आँखो उतरे खून, आँख में चर्बी छावे।
आँखों से गिर जाय, अँगूठा, आँख दिखावे।।
आँख दिखावे और को, कहाँ मूढ़ के आँख।
मन की आँखे खोलकर, आँख-आँख में झाँक।।
आँख-आँख में झाँक, प्रेम नित प्रभू से राखो।
''सुखदेवा'' भगवान बिठाले अपनी आँखो।। 26।।

''जीवन मुक्त''

ब्रह्म, आत्मा, जगत में भेद न जाने कोय।।
रमण करे निज रूप में, जीवन मुक्त है सोय।
जीवन मुक्त है सोय, तनिक नहीं है ''मैं'' ममता।
ऊँच नीच नहीं शेष, रहे दिल में, नित समता।।
पंच भेद जिनके नहीं कर्त्ता, क्रिया न कर्म।
द्वैत नहीं ''सुखदेव'' है एक निरंजन ब्रह्म ।। 27।।

भीड़ कभी मिलती नहीं

भीड़ कभी मिलती नहीं, जहाँ हीरों की हाट।
बिरले नर पहुँचे सदा, ब्रह्मज्ञान के घाट।।
ब्रह्मज्ञान के घाट, दिखे नहीं विषय पिपासु।
सेवारत गुरु भक्त, टिके कोई ज्ञान जिज्ञासु।।
''सुखदेवा'' कर ज्ञान, मुक्त हो निर्भय फिरले।
जहाँ हीरों की हाट, वहाँ नर पहुँचे बिरले।। 28।।

तुलसी (कुण्डलिया छन्द)

तुलसी तुलजा याद कर, तुलजा ज्ञान तुला।
तुलसी सम निज रूप को, तुलसी मते भुला।
तुलसी मते भुला, नींद से चेतो भाई।
कर लक्ष्य संधान, वीर मत चूको राई।।
पुरूषारथ कर डपट, कपट मुक्ति का खुलसी।
''सुखदेवा'' वनराज श्वान से कैसे तुलसी।। 29।।

अमल, तंबाकू, छूंतरा

अमल, तंबाकू, छूंतरा, दारू, भांग पी चाय।
काया रामसी सोवणी, आछी लगाई लाय।।
आछी लगाई लाय, कई तो लुख-लुख पीवे।
जीव घणों दुख पाय, पियां बिन कैसे जीवे।।
माल, माजणों, आबरू, बिगड़्या जाय संभल।
भलो होय ''सुखदेव'' मिनख, जो कोई करै अमल।।30।।

हंस नहीं ये काग है

हंस नहीं ये काग है, जे तेरे मन भाय।
सुल्फा, चिलम पिलावणे, अपने घर ले जाय।।
अपने घर ले जाय, पिलाओ खुद भी पिवो।
टो-क सो मर जाए, मंडली जुग-जुग जिवो।
भला लजाया भेष ने सकल बिगाड़त वंश।
''सुखदेवा'' कौवे असल, चले चाल ज्यों हंस।।31।।

षष्ठ प्रमाण

प्रमा ज्ञान के करण को, बुधजन कहे प्रमाण ।
प्रत्यक्षहु, अनुमान, शब्द, अर्थापत्ति, उपमान ।।
अर्थापत्ति, उपमान, अनुपलब्धि पिछानो ।
है जो षष्ठ प्रकार गुरु के मुख से जानो ।।
हर ''सुखदेव'' अज्ञान बंध भव हरण को ।
लख जन षष्ठ प्रमाण ज्ञान के करण को ।।32।।

ज्ञान और ध्यान

ज्ञान ध्यान बहु अंतरा, समझिहु चतुर सुजान ।
प्रमेय, प्रमाण संयोग से, होय वस्तु का ज्ञान ।।
होय वस्तु का ज्ञान, ध्यान में विधि इच्छा विश्वास।
पुनि हठ करहि कनिष्ठ नर, अहंग्रह ध्यान विलास ।।
सोहम् ब्रह्म,ब्रह्म सोहम ही, लय चिंतन कर जान ।
भेद खेद ''सुखदेव'' मिटहि, प्रगटहि अद्वय ज्ञान ।।33।।

श्री दादूदयाल के गुरुदेव श्री वृद्ध भगवान

अरिल छन्द

(1)

ईश्वर के भी ईश गुरु भगवान रे।
जीवन मुक्ति मिले होय निज ज्ञान रे।।
सद्गुरु भक्ति, सेवा करले ध्यान रे।
परि हां सच है सुखदेव,
सत्संग किये से सहज होय कल्याण रे।।

(2)

सद्गुरु है भगवान, नहीं कुछ फरक रे।
गुरु भक्ति दिल धार, करे मत तरक रे।।
जीवन बेड़ो डू-ब दिन-दिन गरक रे।
परि हां सच है सुखदेव,
ज्ञान किये बिन प्राणी पड़सी नरक रे।।

(3)

चौरासी को चक्र फिरे, ज्यूं भूँण रे।
राम दया सू मिलगी मिनख्या जूँण रे।।
अब तो भज भगवान लेय मत सूँण रे।
परि हां सच है सुखदेव,
राम बिना फिर थारो धणी है कूँण रे।।

(4)

दौलत, देह अरु धाम एक दिन छूटसी।
सकल कुटुंब परिवार एक दिन रूठसी।।
पुत्र,मित्र,मिल यार खाजानो लूटसी
परि हां सच है सुखदेव,
हरि भक्ति बिन, काळ चामड़ी कूटसी।।

(5)

भला मिनख भज राम अ दिनड़ा जावता।
जावोला इक रोज, गड़िन्दा खावता।
सेवा करज्यो, रीज्यो हरि गुण गावता।
परि हां सच है सुखदेव,
औसर बीत्यो जाय फेर नहीं आवता।।

(6)

साँचा मन सू लियो न हरि को नाम रे।
भूल गया है कोल नमक हराम रे।।
राम भजन करि नित्य सुबह अरु शाम रे।
परि हां सच है सुखदेव,
राम भज्याँ बिन मिले न सुख को धाम रे।।

(7)

सुख चाहवे तो राँख राम सू प्रीत रे।
आडी उबी पटक भरम री भीत रे।
सद्गुरु चरणां गाय खुशी के गीत रे।।
परि हां सच है सुखदेव,
राम कृपा सू जाय जमारो जीत रे।।

(8)

खाल शेरकी ओढ़ फि-र है गीदड़ा।
ढोंगी स्वारथ हेत गाय है गीतड़ा।।
दिल में थोड़ी है नहीं प्रभू सू प्रीतड़ा।
परि हां सच है सुखदेव,
अनर्थ किये तेरी टाट पड़ेंगें लीतड़ा।।

(9)

नारी संग लिपटाय, चाटतो चाम रे।
भैळो करियो यार, बहुत धन धाम रे।।
आयो हो कांई काम, क-र कांई काम रे।
परि हां सच है सुखदेव,
हरि भक्ति, बिन ज्ञान कहाँ विश्राम रे।।

(10)

आँधो हो मत यार, देख कर चाल रे।
मोह माया को पड़्यो पगां में जाळ रे।।
पाणी आया पेली बांध ले पाळ रे।
परि हां सच है सुखदेव,
राम भजन करि दूरि भगे यम काळ रे।।

(11)

माथे माळे देख गरजतो काळ रे।
जाणे कद खा जाय होश संभाळ रे।।
भजन किये ते जीवन होय निहाल रे।
परि हां सच है सुखदेव,
राम भजन बिन जमड़ा खींचे खाल रे।।

(12)

भल मिनखां रा देख अणूंता ठाठ रे।
दारु पीकर हुया बावली टाट रे।।
माल माजणो खोय पकड़ली खाट रे।
परि हां सच है सुखदेव,
जाणे कद चल जाय मौत के घाट रे।।

(13)

ब्रह्मवेता की शरण जाय कर पेख रे।
उजियारा है एक, दीया अनेक रे।।
खोल हिया की आँख जरा सो देख रे।
परि हां सच है सुखदेव,
दुनियां में है राम सभी में एक रे।।

(14)

मानव योनि पायहु लावा लीजिए।
सेवा, सुकृत धार रामरस पीजिए।।
मिले तो सद्गुरु शरण चरण चित् दीजिए।
परि हां सच है सुखदेव,
यह अवसर चलि जाय, फेर कब कीजिए।।

(15)

अर्जन, संग्रह, लोभ सभी हिय वरतु है।
चिंता, भोग रु क्रोध संत भी करतु है।।
इक स्वारथ, परमार्थ भाव इक गरतु है।
परि हां सच है सुखदेव,
संत सर्व हित काट शीश भी धरतु है।।

(16)

प्रेम, समय, सम्मान, सबन को दीजिए।
धन,खुशियां करि दान, रु खुशियां लीजिए।।
हरि भगति, करि ज्ञान प्रेम रस पीजिये।
परि हां सच है सुखदेव,
यह अवसर चलि जाय फेर कब कीजिए।।

(17)

जग से ममता राख, अज्ञ जन रोय है।
मरे जीवतां नहीं चैन से सोय हैं।
कूसंगत में जाय आबरू खोय है।
परि हां सच है सुखदेव,
ज्ञानी मरतो हंसे, दुःखी नहीं होय है।।

(18)

भलो नहीं वो मिनख, साथ दे झूठ का।
जननी लाजै दाम गवाया सूँठ का।।
कहो करूं क्या राम, ई गाजी ऊँट का।
परि हां सच है सुखदेव,
ऐ तो है परिणाम मद्य[1] की घूँट का।।

शराब[1]

(19)

भलो शख्स महाशूर, सांच के पक्ष में।
प्राण जाय तो जाय ध्यान दे लक्ष में।।
होश जोश रखि लड़ै, अधार्म विपक्ष में।
परि हां सच है सुखदेव,
पाछा पग नहीं देय, टिका रहे कक्ष में।।

(20)

मानव तन को पाय न वक्त गमाइये।
सेवा, सुकृत, राम भक्ति उर लाइए।
मधुर वचन सत बोल, सुयश कमाइये।
परि हां सच है सुखदेव,
बिन आतम के ज्ञान,मोक्ष नहीं पाइये।।

दोहावली

गुरु वन्दना

हे दाता ! मैं आपका, आप मेरे गुरुदेव।
चरण शरण हरदम रखो, अरज करे ''सुखदेव''।। 1।।

कामी, क्रोधी, लालची, मोह, मद से भरपूर।
''सुखदेवा'' अधमी महा, हाजिर आज हुजूर।। 2।।

सद्गुरु सबकुछ आपका, क्या करहूँ तव भैंट।
दीन दशा ''सुखदेव'' की, गया चरण में लेट ।। 3।।

मम् हित मम् गुरुदेव का, देख दया का भाव।
क्या अरपूँ ''सुखदेव'' मैं, गिरा गुरु के पाँव।। 4।।

मन शरणे रह राम के, तो करियहु किम काल।
यम काँपे जिहि नाम से, मुक्ति मिले तत्काल।। 5।।

मनवा शरणा राम का, टाले यम की चोट।
साँचे राचे राम जी, मत राखे उर खोट।। 6।।

लीना शरणा राम का, किम करियहु यमराज।
राम समारे रैन दिन, राम सुधारे काज।। 7।।

अन्धा दादुर ताल में, बिन आश्रय दुःख पाय।
''सुखदेवा'' त्यूं मैं दुःखी, सद्गुरु करिये सहाय।। 8।।

नयन बहे नद नीर ज्यूं, नयनी नम भई नाथ।
नरकों से नरसिंह बिन, नर को कोन बचात।। 9।।

नर तन नरपति तारिये, नयनागर नरपाल।
नर को नरसिंह पालिये, परूँ न नरकों नाल।। 10।।

गुरु-शिष्य

गुरु बिन जीवन शुरु नहीं, गुरु बिन ज्ञान न पाय।
ज्ञान बिना तम ना मिटे, करियहु बहुत उपाय।। 11।।

सद्‌गुरु शरणे होय के, जान लेय निज रूप।
''सुखदेवा'' बन्धन कटे, तुरत बने जग भूप।। 12।।

ज्ञान, गुरु, दुर्लभ नहीं, नहीं दुर्लभ भगवान।
जिज्ञासु, शिष भक्त ही, जग में दुर्लभ जान।। 13।।

सद्‌गुरु बन्धन जीव का, देकर ज्ञान छुड़ाय।
''सुखदेवा'' बाँधे नहीं, जो बाँधे गुरु नाय।। 14।।

गुरु मति मानव में करें, गुरु में नर मति होय।
है अपराधी विश्व में, ''सुखदेवा'' नर सोय।। 15।।

सद्‌गुरु गुरु बनावते, चेले नहीं बनाय।
''सुखदेवा'' चेला करें, चेला दास हो जाय।। 16।।

जो जग से कुछ माँगिया, वो सद्‌गुरु किम होय।
श्रेष्ठ बनावे आप से, ''सुखदेवा'' गुरु सोय।। 17।।

जो दुनियाँ का गुरु बने, वो बनिया जग दास।
खुद का खुद जो गुरु बनें, जगद्‌गुरु वो खास।। 18।।

जग रूठे वैराग हो, गुरु रूठे हो हान।
सत्‌गुरु राजी राखियों, दूर कहाँ भगवान।। 19।।

नश्वर तन में राग त्यूं, करि गुरू पद अनुराग।
''सुखदेवा'' सुख हो अति, हो भवबन्ध का त्याग।। 20।।

शरणागति गुरु-राम की, बंधन देत छुड़ाय।
ब्रह्म स्वरूप समाय नर, बहुरि जन्म नहीं पाय।।21।।

बहता जगत बिसार करि, रहता हरि उर धारि।
सुख संपति सहजै मिलै, करि सद्गुरु से प्यार।।22।।

सद्गुरु निज व्यक्तित्व में, सत अस्तित्व बताय।
स्वारथ से परमार्थ में, जीवन दिया लगाय।।23।।

निंदा नहीं निदान करै, सद्गुरु-वैद विख्यात।
इक मेटहि भव रोग को, इक देह रोग नशात।।24।।

भूखे को भोजन मिले, अरु प्यासे को नीर।
साधक को सदगुरु मिले, तभी धरे मन धीर।।25।।

व्यापे शिशु तन व्याधि तब, मातु दवाई लेव।
त्यों शरणागत शिष्य की, लाज रखो गुरुदेव।।26।।

ब्रह्मवित् ब्रह्म स्वरूप है, निश दिन ब्रह्म विचार।
शरण गहे ''सुखदेव'' जिहि, सहजहि करत उद्धार।।27।।

अपने लीये ही नही, गुरु अपने है राम।
परमारथ हित अवतरै, सर्व सुधारे काम।।28।।

मेरे लीए ही नहीं, गुरु मेरे चित्त लाय।
भक्ति भाव, सेवा करहि, सहज मोक्ष पद पाय।।29।।

सबके है तो है मेरे, ब्रह्म रूप गुरुदेव।
भाव समर्पण राखिए, परम प्रेम से सेव।।30।।

व्यापक ब्रह्म घट में बसै, गुरमुख करे दीदार।
द्वन्द्व, फंद, भवबंध से, सहज होय उद्धार।।31।।

भक्ति, प्रेम, ब्रह्मज्ञान दे, सद्गुरु दीनदयाल।
संशय सकल निवारकर, पल में करे निहाल।।32।।

जलनिधि गुरुवर जल बिना, जल-जल नर मर जाय।
जलधर जल-जल डारिये, जल बिन जग जल जाय।। 33।।

माँ

माँ डाटे या प्यार दे, दोनों में सद्भाव।
दे सुत के हित जिन्दगी, सदा भला ही चाव ।। 34।।

मारे मारिन दे नहीं, अद्भुत माँ का प्यार।
अभिमानी मत भूलियो, माँ का यह उपकार।। 35।

लगन की महत्ता

दृढ़ इच्छा, दृढ़ साधना, दृढ़ भक्ति, दृढ़ ज्ञान।
''सुखदेवा'' दृढ़ता रखें, हो निश्चित कल्याण।। 36।।

लगन लगा निज लक्ष्य से, करो निरंतर काम।
साधन राख सँभाल कर, फिर कहाँ दूर मुकाम।। 37।।

लगन लगाले लक्ष्य से, करो न पथ विश्राम।
''सुखदेवा'' कर साधना, पहुँचेगा निज धाम।।38।।

सत्संग

सत्संगत सुख देत है, कुसंग दुःख दे रोज।
कुसंग तज सत्संगत कर, ''सुखदेवा'' हो मौज।। 39।।

सद्गुरु शरणे होय के, सतसंग कर दिन रैन।
''सुखदेवा'' सब दुःख मिटे, सदा रहे दिल चैन।। 40।।

आतम रूप पिछान कर, रह परमातम संग।
''सुखदेवा'' पुनि संत संग, कहत ताय सतसंग।। 41।।

कुछ कीने बिन हो पतन, हे मन त्याग कुसंग।
उन्नति हो बिन कुछ किये, नित्य करो सतसंग।। 42।।

नाचे गावे रैन दिन, दुर्व्यसनी पी भंग।
''सुखदेवा'' मत जानिये, ज्ञान बिना सतसंग।।43।।

नाचे गावे रैन दिन, भाव, प्रेम का रंग।
''सुखदेवा'' सत जानिये, संत जहाँ सतसंग।।44।।

जग तन से अपनापना, यही कुसंगत जान।
गुरु, हरि से अपनापना, सतसंगत पहिचान।।45।।

सतसंग से नहीं लाभ है, हानि न होत कुसंग।
जब दिल से स्वीकारिये, चढ़े उसी का रंग।।46।।

सतसंग में आनन्द है, जे करिये दिल धार।
कुसंग दुःख तब देत है, ले घट में स्वीकार।।47।।

मन ममता तज कामना, नित्य करो सत्संग।
मुक्त होय तत्काल हि, हो सुखादेव असंग।।48।।

सर्व देश सब काल में, राम ही राम विचार।
राम हि राम विचारते, सहज होय उद्धार।।49।।

संत चरणरज भाव से, राखहु शीश लगाय।
जिनकी सतसंगत किये, जीव परमपद पाय।।50।।

संतन की सेवा करत, हृदय भरत आनंद।
पग-पग निज करतल धरत, हरत सकल भवबंध।।51।।

राम द्वारे आय करि, राखा राम से हेत।
सतसंगत हरी भजन कर, जगत कथा तजि देत।।52।।

नाम जप

अभ्यास नहीं है नाम जप, यह तो करुण पुकार।
प्रेम भाव से जाप कर, जोड़ इष्ट से तार।।53।।

नाम जपत नामी मिले, कर अजपा का जाप।
''सुखदेवा'' प्रभु पाइये, मिटे सकल संताप।।54।।

उसका संगी कौन है, जो चलता जग ओर।
जे चलिये हरि ओर तो, हो जग का सिर मौर।।55।।

लघुता से लघु हो रहे, प्रभुता से प्रभु रुप।
''सुखदेवा'' जिहि भावना, तैसो ताहि स्वरुप।।56।।

आन आसरो छाँडिकर, जपो निरंजन देव।
निश्चित इक दिन आय मिले, सुख सागर ''सुखदेव''।।57।।

जग माया का खेल है, था नहीं, है नहीं, होय।
सर्व देश सबकाल में, राम निरंजन जोय।।58।।

रे मन होकर राम का, करिये दृढ़ विश्वास।
आन आसरो छाँडि कर, सुमिरन श्वासो श्वांस।।59।।

सत्ता महत्ता राम की, कर दिल में स्वीकार।
प्रीत पीया संग जोड़िकर, सुमिरो बारम्बार।।60।।

मानव तन का लक्ष्य

मानव तन का लक्ष्य है, करले खुद का ज्ञान।
''सुखदेवा'' ''मैं'' कौन? जग, परमातम पहिचान।।61।।

भोग नहीं लग योग में, परहित नर तन जान।
''सुखदेवा'' सद्‌गुरु शरण, पा लेना भगवान।।62।।

जप, तप, तीरथ, संत संग, किया न पर उपकार।
''सुखदेवा'' उस मनुज को, बार-बार धिक्कार।।63।।
राम उसे कैसे मिले, जो चाहवे आराम।
''सुखदेवा'' आराम दो, तो मिल जावे राम।।64।।
तन से नित सेवा करो, मन से भज भगवान।
सतसंग करि सुख पाइये, मिटे सकल दुःख खान।।65।।
बार बार मिल जायसी धन दौलत परिवार।
नर तन, सेवा, बदंगी, मिले न बारम्बार।।66।।
भलो बुरो सोचे नहीं, उदर भरण होशियार।
पापी प्रलय जायगा, कहि ''सुखदेव'' विचार।।67।।
गांजा भांग अफीम पी, बीड़ी, चिलम लगाय।
ऐसे नर के दर्श से, पाप लगे, पत जाय।।68।।
जर्दा खा थू - थू करें, सिगरेटें सिलगाय।
राम विमुख फूहड़ा बके, इनसे राम बचाय।।69।।
परहित रत नित रहत है, श्रैष्ठ पुरुष वही जान।
दुःख सह कर सुख देत है, समता भाव प्रधान।।70।।

सच्चा एकान्त

तन, इन्द्रिय, मन बुद्धि से, रखे न तनिक सम्बन्ध।
''सुखदेवा'' एकान्त यह, मिलियहु परमानन्द।।71।।

जग अंशी तन से रहे, ''मैं'' ''मेरापन'' दूर।
ऐसे सत एकान्त में, मौज मिले भरपूर।।72।।

प्रेम

भेद जहाँ–तहाँ प्रेम ना, प्रेम जहाँ नहीं भेद।
''सुखदेवा'' जहाँ प्रेम है, मिटे सकल दुःख खेद।।73।।
गुरु, हरि में अपनापना, प्रेम उसे ही जान।
जग इच्छा मोह जानिये, ''सुखदेवा'' कर ज्ञान।।74।।
जे जग को तूं जानिले, तो घट होत वैराग।
''सुखदेवा'' हरि जानिये, प्रेम अनन्त हु जाग।।75।।
ना वश यग, तप, दान के, ना वश ज्ञान, वैराग।
भक्त भक्ति वश राम है, जिहि घट दृढ़ अनुराग।।76।।
जग तन रत चित मोह है, हरि, गुरु रत यहु प्रेम।
दुख दे इक आनंद दे, ले चाहियेहु तिहि नेम।।77।।
अंसुवन में पानी दृशत, कोइक देखत प्रेम।
कोइक सहज सरल रमै, कोइक देखत नेम ।।78।।
अभिलाषा, चिंता, स्मरण, गुण गायन, उद्वेग।
उन्माद, व्याधि, जड़ता, रुदन, सकल प्रेम में देख।।79।।
कर्म, क्रिया, जग वस्तु से, मिले नहीं भगवान।
प्रेम, भरोसो, भाव से, निज उर प्रकटे आन।।80।।

समय

धन पावे जग में पुनः, गया समय नहीं आय।
''सुखदेवा'' उपयोग करि, पल भर व्यर्थ न जाय।।81।।
सुख दुःख हानि लाभ हो, रैन कभी परभात।
क्या हँसना क्या रोवना, समय समय की बात।।82।।
समय नष्ट नर जो करे, अन्त समय पछिताय।
सद् उपयोगी विश्व में, ''सुखदेवा'' सुख पाय।।83।।
कर लेंगे निश्चित नहीं, मर लेंगे तय जान।
ये ही बात विचार करि, कर सुकृत निज ज्ञान।।84।।

अभिमान

जिज्ञासुन को जगत में, मुक्त करे ब्रह्म ज्ञान।
''सुखदेवा'' नरकों परे, जिन किन्हा अभिमान।।85।।
जेहि घट बसते रैन दिन, स्वारथ अरु अभिमान।
''सुखदेवा'' उस जीव का, कैसे हो कल्याण।।86।।
देख बुराई और में, जे मन होय प्रसन्न।
है अभिमानी विश्व में, ''सुखदेवा'' सोई जन ।।87।।
करत जेहि देह चर्म में, अभिमान अहंकार ।
''सुखदेवा'' सोइ जानिये, जग में असली चमार ।।88।।
दुर्लभ नर तन पायके, फिरत करत अभिमान ।
है पापी ''सुखदेव'' वह , गऊ वध कोटि समान ।।89।।
अभिमानी निज स्वार्थरत, ताहि कहे कोई साध।
जिन मुख देखत दुःख हो, लागत बहु अपराध।।90।।
जो चाहे सम्मान को, उलट मिले अपमान।
मान-अमान से ऊभरे, सो ही सुखी इंसान।।91।।

अहंता (मैं पना)

अहंकार से उपजिया, स्वारथ अरु अभिमान।
''सुखदेवा'' संसार में, यही कलह की खान।।92।।
''मैं'' बन्धन में, मुक्त मैं, मैं हूँ ब्रह्म समान।
''सुखदेवा'' ''मैं'' पन मिटे, मुक्ति यथारथ जान।।93।।
जीव जगत, परमात्मा, ये तीनों हैं एक।
''सुखदेवा'' इक ''अहं'' से, दर्शे एक, अनेंक।।94।।
स्व में तन, तन में स्वयं यहु ममता, अहंकार।
सत, चित, आनंद आप में ना कोई भेद विकार।।95।।
तन से मैं - मेरापना, देत है दुःख अनंत।
मैं आतम हरि आपुने, जान लहै सुख पंथ।।96।।

कामना

सुख चाहवे यह "कामना" दुःख देवे भरपूर।
सुख देवे निष्कामता, हो नित सुख में चूर।। 97।।
"सुखदेवा" सुखदेव वो, सुख सागर में वास।
निष्कामी, निर्लिप्त हो, सुख देवे बन दास।। 98।।
तू सुख सागर विश्व से, सुख चाहवे यह भूल।
"सुखदेवा" दुःख पाविया, दशा हुई प्रतिकूल।। 99।।
राम मिलन की कामना, शुद्ध वासना जान ।
भोगेच्छा "सुखदेव" तजि , महा अशुद्ध पिछान ।।100।।
स्वर्ग, लोक, देह वासना, करहि परहि मुख काल ।
आतम ब्रह्म विचारिये, होय मुक्त तत्काल ।। 101।।
जगत समुख प्रभु से विमुख, पाय सदा संताप।
जगत विमुख गुरू हरी समुख, परम सुखी हो आप।।102।।
जगत चाह चांडालिनी, शोक देत भरपूर।
कल्पित सुख उरिझाय करि, रखै राम से दूर।। 103।।
जगत चाह चांडालिनी, रखे राम से दूर।
कल्पित सुख उरझाय कर, दुखी करे भरपूर।। 104।।

चिन्ता

अनहोनी होती नहीं, होनी हो सो होय
फिर चिन्ता किस बात की, "सुखदेवा" मत रोय।। 105।।
नहीं करना वो करत है, करना करे न कोय।
"सुखदेवा" उस मनुज को, नित चिन्ता, भय होय।। 106।।
चिन्ता भय को छोड़कर, ब्रह्म चिन्तन करि सार।
"सुखदेवा" सुख रुप है, हरि हरदम तैयार।। 107।।
चिता एक चिन्ता भई, दोनों एक समान।
मुवे जरावे, जीवित जरे, छाँड़ि सुमिर भगवान।। 108।।

स्वरूप

परिवर्तन जग में बने, स्व में नहीं विकार।
तू आतम बदले नहीं, साधक देख विचार।। 109।।
बदले जो संसार है, तू बदले नहीं देख।
तू द्रष्टा चेतन, अचल, अविनाशी, सत एक।। 110।।
यह तन है संसार में, आतम हरि में जान।
तू व्यापक परब्रह्म है, ''सुखदेवा'' कर ज्ञान।। 111।।
क्रियाशील जग से जुड़े, ''स्व'' अनुभव नहीं होय।
''सुखदेवा'' अनुभव बिना, मुक्ति मिले नहीं तोय।। 112।।
परमातम संग योग है, जगत संग हो भोग।
भोग सकल दुख देत है, योग हरत भव रोग।।113।।
अहं नहीं निज रूप में, सत्य स्वरूप पिछान।
''मैं'' को तजि सत्ता रमो, पावो पद निर्वाण।। 114।।
सत्ता मात्र स्वरूप है, जगत मिले हो बन्ध।
सत्ता में स्थित रहो, पावो परमानन्द।। 115।।
''तू'' जग के आधीन ना, जग तेरे आधीन।
''तू'' तन बिन भी रह सके, तेरे बिन तन क्षीण।। 116।।
नयना, मन, मति, में सदा, याद रहे कम ज्याद।
''तू'' पकड़े जिस बात को, वो हरदम रहवे याद।। 117।।
अन्तः करण की शुद्धि से, जगत क्रिया शुद्ध होय।
तू ''आतम'' नित शुद्ध है, कहाँ अशुद्धता तोय।। 118।।
सुख सागर सुखरूप तूं, सर्व सुखों की खान।
''सुखदेवा'' ब्रह्म रूप है, मेटो सकल अज्ञान।।119।।
जग से परे स्वरूप की, जब मोहे पड़ी पिछान।
''सुखदेवा''सब दुःख मिटा, मिली मौज की खान।। 120।।

''सुखदेवा'' निज भूल से, बंधिया आपहि आप।
भया ओर से ओर ही, पायी रहा संताप।। 121।।
सिंहपना सिंह भूलिया, मृग भूला कस्तूर।
तू भूला निज रूप को, ढूँढ़त है बहु दूर।। 122।।
जगत विनाशी सुख कहाँ?, सुख सागर है आप।
''सुखदेवा'' सुखरूप तू, अविनाशी जग बाप।। 123।।
तू चेतन दृष्टा अचल, जगत दृश्य चल देख।
''सुखदेवा'' नित देख ले, देख-देख मत बहक।। 124।।
राग द्वेष से रहित हो, सदा प्रेम से देख।
दृष्टा को नित देखिये, देख जगत मत बहक।। 125।।
नित्य प्राप्त है जगतपति, जगत होय प्रतीत।
जगत प्राप्त नहीं व्हे सके, हरि हरदम निज मीत।।126।।
मैं कर्ता नहीं भोक्ता, द्वन्द्व रहित निर्लेप।
करम न क्रिया स्वरूप में, व्यापक सदा अलेप।।127।।
आतम राम समारिये, सबका साखी आप।
भेद, भरम, तम, जातहि, मिटे सकल संताप।।128।।
सत्य चिदानंद पूर्ण तू, दृष्टा साक्षी स्वरूप ।
अजर अमर सुखदेव है, व्यापक ब्रह्म अनूप ।।129।।
''मैं'' कर्ता ''मैं'' भोक्ता, कहत है मूढ अजान।
बुद्धि धर्म ''सुखदेव'' व्है, निज आतम में भान ।।130।।
स्वगत, सजाति, विजातीय, भेद रहित ब्रह्म एक ।
व्यापक सकल जहान में, ज्ञान दृष्टि से देख ।।131।।
मोह निद्रा के स्वप्न में, सत्य दृशत संसार।
जागत ब्रह्म स्वरूप है, भेद न भिन्न लिगार ।।132।।
सत्ता महत्ता जगत की, किया प्रेम भरपूर ।
राम लगे ''सुखदेव'' तब, भेद, भिन्न अरु दूर ।।133।।

धुआं धोर का व्योम से, है नहीं तनिक संबंध ।
त्यों नहीं आत्म स्वरूप में, पुण्य पाप अरु द्वन्द्व।।134।।
जगत असत निश्चय भया , कहत ताहि जग नाश।
शान्त अनादि स्वरूप से , हुआ न होय विनाश।।135।।

कर्त्तव्य

जग सेवा में तन लगा, स्वयं लगो जगदीश।
''सुखदेवा'' निर्भय रहो, टेकहु गुरु पद शीश।।136।।
कर्तव्य करता नहीं, माँगत है अधिकार।
''सुखदेवा'' उपजे कलह, देखा खूब विचार।।137।।
परहित कीने काम जो, वे सत कर्म कहाय।
करहि कर्म सुख आपने, असत कर्म कहलाय।।138।।
जगत कामना छोड़कर, कर्म करें दिन रैन।
''सुखदेवा'' निर्बन्ध हो, सदा रहे दिन चैन।।139।।
कुछ मेरा ना कुछ चहे, स्वहित करे न कार।
''सुखदेवा'' दिल धारिये, तीन बात है सार।। 140।।
कर्म त्याग मत कीजिये, सकल कामना छोड़।
''सुखदेवा'' नित सुख रहें, दुःख ठहरे किम ठौड़।। 141।।
सिर माथै रख राम ने, मर्यादा में रह।
बात ज्ञान की मानिये, बात ज्ञान की कह ।। 142।।

धन

रुपयों से नहीं सेठ हो, सेठ वही जो श्रैष्ठ।
पर उपकारी विश्व में, सकल नरों में ज्यैष्ठ।। 143।।
संचित धन जग में रहे, साथ चले निज भाव।
ताहि सुधार स्वभाव को, ''सुखदेवा'' सुख पाव।। 144।।
धन से वस्तु ज्येष्ठ है, वस्तुन से नर ज्येष्ठ।
नर से ज्येष्ठ विवेक है, परमातम अति श्रेष्ठ।। 145।।

भेष

और भेष धर क्या करें, सुन्दर नर तन भेष।
नाम चदरिया ओढ़कर, मस्त रहो सब देश।। 146।।
नाम धरे नामी मिले, भेष धरे किम होय।
भेष अनेकों धारिये, राम मिले नहीं तोय।। 147।।
जटा जूट मृग चाम धरि, बहुत बनावे भेष।
हरि भक्ति निज ज्ञान बिनु, मिले न मुक्ति प्रदेश।। 148।।
नंगा व्हे भस्मी रमा, बदल अनेकों रूप।
हरि भगति निज ज्ञान बिनु, जीव पड़े भव कूप।। 149।।

शिक्षा

अच्छा कहलाना नहीं, अच्छे नर का काम।
जो जग में अच्छा बने, होत है उसका नाम।। 150।।

शुभ देखे, अच्छा सुने, निर्मल चिन्तन आय।
''सुखदेवा'' अच्छा करे, वो अच्छा बन जाय।। 151।।

करियो तो सेवा करो, जे जानहु निज जान।
मानहु तो प्रभु मानियो, निश्चित हो कल्याण।। 152।।

लोक बड़ाई जब करें, साधक रहो सचेत।
जाणो ठग बचियो सदा, भूल करो मत हेत।। 153।।

वेद जगत गुरू राम से, भय राखे दिन रैन।
वो निर्भयपद पावही, लो सद्‌गुरु की सैन।। 154।।

भला बुरा जग कुछ कहे, ठीक रखो निज भाव।
आठ प्रहर चित् में खुशी, सुख-दुःख में सम भाव।। 155।।

हिन्दू धर्म का मर्म है, एक ही रूप अनेक।
एक अनेक में रम रहा, ज्ञान दृष्टि से देख।। 156।।

जे सुख चावहि पूत से, याद रखो इक बात।
सेवा कर नित प्रेम से, सुखी रखो पितु मात।। 157।।

निन्दा लागे जब बुरी, हृदय प्रशंसा चाह।
चाहने पर मिलती नहीं, ''सुखदेवा'' वाह-वाह।। 158।।

क्षण भर भी होता नहीं, तन के संग संयोग।
हरि तेरे संग में रहे, हुआ न होय वियोग।। 159।।

हरि भक्ति में मस्त रह, मत कर वाद-विवाद।
भक्त, मुमुक्षु भेंटते, बैठ करो संवाद।। 160।।

सुख दुःख है इक सिक्के के, पहलू दो पहिचान।
ज्ञान अगन में गालकर, हो सुख में गलतान।। 161।।

ज्ञानी जन सम दर्शिनः समवर्ती नहीं होय।
मृत्यु है समवर्तिनः ''सुखदेवा'' कही तोय।। 162।।

क्यों करि के दुःख देत है, राम रूप संसार।
राग द्वैष घट में बसे, तिनते कष्ट अपार।। 163।।

त्याग विषय रस बावरे, राम नाम रस पीव।
सरस, सरल जीवन बने, परम सुखी हो जीव।। 164।।

सिर दे सिरजन हार कूं, मत कर सोच विचार।
आन मिले तत्काल हि, सब जग सिरजन हार ।। 165।।

लाभालाभौ, जया जयो, सुख दुःख एक समान।
समता धरि करि कर्महि, कहहि कृष्ण भगवान।। 166।।

धन, तिरिया, सुत भोग घर, सुख कर माने जाय।
'सुखेदवा' दुःख रूप है, निश्चय कर समझाय।। 167।।

परम पियारे संत है, कष्ट हरे सुखदेत।
समदृष्टि शीतल रहे, राखे सबसे हेत।। 168।।

रे मन शुद्ध स्वभाव से, क्रिया कर्म शुद्ध होय।
'सुखदेवा' सम भाव बिन, चैन मिले नही तोय।। 169।।

विष सम विषयन को लखो, उपजे विमल विवेक ।
गुरु भक्ति सुखदेव घट, राम निरंजन पेख ।। 170।।

ज्ञानी विचरत जगत में, कर्म नहीं कोई शेष ।
निजानंद में बूडकर, मस्त रहे सब देश ।। 171।।

ब्राह्मण सोई जानिए, आतम ब्रह्म स्वरूप ।
परहित रत ''सुखदेव'' धरि, समता हृदय अनूप ।। 172।।

शिक्षा कल्प रु व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त रु छंद।
लख ''सुखदेव'' वेदांग षट, प्रकटहि ज्ञान सुगंध ।। 173।।

ज्ञानी रत निज ज्ञान में , सकल वासना त्याग ।
स्थित ब्रह्म स्वरूप में , जहं नहीं राग बैराग ।। 174।।

भूप सुयश जिहिं गावहि, कवि चारण अरु भाट ।
तिहि वरणत यश धीर का, चतुर्वेद मय थाट ।। 175।।

सुन प्रारब्ध के भोग में, दीखत एक समान ।
ज्ञानी भोगे धैर्य से, होय अधीर अज्ञान ।। 176।।

विधि निषेध नहीं तज्ञ के, नहीं पुण्य अरु पाप ।
जो सुख साक्षी स्वरूप नित, सोहं आपो आप ।। 177।।

ममता तज अविकार हो, काम तजहि हो सुख ।
होय असंग मुक्ति मिले, सुखदेव मिटहि भव दुःख।।178।।

यदि पदच्युत भी हो गये, पर पथ च्यूत न होय।
चलहि सुपथ 'सुखदेव' नित, मिलहि परम पद तोय।। 179।।

श्रम से मिटे दरिद्रता, धर्म किए ते पाप।
मौन धरैं ''सुखदेव'' सकल, मिटे कलह संताप।।180।।

परमारथ से पाइए, सकल प्रतिष्ठा मान।
स्वार्थ से ''सुखदेव'' व्हे, कदम-कदम पर हान।। 1181।।

अपने में अरु और में, दोष दृष्टि जब होय।
नहि अपना नहीं और का, भला न होवत कोय।।182।।

जगत ठगाई दोष है, ठगा जाय नहीं दोष।
छल कपट जिहि उर नहीं, पाय परम संतोष।।183।।

जिस ताली ताला जुड़े, उस ताली खुल जाय।
शब्दों यहु मन उरझिया, शब्द ही दे सुरझाय।।184।।

तत्व ज्ञान

सदा करण निरपेक्ष है, परमातम का ज्ञान।
मन, बुद्धि बिन आप से, अपने को पहिचान।।185।।

अपने में अरु और में, नहीं दोषों का भान।
''सुखदेवा'' वो मुक्त है, हुआ तत्व का ज्ञान।।186।।

जीव और परब्रह्म में, भेद दिखे यह भूल।
केवल ज्ञान अभाव से, भाव बना प्रतिकूल।।187।।

आँख, नाक, बंद कान करि, तू धरता नित ध्यान।
खुले नयन का ध्यान है, सब कुछ है भगवान।।188।।

बांबी पीटण हम लगे, नागिन फिर-फिर खाय।
माया आतम ज्ञान बिनु, क्यों करि मारी जाय।।189।।

ज्ञान उदय के हेतु है, सुनहुं कर्म शुभ ध्यान।
हुई न हो नही होवसी, मोक्ष किए बिनु ज्ञान।।190।।

द्वैत भाव भय होत है, निर्भय करहि अद्वैत।
द्वैताद्वैत पर तत्व हि, नित्य परम सुख देत।।191।।

ध्याता, ध्यान रु ध्येय का, किन्चित् रहवे ध्यान।
समप्रज्ञात समाधि है, ऐसा निश्चित जान।। 192।।

दृष्टा, दर्शन, दृश्य का, होत न किन्चित भान।
असमप्रज्ञात समाधि में, ''मैं'', ''तू'' का नहीं ध्यान।। 193।।

पद हर गुरुपद पाविया, पा हरि पद है मौज।
जिस पद में सब पद मिले, सो पद लीना खोज।। 195।।

सर्व पदों को छोड़कर, लीना हरिपद धार।
पद पद में निज पद बड़ो, औरन मैं नहीं सार।। 196।।

हर पद से हरि पद बड़ा, कुन्जर पद सम जान।
'सुखदेवा' हर पद मिले, हरि पद में पहिचान।। 197।।

पद-पद नाशे आश क्या, निज पद राख सँभाल।
चल-चल निश्चल पाविया, जीवन हुआ निहाल।। 198।।

होने में क्रिया रहे, करने में कर्ता संग।
'है' में क्रिया कर्त्ता नहीं, तत्व ही रहे असंग।। 199।।

गांव, नगर, परलोक में, नहीं मोक्ष का वास ।
मोक्ष मिले ''सुखदेव'' व्हे, चिद्‌जड़ ग्रंथि विनाश ।। 200।।

बहु विधि क्रिया, कर्म रत, करत मोक्ष की आस ।
सहज मुक्त ''सुखदेव'' व्हे, मिटहि सकल अध्यास ।। 201।।

परा अष्ट - अपरा पुनि, आप स्वयं भगवान ।
तत्व नहीं ''सुखदेव'' कोई, सकल जगत में आन।। 202।।

जीव ईश जग देखिये, ज्ञान दृष्टि से एक ।
चर्म दृष्टि ''सुखदेव'' लखि, भासत रूप अनेक ।। 203 ।।

सब जग लीला राम की, ब्रह्म वृत्ति से पेख ।
राम रूप संसार है, अंतर्वृत्ति से देख ।। 204 ।।

जगत पिपासा होत ही, सत्य दिखे संसार ।
ब्रह्म पिपासा से दृशत, ब्रह्म स्वरूप अपार ।। 205 ।।

जगत पिपासे जग दिखे, राम पिपासे राम ।
जगत छांडि सुख पाइये, राम चरण विश्राम ।। 206 ।।

तत त्वं पद लक्ष्यार्थ लख, भाग त्याग की सैन ।
भेदा भेद न द्वन्द्व कुछ, असि ब्रह्म पद हो चैन ।।207 ।।

निर्भय अद्वय भाव से, द्वैत भाव दुःख जान
भेद, खेद तब लगि रहे, जब लगि हृदय अज्ञान ।। 208 ।।

अक्षर ब्रह्म उपदान करण, जगत विवर्त पिछान।
परिणामी ना विकार है, सदा एक रस जान ।। 209 ।।

ब्रह्म सत्ता पारमार्थिक, प्रतिभासिक संसार ।
ब्रह्म सत्य त्रय काल में, मिथ्या जगत विचार ।। 210 ।।

ज्यों जल मांहि लहर है, प्रकट पुनः लय होय।
त्यों आतम में जगत है, समझ देख चित जोय।।211 ।।

जगत असत सत ब्रह्म है, लखै सच्चिदानंद।।
सर्व भरम, संशय मिटै, कटै काल का फंद।।212 ।।

नारी-नारी रूप है, नर बिन नारी अनारी।

नारी तू भजनाहरी, हरि बिन-नारी गँवारी।।213।।

भावार्थ :- हे नारी (सुबुद्धि) तू नाहरी (सिंहनी) अर्थात् ब्रह्म स्वरूपा है। हे नारी ! तू अपने घर (परमात्मा) से मिले बिना अनाड़ी है। अतः हे नारी अपने नाहरीत्व में ही अपने हरि को पहिचान ले। अन्यथा पति परमेश्वर से साक्षात्कार के बिना अज्ञानी ही कहलायेगी।

काम बिना नहीं काम का, काम बिना निष्काम।

काम बिगाड़े काम को, राम सुधारे काम ।। 214।।

भावार्थ :- सेवा कार्य किये बिना हे भाई ! तू किस अर्थ का है। सुख चाहने की कामना को त्याग कर निष्कामी बन कर लोक कल्याण हेतु कर्म कर। इस कामना (काम वासना) ने ही परमात्म प्राप्ति रूप महत्वपूर्ण कार्य को (लक्ष्य) बिगाड़ रखा है। हे भाई ! रमैया राम ही काम, कामना एवं काम वासना को सुधारने वाले है। अतः उसी का स्मरण एवं साक्षात्कार कर ।

सोना-सो ना ठीक है, सुर सोना नहीं भाय।

सो ना चौथे प्रहर में, सोना, सोना पाय।। 215।।

भावार्थ :- हे भाई ! रात्रि के चौथे प्रहर में सोना (नींद लेना) सो ठीक नहीं है। देव प्रकृति के लोगों का ब्रह्म मुहूर्त में सोना नहीं सुहाता। अतः तू सोवे मत, जाग उठ ! जीवन की सफलता के लिए ब्रह्म मुहुर्त में उत्तम साधना कर। ऐसा करने से तुझे सर्वांगीण उन्नति एवं आत्म धन ज्ञान रूपी स्वर्ण को प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होगा। किसी ने ठीक ही कहा है-

1. सुबह की बेरोक हवा। है सौ रोगों की दवा।

2. रात्री के चौथे प्रहर में, इक दौलत लुटती रहती है।

जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है वो खोवत है।।

उठ जाग ! मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।

पी ना मधु[1] मधुशाल[2] का, पीना मधु[3] मधुमास[4]।
पी मधु[5] मधुर[6] सुमन[7] मधुप[8], ज्यो मक्षित[9] मधु[10] पास।।216।।

शब्दार्थः- शराब[1], शराबखाना[2], अमी[3], बसंत ऋतु[4], मकरंद[5], मीठा[6], पुष्प[7], भँवरा[8], मुधमक्खी[9], शहद[10]

भावार्थ :- हे मधुप ! (भँवरे) अर्थात विषायासक्त मन् ! तू शराबखाने की शराब मत पी। क्योंकि पाँचों विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) विष के समान मृत्यु के ही कारण है ऐसा जानकर अनासक्त हो जा। हे मधुप (भँवरे) मधु मास (बसंत ऋतु) अर्थात् नर नारायणी देह काल में ही विविध पुष्पों अर्थात् संतजनों से मधु अर्थात् मकरंद (आत्मज्ञान) का ही संचय कर (ग्रहण कर) जो कि मधुरता (अमरता) अर्थात् मिठास युक्त है एवं अमरता प्रदान करने वाला है। जैसे मधुमक्खी (सात्विक वृत्ति) पुष्पों से (संतो से) अभी (आत्मज्ञान) संचय कर शहद (अमृत्व) प्राप्त करती है। वैसे ही तू भी कर क्योंकि तू तो उससे बड़ा है अतः मल की गोलियाँ बनाना रूप कर्म मत कर।

सागर[1] बिन सारंग[2] के, सारंग[3] बरसत जाय।
सारंग[4] वनमें डोलती, सारंग[5] सारंग[6] खाय।। 217।।

शब्दार्थ : स्त्री[1], दीपक[2], मेह[3], हरिण[4], मोर[5], सर्प[6]

भावार्थ : इस जग जंगल में सारंग (स्त्री) अर्थात् बुद्धि बिना सारंग (दीपक) अर्थात् ज्ञान प्रकाश से रहित होकर विचरण कर रही है। सारंग (मेह) अर्थात् त्रिताप की निरन्तर वर्षा से अत्यन्त संतप्त है। सारंग (हरिण) अर्थात् 'माया मृग' वन में (जगत में) विचरण करती हुई भ्रमित कर रही है। सारंग अर्थात् मोर सारंग अर्थात् सर्प को खा रहा है यानि हर देह धारी अपनी संतुष्टि, तृप्ति एवं सुख की कामना से दूसरे देहधारी का भक्षण कर रहा है। हे मुमुक्षा ! दुःख देने की कामना से दुःख एवं सुख देने की कामना से परम सुख प्राप्त होता है यह नियम है अतः माया से प्रतीत होने वाली विपरीत भावना व असंभावना रूपी अंधकार को आत्म ज्ञान का दीपक जलाकर दूर कर।

सन्मुख सारंग[1] देखकर, सारंग[2] सजल शरीर।

दैत्या सारंग[3] परसते, सारंग[4] भई अधीर।। 218।।

शब्दार्थ : सर्प[1], वस्त्र[2], दुष्टा (कुल्टा) स्त्री[3], नारी[4]

भवार्थ : सामने ही सारंग (भयानक सर्प) को देखकर सारंग (वस्त्र) एवं शरीर जल युक्त यानि पसीने से तर हो गये। दैत्या सारंग (कुलटा स्त्री) के स्पर्श से ही सारंग यानि नारी अधीर हो गई (विक्षिप्त हो गई)। अर्थात् चित्त वृत्ति रूपी नारी के संसार में विचरण करते समय सामने ही (सन्निकट) महाकाल (सर्प) यानि मृत्यु को देखकर वस्त्र एवं शरीर पसीना युक्त हो गये। एक और माया ठगनी रूप दैत्या स्त्री (जो मरे बाद भी पीछा नहीं छोड़ने वाली) को देख कर स्त्री स्वरूपा चित्तवृत्ति धैर्य खोकर अर्थात् किंकर्त्तव्य विमूढ होकर अशान्त हो गई।

घट पट[1] हर हरि पाईये, दृग पट[2] फटक हि खोल।

नेह पट[3] धर खटपट मिटे, खुले मुक्ति पट[4] पोल।।219।।

शब्दार्थ : हृदय में अज्ञान का पर्दा[1], आँख के फलक[2], प्रेम वस्त्र[3], मोक्ष धाम के किवाड़[4]

भावार्थ : हे चित्त वृत्ते ! अपने हृदय रूप घट से अज्ञान का पर्दा हर अर्थात दूर कर, तो तुझे निश्चित परमात्मा मिलेंगे। और शीघ्र ही ज्ञान चक्षु के फलक हटाकर निरन्तर हरि को निहार। मन प्रभु प्रेम का वस्त्र नित्य धारण कर जिससे मुक्तिधाम के किवाड़ हमेशा के लिए खुल जायेंगे। सब प्रकार की खटपट स्वतः ही समाप्त हो जायेगी एवं परमानन्द की प्राप्ति करके निर्भयता का वरण करेगी।

चौपाइयाँ

दोहा

पामर, विषयी, जिज्ञासु, मुक्त पुरुष ये चार।
वरनऊँ गुण ''सुखदेव'' मैं, सज्जन करो विचार।।

चार प्रकार के पुरुष

विषयासक्त, न ग्रन्थ का ज्ञाना। वो जग में नर पामर जाना।। 1।।
ग्रन्थानुकूल, पर लोक को भोगे। वो विषयी नर नारिहु होंगे।। 2।।
जो निज रूप पिछान को प्यासा। वो हि जिज्ञासु तजी जग आशा।।3।।
विषय विरक्त हु मुक्त सुजाना। जान स्वरूप हो ब्रह्म समाना।। 4।।

भेद

अन्य में अन्य का भाव धरावे। सोई विभिन्नता भेद कहावे।। 5।।
भेद के तीन प्रकार है जानो। सजाति, विजाति, स्वगत पहिचानो।।6।।
नर से नर का भेद सजाति। मानव से पशु भेद विजाति।। 7।।
अंग से अंग का भेद स्वगत हि। भेद असत्य, अभेद है सत्य ही।।8।।

दोहा

भेद रहित सत ब्रह्म में, भेद नहीं है पाँच।
दीखत है मिलते नहीं, सुखदेवा कर जाँच।।

(अभेद दर्शन) चौपाइयाँ

बिम्ब अरु प्रतिबिम्ब की न्याई। जीव रु ईश का भेद नशाई।। 9।।
घटाकाश अरु महाआकाशा। जीव से जीव का भेद विनाशा।। 10।।
स्वप्न पदार्थ कहाँ सत पावा। जीव रु जड़ का भेद विनाशा ।। 11।।
सीप में रूप रजू महि साँपा। त्यों जड़-ईश में भेद को भाँपा ।। 12।।
दण्ड, दरार, रजू, अहि भासे। जड़-जड़ का झट भेद विनाशे।। 13।।
कल्पित भेद दिखे जग नाना। सत्य की सत्ता से सत्य सा माना।। 14।।

ज्ञान समाधि चौपाइयाँ

नही नानात्व विकार उपाधि। शून्य में स्थित कहत समाधि।
हो ब्रह्मनिष्ठ न भेद की व्याधि। संत कहे जिहि ज्ञान समाधि।। 15।।

पंच क्लेश

अभिनिवेश, अविद्या है, अस्मित, राग रु द्वेष।
''सुखदेवा'' निज ज्ञान से, मेटो पंच क्लेश।।

''महाकर्ता''

औरों के नित काम जो आये, ''मैं'' का भाव कबहु नहीं धरता।
सबको देता श्रेय हमेशा, वो जानो जग में महाकर्ता।। 1।।

''महाभोक्ता''

तुच्छ कृति भी हो जिसके संग, स्थित आतम रूप में होता।
स्वप्न समान जान मुस्काये, वो दुनियाँ में है महा भोक्ता।। 2।।

''महात्यागी''

यश के काम करे सबहि, पर यश पाने की इच्छा भागी।
निष्कामी निर्लिप्त रहे, नर वो दुनियाँ में है महात्यागी।। 3।।

''भाग्य उस का जाग रहा है''

घोर उपेक्षा निन्दाओं में, खेले जो नित फाग रहा है।
मान, प्रतिष्ठा, पद, यश के प्रति, जिसके दिल वैराग रहा है।।
आँधी तूफां व्यवधानों में, जो नर सरपट भाग रहा है।
संयम, धीरज, शान्त स्वभावी, परहित में नित लाग रहा है।।
काम न क्रोध न लोभ न मोह, न अहं का किन्चित राग रहा है।
जन ''सुखदेव'' करे सत संगत, भाग्य उसी का जाग रहा है।। 4।।

''आप ही अपना मित्र एवं शत्रु''

आप ही शत्रु, सखा पुनि आप ही, कृष्ण कहे सुन अर्जुन प्यारे।
निज कल्याण उद्धार पतन, सोई लखि आपहु आप सहारे।।
असत्य के साथ सम्बन्ध न मानहु, तो खुद का खुद मित्र कहा रे।
सत्य को भूल असत्य को माने, तो निज का निज शत्रु महा रे।।
जान लिया निज आतम को, फिर वो परमात्म रूप भया रे।
जन ''सुखदेव'' बने समबुद्धि तु, रहत सदा आनन्द महा रे।। 5।।

तीनों योगों में करण निरपेक्षता प्रधान

जड़ता का त्याग करें स्वयं कर्मयोग में।
आप से ही आप जाने नित्य ज्ञान योग में।।
आप ही प्रभू का भया भक्त भक्ति योग में।
करण निरपेक्ष सत तत्व तीनों योग में।। 6।।

''क्यों गलियों में भटक रहा है ?''

(दुर्व्यसन मुक्ति)

गांजा, भांग अफीम, तम्बाकू, अनगिन गुटके गटक रहा है।
दारु पी पर नार को ताके, नित सिगरेटें सटक रहा है।।
चाय, सुपारी, जरदे में, ये मूर्ख मनवा अटक रहा है।
गंदी फिल्में, चित्र देखकर, शीश शिला पर पटक रहा है।।
उजियारे में आँख बन्द कर, चमगादड़ ज्यूं लटक रहा है।
भांग पटक दी कुओं में, प्रभाव अटक से कटक रहा है।।
''सुखदेवा'' के हृदय बीच, इक प्रश्न निरन्तर खटक रहा है।
है भारत माँ का भरत श्रेष्ठ, फिर क्यों गलियों में भटक रहा है।। 1।।

''सच्चा मानव''

परहित काज जुड़े कब दानव, अहंकार में रहे अड़े।
मटके के टुकड़ों के जैसे, फूट फाट चहुँ और पड़े।।
स्वर्णकार ज्यो स्वर्णाभूषण, कूट काट कई बार घड़े।
टूटे कंचन, संतन, सज्जन एक नहीं कई बार जुड़े।।
मानव माने और मनावे, आजीवन नित ध्येय जुड़े।
''सुखदेवा'' बिखरे मणियों को, प्रेम के तार बनाय लड़े।। 2।।

स्थिर बुद्धि संयमी पुरुष परम शान्ति को प्राप्त करता है।

इन्द्रियों को वश में रख संयमी, जग भोगों में सजग रहावे।
स्थिर मति होवे मन में कभी, विषयों का नहीं चिन्तन आवे।।
आन मिले नदिया सागर में, न कछु तनिक विकार उपावे।
त्यों संयमी को भोग पदार्थ, किन्चित् भी न अशान्त करावे।। 3।।

(गणेश वन्दना)

सगुण वस्तु निर्देश मंगलाचरण

(दोहा)

गणपति गण पत गर्त में, गारत हो गणराज ।
गणनायक गण ईश जी, रखियो मेरी लाज ।।

(भजन)

तर्ज–म्हे तो नाचा म्हे तो गांवा....................

म्हे तो पेली पोत मनावां, देवा गणपत जी न ध्यावां।
सारा संकट कट जाई, भगवन की भक्ति मन भायी ।।टैर ।।

जिनके परम पिता शिवजी है, पार्वती है माता।
भक्त जनों की करें पालना हो सुध बुद्धि के दाता ।।
म्हे तो चरणां में रम जावां, पाछै निर्भय मौज मनावां।
माथै हाथ रखो सांई ।। 1 ।। भगवन की भक्ति........

सूंड सुंडाळ दूंद दुंदाळ मूसा की असवारी।
विघ्न विनाशक रूप विशाला महिमा सब सूं न्यारी ।
म्हे तो लड्डुवन भोग लगावां , नित की बाबा का गुण गावां।
आ ही बात समझ आई ।।2 ।। भगवन की भक्ति........

दानव, मानव भजे देवता, ऋषि–मुनि और संत ।
सच्चा मन सूं ध्यान धरे वो, पावे खुशी अनन्त
थोड़ी अर्ज करे ''सुखदेवा'', मैं ना चाहूं मुक्ति मेवा,
दीज्यो चरणन शरणाई ।।3 ।। भगवन की भक्ति........
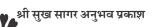
अभिनन्दन गीत

आज करें अभिनन्दन है ।
गणपति, गुरू, पितु, मात रू सन्तन, भारत माँ को वन्दन है ।।टेर।।

आनन्द अति बड़भाग हमारे साथ सखा घनश्याम पधारे।
घर आँगन सब हो गये पावन, छूट गये भव बन्धन है ।।१।।

भाल पे तिलक गले में माला, श्रद्धा सुमन प्रेम का प्याला
हर्षित हो हम करें आरती, मिटे हृदय का क्रन्दन है ।।२।।

हर घट ज्ञान के दीप जलायें, सकल जगत का तमस मिटायें।
जीवन शीतल हो उपकारी, ज्यों मलयागिरी चन्दन है ।।३।।

हर जन हरिजन, हरि, हर सज्जन, हरि, हरिजन पद जीवन अर्पण ।
आपका आपको होत समर्पण, सुनो यशोदा नन्दन है ।।४।।

मंगलाचरण करें हम मन से, सफल करो हर काज लगन से ।
जन ''सुखदेव'' अर्ज सब जन से, राम भजो दुःख भंजन है ।।५।।

अपकार करने वालों पर उपकार करना चाहिये

हरि गीत सवैया छन्द

सीप मर के मोती दे, खा चोट फल दे वृक्ष हि।
नित ईख दबकर देय मधुरस, है न पक्ष विपक्ष हि।।
संताप देने वालों का, संताप हरना चाहिये।
अपकार करने वालों पर उपकार करना चाहिये।। 1।।
पीसनादि कष्ट सहकर, मैहंदी रंग सुरंग दे
यह पान नागर दन्त से चब, ओष्ठ शोणित रंग दे।।
खान को भी खोद के, अनमोल हीरे पाइये।
अपकार करने वालों पर उपकार करना चाहिये।। 2।।
जिह्वा कटती दन्त से, पर प्रेम से रक्षा करें।
निज बाल स्तन काट ले, माँ दूध ही बख्शा करें।।
पारस पिटाई खाय घण झट, स्वर्ण ही बन जाइये।
अपकार करने वालों पर उपकार करना चाहिये।। 3।।
स्वयं कटकर के भी चन्दन, कुल्हाड़ी को गंध दे।
समुद्र, दही मथकर हमें, बहु रत्न, घृत आनन्द दे।।
बहु औषधि मरकर भी, तन की व्याधि को ही मिटाइये।
अपकार करने वालों पर उपकार करना चाहिये।। 4।।
अन्न मर, कर भूख निवृत्त, वीर मर हर पीर दे।
महासन्त सब कुछ सहन कर, दुःख देव को सुख, धीर दे।।
''सुखदेव'' सुख दो, हो सुखी, भव नीर तरना चाहिये।
अपकार करने वालों पर उपकार करना चाहिये।। 5।।

भैराणा धाम महिमा

तर्ज–तूने मुझे बुलाया शेरावाली ये

चंचल मन चल–चल भैराणा धाम को।
मोह–माया तज भज ले दादूराम को।। टैर।।

भारत में यह तीरथ निराला, ऊँचा पर्वतराज विशाला।
जहं वनराय सुगंधित महके, बोले पशु–पक्षी पुनि चहके।।
भजते दादूराम सुबह अरू शाम को।। 1।। मोहमाया तज....

ऊँचे टीले गहरी खोले, वानर, शशक बघेरे डोले।
तोता मैना करत किलोले, कोयल, मोर, पपैया बोले।
सुनकर पावे चैन जिया आराम को।। 2।। मोहमाया तज....

वाणी जी का पावन मन्दिर, श्वेत दुधिया सा अतिसुन्दर।
नित्य रहे भक्तों के रेले, सेवक, साधु संगत के मेले।।
दर्शन कर नर पाते है विश्राम को ।। 3।। मोहमाया तज....

श्री राम बल्लभजी हरि रंग राते, सम दृष्टि शीतल मन भाते।
सरस सरल अरू निर्मल बोली, सेवामयी संतों की टोली।
पीठाधीश्वर देते आतम ज्ञान को।। 4।। मोहमाया तज....

पर्वत नीचे खोळ है बांका, अधर शिलां चोटी पर टांका।
गिरीवर बीच पालकां राजे, ज्योति अखंडित दीप प्रकाशे।।
बैठो ध्यान लगाय सुमिर हरि नाम को।। 5।। मोहमाया तज....

भण्डारा पंगत प्रसादी, हर कोई जीमें नाहि मनादी।
राम भजन भोजन करि मनभर, झूंठन नाहि तु छोड़िहू कण भर
जीमें लडुआ, पूड़ी, हलुआ राम को।। 6।। मोहमाया तज....

जीवन मुक्ति मुकाम कहाँ है? दादू मुक्ति धाम जहाँ है।
भैराणा भय हारण तेरा, फेरी लगाये कटे जग फेरा।
श्रद्धा से "सुखदेव" करे यदि काम को।। 7।। मोहमाया तज....

भजन

श्री दादू पद यात्रा

तर्ज-तुने मुझे बुलाया शेरां वाली ये

अरज सुना दो जाकर दादूराम से।
निकल पड़े हम पैदल जिनके काम से।। टैर।।

वाणी जी का मरम बताने, घट-घट ज्ञान की ज्योति जगाने।
राग-द्वैष अरू तमस हटाने, भेद भाव सब द्वन्द्व मिटाने।
दादू सेवक आये है हर ग्राम से ।। 1।। निकल पड़े हम.....

बालक, वृद्ध, युवा, नर, नारी, मन में प्रेम भरोसा भारी।
देश धर्म की आये बारी, जीने मरने की तैयारी।
मंगल दास जगे है, खाटू धाम से।। 2।। निकल पड़े हम.....

गांजा भाग अफीम को छोड़े, दुर्व्यसनों से मुँह को मोड़े।
सुल्फा, चण्डु, चरस तजे सूरा, दादूराम भजै कोई शूरा।
हरि रस पीकर जीयेंगे आराम से।। 3।। निकल पड़े हम.....

राम निरंजन अखिल विश्व में, व्यापक बोल रहा हर दिल में।
सब ही जीव राम के प्यारे, सेवा भाव हृदय में धारें।
बिगड़े काज बनेंगे दादू नाम से ।। 4।। निकल पड़े हम.....

सुन्दर द्वय निश्चल, अरू रज्जब, ज्ञान वीर रणधीर थे गज्जब।
शिष्य हुये अनेक उपकारी, ऋणी है जिनकी दुनियाँ सारी।।
मिली प्रेरणा सबको दादूधाम से ।। 5।। निकल पड़े हम.....

वीर खण्डेत पहिनकर बाना, झूझे आय लड़े मैदाना।
खाण्डा पट्टा चले दूधारी, चक्र चलावे कुशल खिलारी।।
जन ''सुखदेव'' विजयी होते संग्राम से।। 6।। निकल पड़े हम.....

श्री दादू धाम नरायणा महिमा

दुनियाँ में श्री दादूजी का नाम निराला है।
भारत में है गाँव नरेना, धाम निराला हैं।।टैर।।

अश्रु बिंदु सरोवर बाजे, दादूजी आ जहाँ विराजे।
तहँ तिरपोलिया सुन्दर राजे, दर्शन कर मन में सुख पाजे।
दर्शन कर मन में सुख पाजे, सब दुःख टाला है।।1।।
दुनियाँ में श्री...............
शेष नाग के पीछे-पीछे, रूके खेजड़ा जी के नीचे।
हे भाई दर्शन कर लीजे, श्रद्धा से मस्तक धर दीजे।
श्रद्धा से मस्तक धर दीजे, होय निहाला है ।।2।।
दुनियाँ में श्री...............
खाक चौक में संत तपे हैं, भजन शाल में नाम जपे है।
संग्रहालय में ग्रंथ रखे है, देख कड़ाह को नैन तके है।
देख कड़ाह को नैन तके, अचरज में डाला है।।3।।
दुनियाँ में श्री...............
गुरु गोविन्दसिंह मिलने आये, बाज राम को ज्वार खिलाये।
श्रद्धा से तब शीश नवाये, गौरीशाह की कोढ़ मिटाये।
गौरीशाह की कोढ़ मिटा, महा संकट टाला है।।4।।
दुनियाँ में श्री...............
दादूजी के शिष्य अज्जब, निश्चल, सुन्दरदास रू रज्जब।
तिन ने ज्ञान दिया है गज्जब, जिससे धन्य हुआ हर मज्जब।
जिससे धन्य हुआ हर मज्जब, प्रेम से पाला है।।5।।
दुनियाँ में श्री...............
फागुन में है मेला भारी, साधक, संत आवे नर नारी।
छतरियाँ सबको लागे प्यारी, नमन् किये होवे सुखभारी।
नमन् किये होवे सुखभारी, ज्ञान ऊजाला है।।6।।
दुनियाँ में श्री...............
जो दादू का नाम रटे हैं, दुविधा, दुख अरू भरम मिटे है।
''सुखदेवा'' सब कर्म कटे है, परमानन्द की राश लटे है।
परमानन्द की राश लटे, मन हो मतवाला हैं।।7।।
दुनियाँ में श्री...............

श्री दादूचरितामृत काव्य धारा
तर्ज–वो महाराणा प्रताप कठे ....

दर्शन ने आंख्यां झूर रही म्हारा हिवड़ा रो रखपाल कठे।
श्री दादू दीनदयाल कठे, हरि भक्तां रो प्रतिपाल कठे।।टैर।।

सागर माही टापू माळे तीन सिद्ध हरी ध्यान करें।
ब्रह्म राम की वाणी सुनकर संत सनत अवतार धरे।।
साबरमती की लहरा प्रकट्या लोधीराम रो लाल कठे।।१।।

राग द्वेष हिंसा जग में अज्ञान अंधेरों छायो हो।
हिंद अहमदाबाद मांही नवज्योति जगाने आयो हो।।
कांकरिया पर दीक्षा दी वे सद्गुरु वृद्ध भगवान कठे।।२।।

जद भारत मां की धरती पर मुगला रा बांक्या बो–ले हा।
भोळा भाळा मिनखां रे दिल जहर खुरानी घोले हा।।
ज्ञान सुना निज धर्म बचावण जीव उद्धारण हार कठे।।३।।

करडाले का लोगा ने इक प्रेत का भय सूं मुक्त कर्या।
पीथो चोर लुटेरों उणन हरि भगति सुं युक्त कर्या।।
कक्केड़ा का रूंक तले बे करी साधना ध्यान जठे।।४।।

गांव मोरड़ा में जाकर इक सुखो बड़ हरियो कीन्यों।
सरवरिया री पाल बैठकर राम भक्ति रो वर दीन्यों।।
बंजारां ने दीक्षा दी वो मायड़ जेड़ो प्यार कठै।।५।।

सांभर झील की टेकड़ीया छः बरस ज्ञान उपदेश दिया।
गज छोड्या मारन ने काजी चरणां में प्रणाम किया।।
चिट्ठी रा अंक पलट डार्या बे जीम्या नूता सात जठे।।६।।

गलता महंता रा सेवक जद् माला तिलक लेय आया।
मन माला उपदेश तिलक है भली-भांति कर समझाया।। डूबत जहाज बचाई बेठ्या दादू मठ आमेर जठे।।७।।

दौसा गेटोलाव सरोवर सूखा पीपल हरियाया।
साधा रे खातिर सरवर सूं गरम जलेबी मंगवाया।।
अनमांग्या देवे समरथ वो पूरक सिरजनहार कठे।।८।।

ज्ञानवीर कई युद्धवीर हुया शिष्य अनेकों गज्जब जी।
दोन्यूं सुंदर निश्चल माधव बखना टीला रज्जब जी।।
खाटू माही लड़्या देशहित मंगल सा सरदार कठे।।९।।

दादू जी रो जस सुनकर अकबर रो हिवड़ो उमग्यायो।
दिन चालीस करी सतसंगत गौ हत्या न रुकवायो।।
काजी मुल्ला सगळारा सब मेट्या वाद-विवाद सटे।।१०।।

अकबर जांचण री खातिर,जद नहीं लगायो आसन हो।
योग शक्ति सूं तुरत बणायो तेजोमय सिंहासन हो।।
हुया अचंभित पांवा पड़ग्या होगी जय जयकार बठे।।११।।

त्रिपोलिया नरेना में जा बैठ्या साधन भक्ति फले।
दिव्य नाग पकड़कर ल्याया खेजड़ला रे वृक्ष तले।।
प्रेम एकता रो संदेशक परमुख दादू धाम अठे।।१२।।

वर्तमान पीठाधीश्वर गोपाल दास जी राजे है।
दादू मठ अरु वाणीजी रा जसरा बाजा बाजे है।।
ऐड़ा सेवक संत शूरमा कर्मवीर नर नाहर कठे ।।१३।।

वर्ष अठावन दो महीना पंद्रह दिन ज्ञान संदेश दिए।
बोले सत्यराम अंत में ब्रह्मधाम निज देश गए।।
आंख्या में आंसू ढलकरिया सगला री छाती जाय फटे।।१४।।

सेवक साधु संत घणा शव भैराणा लेकर आए।
धरी पालकी खोळां में पर्वत के बीच दरश पाये।।
दादूधाम पालकांजी में ढूंढरिया बे फूल कठे।।१५।।

''दादूवाणी'' रूप म्हारो श्रद्धा सू जे जन पूजेला।
पढ़े पढ़ावे भक्तां ने मुक्ति रा मारग सूझेला।।
तन सूं सेवा मन सूं हरदम देव निरंजन राम रटे।।१६।।

दादूवाणी ज्ञान समंदर, जिण में हीरा मोती है।
सांख्य, उपनिषद, गीता, वेदांत ज्ञान री ज्योति है।।
साखी, पद, भजना रो असली मर्म बतावणहार कठे।।१७।।

तुलसी, नानक, सूरदास, दत्त, रामानंद, कबीर हुया।
मीरा, तुक्का, नामदेव, रैदास भगत सा धीर हुया।।
वीर शिवाजी रो खांडो महाराणा जेड़ो भाल कठे।।१८।।

''भूरादास जी'' सतगुरु जिण रे पगल्यां में प्रणाम करां।
वाणी जी री टीका प्यारी पढ़-पढ़ हिरदा मांही धरा।।
घूम-घूम कर सर्व हितारथ,कर्या ज्ञान परचार अठे।।१९।।

जाति,प्रांत,मत पंथवाद तजि जीवन रो निर्माण करां।
कह 'सुखदेव' सुखी हो सगला निज आतम रो ज्ञान करां।।
देश धर्म हित मर मिट जावे ऐ भारत रा लाल कठे।।२०।।

हिवड़ा री आंख्यां खोल जरा सब जिवड़ां रो रखपाल अठे।
श्री दादू ब्रह्म स्वरूप निरंजन भजि चौरासी नाल कटे।।२१।।

गीत

संस्कार केन्द्र के साधक है

तर्ज – निज आतम रूप हमारा है। .....

संस्कार केंद्र के साधक है, हम गुरु आज्ञा में रहते हैं ।
निज ध्येय साधना के पथ पर, यदि कष्ट मिले तो सहते हैं ।। टैर ।।

गुरुदेव ईष्ट, सबतें वरिष्ठ, कर संग, शिष्ट, ब्रह्मनिष्ठ बने ।
हम ध्येय निष्ठ, शुभ कर्मनिष्ठ, निज धर्मनिष्ठ, श्रमनिष्ठ बनें ।।
व्यवस्थित, अनुशासित सेवक, निष्काम प्रेम में बहते हैं ।। १ ।।
संस्कार केंद्र.....

सम्मान, प्रतिष्ठा, पद यश का, प्रलोभन तनिक न डिगा सके ।
नहीं कंचन कामिनी, महलों का, सम्मोहन किंचित हिला सके ।।
हो बात संगठन के हित की, हम सहज भाव से कहते हैं ।। २ ।।
संस्कार केंद्र....

मुँह में शक्कर, पग में चक्कर, हो बर्फ शीश, दिल आग रहे ।
गुरु भक्ति, शक्ति, हो देश भक्ति, निज मुक्ति भाव में जाग रहे ।।
ब्रह्मातम ऐक्य, सनातन है, इस सत्य भाव को गहते हैं ।। ३ ।।
संस्कार केंद्र....

यह जाति, प्रांत, मत,पंथवाद, नहीं भाषावाद स्वीकार कभी ।
गंतव्य सभी का एक जान, रखते हैं परस्पर प्यार सभी ।।
''सुखदेव'' पथिक सेवा पथ के, हम सहज परम सुख लहते हैं ।।४ ।।
संस्कार केंद्र....

श्री स्वामी विवेकानंद संदेश

तर्ज- वो जीवन भी क्या जीवन है।

गीत

श्री स्वामी विवेकानंदहि ने यह दुनियाँ को बतलाया है।
माया के विविध स्वरूपों में, इक व्यापक ब्रह्म लखाया है।। टैर।।

ज्यों नदियां आय मिले सागर, निज नाम रूप को खोकर के ।
त्यों भिन्न पंथ, मत, मजहब के, जन चलिये लक्ष्य संजोकर के।।
रवि, दीप, चिराग, मशाल शशी, सबमें इक तेज समाया है ।। १।।
श्री स्वामी -----‹---

धर्मान्ध, मतान्ध, मदान्ध, मनुज, निज ज्ञान बिना पथ भटक रहे।
अशांत, भ्रांत, निज धर्म विमुख, हो कर्म विमुख सिर पटक रहे।।
आतंक , धर्म परिवर्तन पर सबको सन्मार्ग दिखाया है ।। २।।
श्री स्वामी---------

सब दीन दुःखी, दिव्यांग निबल, मम् देव यही परमातम है।
नित प्रेम भाव से सेवा करि, सर्वोत्तम यह सर्वातम है।।
वेदांत ज्ञान का व्यवहारिक, स्वरूप हमें समझाया है।। ३।।
श्री स्वामी---------

हे जगद्गुरु नर सिंह उठो! दुनिया में धर्म प्रचार करो ।
निंद्रा, मोह, ममता त्याग जरा, मां भारत का उद्धार करो।।
"सुखदेव" करें पुरुषार्थ प्रबल, बड भाग मनुष तन पाया है।।४।।
श्री स्वामी --------

भजन

तर्ज– वो जीवन भी क्या जीवन है।

दुनिया में सच्चे साधक है, जो गुरु आज्ञा सिर धरते है ।
सेवा के अवसर खोज सदा,अति प्रेम से सेवा करते हैं।।टेर।।
दुनिया में सच्चे------

सद्गुरु पद पंकज में बैठे , हो शील, विनय , आदर्श शिष्ट ।
गुरु भक्ति अनन्य धार हृदय, गुरु परम देव है परम ईष्ट।।
जब दया बरसती है उनकी, सब बिगरे कारज सरते है।। १।।
दुनिया में सच्चे------

है धन्य जनक जिन अष्टावक्र, मुनि को अपना सद्गुरु कीन्हा
तन मन धन पूर्ण समर्पण करि, नित गुरु वचनों में चित दीन्हा।।
जब बाज रकाब पे पैर धरा, इतने में सशंय टरते हैं।। २।।
दुनिया में सच्चे------

आरुणि, रज्जब, उपमन्यु, जाबाल कई गुरु भक्त हुये!
भगवान राम, श्री कृष्ण, शिवा, गुरु सेवा में अनुरक्त हुये।।
जिन कठिन परीक्षा पास करी, हो जीवन मुक्त विचरते हैं।। ३।।
दुनिया में सच्चे----

गुरु भक्ति बिना नहीं ब्रह्मज्ञान, निज ज्ञान बिना फिर चैन कहां?।
सद्ग्रंथ सकल मुनि संत कहे, सूरज उगने पर रैन कहां?।।
''सुखदेव'' भक्त सच्चे जग में, पुनि जन्म धरे नहीं मरते हैं।।४।।
दुनिया में सच्चे-----

शीश के दानी
महन्त श्रीमंगलदासजी महाराज

राग- धमाल (वीर रस)

खाटू का दंगल में मंगल दास शूरमां लड़िया रे।
शीश मेल गुरु चरणां में मुगलां सूं भिड़िया रे।।
रण में जय पाई........।। टैर ।।

शूरातन को अंग पढ़ो सब, दादू वाणी मांही रे।
शायर बण कायरता ने अब दूर भगाओ भाई रे।।
कसो लंगोटो लेकर घोटो बजरंग बन जाई।।
रण में जय पाई........।। १ ।।

शूरवीर रणभूमि मांहि पाछा पग नहीं मेले रे।
देश धर्म की रक्षा खातिर, चोट बदन पर झेले रे।।
दुश्मन की मुंडमाल पहन रणचंडी बन धाई।
रण में जय पाई........।। २ ।।

शूरां मिल रण मांहि झूझे, कायर काम ना आवे रे।
मन में राम, लड़े फिर तन से, साहिब के मन भावे रे।।
मरकर भी वो अमर होय दुनिया में जस छाई।
रण में जय पाई........।। ३ ।।

हरि भगति, परमारथ पथ पर गुरुमुख केहरी धावे रे।
कूकर ज्यों कायर भौंके , मायड़ रो दूध लजावे रे।।
साधू जैसा शूरवीर कोई दुनिया में नाही।
रण में जय पाई....... ।। ४।।

काम, क्रोध, मद, लोभ लुटेरे, ज्ञान खड़ग से मारे रे।
कह ''सुखदेव'' शूर वही सांचा,गुरु आज्ञा शिर धारे रे।।
जगत नरेश वही जो मन को जीत चला भाई।
रण में जय पाई........।। ५ ।।

भजन

मुरलीधर की मुरली का चमत्कार

तर्ज– म्हारा छैल भँवर का अलगोजा

प्यारा श्याम जी की मुरली जमुना तट पर बाजै रे।
तट पर बाजै रे गड़ागड़ इन्दर गाजै रे।।टैर।।

बजी बान्सुरी वृन्दावन मं, सखियाँ दौड़ी आई।
सुन रही देकर ध्यान मस्त हो, दिल मं खुशी समाई।।1।।
प्यारा श्याम जी......................

ग्वाल बाल सब तान सुनी, तो तुरंत लगाई दौड़।
बरसाना का रसिया गावे, नाचे नन्द किशोर ।।2।।
प्यारा श्याम जी......................

छोड़ घौंसला पंछी बैठ्या, गायां दौड़ी आई।
घास छोड़कर सु–ण बांसुरी, तन की सुध बिसराई।।3।।
प्यारा श्याम जी......................

देव लोक से सभी देवता, फूल रहे बरसाय।
कह ''सुखदेव'' सु–ण कोई बंशी, भव सागर तिर जाय।।4।।
प्यारा श्याम जी......................

राष्ट्र चेतना का शंखनाद

उत्तिष्ठ भारत!
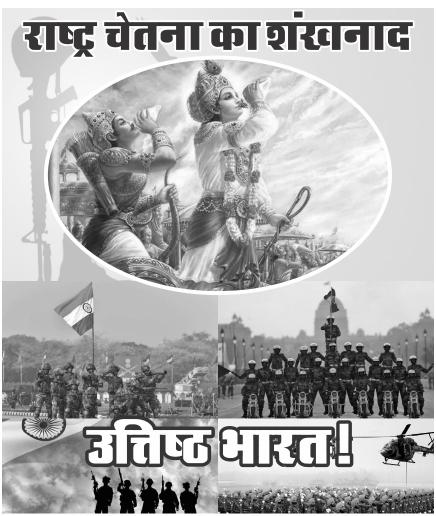
बजा क्रांति का शंख नाद अब, जाग उठो भारतवासी।
धर्म संस्कृति देश बचायें, पायें आनन्द अविनाशी।।

नमोः नमोः हे भारत माता

भूतल भार हरे भारत माँ, भय हारिनि ब्रह्म ज्ञान प्रदाता।
आप भवानी अति मन भावनि, भगवति कर भगवा लहराता।।
ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, कला का, सुयश सर्व संसार है गाता।
विद्या, ज्ञान महागुण सागर, नमोः नमोः हे भारत माता।।

2

हिन्दू, मात पितृ भूमि, हे देव भौम ! जग शीश नवाता।
योग, यज्ञ, सत्संग मिले, रहे विश्व गुरु ! हो मोक्ष की दाता ।।
धर्म, कर्म, युद्ध वीर हुये कई, गोद मिलि अति मन हर्षाता ।
रूप अनुपम, सिंह सवारी, नमोः नमोः हे भारत माता।।

भारत माता की जय।

गीत/प्रार्थना

मातृभूमि वन्दन

मातृ भू, जय पितृ भू, हे देव भू तुमको नमन् है।
वत्सले माँ भारती, परब्रह्म सद्गुरु को नमन् है।।टेर।।

पुण्य भू महामंगले, निज धर्म हरि गुरु के लिए सब,
वचन, तन, मन और धन, जीवन का क्षण-क्षण समर्पण है।।1।।

ज्ञान, सेवा, भक्ति दो, हे ईश! संगठन शक्ति दो।
धैर्य, साहस वीरव्रत ले, कंटका पथ पर गमन है।।2।।

एकता के मन्त्र से, नित साधना के तंत्र से।
विश्व गुरु पद परम वैभव, पुनः दिलाने का ही प्रण है।।3।।

।। भारत माता की जय ।।

मातृ वन्दना

गीत

हम भारत के भरत उतारे माँ की पावन आरती।
कोटि हृदय सब मिलकर पूजे जग जननी माँ भारती।।
जय भारती - जय भारती - अम्बे भारती ।।टैर।।

दुर्व्यसनों से मुक्त बने हम, ब्रह्मज्ञान से युक्त बने हम।
सद्गुण ज्ञान, प्रेम के द्वारा, जन-जन को संवारती।।1।।

संस्कृति रक्षा ध्येय हमारा, आपस में हो भाई-चारा।
संघर्षों में कदम बढ़ेगा, होंगे भगवन-सारथी।।2।।

भारत माँ को शीश नवायें, दुनियाँ का सिर मोर बनाये।
सेवा, ममता भाव, तपस्या, त्याग, समर्पण धारती।।3।।

गीत

ताल–दादरा

जाग–जाग देश के सपूत नौजवान।
देश धर्म के लिए हो, जिन्दगी कुर्बान ।।टेर ।।

जाग युद्धवीर, कर्मवीर जाग रे, ज्ञान, दान वीर धर्म वीर जाग रे।
भारती पुकारे मेरे लाल जाग रे, लूटते है लाज शत्रू काल जाग रे।।
श्रमनिष्ठ, कर्मनिष्ठ जाग रे किसान।।1।। देश धर्म................

आतंक, भ्रष्टाचारियों के नाग–पाश को, जाति प्रान्त, पंथ भेद की कुबास को।
भुखमरी, अशिक्षा, तमस के विनाश को, जाग तत्व ज्ञान प्रेम के उजास को ।।
योग तन्त्र एकता के मन्त्र का हो गान ।।2।। देश धर्म................

राग, द्वैष, त्याग, त्याग स्वार्थ कामना, अनेकता में एकता की रहे भावना।
सर्वखलविदं ब्रह्म से तार जोड़कर, अहंकार व्यर्थ के विवाद छोड़कर।।
रहे हानि लाभ सिद्धासिद्धि में समान।।3।। देश धर्म................

भारत माँ का मुकुट हिमालय और मस्तक कश्मीर।
जाग उठा है उसे बचाने, भारत का हर वीर।।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।।टेर।।

हिन्दुस्तां के वीर जवानों, दुश्मन ने ललकारा है।
कुचल के रख दें सर बैरी का, हिन्दुस्तान हमारा है।।
शीश कटे, ना कभी घटे, इस भारत माँ का मान।।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।।1।।

सुनले पाकिस्तान यह भारत वीरों की ललकार है।
बच्चा-बच्चा वीर शिवाजी, राणा की तलवार है।।
खुब लड़े, रण बीच खड़े, चाहे हो जाये संग्राम।।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।।2।।

जहरीले साँपां के हम, विष दन्त तोड़कर मानेंगे।
भारत माँ पर उठी हुई, हर आँख फोड़कर मानेंगे।।
एटम बम, से है नही कम, चाहे अजमाले संसार।।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।।3।।

गीत

राग-मारवाड़ी

हिन्दवाणी की खातिर म्हे बलिदान करांला रे।
म्हे तो दुश्मन को बन्दुक्याँ सूँ संहार करांला रे।।टैर।।

छाती माळ नाग पड़्या म्हे अब क्यूं धीर धरांला।
पकड़ जबाड़ी दाँत तोड़ फिर नागिन डांस करांला।
म्हे तो जहरीला नागां सू ना कोई प्यार करांला रे।। 1।।

बेरीड़ो जद शीश उठा-वे, काट धरण-में धरद्यां।
आँख उठा-वे फोड़ लूण संग मिर्च मसालों भरद्या।
म्हे तो देश धर्म री खातिर युद्ध में कूद पडलां रे।। 2।।

बदल पैतरां ताल ठोक दी, आजा बैरी लड़-ले।
थारी माँ को दूध पियो भारत वीरां सू भिड़-ले।।
थारा टैंक अणु बम सबको चकन्या चूर करलां रे।।3।।

तर्ज-काली पीली आँधी

भारत माँ रा जोधा जागो दुश्मन ने ललकारा।
थे तो कांधे धर बन्दूक लड़ो बम हाथां मे तलवारां।।टैर।।

खूनी तिलक लगाल्यो सगळा, हाथां लेल्यो खंजर।
हिन्दवाणी की सीमा माळ, रोळ मचाव कंजर।।
बांकी छाती माळ टैंक रोंड़, द्यो लातां की फटकारां।।1।।

महाराणा प्रताप शिवा रा, थे भाला भळकाओ।
भगत सिंह आजाद, बणों, दुश्मन न मजो चखाओ।।
लेल्यों धनुष बाण तरकस, सब बोलो हर-हर बम का नारा।।2।।

कफन बांधल्यो मस्तक सूं, सब कमर कसेड़ी राखो।
शीश काट माँ चरणा धरणो, आलसड़े न त्यागो।।
वीरों तन, मन, धन, बलिदान करो, यह हिन्दुस्थान हमारा।।3।।

गीत

बाज्यो बाज्यो शंख

तर्ज– गाज्यो–गाज्यो जेठ आषाढ़

बाज्यो बाज्यो शंख अब भारत वीरों जागो
रे थाने पुकारे है माँ भारती।टैर।।

दुर्गा स्वरुपा माता दुनियां मांही पूजे रे,
हाथां मं भगवाँ झन्डो धारती।।1।।

देश धर्म पर बीरा बलि–बलि जाओ रे,
सांचा का होवे सांई सारथी।।2।।

काटी भुजावां पापी माथो काटण लाग्या
रे, आंसु आंखड़्ल्याँ मांही डारती।।3।।

परदेशीड़ा सीमा माळे देवे बन्दर घुड़की रे,
गोल्यां स्यू करद्यों बाकी आरती।। 4।।

स्वदेशी चीजां न बीरा जीवन में अपनावो
रे, पर देशी चीजां न करद्यो गारती ।।5।।

गीत

जाग उठो !

अखिल विश्व में श्री राम नाम की, गाँव नगर इक लहर चली।
हिन्दू वीरों जाग उठों अब, बन जाओ बजरंग बली।।
श्री राम जय जय राम, श्री राम जय जय राम।।टेर।।

पान्चजन्य बज चुका वीर, अब गाण्डीव का संधान करें।
कर्म क्षेत्र में जुट जायें, माँ भारत का उत्थान करें।।
हिन्दू जगेगा देश जगेगा, घोष गुंजायें गली-गली।।१।।
हिन्दू वीरों जाग उठों........................

ऊँच-नीच मतभेद मिटाकर, समता भाव जगाना है।
हरिजन, गिरिजन वासी वन के, सबको गले लगाना है।।
साथ-साथ सब खेले खायें, खिल जायेगी कली-कली।।२।।
हिन्दू वीरों जाग उठों........................

हाथों में भगवा लेकर, दिल देश भक्ति का प्यार उठे।
देश धर्म की रक्षा करने, महा भीषण हुँकार उठे।।
देशभक्त, संतों के आगे, दाल किसी की नहीं गली।।३।।
हिन्दू वीरों जाग उठों........................

गीत

भगवाँ ध्वज का महत्व

तर्ज– खम्मा खम्मा................

जय हो जय हो जय हो ध्वज भगवाँ महान की।
थारो गुण गावे सारो हिन्दुस्तान हो, स्वयं भगवान हो
ध्वज भगवाँ महान की।।टैर।।
यज्ञ कुण्ड री लपटां जेड़ो, भगवाँ थाको रंग है
त्याग और बलिदान, वीरता गौरव गाथा संग है।।
देख्याँ आवे जोश, वाराँ तन-मन- धन प्राण हो।।1।।
स्वयं भगवान................

सन्त कई महाराजा वीरां, पूजरिया अरू पूज्या हा।
देश धर्म रो मान बचावण, भगवाँ लेकर जूझ्या हा।।
जीत्या युद्ध घणेरा अर होग्या बलिदान हो।।2।।
स्वयं भगवान................

राजा रघु, श्रीराम, शिवाजी, पृथ्वीराज ने फहराया।
चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त रे रथ पर भगवाँ लहराया।।
महाराणा, गुरु गोविन्द सिंह करिया घमसाण हो।।3।।
स्वयं भगवान................

साहस, ज्ञान, बढ़ावे भगवाँ, कालजियारी कोर है।
रोज संघ की शाखा मं भी, भगवाँ ही सिरमौर है।।
केशव, माधव, मधुकर जी, गाया गुणगान हो।।4।।
स्वयं भगवान हो, ध्वज भगवाँ महान की
स्वयं भगवान................

जागृति गीत

भव सागर की लहरों को, दानव जन के पहरों को।
हर बाधा को चीर, धीर गंभीर, संभल के वीर,
राह पर बढ़ते जाना-नील गगन के पार ओ पंछी
उड़ते जाना, उड़ते जाना, उड़ते जाना।।टैर।।

कल्पित जग की सुन्दरता में, हंस न देख अटक जाना।।
चारों ओर अंधेरा किन्तु, राह नहीं भटक जाना।।
मार्ग में व्यवधान, मिले तूफान, हटा दे ध्यान
विजय को वरते जाना।।1।। नील गगन के पार...............

कहीं लुटेरे चोर कहीं पर, संत मुनि जन बसते है।
पगडण्डी समतल सड़कें, कहीं उबड़-खाबड़ रस्ते है।।
मान कहीं अपमान, नफा नुकसान, सुमिर भगवान-
शिखर पर चढ़ते जाना।।2।। नील गगन के पार...............

गिरकर उठ उठकर के चलना, पथ में ना रुक जाना है।
चल-चल मंजिल पास खड़ी है, जिसको निश्चित पाना है।।
हरदम रहना स्वस्थ, हृदय में मस्त, काम में व्यस्त
विपत से लड़ते जाना।।3।। नील गगन के पार...............

सुनले ओ पिंजर के पंछी, सद्‌गुरु बंधन खोले रे।
सैन लखे वो मुक्ति पावे, सुख सागर में डोले रे।।
'सुखदेवा' हो मौज, बने हर रोज, हटे सब बोझ
दीप बन जरते जाना।।4।। नील गगन के पार...............

जागृति गीत

राही कहीं भटक मत जाना, परमारथ की राहों से
कंटक देख अटक मत जाना, चले कुचल कर पाँवो से।।टेर।।
सज्जन, दुर्जन, दानव, मानव, इस दुनियाँ में रहते हैं।
जैसे हो संस्कार हृदय में, वो वैसा ही कहते है।।
संत हृदय पहिचाना जाता, केवल निर्मल भावों से।।1।।
राही कहीं भटक....................
वीर पुरूष को संकट परखे, आग परखती सोने को।
कंकर शंकर बने लहर संग, बैठ न जाना रोने को।।
धीर, वीर, गम्भीर हो सबको, देखो प्रेम निगाहों से।।2।।
राही कहीं भटक....................
सेवा, सात्विक प्रेम भाव से, हर संकट को सह करके।
मान अमान, प्रार्थना, निन्दा, सुख दुःख में सम रह करके।।
बढ़ो निरन्तर लक्ष्य निकट है, मत बहको अफवाहों से।।3।।
राही कहीं भटक....................
चलते वही अमर पद पावे, रुक गये तो मर जावोगे।
सुखदेवें ''सुखदेव'' सभी को, तो परमानंद पावोगे।।
बड़वानल सम भभक उठो, मत बुझना तेज हवाओं से ।।4।।
राही कहीं भटक....................

गीत

सतत् सेवा पथ "दीप"

राग-भोपाली, ताल-कहरवा

सतत् रत हो सेवा पथ पर बढ़ते जाना,
घोर तम में दीप बन जलना हमें है।।टेर।।
द्वेष, छल, पाखण्ड के हैं बोलबाले।
भ्रष्टाचारी दुर्जनों की कुटिल चालें।।
अन्न जल के भी पड़े हैं आज लाले।
बेकारी बीमारियों को भी मिटालें।।
मग में पर्वत, नीर ठग कंटक घनेरे,
हर कदम पर सम्भलकर चलना हमें है।।
घोर तम में..................

आज नर कंकाल के सम हो रहा है।
मृत्यु का नित नग्न नृत्य हो रहा है।।
मनुज निज मानवपने को खो रहा है।
स्वार्थ मद की नींद में बस सो रहा है।।
पथिक पथ पर अथक रहकर चल निरन्तर,
विपत में ना विपथ हो टलना हमें है।।
घोर तम में..................

बिजली चमके बाद में होता, अन्धेरा।
क्षणिक अतिवृष्टि से हो नुकसान गहरा।।
बांध फूटे डूबते कई ग्राम-डेरा।
सतत जल प्रवाह से हो हित घनेरा।।
सूर्य सम-ले तेज को निश्चित चलें पर,
सघन घन की ओट ना खोला हमें है।।
घोर तम में..................

''गीत''

''अग्नि परीक्षा''

राग–यमन, ताल–रूपक

हे तपस्वी ! संभलकर नित ध्येय पथ पर चलना होगा।
गहन तम को दूर करने खुद को तिल–तिल जलना होगा।।टैर।।
विषम जग में बहुत जन, अनुकूल बहु प्रतिकूल भी है।
तालियाँ कही गालियाँ, यहाँ फूल तो वहाँ शूल भी है।।
सुख, दुःख में लिप्त ना हो, कमल पत वत फलना होगा।।1।।
हे तपस्वी ! संभलकर..................

भूल से जिह्वा कटे, क्या मुष्ठिका से दन्त तोड़े?
सहन कर अपनत्व रख, हर जाति मत दल सबको जोड़ें।।
शुद्ध सात्विक प्रेम बिन, महा जटिलता का हल ना होगा।।2।।
हे तपस्वी ! संभलकर..................

तप्त अग्नि के बिना, क्या स्वर्ण की कीमत बनी है?
लाक्षा गृह की तपन से उन शूरों की हिम्मत बनी हैं।।
विपत्त में रख धैर्य संयम, युक्ति से ही निकलना होगा।।3।।
हे तपस्वी ! संभलकर..................

श्वान खग के शोर से ना, गज को राह बदलते देखा।
कष्टों में रण वीर को ना, कर्म पथ से टलते देखा।।
भरत ! पीछे हट गया तो, शोक में नित जलना होगा।।4।।
हे तपस्वी ! संभलकर..................

असुर जन निज स्वार्थ वश खेले नई नित चाल है।
षड़यन्त्रों को संहार दे फुँफकार तू महा काल है।।
अमर आतम रूप तू यह, ढाँचा नश्वर कल ना होगा।।5।।
हे तपस्वी ! संभलकर..................

शूरों[1] – पांच पाण्डव

गीत

दिल दरियाव

राग-यमन, ताल-रूपक

वो भी क्या महासागर है, कंकर से विचलित हो जाय।
उदधी में तो नदियाँ, पर्वत, जहरीले जीव समा जायें।।टेर।।
प्रतिकारों की वर्षा तो सद् संस्कारों की परीक्षा है।
द्विगुणित शक्ति से कर्म करे यह महापुरुषों की शिक्षा है।
नर से तूं नारायण बन, सारा जग अपना हो जाये।।1।।
वो भी क्या.......................

समरांगण से शूर कभी क्या मरने से वो डरते हैं?
प्राणों का उत्सर्ग करें निज धर्म की रक्षा करते हैं।।
वो पर्वत क्या हिमगिरि है जो फूँक लगे से उड़ जाये।।2।।
वो भी क्या.......................

पाहन की चोटे खाकर, ये वृक्ष सदा फल देते हैं।
औरों को सुख पहुँचावे, महा ताप शीश पर सहते हैं।।
वो क्या फूल सुगन्धित है जो आँख दिखाते मुरझाये।।3।।
वो भी क्या.......................

तेज पुन्ज हे सूर्य देव! क्षण भंगुर है घन[1] की ओटें।
जब हो अनमोलक हीरे तो क्या कर सकती घन[2] की चोटें।
विनयशील, आदर्श पुरुष क्या दुर्जन के सम हो जाये।।4।।
वो भी क्या.......................

घन[1]-बादल घन[2]-हथौड़ा

गीत

अकेला क्या नहीं कर सकता?

मैं अकेला क्या करुं? यह हीन भावना छोड़ दो।
जीवन में कुछ बनना है तो, श्रम से नाता जोड़ दो।।टैर।।
सूक्ष्म बीज की बलिदानी, निर्मित करती वट वृक्ष महा।
ऐसे ही त्याग समर्पण से, निश्चित पा लोगे लक्ष्य महा।
आलस, नींद, प्रमादों के, इस महाकुम्भ को फोड़ दो।।1।।
मैं अकेला.................
कमल खिले नित कीचड़ में, विज्ञापन कही प्रचार नहीं।
स्वयमेंव ही भँवरे मंडराते है, दिया कभी कोई तार नहीं।
कर्म किये जा ख्याति प्रतिष्ठा, पद लोलुपता छोड़ दो।।2।।
मैं अकेला.................
क्या कोई बबरी नाहर को, चुनकर के भूप बनाता है?
अपने आतम बल से ही वन में वनराज कहाता है।
स्वत्व को पहिचान करके, विषयों से मुख मोड़ दो।।3।।
मैं अकेला.................
कर्मवीर! तू आगे बढ़, भगवान तुम्हारे संग होगा।
विरोधी बनेंगे सहयोगी, यह विश्व देखकर दंग होगा।।
होना मत पथ भ्रष्ट वीर, चाहे लालच लाख करोड़ दो।।4।।
मैं अकेला.................

"आत्म निरीक्षण"

(प्रश्न)

कहो हम कैसे होंगे पास ? ।टैर।।
घर में नित आपस की खटपट, मन वहां जाय लगेगा झटपट।
टी.वी. रोज बढ़ाता टी.बी. ऐसे भये उदास।।1।।

बचपन में कर डारी शादी, काम मोह के हो गये आदी।
तन, मन को दुर्बल कर डारा, करके वीर्य विनाश।।2।।

देर रात तक होगी गपशप, उठें देर से पीकर टी कप।
पढ़ लेंगे दिन बहुत पड़े हैं, रोग लगा है खास।।3।।

गंदी फिल्म, साहित्य, चर्चा, चाहिये नित गुटखों का खर्चा।
इश्की, डाकू बन गये पक्के, खेले चौपड़ ताश।।4।।

शिक्षक का उपहास उड़ाये, कक्षा में नित शोर मचायें।
पढ़े न पढ़ने देंगे, अपनी कातन लगे कपास।।5।।

सोचत आय परीक्षा टपकी, करें नकल दे शिक्षक भभकी।
फ्लाईंग ने आ नोट लगाया, हो गया सत्यानाश।।6।।

सद्प्रेरणा (उत्तर)

वीर तुम ऐसे होना पास।
मनको कसदे, कुसंग तजदे, कर नियमित अभ्यास।टैर।।

व्यवस्थित दिनचर्या बनाकर, आलस्य प्रमाद हटाकर।
कठिन परिश्रम में जुट जाना, रखो आत्म विश्वास।।1।।

गंदी फिल्में आदि जहर हैं, गंदी पुस्तकें फैंको नहर हैं।
महापुरुषों का चरित्र पढ़े, तो पूरी होगी आश।।2।।

उत्तम जन की संगत करिये, मात पिता गुरुजन से डरिये।
ठीक समय हर काम किया तो होगा पूर्ण विकास।।3।।

जीवन में यदि पाना है सुख, वीर्य रक्षण राखे हँसमुख।
आसन, प्राणायाम, वन्दना, मेटे मन की त्रास।।4।।

"विपथ मानव"

अश्रुपान किये पहले अब रक्तपान करने को चले हैं।
संगठन हेतु लगा जीवन, क्यों विघटन पर मरने को चले हैं।।टेर।।
धैर्य संयम छोड़-छाड़, सत्य से मुहँ मोड़ माड़
निगुरों से नाता जोड़-जाड़, मर्यादा सब तोड़ ताड़।।
प्रेम का प्याला फोड़-फाड़, बन सर्प प्राण हरने को चले हैं।।1।।
अश्रुपान किये....................
केसर कीचड़ में रोड़-राड़, राष्ट्र कार्य को छोड़ छाड़।
निज स्वार्थ में चित जोड़-जाड़, विषय भोगों में दौड़- दाड़।।
खिलते फूलों को तोड़-ताड़, शूलों पर पग धरने को चले हैं।।2।।
अश्रुपान किये....................
कोई जयचन्दों की सीख-साख, कहीं हो किस्मत का लेख-लाख।
हम अपनी भूलें देख-दाख, घृणा शस्त्र सब फैंक-फाक।।
महाराणा की देख-धाख, अब शक्ति सिंह मिलने को चले हैं।।3।।
अश्रुपान किये....................
अब जाग सके तो जाग-जाग, चहुंदिश में लग रही आग-आग।
सतसंग में धोले दाग-दाग, फिर शुभ कर्मों में लाग-लाग।।
"सुखदेव"कुसंगत त्याग-त्याग, क्यों अपनों से डरने को चले हैं।।4।।
अश्रुपान किये....................

हिन्दू नव वर्ष मंगलमय हो

मंगलमय हो आप सभी को, यह हिन्दू नव वर्ष है
विश्व काल गणनाओं में, जो सर्वोत्तम आदर्श है ।।टैर।।
जग मे ग्राह्य हिन्दू चिन्तन, औरों के गढ़ ढहते हैं।
अंग्रेजों के काल गणन को, क्यों हम अब तक सहते हैं।।
वर्ष प्रतिपदा चेत्र शुक्ला एकम् को ही कहते हैं।
भारत का नव वर्ष यही हम भारत में ही रहते हैं।।
खिला मिठाई, देवो बधाई, खूब मनाओ हर्ष है।।1।।

विक्रम, शालीवाहन, युधिष्ठिर, महावीर संवत चले।
भारत की गोदी में इस दिन, सिंह सपूत महान फले।।
केशव, भीमराव, गुरु अंगद, झूलेलाल अनेक पले।
नवरात्रा स्थापना को माँ दुर्गा का प्यार मिले।
मत भूलो निज गौरव को, बस इसमें ही उत्कर्ष है।।2।।

गाँव सजाओ, ढोल ढमाढम, शंख बजाओ शहनाई।
भगवाँ फहरे दीप जले, महा आनंद की बेला आई।।
अभिनन्दन संदेश लिखों, सब गले मिलो बहिनों भाई।
नया अन्न आया नव मौसम, हर दिल में मस्ती छाई।।
घर में बंदनवार, मांडणे, मंड डालो सब फर्श है ।।3।।

परदेशी संस्कृति, भाषा, और वेष धारकर फूल रहे हैं।
भारत माँ चित्कार करे, हम हिन्दुस्तानी भूल रहे हैं।।
जब-जब भूले गौरव को, परिणाम सभी प्रतिकूल रहे हैं।
बढ़ो-बढ़ो अब कमर कसो, चाहे पथ में अनगिन शूल रहे हैं।
बावनवी हिन्दू सदी होगी, करना महा संघर्ष है।।4।।

तर्क, ज्ञान, विज्ञान, सम्मत, इतिहास अनूठा दर्शाई।
सृष्टि का निर्माण इसी दिन, राजा राम बने भाई।।
देवी देव सुखी हो नभ से, सुमन सुगंधित वर्षाई।
रक्षा का संकल्प किया तो, भारत माँ भी हर्षाई।
विश्व गुरु सिंहासन माँ को, करवाना स्पर्श है।।5।।

गीत

हाथ मं राखो लाठो रे

ओ हिन्दू अब तो हो जा काठो रे।
देश बचावण हेत हाथ में राखो लाठो रे।टेर।।
भारत ने माँ मा-ने रक्षा भाव रखो बे हिन्दू।
सुख, दुःख शत्रू मित्र दिलां में एक मान का बिन्दू।।
हिन्दुपण सूं सबने साँठो रे।।1।।
देश बचावण..................

कण-कण में भगवान एक, फिर भावै जीयाँ पूजो।
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे ना गिरजाघर मं दूजो।।
मन का भेद भाव ने पाटो रे।।2।।
देश बचावण..................

तुष्टीकरण री नीति स्यूँ कई बार देश न बाँट्या।
पाक, बंग, अफगान देश भारत माता स्यूँ काट्या।।
अब तो काटण चाल्या माथो रे।।3।।
देश बचावण..................

पाकिस्तानी स्याँप आज ले गद्दारा की ओट।
घुसपेठ्यों आतंक मचाव कर रयो बम विस्फोट।।
थे ठोड़ी पर पटको भाटो रे।।4।।
देश बचावण..................

दुर्बल की तिरया न जग में कोई बणाले भाभी।
सबलां न दुनियां पू-जे एका की राखो चाबी।।
जीमो राम खींचड़ी खाटो रे।।5।।
देश बचावण..................

पद स्वारथ रा भूखा नेता ज्यारी करो पिछाण।
कुर्सी खींच पटक द्यो राखो हिन्दू राष्ट्र की आण।।
देश न बर्बादी स्यूँ डाटो रे।।6।।
देश बचावण..................

स्वदेशी अपनायें

गीत

आओ भारतवासी मिलकर स्वदेशी का भाव जगायें।
वस्तु विदेशी छोड़ हमेशा भारत माँ की लाज बचायें।।टेर।।

कंकर, पत्थर, रेत नहीं यह, अपनी भारत माता है।
स्वर्ग, मोक्ष की दाता, जग में, प्यारी रची विधाता है।।
बडे भाग्य से जन्म मिला, इसकी रक्षा हित प्राण चढ़ाये।।1।।
आओ भारतवासी...............

एक कम्पनी ईस्ट-इण्डिया, जब भारत में आई थी।
सही गुलामी वर्षों तक, भारत माता दुःख पाई थी।।
बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को, भारत से हम दूर भगायें।।2।।
आओ भारतवासी...............

अर्थव्यवस्था बिगड़ रही, उद्योग हमारे बन्द हुये।
भ्रष्टाचारी बेकारी हम, डंकल के पाबन्द हुये।।
अर्थ गुलामी जंजीरों से, भारत माँ को मुक्त करायें।।3।।
आओ भारतवासी...............

माँ की सूखी रोटी में भी अद्‌भुत प्यार बसा है भाई।
मातृ प्रेम के सन्मुख वीरों, क्या परदेशी माल मिठाई।।
वस्तुनिष्ठ से राष्ट्रनिष्ठ हों हम अपना कर्त्तव्य निभायें।।4।।
आओ भारतवासी...............

''हिन्दुस्थान की अवनति के कारण''

आज पतन यूं हुआ हमारा।
मिटी एकता विघटन भारी, स्वार्थ में डूबे नर-नारी।
शिथिल हुआ जब भाई चारा।।1।। आज पतन................

भूले अपना सारा भारत, राष्ट्र चरित हो गया नदारद।
तब शत्रु ने पैर पसारा।।2।। आज पतन................

भूले आतम गौरव अपना, पश्चिम की हर माला जपना।
वैभव स्वाभिमान बिसारा।।3।। आज पतन................

मन्दिर, मठ गुरुकुल, गुरुद्वारे, राष्ट्र चेतना केन्द्र हमारे।
देना भूले सद् संस्कारा।।4।। आज पतन................

भारत राष्ट्र अनादि एक है, गोरे बोले नहीं अनेक है।
परम असत्य दिल में धारा।।5।। आज पतन................

मुस्लिम भले ईसाई बनना, परावर्तन शुद्धि नहीं करना।
काला पहाड़ तभी फुंफकारा ।।6।। आज पतन................

सब जग मिथ्या सत्य ब्रह्म है, सद्गुण विकृति भूले धर्म है।
तब पृथ्वी, मोहम्मद से हारा।।7।। आज पतन...............

होई वही राम रचि राखा, अहिंसा परम धर्म यूं भाखा
इनसे गलत किया व्यवहारा।।8।। आज पतन...........

पतन वतन का हम सब रोकें, विश्व गुरु सिंहासन सौंपे
होगा जग में जय जयकारा।।9।। आज पतन................

हमलावर को चुनौती

गीत

हमलावर खबरदार ! हमलावर खबरदार।।टैर।।

धर्म परिवर्तन करने को पेट्रोडालर का हमला।
जान गये है चतुराई अब गिरिजन वनवासी संभला।।
अर्जुन के गाण्डीव की पापी सुन लेना टंकार।।1।।
हमलावर खबरदार..................

आज देश को तोड़ रही है 370 की धारा।
आतंकवादी आग लगाते धधक उठा भारत सारा।।
खायेंगे वो मात जिसे सब जानेगा संसार।।2।।
हमलावर खबरदार..................

भारत माँ का मुकुट कभी कश्मीर नहीं कटने देंगे।
कट जाये कई शीश मगर अब देश नहीं बँटने देंगे।।
कान खोलकर सुनलो भारत वीरों की ललकार।।3।।
हमलावर खबरदार..................

ओ कायर तू छिपकर के क्यों अपनी सेंध लगाता है
भारत के सिंहो के सन्मुख आने से घबराता है।
सावधान ! ओ घुसपैठी अब चमकेगी तलवार।।4।।
हमलावर खबरदार..................

"घृणा पर प्रेम का प्रभाव"

"गीत"

धक्का मार गिराया, फिर अब हँसते हो।
शत्रु के सम रोज फब्तियाँ कसते हो।।
उठकर चलता गिरकर लो फिर उठता हूँ।
लेकर दुगुना जोश कार्य मे जुटता हूँ।
सरपट दौड़ूँ आज नहीं मैं रुकता हूँ
आये विघ्न अनेक कहाँ मैं झुकता हूँ
कैसे भूलूं आप मेरे दिल बसते हो।।1।।

शत्रु के सम................

गिरे हुये की पीड़ा को मैं समझा अब ही।
अपना कौन पराया है मैं समझा अब ही।
जीवन में घनघोर घटायें आती जब ही।
दीन दुःखी निबलों का साथी होता रब ही।
पाते है आनन्द हरि जो भजते हो।।2।।

शत्रु के सम................

औरों के पथ में जो काँटे बोता है।
पाप कमाकर सदा पुण्य को धोता है।
फल पायेगा अन्त समय में रोता है।
गिरना तिरना निज कर्मों से होता है।
रचकर माया जाल खुद ही तो फँसते हो।।3।।

शत्रु के सम................

सोचा तुमने शायद मैं मर जाऊँगा।
किन्तु सम्भलकर मैं भी कुछ कर जाऊँगा।
भला करे भगवान तेरा गुण गाऊँगा।
गिरने पर मैं आकर तुझे उठाऊँगा।
"सुखदेवा" के बंधु सगे ही लगते हो।।4।।

शत्रु के सम................

✡ अमृत वचन ✡

जब तक करोड़ों लोख भूख और अज्ञानता में रहते रहेंगे, मैं ऐसे हर व्यक्ति को देशद्रोही समझता हूँ, जो उनके खर्च से शिक्षित होकर भी उन पर ध्यान नहीं देता। –स्वामी विवेकानन्द

विवेकानन्द जयन्ती

गीत

आज विवेकानन्द जयन्ती, प्रेम से हमें मनाना है।
सेवा, त्याग, तपोमय जीवन, परहित काज लगाना है।।टेर।।
हिन्दू धर्म का मर्म जानकर, सकल विश्व में जाना है।
वसुधैव है कुटुम्ब हमारा, पावन भाव जगाना है।।१।।
आज विवेकानन्द जयन्ती..................
लोहे जैसी मांसपेशियाँ, तन सशक्त बनाना है।
वीर्यवान हो जोश हृदय में, भारत के गुण गाना है।।२।।
आज विवेकानन्द जयन्ती..................
विविध पंथ, मत, जाति, प्रान्त अरु, भाषायें भी नाना है
नदियाँ आय मिले महा सिन्धु, सबका एक ठिकाना है।।३।।
आज विवेकानन्द जयन्ती..................
दीन-हीन, गिरिजन, वनवासी, बन्धु सगे ही माना है।
ऊँच-नीच, मत भेद, भुलाकर, सबको गले लगाना है।।४।।
आज विवेकानन्द जयन्ती..................
भारत माँ का पावन भगवां, दुनियाँ में लहराना है।
विश्व गुरु सिंहासन ऊपर, माँ को पुनः बिठाना है।।४।।
आज विवेकानन्द जयन्ती..................

"प्रभावी शाखा"

गीत

तर्ज– निर्माणों के पावन युग में............

आज प्रभावी शाखाओं से परिवर्तन हमको लाना है।
ग्रन्थ, तंत्र, महामंत्र यही है नियमित शाखा में जाना है।।
सकल हिन्दु को सबल बनायें पावन संस्कारों के द्वारा।
राष्ट्र के पोषक बन हर गांव में भगवा लहराना है।।१।।
आज प्रभावी शाखाओं से............

छुआ–छूत मत भेद मिटाकर समरसता का भाव जगायें।
वेश्या, जुआ, शराबीपन तज सद् कर्मों में ध्यान लगायें।
दहेज, सती, कुप्रथा मिटायें सेवा भावी बन जाना है।।२।।
आज प्रभावी शाखाओं से............

हर हिन्दू मम बन्धु सगा तो, मठ, मंदिर, सब पनघट अपने
वेद, संत, मेले हर उत्सव, अंत समय हर मरघट अपने
रखकर आतम भाव सभी में प्रेम सुधा नित बरसाना है।।३।।
आज प्रभावी शाखाओं से............

सबल राष्ट्र के सत्य ज्ञान को, ध्यान लगाकर जग सुनता है।
दुर्बल तो उपहासित व अपमानित होकर सिर धुनता है।।
माँ भारत का अखिल विश्व में खोया वैभव फिर पाना है।।४।।
आज प्रभावी शाखाओं से............

स्वदेशी अपनायें

गीत

दुश्मन ने ऐसा दिया डंक, जल उठा देश का अंग अंग
अब स्वदेशी का बजा शंख, सब मिलकर बोलो संग संग
स्वदेशी अपनाएं और अपना देश बचायें।।टैर।।

विज्ञानकला से पूर्ण देश जब, सोने की चिड़ियाँ कहलाता ।
दूध दही की नदियाँ बहती, विश्व गुरु जग शीश नवाता।।
एक कम्पनी ईस्ट इण्डिया ने सब बदला ढंग-ढंग।।2।।
जल उठा देश का अंग अंग अब स्वदेशी............

आज विदेशी कम्पनियों ने भारत में फैलाया जाल
आजादी पर सीधा हमला है सुनलो भारत के लाल
स्वदेशी का पहिन के बाना लड़ो भयंकर जंग-जंग।।2।।
जल उठा देश का अंग अंग अब स्वदेशी............

खाद बीज बिजली सब महँगे, होंगे हल ट्रेक्टर के भाव।
सब्सिडी को खत्म करेगा, दुश्मन डंकल का प्रस्ताव।।
दिल्ली की कुर्सी पर बैठे राजा है या रंक-रंक।।3।।
जल उठा देश का अंग अंग अब स्वदेशी.............

सब संत जागो !
गीत

भारती है पुकारती हे पूज्यवर! सब संत जागो।
राष्ट्र के कल्याण के हित त्यागी, तपसी, महंत जागो। टैर।।

कृष्ण, केशव, राम, माधव की धरा पर विपत्त भारी।
तमस चहुं दिश छा रहा है, सूर्य बन जग कंत जागो।।
भारती पुकारती है.........।।१।।

भ्रष्टाचारी,स्वार्थी,आतंकी बन विषधर विषैले।
बन सपेरा फन कुचलकर तोड़ने विष दंत जागो।।
भारती पुकारती है..........।।२।।

मनुज मानवपन को भूला, कर्म क्या मम धर्म क्या है?
विपथ पर चलते पथिक को बतलाने सत पंथ जागो।।
भारती पुकारती है........।।३।।

जाति मजहब वेश भाषा, पंथ मत राहें अनेकों।
एकता के बिगुल बाजे, क्रांति के बन शंख जागो।।
भारती पुकारती है........।।४।।

बैठ घट, मठ, मंदिरों में, आत्मा में तुष्ट है पर।
बूडता निज राष्ट्र सन्मुख तारने हे अनंत जागो।।
भारती पुकारती है.......।।५।।

भव्य श्री राम मंदिर निर्माण पर गीत

मंदिर राम को बणांवाला रे चौड़े धाड़े।
चौड़े धाड़े रे हिंदू हेला पाड़े।टैर।।

राम प्रभु की सेवा को अब आयो सांतरो मौको।
घर-घर करो उगाई सगला, मंदिर बणसी चौखो।।
अब तो तनड़ो, मनड़ो, धनड़ो वारो चौड़े धाड़े
मंदिर........।।१।।

राम प्रभु का मंदिर मांही, बाजे जोर को घंटो।
दर्शन करबा जावे बांके, रगड़ो रहवे न टंटो।।
सगला हिंदू भाई भजन करेलां चौड़े धाड़े
मंदिर........।।२।।

राम विरोधी, राष्ट्र विरोधी, झूठा फण फटकारे।
भक्तां को छै रामधणी, दुष्टां ने राम ही मारे।।
जग में राम नाम को डंको बाजे चौड़े धाड़े
मंदिर........।।३।।

हरिजन, गिरिजन वनवासी सब, संत राम का प्यारा।
जात पात मतभेद त्याग करि, एको राखो सारा।।
भारत माता की जय बोलो सगला चौड़े धाड़े
मंदिर........।।४।।

कुण्डलियां छन्द

भगवा ध्वज

भगवा ध्वज पावन अति, यज्ञाग्नि प्रतीक।
ज्ञान वीरता तेज पुंज, देत ज्ञान की सीख।।
देत ज्ञान की सीख, बनावे संस्कृति रक्षक।
याद दिला इतिहास, सभी का पथ प्रदर्शक।।
तत्व निष्ठ आधार, गुरु सम माने अगवा।
संघ में है सिरमौर, तभी तो पावन भगवा।।
अगवा-आगे, सर्वोपरि

''शाखा''

१

शाखा ज्ञान प्रदायिनी विश्व शान्ति की मूल।
तन-मन मति विकसित करे दुर्गुण हरे समूल।।
दुर्गुण हरे समूल बनावे सच्चा मानव।
संगठित शक्ति देख काँपते बेरी दानव।।
है ईश्वरीय काज तो पूछे किससे आखा।
सर्वांगीण विकास हेतु नित आना शाखा।।

२

शाखा भेद मिटाय के करे दिलों में मेल
देशभक्त रणवीर बने खेलत-खेलत खेल।।
खेलत-खेलत खेल, बहावे ज्ञान की गंगा।
दण्ड, योग, नियुद्ध, सभी से हो मन चंगा।।
करें वन्दना, गीत गाय गुण भारत माँ का ।
सर्वांगीण विकास करे दैनिन्दिनी शाखा।।

''शिक्षक''

योजक मति गुण पारखी, करे समय पर काम।
मृदुभाषी व्यवहार कुशल, पथ में नहीं विराम।।
पथ में नहीं विराम, विपत में मुख नहीं मोड़े।
दिल में समता भाव, ध्येय से सबको जोड़े।।
सबको देकर श्रेय, बनावे मानव सच्चे।
परमारथ में दक्ष, वही है शिक्षक अच्छे।।

''दण्ड''

दण्ड देव संकट सखा, सभी सुणों दे ध्यान ।
दानव नर डरते रहे, भागे हिड़क्या श्वान।।
भागे हिड़क्या श्वान, रात में रहे न खटका।
नदियाँ नाला बीच, निकाले कारज अटका।।
दुर्बल मन सशक्त हो, निर्भय रहे अखाण्ड।
इसीलिए निज हाथ में, सदा राखिये दण्ड।।

''हिन्दू संस्कृति''

हिन्दू संस्कृति जगत में, महा सिंधु महा गंग।
सर्वभूत हिते रता, हिन्दू धर्म का अंग।
हिन्दू धर्म का अंग, कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम।।
जग का हो कल्याण, यही है ईश्वर कार्यम्।।
कण-कण में भगवान इसी का चिन्तन बिन्दू।
त्याग हीनता कहो गर्व से हैं हम हिन्दू।।

महायुद्ध हो ! !

मनहर सवैया छन्द-

हे वीर ! जाग देख सत आत्मा अमर तुम,
व्याप रहे सब ठोर नित्य ब्रह्म शुद्ध हो ।
नानक, गोविन्द गुरु विवेकानंद, दादू,
चाणक्य, प्रताप, शिवा, महावीर, बुद्ध हो।।
धारिये हु धर्म, अधरम संहारिये
बैरियों को मारिये जो धर्म के विरूद्ध हो।
लात के है भूत नहीं बात से है मानते,
अनीति, अन्याय के विरुद्ध महायुद्ध हो।।

कविता-विभाग

कविता-संतत्व

ओ बन्धू !
संतत्व कभी झुकता नहीं है।
सेवा क्षेत्र में,
घिनौने षड़्यंत्र और आरोप,
अन्याय व अनीति के सामने,
रुकता नहीं हैं।।
वो तो नित्य ही,
सेवा और ज्ञान से युक्त,
अभिमान से मुक्त,
झुके ही रहते हैं।
औरों को उठाने के लिए,
मनुष्य से भगवान बनाने के लिये,
कष्टों में भी रूके ही रहते हैं।
'संतत्व' तो-सहजता है
स्वाभाविकता है।
मोह न ममता ,
हृदय में समता,
खुद में ही रमता,
अपना न पराया, फिर वे
स्वार्थी को स्वार्थी से,
परमार्थी को परमार्थी से,
भोगी को भोगी से,
योगी को योगी से,
नजर आते हैं।
संसारी-विषयी, पामर,
भेद नहीं पाते हैं।
'संतत्व' ही 'एकत्व',
'परमतत्व' है।
नित्य-एक रस,
आनन्द में समाते हैं।
वे तो 'है' जो ही 'है'
''सुखदेव'' जिनका भेद
बिरला संत ही पाते हैं।
संत शरण में रहते नित,
वो-संतत्व में ही समाते हैं।।

कविता
स्वयं की पहचान

ओ बन्धू !
क्रोधित होकर,
संयम खोकर,
ईर्ष्या में जला है।
मारने चला है।।
मैं निश्चिन्त अरू मौन,
तुझे पता नहीं ''तू'' कौन ?
और ''मैं'' कौन ?
अमर आतम ! !
मरे न जले,
कटे न गले,
अनेक में एक,
ज्ञान से देख,
देह का जरण
अरु पुनि मरना।।
इसमें किसको
क्या है करना।।
बहने वाले देह के संग,
हम बहते है।
नित्य अशान्त रहते है।।
मारे तो तू मार
लेकर ज्ञान कटार
अज्ञान, कलह, प्रतिशोध को।
मोह, काम, मद, क्रोध को।।
स्वयं की पहिचान कर,
ओ बन्धु निज (आत्मा) ज्ञान कर
न बिरथा अभिमान कर।
स्थित हो तू ''आप'' में,
क्यों जलता संताप में,
शाबास वीर आगे बढ़ो,
उठो ! उठो ! ! ऊपर उठो,
और बनो !
निर अभिमानी, निस्वार्थी,
निष्कामी, परमार्थी,
फिर देख !
तू सब में है।
सब है तुझ में।
भेद नहीं है तुझ में मुझ में।।
जग तेरा प्रतिबिम्ब।
तू परमातम है बिम्ब।।
तुझ से अभिन्न,
दृश्य नहीं अब दृष्टा कौन ?
सृष्टि नहीं फिर सृष्टा कौन ?
असत्य न सत्य,
अनिर्वचनीय, विलक्षण,
रहा वो कौन ? ''आप''
किसको क्या कहे अब कौन ?
''सुखदेव'' अब वाणी मौन !
परम प्रेम है परमानन्द।
बस आननद ही आनन्द
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कविता
परमानंद ही परमानंद

ओ बन्धू !
हताश–निराश,
डिगा–डिगा विश्वास,
मुँह लटका कर,
रोने और सोने में,
समय गँवाते हो, ।
कुसंग से स्वरूप भूल,
बकरी ज्यूं मिमियाते हो ।।
काँपते हो, डरते हो,
पल–पल, मरते हो,
भूल गया सिंहत्व को ?
तू ना भेड़ न बकरियाँ,
तन, मन, मति ना इन्द्रियाँ,
जग जंगल का भूप तू ।
जगपति ब्रह्म स्वरूप तू ।।
आतम अचल अनूप तू ।
धरे अनेकों रूप तू ।।
नित्य निरन्तर रहने वाला ।
व्यापक है, नहीं बहने वाला ।।
दुःख का कारण भूल,
कारण हरो समूल,
खिले खुशी के फूल,
देह हेतु जग एह का ।
जग हेतु इस देह का ।।
सदुपयोग कर, ममता नहीं ।
कर्त्तव्य कर अहंता नहीं ।।
क्या अनुकूलता क्या प्रतिकूलता ?
क्या सुख ? क्या दुःख ?
मान क्या ? अमान क्या ?
जन्म क्या ? अरु मरण क्या ?
सब के सब बहने वाले ।
आप (आत्मा) सदा से रहने वाले ।।
नित्य मुक्त ! स्वछन्द ! !
साक्ष्य न साक्षी,
सुख अविनाशी ।
हो गये चुप
स्वस्थ–समाधिस्थ
आनन्द ही क्या ?
''परमानन्द ही ''परमानन्द''
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कविता
''तत्व निष्ठा''

ओ बन्धू !
भव से तरण को,
मन के संशय हरण को,
पकड़े सद्गुरु चरण को,
शिष्य बनें, बनाये नहीं।
व्यर्थ ही मोह बढ़ायें नहीं।।
एक महामंत्र !
बनने में स्वतंत्र।
बनाने में परतंत्र।।
जिज्ञासु को ज्ञान दे।
श्रेष्ठ बने यह ध्यान दे।।
गुरु कौन ?
गुणातीत- रूपातीत
देह, मन, मति से अतीत।।
पार ब्रह्म स्वरूप,
परम तत्व अनूप,
न व्यक्ति न व्यक्ति निष्ठा।
तत्व में स्थित है तत्व निष्ठा।।
सदा दिल धार,
हो भव पार,
आनन्द अपार।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कविता
मानव जीवन का लक्ष्य

अनुकूलता के भोगियों, महारोग के रोगियों।
नाम और यश की कामना, जब हो विपत्त से सामना

प्रतिकूल परिवेश में,
विघ्न पड़ा अब ऐश में।
सिर पर दुःख का साया,
चहूँ ओर काल की छाँया।
अनुकूलता में हँसो,
प्रतिकूलता में रोना ?
अनमोल मानव जीवन के,
व्यर्थ, समय को खोना।
दोनों से ऊपर उठो,
मोह आकर्षण से दूर हटो।
आसक्ति रहित, स्नेह सहित,
कभी नहीं हो हमसे अहित।
जहाँ अन्धेरा दीप बने हम,
सर्व जगत के कष्ट हरे हम।
सुख देना, सुख पाना,
नित निज कर्त्तव्य निभाना।
संतों की यह बात सही है,
मानव तन का लक्ष्य यही है।

कविता

''मूर्खों को उपदेश सुनाना''

मूर्खों को उपदेश सुनाना ठीक है क्या?
भारत के सन्तों की ऐसी सीख हे क्या? ।।टैर।।
चुगली, झूँठ, कलह, मूर्ख को नशे पते का सहारा चाहिए।
घुघ्घु, उल्लु, चमगादड़ व चोरों को अंधियारा चाहिए।।
ऐसों को प्रकाश दिखाना ठीक है क्या? ।।१।।
मूर्खों को उपदेश...............

पाये चासनी, नीम, निम्बोली क्या मीठी होती है?
कुत्ते की दुम डालो नलकी, क्या सीधी होती हैं?
कनक आक को अमृत पाना ठीक है क्या?।।२।।
मूर्खों को उपदेश...............

जो भूत मानते लातों से क्या बातों से मानेंगे?
जरासध शिशुपाल, कंस तो अधिकाई ठानेंगे
जयचन्दों से प्रीत बढ़ाना ठीक है क्या?।।३।।
मूर्खों को उपदेश...............

दूध पिलावे साँपों को, क्या जहर कभी छोड़ेंगे?
स्वर्ण चोंच मण्ढ़वा दो, कौवे क्या आदत छोड़ेंगे?
घी हेतु पानी को मथना ठीक है क्या?।।४।।
मूर्खों को उपदेश...............

सीख बया ने दी वानर को, भयो कुटुम्ब को नाश।
दुर्योधन भी कृष्ण के डालन आया पाश।।
ऐसो को ब्रह्म ज्ञान सुनाना ठीक है क्या?।।५।।
मूर्खों को उपदेश...............

मिश्री भी खारी लगती है जो नर पित्त के रोगी है,
हरि चर्चा सुन मन दुख पावे वो विषयों के भोगी है
''सुखदेव'' यहाँ पर समय लगाना ठीक है क्या?।।६।।,
मूर्खों को उपदेश...............

कविता
''गिरे प्रभु के चरणों में''

तेरी स्वार्थमयी दृष्टि में, कभी हम सर्वोपरि थे,

ये तो भ्रम की बात थी।

जिन नजरों से हम निहाल हुये,

उनसे गिरते तो शर्म की बात थी।।

गिरे नजारे और नजरियाँ,

पहले से ही नजर बुरी थी।

प्रेम की बात हुई दिन-रात,

निश्चित ही दिल में दूरी थी।।

दम्भ, द्वेष पाखण्ड युक्त, नजरों में देव बसे कैसे ?

जन्म नहीं जिस वस्तुन का, वो दुनियाँ बीच नशे कैसे ?

जिस पर नजर प्रभु की हो, नैया भव कीच फँसे कैसे ?

ज्ञान बिना निज पापों का फल, पाते वक्त हँसे कैसे ?

गिरे हुये की नजरों में जब, बसे नहीं तो गिरेंगे क्या ?

सूखे सरवर, सागर में भी, आकर हंस तिरेंगे क्या ?

दुनियां की नजर रहे टेढ़ी, जहाँ प्रभु की नजर निहाल रहे।

हम गिरे प्रभु के चरणों में बस इतना सा ख्याल रहे।।

कविता
"अहंकार का नशा"

राई पर पाँव पड़ा तो सोचा एवरेस्ट पर चढ़ गये।
मैं हूँ ऊँच और सब नीचे इतना आगे बढ़ गये।।

अवसरवादी बनकर के हम, अपना नाम धुनाने लगे।
कुछ सीख ज्ञान की बातों को, अब सेवक शिष्य बनाने लगे।।
मान, प्रतिष्ठा, पद, यश पाकर, कुप्पा होकर फूल गये।
प्रेरक, मार्गदर्शकों को भी, अहं भाव में भूल गये।।

तोते की ज्यों श्लोक रटे, मन में ब्रह्मज्ञानी कबूल गये।
दुर्व्यसनों में लिप्त रहे, विषयों का झूला झूल गये।।
मन में सोचा सुख पाऊँ, परिणाम सभी प्रतिकूल गये।
जैसी करनी वैसी भरनी, सारे इरादे धूल गये।।

बांस, सीथड़ेपन के रहते, चन्दन तेल का असर नहीं है।
टीले पर नीर डटा न डटे, यह इन्द्र देव की कसर नहीं है।।
ओ भाई जंग' मिटेगी तो, पारस भी कंचन कर देगा।
हम रखे शिष्टता, शील, विनय, कोई हृदय ज्ञान से भर देगा।।

उनका पतन अवश्यम्भावी, जो अहं में अड़ गये
राई पर पांच पड़ा तो सोचा एवरेस्ट पर चढ़ गये।।

जंग'– लोहे पर जंग

कविता
''सुन्दर''

ओ बन्धू ! लगा रसायन,
विविध वेश धर
तन को सजाते हो।
सुन्दरता का आवरण
देख कर लुभाते हो।।
कीट, पतंग ज्यों
देख ज्योति पुंज को
रूप अनूप जान
जीवन गँवाते हो।।
सुन्दर प्रतीत देह
चूमकर, लूमकर
मोह का लिबास, ''दास''
क्षणिक सुख पाते हो।
तन वृद्ध होय तब
ब्यूटी पार्लरों में
कल्पित सुन्दरता हेतु
त्वचा को खिंचवाते हो।।
तू है सत्य शिव रूप
सुन्दर में सुन्दर है,
आतमा के गये देह
असुन्दर ही पाते हो।
तेरी (आत्मा) सत्ता से ही
असुन्दर (देह) सुन्दर दीखे
सुन्दर ''तू'' सत्य शिव
सुन्दर रहाते हो।। –श्री सुखदेव जी महाराज

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कविता

''ललकार''

भारत माँ के भरतों की ललकार सुन लेना।
वीर शिवा की चमकेगी तलवार सुन लेना।।टैर।।

कश्मीर तो माँ का मस्तक है, इसके हित खून बहा देंगे।
दुश्मन के कर टुकड़े-टुकड़े, कौवों को माँस खिला देंगे।
बच्चा-बच्चा बन गया, बबरी नाहर सुन लेना।।१।।
वीर शिवा की चमकेगी............

माँ की कटी भुजायें जोड़ें, और नहीं कटने देंगे।
पाक, बांगला, अफगानादि ताल ठोककर के लेंगे।।
अखण्ड करेंगे भारत को संसार सुन लेना।।२।।
वीर शिवा की चमकेगी............

नमक देश का खाकर के, हे शत्रु हित मरने वालों।
सावधान ओ घुसपैठी, अब गद्दारी करने वालों।।
अर्जुन के गाण्डीव की टंकार सुन लेना।।३।।
वीर शिवा की चमकेगी............

अवधराम की जन्म भूमि है, शीश झुकाकर नमन करें हम।
मिटा दासतां के टीके, सम्पूर्ण राष्ट्र को चमन करे हम।।
देशभक्त सब संतों की हुँकार सुन लेना।।४।।
वीर शिवा की चमकेगी............

कविता

"स्वामी विवेकानन्द जी का आह्वान"

सुनलो ओ हिन्दु संतानों।
धारण कर केसरिया बानो।।
हिन्दू की जग में जय करने।
मानवता के दुःख को हरने।।
आज माता भारती को, चरित्रवान,
वीर्यवान राष्ट्र भक्त चाहिये।
तन सबल त्यागवान मन, सशक्त चाहिये।
बहुकाल ते जो हिन्दू धर्म का प्रचार करें।
नम्र, शील, धैर्य युक्त, कालहु से नाहिं डरे।।
समभाव राखि सुख दुःख में वो कर्मवीर।
अपमान, दुःख देने वालों का भी मान करे।।
कर्म, ज्ञान, भक्ति की, ज्योति को जलाने हेतु।
अमृत वर्षाय कर, स्वयं विषपान करे।।
निज बंधुओं की भूलहुँ पे फुँफकार के।
व्यक्ति का निर्माण करें, रखें भाव प्यार के।।
आत्मा हमारी एक शब्द गीता सार के।
दरिद्र नारायण सेवा करें उर धार के।।
कोई ना अछूत हरि चरणारबिन्दू हैं।
त्याग हीनता कहो गर्व से हम हिन्दू हैं।।

''कर्ता सात्विक उच्यते''

कविता

श्रेष्ठ चिन्तन

दिन अरु रात कहो क्यों दौड़े ?
पूर्व संबंध उन्हें तो तोड़े ।।
और नयों उसे पुनी-पुनी जोड़े ।
एक को जोड़ एक को छोड़ें ।।

जो मेरे प्रतिकूल बनें तो,
होय निराश सदा सिर फोड़े ।
मान, प्रतिष्ठा, पद, यश पाकर,
होय प्रसन्न कहो क्यों दौड़े ?

उत्तर केवल एक विचारा।
जिसका यही मर्म है सारा ।।
मैं व्यक्ति निर्माण करूंगा ।
जग में खाली स्थान भरुंगा ।।

तू अव्यक्त (आत्मा) व्यक्त है सबमें,
व्यक्ति तेरी अभिव्यक्ति है ।
तन, मन, बुद्धि बदल रहे नित,
काहे किसी से रुक सकती है ।।

औरों का निर्माण कहो फिर कैसे करोगे ।
आशा घोर निराशा के बीच जन्म मरोगे ।।
देकर ज्ञान, विचार व्यक्ति निर्माण करूंगा ।
कई प्रचारक, संत, अनेकों खड़े करूंगा ।।

अपना ज्ञान विचार अगर नही लेवे कोई ।
कर दें क्या निर्माण पूछ लो खुद से कोई ।।
खुद का खुद ही शत्रु, सदा यह गीता कहवे ।
निज कल्याण-पतन तो जग में खुद से होवे ।।

अपने सुधरे भी कोई सुधरे सत्य नहीं है,
खुद से सुधरे खुद, कहीं असत्य नहीं है ।
खुद का खुद निर्माण पतन तो कर सकता है
नर से खर या नारायण भी हो सकता है ।।

निज से निज कल्याण जिज्ञासु आप करेंगे ।
हम निष्कामी होय कर्म चुपचाप करेंगे ।।
महापुरुषों ने किया जगत में कर्म निरंतर ।
रहे सदानंद किंचित ना सुख-दुख दिल अंदर ।।

सद्‌गुरु, प्रेरक तो बस करते सबको सैना ।
रहते हरदम स्वस्थ बोलते मीठे बैना ।।
शक्ति याद दिलाय करें कर्तव्य पालन ।
विचरे निर अभिमान मस्त रहते हर हालन ।।

जगकर निज कर्तव्य का जो ध्यान करेगा ।
सबसे मिलकर वो सबका सम्मान करेगा ।।

कर सकते हैं - करा नहीं सकते ।
बन सकते हैं - बना नहीं सकते ।।
जल सकते हैं - जला नहीं सकते ।
करते हैं निर्माण भावना दिल के टारे ।
होता है निर्माण भावना दिल में धारे ।।

करने, बनने, जलने, में तो हर व्यक्ति स्वतंत्र है ।
किंतु कराना, बनाना, जलाना, इसमें सब परतंत्र है।।
सबके साथ कर्तव्य का पालन बस इतना ही करना है ।
तू तो अजर, अमर, अविनाशी तो फिर किससे डरना है ।।

फिर भी भरता दम्भ कि तू निर्माण करेगा ।
बन अभिमानी अपना ही विध्वंस करेगा ।।
प्रभु चरणों का दास, सदा "सुखदेव" पुकारे ।
कर्तापन का अहंकार जीवन से टारे ।।

ॐ शांति शांति शांति ।।

कविता

जलो ! पर जलो मत

जलो ! पर जलो मत
पर की उन्नति देखकर,
तुम क्यों जलते हो ?
खुद में झाँको देखो।
खुद को ही तो छलते हो।
घृणा, ईर्ष्या, निन्दा से तो,
वो तिरेंगे।
आप गिरेंगे।।
सन्मुख अपनी करे प्रशंसा,
तो समझो गिर सकते हैं।
निन्दक को मित्र यदि समझे,
तो निश्चित तिर सकते हैं।।
कोई जलता है, उनके प्रकाश में,
तुम भी जलो।
ज्ञान दीप लो जला,
संग-संग तुम चलो।।
किन्तु आश्चर्य अफसोस,
जलते नहीं, तुम जलते हो।
समझ रखा है शायद,
फूलों के पथ पर चलते हो।।

किन्तु हो जा सावधान,
फूल नहीं है काँटो का पथ।
विकास नहीं विनाश को,
बढ़ रहा है जीवन का रथ।।
शांति, प्रगति, प्रेम हेतु।
ज्ञान का ठोस बना सेतु।।
किसी को पीछे छोड़ना।
तो तेज गति से दौड़ना।।
लक्ष्य को निश्चित पाइये,
किन्तु आइये।
साधना कर विकास की रेखा को बढ़ाइयें।
ईर्ष्या की जलन में, घट–घट जलन है।
रक्त में जलन है, नयनों में जलन है।
जलन मिटाने हेतु, घट घट जल न है।
जलधि तू प्रेम जल, जल बन बरस ऐसे।
जल नहीं स्नेह का तो, जलन मिटेगी कैसे।।
जल जल जल ना तो, खुद जल जायेगा।।
जल जल जलने से, तम जल जायेगा।।
करबद्ध मेरी प्रार्थना।
कर ईश्वर आराधना।।
फलो पर फूलो मत।
निज कर्त्तव्य भूलो मत।।
ओ तपस्वी !
''जलो पर''''जलो मत''

कविता

परोपकार

ओ बन्धू !

देख !

तू आतमा स्व है

अक्रिय।

देह अरु जग है

सक्रिय।।

तुझसे पर है-

तन, मन, मति, इन्द्रियाँ

पर तू इन सबसे पर है

परमातम तेरा घर है

''पर'' पर उपकार।

ही है परोपकार।।

इन्द्रियों का विषयों से हटाना।

मन को शुभ चिन्तन में लगाना।।

बुद्धि निज कर्त्तव्य पाले।

देह को भोग से

योग में डाले।।

जग सेवा कर,

प्रेम ही पाले।

स्व के हेतु नहीं कुछ करना।

कुटुम्बी पर-संसार भी पर।

निष्कामी बन, सेवा कर।।

जीवन का है सार।

सच्चा परोपकार।।

जड़ से नहीं सम्बन्ध

मुक्त सदा स्वछन्द

क्रिया नहीं कर्म,

माया नहीं भ्रम,

कर्त्ता नहीं भोक्ता,

जनम न मरण।

हुआ भव तरण।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कविता

युद्ध नीति

महाभारत का युद्ध,
वीर लड़े हो क्रुद्ध,
सहसा एक अवरूद्ध।
रथ चक्र फँस गया कर्ण का।
समय आ गया मरण का।।
बोला–अर्जुन रूको !
निहत्थे पर वार
नहीं वीरों को स्वीकार।
धर्म का पहरा,
चिन्तन गहरा,
अर्जुन ठहरा।
तड़ित मुख खोले,
वासुदेव बोले,
सुनो कर्ण–
अधर्मी मन से,
चाहा भीम को मारना।
निः शस्त्र अभिमन्यु को,
धोखे से संहारना
राजसभा में द्रोपदी के,
वस्त्र को उतारना।।
और सुन ! !
लाक्षागृह की आग में,
पाण्डवों को राख में,
मिलाने वाले कर्ण !
ध्यान नहीं निज कर्म का,
काम किये सब शर्म का।
लिया पक्ष अधर्म का,
उपदेश देता धर्म का।।
ओ अर्जुन ! तू वार कर,
न किन्चित् इन्तजार कर,
अधर्मी को मार कर,
धर्म की जयकार कर,
देख यही शुभ कर्म है।
अधर्म नहीं यह धर्म है।।
वार किया झट कर्ण पर।
आय पड़ा शव धरण पर।।

हे ज्ञान भास्कर !उठो !उठो !

वेदांत का कर ज्ञान निज, भव बंध हरण के लिए ।
औषधि है श्रेष्ठ व्याधि, जन्म मरण के लिए ।।

शोक, भय, संताप से, हर मनुजगण नित जल रहे ।
कामांध, मत, मदांध जग में, दिग्भ्रमित हो चल रहे ।।

चंद्र सम शीतल हृदय ले, सूर्य सम लें तेज को ।
हे ज्ञान भास्कर !उठो !उठो ! !तज विलासिता की सेज को ।।

कर्म पथ पर चल निरंतर, कारवां लो संग अपने ।
कर प्रबल पुरुषार्थ से ही, अवश्य हो साकार सपने ।।

बिन गवाएं वक्त को, सशक्त बन आगे बढ़े हम ।
''सुखदेव'' ममता मोह का, परित्याग कर आगे बढ़े हम ।।

तोड़ना नही जोड़ना स्वभाव अपना

दंत काटे जिव्हा को, नहीं तोड़ना स्वभाव अपना ।
कुपथ से बस सुपथ पर ही, मोड़ना स्वभाव अपना ।।
सर्व के हित नित निरंतर, दौड़ना स्वभाव अपना ।
छोड़ना नहीं जानते हम, जोड़ना स्वभाव अपना ।।

हिंदी बिन हिंदुस्तान कहां

हिंदी बिन हिंदुत्व नहीं, हिंदू बिन हिंदुस्तान कहां?

हिंदुस्तान बिना सुखदायक, शिरोमणि ब्रह्मज्ञान कहां?

ब्रह्मज्ञान बिन भेद मिटे नही, मानव का उत्थान कहां ?

मानवता के बिना परस्पर, प्रेम भाव सम्मान कहां ?

संस्कृति, राष्ट्र, धर्म रक्षा का , ले सद्भाव विचरते हैं।

हिंदी बोलें हिंदी जन, कर जोड़ निवेदन करते हैं ।।

आचार्य, विद्वान, संतजन, महापुरुषों को वंदन है ।

''सुखदेवा'' शुभ हिंदी दिवस पर मंगलमय अभिनंदन है ।।

जागो ! हिन्दु जागो ! !

लेकर चले हैं कर में भगवा, विश्व गगन फहराने को।

मातृभूमि का खोया वैभव, सूयश पुनः दिलाने को।।

जाति, प्रांत, मत, पंथवाद तजि, सोया हिंदू जगाने को।

सब को लेकर चलें साथ में, हिंदू राष्ट्र बनाने को।।

भारत माता की जय

बाल भजन

राम राम हे राम हरे।।
सब का बेड़ा पार करें।। टेर।।
राम राम हे राम हरे........

कीड़ी, कूंजर, तितली बंदर,
वो ही बैठा सबके अंदर,
वो ही सबका पेट भरे ।।१।।
राम राम हे राम हरे.........

मानव दानव देवी देवा।
सब करते हैं उनकी सेवा।
उनही से यम काल डरे।। २।।
राम राम हे राम हरे..........

दादू राम भजो रे भाई।
लखचौरासी झट कट जाई।।
राम भज्यां भव नीर तरे।। ३।।
राम राम हे राम हरे........

राम नाम की महिमा भारी।
भजो प्रेम से नर और नारी।।
''सुखदेवा'' सब काज सरे ।।४।।
राम राम हे राम हरे.........

कविता

दंत विषैले नागों के बस, तोड़ना हम जानते हैं।

शत्रुदल के उठै मस्तक, फोड़ना हम जानते हैं।।

हाथ उठे सम्मान पर यदि, मरोड़ना हम जानते हैं।

छोड़ते अभिमानवश उन्हें छोड़ना हम जानते हैं।।

कविता
खंडेत समूह खड़ा करे

धर्म और गौ रक्षा के हित, कर भीषण हूंकार उठो।
परिचर्चा हो चुकी बहुत, ले हाथों में तलवार उठो।।

तजो वासना की शैया, खंडेत समूह खड़ा करें।
जो शास्त्र,शस्त्र विद्याप्रवीण, गौ रक्षा के हित लड़ा करें।।

युवा शक्ति है सुप्त प्राय, बस इनको जगाना ही होगा।
गौ रक्षक वीर शिवाजी का इतिहास बताना ही होगा।।

महाराणा,गुरु गोविंद सिंह, कैसी थी झांसी की रानी?
दुर्गादास, श्री राम, कृष्ण, सब गौ सेवक थे स्वाभिमानी।

मां की दर्दनाक मृत्यु, अब सहन नहीं होते दुखड़े।
हे वीर सपूत करो पल में, महा पापी के टुकड़े-टुकड़े।।

वर्तमान के वीर शिवा तुम, खाटू वाले मंगल हो।
सबको ले साथ बढ़ें आगे, ''सुखदेव'' सदा शुभ मंगल हो।।

कविता

भक्ति, ज्ञानरत अपने है, अरु शेष पराये होते हैं।

कई मोहवश तो कई प्रेमावश सब अपना रोना रोते हैं।।

जिन द्वैत प्रपंच बिसार दिए, अद्वैत ब्रह्म पद जोते हैं।

संतो का कोइ हो नहीं हो, पर वो सब जग के होते हैं।।'

त्रिदेह, जग से ममता तज, नित समता का मग जोते हैं।

''सुखदेव'' वही सुख सागर में, नित पांव पसारे सोते हैं।।

कविता

संगठन का कार्यकर्ता, यदि तूं जिम्मेदार है।
स्कंध पे है भार तेरे राष्ट्र, निज परिवार है।।

तो समझ ले स्वप्न में भी, रूठने का हक नहीं है।
पथिक पथ है विकट, किंतु टूटने का हक नहीं है।।

दंत काटे जिह्वा को, पर तोड़ने का हक नहीं है।
करि क्षमा अपनों की भूलें, छोड़ने का हक नहीं है।।

जिनके कर्म विचार लघु अरु, छोटा हृदय ज्यों गागर है।
चेतन व्यापक ब्रह्म सदा तू, प्रेम का महासागर है।।

दीप सम संसार में, तू जल-जलाता चल निरंतर।
संकटों के वक्ष पर तू दन-दनाता चल निरंतर।।

मान, प्रतिष्ठा, सुख लुटादे, लूटने का हक नहीं है।
रूठते अपने-अपन को, रूठने का हक नहीं है।।

टूटकर अंबर गिरे, हमें टूटने का हक नहीं है।
''सुखदेव''के प्रिय नयन, दुःख में फूटने का हक नहीं है।।

पाकिस्तान पर मेरी कविता

सीमा माळ फौज खड़ी है अटल रे।
मोदी जी अब खोलो नैन के पटल रे।।
पाक करे नहीं बात बैठकर सटल रे।
कर दो शीघ्र अटैक करो बस कत्ल रे।।१।।

फेर उठायो पाक देश पर आंख रे।
ओ भारत सम्राट! जरा सो झांक रे।।
आंख निकालो काट पाक की नाक रे।
देशपति पत भारत की अब राख रे।। २।।

अपणा सैनिक, जनता मरती रोज रे।
गंगू तेली पाक थे राजा भोज रे।
जनता थारे संग खड़ी है फौज रे।
करो भयंकर युद्ध मिटाद्यो खोज रे।। ३।।

विश्व शांति में पाक लगा दी आड़ रे।
रहे न नाम निशान लगा पछाड़ रे।
पकड़ जमी में आज दबाओ नाड़ रे।
पी दुश्मन का खून बिखेरो हाड रे।। ४।।

रोज-रोज की पाक मांड दी राड़ रे।
अन्यायी, है दुष्ट करो मत लाड रे।
ओ भारत का सिंह जरा सो दहाड़ रे।
बेगो सो दुश्मन की छाती फाड़ रे।। ५।।

हिंसक मार अहिंसा की रख साख रे।
मेटो अब फड़फड़ाट काट्यो पांख रे।।
करो अणुबम पाकअटब्बर राख रे।
दुनिया में अब राख देश की धाक रे।।६।।

पापी बारंबार करे मन ऐंठ रे।
गाड़ें तिरंगा आज करांची ठेठ रे।।
तोंपें उगले आग चले बम जेट रे।
ठान भयंकर युद्ध करो मत लेट रे।।७।।

कुण बेराजी खुश करो मत ध्यान रे।
भारतवासी देय देश हित प्राण रे।।
गांडीव धारें संग खड़े भगवान रे।
''सुखदेवा'' यह पाक बड़ा शैतान रे।। ८।।

तत्व विचार का नक्शा

	कारण	स्थान	स्वरूप	हद
जीव	अविद्या	पिण्ड	नाना अल्पज्ञ	तूरीय
ईश्वर	माया	ब्रह्माण्ड	एक सर्वज्ञ	ब्रह्मपद
जगत	भ्रान्ति	बुद्धि	कल्पित	ज्ञान पद
ज्ञान	महावाक्य	चिदाभास	दृढ़ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान	सहज समाधि

देश के गद्दारों को चुनौती

शहीदों की अमर शहादत पर, कर जश्न थिरकने वालों को ।
भारत वीरों के कटे जले पर, नमक छिड़कने वालों को ।।

प्रेम की बहती गंगा में, विष-राख घोलने वालों को ।
नमक देश का खाकर के, जय पाक बोलने वालों को।।

देश धर्म के गद्दारों को, बीच सड़क पर आने दो ।
सहनशक्ति अब खत्म हुई, अब आर-पार हो जाने दो ।।

इन हिंसक, दुष्ट, दरिंदों से ,अब युद्ध छिड़े,छिड़ जाने दो ।
जय हिंद बोलने वालों से बस, एक बार भिड़ जाने दो ।।

हम भारत के शेर बबर, इक न्याय सरासर कर देंगे ।
इन आतंकी गद्दारों से हिसाब , बराबर कर देंगे ।।

फिर कोई आदिल,अहमद से, गद्दार नहीं पैदा होंगे।
''सुखदेव''राजगुरु, शिव-राणा, कहीं भगतसिंह पैदा होंगे।।

।। भारत माता की जय ।।

कविता

संगठक का स्वभाव

मानव तन को पाय, ध्येय से जुड़ जायें।
सन्मुख संकट देख, न वापस मुड़ जाये।।

कंटक पथ का दर्द सहन करते जाना।
घोर निशा में दीपक बन जरते जाना।।

टूटे, रूठे, छूटे उनको समझायें।
कर्म कलूटे, झूठे उनको धमकायें।

कर में सूई सूत्र रखें, यह कहना है।
पुष्पों से जय माल बनाते रहना हैं।।

सुंदर हार से टूटे बिखरे मणियों से,
बिन हारे नित हार सजाते रहना है।।

अपने हित इक पुष्प बचा के मत रखना,
निज राष्ट्र, राम,गुरु चरण चढ़ाते रहना हैं।

''सुखदेव'' गुरु की कृपा से रह समता में,
बस सेवा पथ पर कदम बढ़ाते रहना है।।

हिंदू-हिंदुस्तान जगा है

अनेकता में एक्य मंत्र से, हिंदू का स्वाभिमान जगा है ।
ख्याति,प्रतिष्ठा, विश्व गुरु मां, भारत का सम्मान जगा है ।।
जाति, प्रांत, मतभेद भुलाकर करने को परित्राण जगा है ।
हिंदू राष्ट्र ''सुखदेव'' बनाने, हिंदू- हिंदुस्तान जगा है ।।

कविता
हे मां ! तुमको शत् शत् नमन्

जिसके सिर मां का हाथ रहे।
उसके संग दीनानाथ रहे।।
हे मां ! तुम को शत्-शत् नमन।
तुझसे सारा परिवार चमन।।
है दया प्रेम की मूरत मां।
सब की है खास जरूरत मां।।
प्रतिपालक मम रक्षक मां।
सबसे है अच्छी शिक्षक मां।।
कभी मार मिली कभी प्यार मिला।
सच खुशियों का संसार मिला।।
हे जननी ! श्रद्धा युक्त प्रणाम।
सुख संपत्ति शाश्वत मुक्ति धाम।।
हे मातु करे हम पद वंदन।
है, कोटि नमन् नित अभिनंदन।।
हम तेरे हित कुछ कर ना सके।
हितकर वचनों पर मर ना सके।।
जब पास तुम्हे नहीं पाते है।
झट नयन नीर भर आते हैं।।
''सुखदेव'' आपको याद करों।
मां ! माफ सकल अपराध करों।।

कविता
शूरा संतो के मौन में कौन ?

संतो की चुप्पी में करुणा प्यार छिपा रहता है।
अपकार करें उनके प्रति भी उपकार छिपा रहता है।।

दुर्जन जन का सुन प्रलाप बस सज्जन मौन लगाते हैं।
निर्भय, अचल, साक्षी पद ठहरे मूर्ख समझ नहीं पाते हैं।।

संतों की अद्भुत रहनी से बात समझ में आवे है।
मूर्ख से मौन लगावे ज्ञानी सोई सदा सुख पावे है।।

मेंढक टर-टर टर्रावे तब कोयल मौन लगावे है।
मूरख मैंढक विजय मानकर, जमकर रोल मचावे है।।

शिशुपाल की सौ गाली तक कृष्ण मौन धरते हैं।
तत्पश्चात सुदर्शनचक्र का संचालन करते हैं।।

मिथ्यावादी, पाखंडी कर हाय-हाय मरते है।
हरि, गुरु, सत्य, धर्मनिष्ठ नर विजय वरण करते हैं।।

कटू वचन दुष्टों के बिरले संत पुरुष सहते है।
सुख-दुख, मान-अमान के क्षण वे समता में रहते हैं।।

शीतल चंदन में घर्षण से, धधक उठा करती है आग।
तैसे संत भी होय क्रुद्ध तब, जाले सकल अविद्या राग।।

मात-पिता सद्गुरु का द्रोही जन्म-जन्म कल्पाता है।
करि "सुखदेव" प्रेम सेवा वह, परम शांति को पाता है।।

!!सर्वे भवंतु सुखिनः !!

''देश भक्ति कविता''

भारत देश महान् है।

जगतगुरु है ज्ञान शिरोमणि, जानत सकल जहान है।
प्राणों से भी प्यारा अपना भारत देश महान् है।।टेर।।

पुण्य भू, पुनि धर्म भू, है कर्म भू महिमा निराली।
ज्ञान, मोक्ष प्रदायिनी, मंगलमयी देती खुशाली।।
संत, ऋषि, मुनि देव, कवि नित गाय रहे यश गान है।।1।।

विंध्याचल, कैलाश, हिमगिरी से सुशोभित बदन सुंदर।
सकल वसुधा का मुकुट मणि, रत्न अनगिन वक्ष अंदर।।
सबसे बढ़कर इस दुनिया में, प्यारा हिंदुस्तान है।।2।।

सिंधु, यमुना, नर्मदा, पुनि गंगा चरण पखारती।
है सिंह सवारी कर में भगवा, अति शोभित मां भारती।।
मधुर निनाद करे महासागर, सुंदर लय, सुर, तान है।।3।।

विविध औषधि, फूल, फल पुनि, अन्न का भंडार भारी।
कल्पवृक्ष सम सुखद फल दे, जानती है दुनिया सारी।।
स्वर्ण, मणि, मोती, माणिक्य, यह हीरो की खान है।।4।।

शंकर, कपिल, विवेकानंद, दयानंद, संत कबीर हुये।
पतंजलि, बुद्ध, दतात्रेय, दादू, निश्चल, महावीर हुये।।
प्रकटै शिवा, प्रताप यहां खुद राम, कृष्ण भगवान है।।5।।

आयुर्वेद, चिकित्सा उत्तम, यहा उत्कृष्ट विज्ञान है।
योग, यज्ञ, साहित्य उत्तम, सर्वोत्तम ब्रह्म ज्ञान है।।
गर्व करें ''सुखदेव'' सभी हम भारत की संतान हैं।।6।।

वन्दे मातरम्, जय भारत

देश भक्ति कविता
भारत माता करे पुकार

पतन निरंतर देख दुखी हो भारत माता करे पुकार।
उठो ! उठो ! ! मम् वीर सपूतों दीन दशा पर करो विचार।।टेर।।

पूर्व दशा को याद करो, जग में फैला था वक्ष विराट।
तिब्बत, पाक, बांग्ला आदिक, अलग किए अंग काट-काट।।
और अनेकों टुकड़े करने, दुश्मन बैठे हैं तैयार।।1।।

वैभव परम देखकर मेरा, अंक देवता खेला करते।
मेरे लाल अखाड़ों में नित, करें योग दंड पेला करते।।
परमेश्वर साकार रूप धरि, पुनि पुनि लेते है अवतार।।2।।

विद्या, ज्ञान, विज्ञान, शौर्य, शिल्प, कला में बढ़ते चढ़ते।
तक्षशिला नालंदा आकर, दुनिया के जन आकर पढ़ते।।
धर्म-कर्म शक्ति , समता थी, न्याय प्रिय उत्तम व्यवहार।।3।।

मुगल और अंग्रेजों के हम गौरव भूल अधीन हुए जब।
सुख, संपति, इतिहास, धाम, धन, सर्व लुटाकर दीन हुए अब।।
रोने में ना समय खोय, हर रोग का शीघ्र करें उपचार।।4।।

परावलंबी राष्ट्रजनों को जीवन में सपने सुख नाहीं।
स्वावलंबी जीवन जीते, उनहु को सपने दुःख नाही।।
वस्तु विदेशी छोड़ स्वदेशी चीजों को अब करो स्वीकार।।5।।

जाति, प्रांत, भाषा, मत, मजहब, फूट परस्पर कलह बिसारे।
''सुखदेव'' मदांध, धर्मांध सभी मिलकर इक आतम तत्व विचारे।।
अनेकता में एक मंत्र से, निश्चित ही होगा उद्धार।।6।।

जिज्ञासा-समाधान

श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव संवत् २०६५ - श्री सुखदेव जी महाराज

प्रश्न- गुरु पूर्णिमा का मूल संदेश क्या है ?

उत्तर- पूर्ण तत्व, गुरु तत्व, परम तत्व में टिके। अपने आप को सर्वत्र, सबमें एवं सब समय में देखे। अपूर्णता से पूर्णता की ओर, भेद से अभेद की ओर, स्वार्थ से परमार्थ और घृणा से प्रेम की ओर चले, बस यही गुरु पूर्णिमा का पावन संदेश है।

प्रश्न- यह कैसे संभव है ?

उत्तर- स्वयं की दृढ़ इच्छा शक्ति, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास एवं ईश्वर कृपा, वेद कृपा एवं गुरु कृपा से ही संभव है।

प्रश्न- गुरु कृपा कैसे जिज्ञासु पर होती है ?

उत्तर- जो गुरुदेव का ही हो गया हो तथा गुरुदेव के प्रेम में खो गया हो जिसकी सम्पूर्ण चेष्टाएँ गुरुदेव के बिना संभव न हो एवं अपने सद्‌गुरु के भाव, संकेत एवं आज्ञा का जिससे स्वप्न में भी उल्लंघन नहीं होता हो। गुरुदेव की सेवा में जो हर वक्त प्रस्तुत है समर्पित है।

प्रश्न- कैसे गुरु की कृपा जिज्ञासुओं पर उतरती है ?

उत्तर- जो सर्व के हित की भावना के साथ-साथ, जिज्ञासुओं का शीघ्रातिशीघ्र कल्याण कैसे हो, इसी भाव से सम्बंध रखता हो। गुरुतत्व में टिका हो सर्व की सेवार्थ समर्पित हो, मुक्त हो, वही मुक्त कर भी सकता है। जिनका जीवन प्रेम स्वरूप हो, दयावान, क्षमावान, धीर, गंभीर एवं सहन शील हो। समता में स्थित हो। जैसे कारीगर के लिए सभी पत्थर महत्वपूर्ण है। भवन निर्माण में किसकी कहाँ उपयोगिता है यह वह जानता है। इसी प्रकार से सच्चे सद्‌गुरु के लिए सभी जिज्ञासु महत्वपूर्ण होते हैं।

प्रश्न- सद्‌गुरु का कर्त्तव्य क्या है ?

उत्तर- शिष्य की सेवा करना है।

प्रश्न- शिष्य का कर्त्तव्य क्या है ?

उत्तर- अपने सद्‌गुरु की सेवा करना है।

प्रश्न– गुरुदेव तो खुद सेवा में लगे हुये हैं उन्हें सेवा अपेक्षित नहीं हैं।

उत्तर– जो सेवा, आदर, मान, बडाई प्रतिष्ठा, भैंट, पूजा, चेला–चेली बनाना आदि की जिसके किन्चित भी कामना नहीं है अपितु सर्व की शान्ति के लिये विचरते हैं वो ही सच्चे सतगुरु होते हैं। उन्हीं की सेवा से कल्याण संभव है।

प्रश्न– सच्ची सेवा कब होती है?

उत्तर– गुरुदेव शिष्य को अपने समान ही नहीं अपने से भी श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं। अपने सद्गुरु की आज्ञा मे चलते हुये हम गुरुदेव की मन की पीड़ा को दूर करें। जैसे गुरुदेव ज्ञानवान है हम भी ज्ञानवान बनें, दयालु हैं हम भी दयालु बनें, गुरुदेव परमपद ब्रह्मस्वरुप में टिके हैं हम भी निज स्वरुप का ज्ञान कर उसमें टिके एवं सर्व की सेवार्थ समर्पित रहें। साधक शिष्यत्व से गुरुत्व को पाकर जब गुरु रूप ही हो जाते है तब ही गुरु की सच्ची सेवा मानी जाती है। दण्डवत प्रणाम, भैंट, पूजा आदि बाह्य उपासना है। बाह्य सेवा है।

प्रश्न– क्या बिना गुरु ज्ञान के कल्याण संभव नहीं है?

उत्तर– जिस दिन बिना प्रकाश के ही अंधेरा मिटने लग जायेगा तब से बिना ज्ञान के कल्याण भी होने लग जायेगा। अन्यथा गुरुदेव के बिना ज्ञान नहीं एवं ज्ञान बिना कल्याण नहीं।

प्रश्न– बिना गुरु के जीवन कैसा रहता है?

उत्तर– यह स्वयं से पूछो जब आप निगुरे थे तब कैसे थे? और अब कैसे हो? बैलगाड़ी पर मालिक नहीं हो, नाव पर नाविक नहीं हो, घोड़े पर सवार नहीं हो तो कोई भी लक्ष्य तक पहुँच नहीं सकते। इसी प्रकार जीवन में गुरुदेव नहीं हो तो जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता। तलवार का म्यान से, वनचरों का वन से, जलचरों का जल से जीवन आनंदित एवं सुरक्षित रहता है उसी प्रकार गुरुदेव की शरणागति से जीवन आनंदित एवं सुरक्षित रहता है।

प्रश्न– आजकल सच्चे गुरु का मिलना दुर्लभ है?

उत्तर– दुर्लभ है किन्तु असंभव नहीं। इससे भी बढ़िया बात है–
ज्ञान, गुरु, दुर्लभ नहीं, नहीं दुर्लभ भगवान।
जिज्ञासु, शिष, भक्त ही, जग में दुर्लभ जान।।

अर्थात् जिज्ञासु हो तो ज्ञान दुर्लभ नहीं, सच्चा शिष्य हो तो सतगुरु दुर्लभ नहीं, सच्चा भक्त हो तो भगवान दुर्लभ नहीं। जैसे हीरे, मोती, पारस आदि पदार्थ हर किसी को मिलना संभव नहीं उसी प्रकार भगवद्तत्व की प्राप्ति हर किसी को नहीं हो सकती। यद्यपि भगवद्तत्व सर्वत्र है, सब समय में है, सबमें हैं,सबके है। सांसारिक वस्तुओं की तरह कहीं है कहीं नहीं है ऐसी बात नहीं है।

प्रश्न– भगवान सर्वत्र है तो दिखते क्यों नहीं ?

उत्तर– सांसारिक सुखासक्ति से संसार के प्राणी, पदार्थों को चित्त में बिठा लिया है। उन्हीं से अहंता ममता हो गई है अतः संसार को ही देखना चाहते हैं और संसार ही सत्य जैसा दिखता है। सुख देने वाला प्रतीत होता है। सृष्टि पर दृष्टि अटके। नहीं परमातम पर फटके।। माया के कारण जो संसार ''नहीं है'' वो ''है'' करके भासता है और जो परमात्मा नित्य, सत्य है वो दिखता नहीं है। नित्य प्राप्त तत्व को ढूँढने जाना ना समझी ही तो है। आँखे चाहिये। सूर्य तो है किन्तु अन्धा व्यक्ति यदि सूर्य को देखना चाहे तो आँखों की जरूरत है।

प्रश्न– कौन सी आँखे ? और कौन देगा ?

उत्तर– दिव्य चक्षु, ज्ञान नैत्र। सद्गुरु ही देंगे।

प्रश्न– परमात्मा कैसे हैं ?

उत्तर– है जैसे ही हैं। यह मन, बुद्धि एवं वाणी का विषय नहीं है यह तो अनुभूति का विषय है।

प्रश्न– अनुभूति कैसे होती है ?

उत्तर– मुक्त पुरुषों की सेवा एवं सान्निध्य से। महापुरुष संकेत से समझा देते हैं जो अपने आप द्वारा, अपने आप में, अपने आपको ठीक–ठीक जान लेता है। वह शान्त है, मुक्त है। निज स्वरूप का ठीक निश्चय ही अनुभूति है। जहाँ ज्ञानी नहीं रहता ज्ञान ही रहता है, प्रेमी नहीं रहता प्रेम ही रहता है। वहाँ साधक का जीवन सरल एवं सहज हो जाता है। शत्रु मित्र हानि–लाभ,मान–अपमान, स्तुति निन्दा, यश अपयश सब में सम रहता है। ''आप से भिन्न कछु नहीं दीसे''

प्रश्न– जब दुर्जन शोर मचाते हैं, तब सज्जन चुप क्यों हो जाते हैं ?

उत्तर– मूरख का मुख बिम्ब है, निकसत वचन भुजंग। ताकि औषधि मौन है, विष नहीं व्यापे अंग।।

प्रश्न– किसी के द्वारा अत्यधिक कष्ट देने पर भी संत उनसे लड़ते क्यों नहीं ?

उत्तर– संत, गुरु, ज्ञानी अथवा मुक्त पुरूष सबको अपना स्वरूप ही जानता है, दूजा कोई है ही नहीं, फिर लड़े किससे ? जिसके चित्त में राग, द्वैष हो वहीं ऐसा संभव है संतो का चित्त चेतन ब्रह्म रूप ही हो जाता है। क्षमा, दया एवं प्रेम की मूर्ति होते है। हृदय की विशालता, वैचारिक महानता, प्रेम की प्रधानता के कारण ही संत कभी विपरीत आचरण के समय झगड़ते नहीं, उखड़ते नहीं, अपितु धीर गंभीर रहते हैं। हर प्रकार की नदियाँ जैसे सागर में गिरकर सागर को विचलित नहीं कर सकती। हिमालय पर्वत भी गिरा दिया जाय तो सागर अपनी जगह नहीं छोड़ता इसी प्रकार तुच्छ कृति के समय भी धीर पुरुष विचलित नहीं होते अर्थात जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते वही महान पुरुष है। मुक्त है।

प्रश्न– निन्दा अपमान के क्षणों में मुक्त पुरुष कैसे रहते हैं ?

उत्तर– सदा स्वस्थ (स्वयं में स्थित) रहते है। मुक्त पुरूष को स्तुति, सम्मान की कामना, चाहना नहीं। अतः निन्दा, अपमान के क्षणों में विचलित, हताश, निराश या विक्षिप्त नहीं होते। कहा भी है– ''तुच्छ कृति भी हो जिसके संग, स्थित आतम रुप में होता। स्वप्न समान जान मुस्काये, वो दुनियाँ में है महा भोक्ता।। '' महापुरुष ओर किसी की निन्दा करने को बहुत बुरा बताते हैं, किन्तु महापुरूषों की यदि कोई निन्दा करता है तो उसे मित्रवत एवं अच्छा समझते हैं।

प्रश्न संतो का ऐसा निर्मल भाव रहता है फिर भी दुर्जन लोग उनके पीछे क्यों पड़े रहते हैं ?

उत्तर– अपने स्वभाव वश। ज्ञानी तो विषयी, पामर, जिज्ञासु और मुक्तसबको जानते हैं किन्तु दुर्जन न खुद को जानते हैं न दूसरे को अतः अज्ञानी एवं मूंढ पुरुष, जो उन्हें नहीं करना चाहिये वो करते हैं, सदा दुःखी होकर मरते हैं। अज्ञानी दुःखी रहता है, दुःख देता है। ज्ञानी सदा सुखी रहता हुआ सुख देता है। यह अपना–अपना स्वभाव ही है। सज्जन व दुर्जन अपने–अपने स्वभाव के परवश हुये बरतते हैं।

बिच्छु मारे डंक, संत जन बारम्बार बचाते हैं। संत दयालु दुःख सहकर भी, सबके कष्ट मिटाते हैं।

प्रश्न– कई बार ऐसा क्यों लगता है कि संत दुःखी और सांसरिक लोग सुखी रहते हैं ?

उत्तर– यह सोच की अपूर्णता है, दिवालियापन है। वास्तविकता यह है कि ''संत सुखी दुःख में संसारा'' तालाब के किनारे स्थित पेड़ पर टंगी मणी का प्रतिबिम्ब मनुष्य पानी में देखकर उसे प्राप्त करने के लिए बारम्बार गोते लगाता है। मणी प्रतीत होती है। है करके भासती है किन्तु प्राप्त नहीं होती तो मनुष्य दुःखी और हैरान हो उठता है। इस दुःख और हैरानी का कारण वस्तु (मणि) के बारे में यथार्थ ज्ञान का अभाव अर्थात अज्ञान ही है तो वस्तु जहाँ है ही नहीं उसे ''है'' मानकर प्राप्त करने के लिए विविध उद्योग, प्रयत्न, परिश्रम करता है वो सांसारिक प्राणी कहो दुःखी नहीं होगा तो क्या होगा। जो ज्ञानी, संत, मुक्त पुरुष जिन्हें मणि (परमात्मा) अर्थात् स्वरूप का यथार्थ बोध है वह कल्पित संसार जल में व्यर्थ गोते क्यों लगायेगा ? अतः ब्रह्मज्ञान का परिणाम परम शान्ति और अज्ञान का परिणाम परम अशान्ति ही है। संत दुःखी और दुर्जन सुखी इसलिए नजर आते हैं क्योंकि उन्हें अभी ज्ञान नहीं है किन्तु ज्ञान के जिज्ञासु बनने जा रहे हैं। ज्ञान हुआ कि विपरीत निश्चय, सब संशय नष्ट, आनंद ही आनंद।

संत की रहनी को जाने संत सुजान।
मूरख लोग मर्म नहीं जाने, भटकत फिरे अजान ।।

प्रश्न– मूर्खों को कैसे समझाये ?

उत्तर– मूर्खों को समझाने की जरूरत नहीं जो आप से समझना चाहते है उसे बड़े प्यार से उसके हृदय में अपना हृदय उड़ेल करके समझाओ, मूर्खों के सम्मुख अपनी समझ में रहना ही ठीक है कहा भी है
मूरख से मौन लगावे। ज्ञानी सोई सदा सुख पावे।। जिज्ञासु, भक्त, ज्ञानी उनको हमे सुनाना। दुनियाँ माने न माने उनको नहीं मनाना।।

प्रश्न चुप रहने से तो लोग हमें गलत व अपराधी समझेंगे ?

उत्तर– मूर्खों के सन्मुख चुप व मौन रहने से समझदारों की नजर में तुम्हारा सम्मान होगा किन्तु मूर्खों की बराबरी करने से तुम्हारी फजीती ही होगी। सांसारिक लोगों में भी तुम्हारी बदनामी होगी फिर सज्जनों में तो निन्दा होना तय है। फिर आप निरपराधी एवं सही होने का प्रमाण–पत्र, अज्ञ, मुढ़ एवं मूर्खों से चाहते है क्या ? बस इसी चाहना ने हमें दुःखी व दिशाहीन कर रखा है।

प्रश्न ज्ञानी और अज्ञानी में क्या अन्तर है ?

उत्तर– अज्ञानी नश्वर शरीर को ही ''मेरा'' एवं ''मैं'' मानता है, शरीर जन्मता है मरता है, अतः उससे तादात्म्य करके भ्रमवश कहता है ''मै'' मरता हूँ, मैं मरने वाला हूँ, मैं कभी भी मर सकता हूँ, किसी से भी मर सकता हूँ, किसी भी समय मर सकता हूँ, मेरा मरना तय है कोई भी ताकत मुझे बचा नहीं सकती। ज्ञानी को ''स्व'' रूप का पक्का निश्चय है वह जानता है यह देह ''मैं'' नहीं 'मेरी नहीं' यह घट की तरह दृश्य,कल्पित परिवर्तनशील एवं नाशवान हैं। यह देह जन्मता है, मरता है, मर रहा है, कभी भी मर सकता है, कहीं भी मर सकता है इसका मरना तय है इसे कोई बचा नहीं सकता है। मैं आत्मा चैतन्य सर्व का साक्षी, द्रष्टा, उपरोक्त सब धर्मों से रहित हूँ, अतः मैं न जन्मता हूँ न मरता हूँ, मैं कभी भी कहीं भी, किसी से भी, किसी समय में भी नहीं मर सकता। मैं सदा सर्वदा नित्य, स्थिर एवं सदा रहने वाला हूँ। मुझ से भिन्न अनात्म जड़ कल्पित एवं मिथ्या है। मेरा सर्वकाल एवं देश विषै सदा रहना तय है अतः मैं मरने वाला नहीं, मुझे कोई नहीं मार सकता, मैं किसी से भी नहीं मर सकता, ऐसी ज्ञानी की समझ रहती है। बस इस समझ का ही ज्ञानी और अज्ञानी में अन्तर भासता है।

प्रश्न– ऐसी समझ रखने से क्या होता है।

उत्तर– अज्ञानी कभी भी न सुखी रहता है, न रह सकता है, न रह सकेगा। और ज्ञानी कभी भी न दुःखी रहता है, न दुःखी रह सकता है, न दुःखी हो सकता है।

प्रश्न- ज्ञानी और ज्ञान में क्या अन्तर है ?

उत्तर- ज्ञानी को कदाचित मैं ज्ञानी हूँ ऐसा अभिमान रहने से बद्धावस्था को प्राप्त हो सकता है, किन्तु जहाँ ''स्व''रूप का ज्ञान है अर्थात् केवल ज्ञान है वहाँ जीव सहज मुक्त है।

प्रश्न- मुक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर- अज्ञान सहित सर्व दुःखों की, अनर्थ की, निवृति एवं परमानन्द(परमतत्व)की प्राप्ति यह मुक्ति का स्वरूप है।

प्रश्न- इससे (मुक्तिसे)क्या होता है ?

उत्तर- जीव अपने शिव (परमात्म स्वरूप) से एकत्व का अनुभव करता है। अर्थात् देश, काल, समय, जाति, प्रान्त, सम्प्रदाय, मत, पंथ आदि की ससीमताएँ टूटकर विधि-निषेध से परे परमतत्व (स्वरूप) में रमण करता है। उसका जीवन सहज एवं सरल बन जाता है। वह सर्व हितार्थ संसार में विचरण करता है।

प्रश्न- क्या उसे संत, साधु, ऋषि, महात्मा, महाराज आदि की पदवी मिल जाती है ?

उत्तर- संत, साधू आदि कोई पद नहीं है अपितु जिज्ञासु, भक्तजनों का जीवनमुक्त महापुरुषों द्वारा हित होता है। निर्मल ज्ञान, निर्मलप्रेम एवं हृदय में शान्ति प्राप्त होती है, तो शान्त स्वरूप में स्थित महापुरुष को सन्त, साध्य को प्राप्त महापुरुषों को साधु, पवित्र आत्मा में स्थित पुरुष को ऋषि, महान आत्मा का ज्ञान होने से महात्मा आदि कहने लग जाते हैं।

प्रश्न- कोई ऐसा कहते है, सद्गुरु, संतो के चरण धोकर पीना विज्ञान की दृष्टि से ठीक नहीं है ?

उत्तर- जिसकी बुद्धि भौतिक चकाचौंध में लिप्त है वह निर्मल प्रेम, भक्ति के बारे में क्या जाने ? साधक, शिष्य या भक्त की विज्ञान दृष्टि नहीं प्रेम दृष्टि होती है।अतः उसकी श्रद्धा, निष्ठा एवं विश्वास प्रबल होता है। यहाँ क्रिया की प्रधानता नहीं है किस भाव से चरणामृत लेते हैं इसका महत्व है। ''भावो विद्यते देवो। जो कामिनी एवं कान्चन में आसक्त है उनसे वह सब हो भी नहीं सकता क्योंकि उसकी क्रिया एवं भौतिकता पर दृष्टि हैं, उसके हृदय में महापुरुषों के प्रति प्रेम नहीं है। प्रेम क्रिया रहित है, भाव रूप हैं। उन्हें समझना चाहिये कि जब वे कामिनी के संग व्यवहार

करते हैं और थूक, पसीना, लार सब चूमते है,उस समय उन्हें क्यों ठीक लगता है। स्पष्ट है वह अपने भावानुसार बरतता हैं और भक्त अपने भावानुसार, अतः भाव का महत्व है। अज्ञानी मोहित होकर पतित होता है, भक्त चरणामृत पान कर अमृत स्परूप में स्थित होता है।

प्रश्न– कई बार गुरुजन स्वयं को प्रणाम इत्यादि के लिए कहते है। ऐसा क्यों ?

उत्तर– यहाँ भी ''कह देते है'' इस पर ही ध्यान न देकर उसके पीछे भाव को समझना चाहिए। अगर गुरुजन शिष्य के कल्याण के निमित्त अत्यन्त प्रेम विभोर होकर कहते हैं तो यह उनकी महत्ती कृपा है। किसी विषय के बारे मे ज्ञान न हो तो उस विषय की ओर ध्यान कराना ठीक ही है फिर सहज प्रेम में स्थित महात्मा न कुछ करते हैं न कराते उनसे प्रेम को लेकर विधि–निषेध से हित जो कुछ होता है, वह स्वतः ही होता है, करते कुछ नहीं। जिनको प्रणाम, मान, बढ़ाई आदि शिष्यों से लेने की भूख है वह किसी से प्रणाम आदि पाकर राग करता है, खुश होता है, रस बुद्धि रखता है, तो गलत है। उसका पतन तय है। जो देहादि के प्रपन्च से निरपेक्ष है वो शिष्यों को स्व देह की सेवा में क्यों लगायेंगे। सदगुरु सहज प्रेम के वासी । ममता, चाह, अहं नहीं चिन्ता जग से भये उदासी।। जहं घट प्रेम भाव भरपूरा, तहँ घर अन्न जल पासी। मन की बात कहे बस उनको हो पूरा विश्वासी।।

प्रश्न– क्या आप संत है ?

उत्तर– नहीं। कोई मुझे संत न समझे, प्रभु चरणों का पायक हूँ। हकीकत साफ कहता हूँ, चरण की धूल लायक हूँ।।

प्रश्न– फिर आप कौन हैं ?

उत्तर– हैं जो ही हैं, यह अनुभूति का विषय है।

प्रश्न– सद्गुरु शरण की विधि क्या है ?

उत्तर– शरणागत का ध्यान, तन, मन, धन, वचन आदि से हटकर किसी ब्रह्मनिष्ठ एवं ब्रह्मश्रोत्रिय महापुरुष के चरणों में लग

जाए, पूर्ण प्रेम हो जाए, गुरुदेव के अलावा कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है, ऐसा भाव हो जाए, यह सर्वोत्तम विधि है, दूसरा हाथ में भेंट पूजा आदि की सामग्री सहित गुरुदेव के सन्मुख, सविनय दण्डवत प्रणाम करके बैठे एवं सद्गुरु अपनी करूणामयी दृष्टि, ज्ञान दृष्टि से शिष्य को उसके कल्याण के निमित्त मंत्रदीक्षा, शिक्षा आदि देकर कृतार्थ करें। अर्थात शरणागति के पश्चात् जीवन गुरुदेव की आज्ञा एवं सेवा में बरतता है।

प्रश्न- गुरु- शिष्य सम्बन्ध क्या है ?

उत्तर- गुरु-शिष्य सम्बन्ध जगत् के सर्व कल्पित सम्बन्धों का विच्छेद कराने के पश्चात् सम्बन्ध और सम्बन्धी से रहित परम तत्व में विलीन हो जाता है। यथार्थ में गुरु-शिष्य सम्बन्ध, सम्बन्ध न होकर अस्तित्व है।

ॐ सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
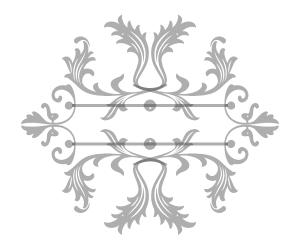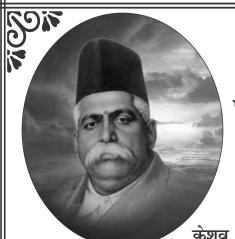
प.पू. डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार
आद्य सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

केशव हेडगेवार ने गजब चलाया संघ।
मतिमान विद्वान संत देख हो रहे दंग।।
देख हो रहे दंग, जगा घर-घर में हिन्दू।
शाखा लगे हर गाँव बहाई ज्ञान की सन्धु।।
सिन्धु बहाकर चाहे वतन का खोया वैभव।
''सुखदेवा'' धन्य धन्य प्रतापी डॉ. केशव।।

प. पू.
माधवराव सदाशिवराव
गोलवलकर
द्वितीय सरसंघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

तात्विक ज्ञान महाविद्वान हि, श्री गुरुजी जिनका शुभ नामा।
लेकर के भगवा कर में, अगुवा होई कीन्हा संघ का कामा।।
देश समाज बने सुसंगठित, शाखा चलाई शहर रू ग्रामा।
माधवराव सदाशिवराव, गुरू गोलवलकर जी को प्रणामा।।

प्रेमी साधकों द्वारा रचित पद्य भाग
(भजन, कुण्डलियाँ, विशेष जानकारी एवं आरतियाँ)

श्रीमान् पन्नालाल जी के पद

मना नित करजे रे, गुरु चरणन का ध्यान।
ध्यान किये हो ज्ञान हृदय में, नाशे भरम अज्ञान।। टैर।।
सब देवन का देव, परम शिव, सद्गुरु देव महान् ।
ईश्वर के महाईश गुरुवर पारब्रह्म भगवान ।। १।।
गुरु चरणामृत गंगाजी है, आश्रम काशी समान।
ब्रह्मा, विष्णु है विश्वेश्वर, देह वट वृक्ष पिछान ।।२।।
गुणातीत 'गु' कार कहिये, रुपातीत 'रु' मान।
ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप गुरुवर, देय यथारथ ज्ञान ।।३।।
मात, पिता, बंधू, कुल, धन, बल कोई न गुरु समान।
गुरु भक्ति बिन धन्य न कोई, संत ग्रंथ प्रमाण ।।४।।
गुरु सुखदेव जी के पद अर्पित, तन मन, धन अरु प्राण।
'पन्ना' के दिल और न भावे, जीवन है कुर्बान ।।५।।

भजन, तर्ज- नहीं पिछानी रे महावीरा...

गुरुवर करदो भव से पारा। मेरा बीता जाय जमारा।। टैर।
झुणझुणिया संग बचपन बीता, लाड़ प्यार में सारा ।
और कछु नहीं भावे मन को, खेल खिलौना प्यारा।।१।।
चढ़ी जवानी, जगी वासना, फँसिया विषय विकारा।
हरदम भोग किया नारी संग, देह दुर्बल कर डारा ।। २ ।।
सेवा, प्रेम किया नहीं सत्संग, न कोई ज्ञान विचारा।
राम भजन, सुकृत नही कीना, भटकत फिरा गँवारा ।। ३ ।।
गुरु ''सुखदेव'' सदा सुख सागर, सुनियों करूण पुकारा।
''पन्ना'' के दिल के पन्ने पर, केवल नाम तुम्हारा।। ४ ।।

मनहर सवैया छन्द

औषधि का नाम लिये, रोग नहीं दूर होय,
तैसे ब्रह्म ब्रह्म कहे मुक्त नहीं होत है।
अरि वध किये बिन, मही को हू जीते बिन,
भूप-भूप कहो पर भूप नही होत है।।
पुरुष भरोसेमंद कहे धन गढ़ा महि
बिना श्रम धन कभी प्राप्त नही होत है।
तैसे गुरु ज्ञान अरु स्वयं के प्रयत्न बिन
''पन्ना'' सपने में जीव सुखी नहीं होत है।।

श्री बन्नू भारती के पद

तर्ज - गाड़ी वाले मुझे बिठाले

दीनदयाला, हे प्रतिपाला, सद्गुरु कृपा निधान भरोसा तेरा है।
मोय भरोसा तेरा है, तू ही सहारा मेरा है।
ब्रह्म निरंजन भवदुःख भंजन, पार ब्रह्म भगवान भरोसा तेरा है।।टैर।।

जनम जनम से भटका हूँ, मोह माया में अटका हूँ।
बीच अधर में लटका हूँ, तव चरणन सिर पटका हूँ।।
सच है तेरे शरणागत का, होता है कल्याण।। १ ।।

अभिमानी अहंकार रहा, गुरु बेमुख कई बार रहा।
आदत से लाचार रहा, ना तुमसे कभी प्यार रहा।।
ऐसी कृपा करो लग जाये, चरण कमल में ध्यान ।।२।।

हुई कई भूलें अपराध, चिन्ता शोक रहे दिन रात।
बिठा गोद में दीनानाथ, प्यार भरा सिर फेरो हाथ।।
निर्भय अटल महान् बना दो, दो भक्ति वरदान ।। ३ ।।

''सुखदेव'' गुरु सा मेरा है ''बन्नू'' चरण का चेरा है।
भला बुरा खोटा या खरा, जैसा भी है तेरा है।।
जीवन को ज्योतिर्मय करदो, देकर आतम ज्ञान।। ४ ।।

भजन

राग– पूरिया

हे मेरे गुरुवर ! हे मेरे स्वामी,
आया शरण तुम्हारी, रखियो लाज हमारी।। टैर।।
जन्म जन्म दुःख पाया, अब तेरी शरण में आया।
अधम उद्धारक ! ओ प्रतिपालक,
राम तू ही है मुरारी, लो सुधि भव दुःख टारी।
हाथ जोड़ मैं द्वार खड़ा हूँ, चरण कमल पर वारी।।१।।
यहू मन चंचल है रे, नहीं तेरा ध्यान धरे रे।
पंच विषय की आग सतावे ।
पाय रहा दुःख भारी, रो रहा दीन भिखारी।।
प्रेम के आँसू भेंट करूँ मैं, तेरा प्रेम पुजारी ।।२।।
तन, मन, धन सब तेरे, आपहि गुरुवर मेरे।
बेगि दया कर संग रखो नित,
इक लघु अर्ज गुजारी, मोहे भरोसा भारी।
प्रेम से दे आवाज बुला लो, ''बन्नू'' कहो या बनवारी।।३।।

भजन, राग– मालकोष

आप बिना गुरु कौन निबहिये।
सुत बिनु मात, भक्त बिनु भगवन, त्यों तुम बिन मम दृग जल बहिये ।।टैर ।।
मछ सरवर, तरुवर बिन पंछी, मन गुरुवर बिन कैसे रहिये ।। १।।
दो निज प्यार, विचार सार तत्, करहूँ पुकार चरण चित लहिये ।।२।।
तात् रु मात, भ्रात जग संग में, बूढ़त मोह जल नाथ बचइये ।। ३ ।।
किम बरनऊँ, महिमा चरणऊँ की,'बन्नू' शरणऊँ तज अब कित जइये ।।४ ।।

भजन

तर्ज-झूला झूला

चालो-चालो रे सत्संग में सद्गुरु ज्ञान बतावे रे ।
ज्ञान बतावे रे संत भगवान से मिलावे रे ।। टैर।।
चालो-चालो रे सत्संग में...........

दुनियाँ में जीबा की सद्गुरु कला सिखावे रे।
संता रो संगरो करके नर नाही ठिगावे रे ।।१।।
चालो-चालो रे सत्संग में...........

विषयां मांही खूब भटक-ल सुख नहीं पावे रे।
सद्गुरु दे ब्रह्मज्ञान तभी परमानन्द पावे रे ।। २।।
चालो-चालो रे सत्संग में...........

अजर-अमर तू आत्म चेतन रूप लखावे रे।
देकर ज्ञान विचार प्यार भव बंध छुड़ावे रे ।।३।।
चालो-चालो रे सत्संग में...........

तू व्यापक, सबका, सब में यूं निश्चय करावे रे।
कण-कण में भगवान दिखा, सब भरम मिटावे रे ।।४।।
चालो-चालो रे सत्संग में...........

अहेतु कृपालु गुरूवर सूता जीव जगावे रे।
सतसंग कर नित मौज मना ''बन्नू भारती'' गावे रे।।५।।
चालो-चालो रे सत्संग में...........

श्री राम किशोर जी के पद

इन्दव सवैया छन्द

पूर्ण समर्पित भाव

विषया रस का जब त्याग किया, तम मेट किया मन पावन हो ।।
गुरु ज्ञान सुधारस पान किया, दिन रात हरि गुण गावन हो ।
चातक स्वाति की बूंद लहे, उर सागर नीर न भावन हो।
''रामकिशोर'' को ठोंर मिली, गुरु के पद छांड़ि क्यू जावन हो

केवल गुरु चरणों में ठौर चाहिए

है दुष्ट अति मम अल्प मति, विषयारस में अटकाय रहा।
बहु कौटिक बार जनम लेकर, लख चौरासी भटकाय रहा।।
प्रभु भक्ति रु कर्म न ज्ञान मुझे, भव संशय में लटकाय रहा।
किसी और ''किशोर'' को ठौर नहीं, गुरु चरणन सिर पटकाय रहा।।

उपकार किया गुरुदेव मेरे

अपार उमंग उठी उर में, गुरु चरणन में चित लाग रहा।
सब काम रु क्रोध हटे मन से, त्रिय ताप, संताप है भाग रहा।।
प्रभु प्रेम में प्रीत प्रचण्ड लगी, विषयारस में नहीं राग रहा।
गुरुदेव कृपा से स्वरूप मंहि, अब ''रामकिशोर'' है जाग रहा।।

भजन

तर्ज : चिरमी

परम पियारे रामजी।
करूणाकार, दीन दयाल परम गुरुदेव मेरे।। टैर।।

सद्गुरुदेव देवन के देवा, प्रेम भाव से करता सेवा।
रख दिल में प्यार अपार, परम गुरुदेव मेरे।। १।।

शिव, ब्रह्मा, विष्णु चाहे रुठे, चरण गुरु के कभी न छूटे।
मैं तो हरदम रहता लार, परम गुरुदेव मेरे।। २।।

काम, क्रोध की फौज भगाई, पल-पल प्रीति बढ़े सवाई।
हिय छाया हर्ष अपार, परम गुरुदेव मेरे।। ३ ।।

गुरु ''सुखदेव'' दया के सागर ''राम किशोर'' चरण का चाकर
भव तारे दे तत् सार, परम गुरुदेव मेरे ।। ४ ।।

तर्ज-खुशियाँ दे उसके दिल में

सन्तन को दुःख दे उनके, दिल पाप पला करते हैं।
काम क्रोध की अग्नि में, दिन रात जला करते हैं। टैर।।

फूल नहीं पथ में काँटे, बोकर अन्यायी चलते हैं।
दुर्गुण, दूराचार करे, केवल अपनी ही दलते हैं।
अज्ञानी कर मनमानी, उत्पात खड़ा करते हैं ।।१।।

मुँह पर मीठी बात करे, दिल में रहता स्वारथ भारी ।
दीखे हंस समान है बगुला, भीतर घात रखे जारी ।।
दीन दुःखी दुर्बल को ये, दिन रैन छला करते हैं।। २ ।।

सद्गुरु ''श्री सुखदेव'' कहे, जे नित सत्संग करे भाई।
''राम किशोर'' हृदय में, सेवा भक्ति भाव धरे भाई ।।
निश्चित राम कृपा से, सब दुःख, शोक टला करते हैं ।।३।।

''श्री मदन भारती जी''

श्रद्धांजलि गीत

भारती श्री मदन हम सब, करत है शत - शत नमन्।
अजर हो तुम अमर आतम, मृत्युन्जय शत्-शत् नमन्।। टैर।।

संगठन, संस्कार, परहित में निरन्तर व्यस्त रहते ।
राम, गुरु, मां भारती की सेवा में नित मस्त रहते ।।
प्रेम सिन्धू, सर्व प्रिय तुम करत है शत्-शत् नमन्।। १।।

विमल तन,मन वचन निर्मल , शुद्ध दिल अति सरल जीवन ।
नयन नम् तेजस्वी मुख पुनि कान्तिमय है धन्य यौवन ।।
मोहनी मूरत है सूरत सुंदरम् शत्-शत् नमन्।। २।।

आप गुरु के चरण सेवक, प्राण प्रिय अति लाडले थे ।
मातृ-सुत वत, स्नेह युक्त, गुरु गोद में फूले फले थे ।
आत्मा परब्रह्म में भई लीन हैं शत्-शत् नमन्।। ३।।

रचयिता- श्री सुख देव जी महाराज।

श्री गिरधारी जी के पद

भजन

भाई रे ऐसा देश हमारा
राग– भैरवी

भाई रे ऐसा देश हमारा ।
सत, चित, आनंद, व्यापक पूरण, साक्षी एक विचारा ।। टैर ।।

देह तीन, अवस्था आदिक, पंचकोश तें न्यारा ।
मन बुद्धि इंद्रियन का साक्षी, सबका जाननहारा ।।1।।

ज्यों गहनों में कंचन व्यापक, नभ सम अपरंपारा ।
अंदर–बाहर सब जग पूरण, एक ही ब्रह्म निहारा ।।2।।

जीव ईश कल्पित है मुझमें, कल्पित सब संसारा ।
द्वैत, अद्वैत, त्रेत नहीं मुझमें, मैं हूं सर्व आधारा ।।3।।

गुरु 'सुखदेव' अत्यंत दया करि, दिया बोध तत् सारा ।
'गिरधर दास' नहीं कछु संशय, भया ज्ञान उजियारा ।।4।।

भजन

तर्ज– संत समागम करिये भाई

सत्संग उत्तम तीरथ भाई, संशय, शोक सकल मिट जाई ।।टैर।।

जप, तप, तीरथ, व्रत करने से, मिटे न तम, मन शोक रहाई ।।1।।

सत्संग में नित ज्ञान गंग से, पाप,ताप की होत धुलाई ।।2।।

अजर, अमर ब्रह्म व्यापक जग में, निज स्वरूप का बोध कराई ।।3।।

अंगुलिमाल, वाल्मीकि आदिक, तिर गये संतसंगत में आई ।।4।।

'गिरधर' संतसंगत की महिमा, सुर, नर, मुनि सब ग्रंथ ही गाई ।।5।।

भजन
राग– आसावरी

आतम सर्व कर्म ते न्यारा।
क्रियावान, संचित अरु प्रारब्ध, जानहु तीन प्रकारा ।।टैर।।

नाना कर्म करें इस देह से, सो क्रियमान पुकारा ।
कर्ता भोक्ता है नहीं आतम, यह वेदांत उचारा ।।1।।

अंतः करण में पूर्व जन्म के, कर्म है संचित सारा ।
अज्ञान, आवरण अंश के आश्रित, ज्ञान अगन से जारा ।।2।।

संचित में परिपाक कर्म इक, जिससे नर तन धारा ।
भोग किए से निवृत हो यह, प्रारब्ध कर्म करारा ।।3।।

'गिरधर' जान पड़ी तिनको जिन, गुरु मुख ज्ञान विचारा।
कर्मातीत भया यों ज्ञानी, सदा रहे सुखीयारा।।4।।

भजन
तर्ज– गुरुदेव मेरी नैया

सद्गुरु चरणों के बिना, मुझे किसका सहारा है ।
संसार में देख लिया, इक तू ही हमारा है ।। टैर।।

भव डूब रही नैया, गुरु केवट आय मिले।
तत्काल उबार लिये, उस पार उतारा है। ।।1।।

पशुता को दूर किये, मानव गुण डारि हिये ।
देवत्व जगाय प्रिये, ब्रह्म रूप निहारा है।।2।।

मद काम क्रोध पुनि लोभ, विषयारस खारा है।
कर मेहर निवार दिये, दीया ब्रह्म विचारा है ।।3 ।।

गुरुदेव दया करके, भ्रम जल से ऊबारा है ।
''गिरधर'' गुरुदेव मेरे, अतः परम पियारा है ।।4 ।।

भजन

राग– आसावरी

करिये मन निज आतम का ज्ञान ।
ज्ञान भये सब शोक मिटे, हो जीवन का कल्याण ।।टैर।।

यज्ञ, तपस्या, जप, सुर पूजन, करे तीर्थ स्नान ।
कर्म, उपासना बहुत करें पर, मिटे न भरम अज्ञान ।।1।।
करिये मन निज.......................

धन, दौलत, सुत, नार जगत में, यह सब दुःख की खान।
ममता तज समता दिल धरिये, कहे कृष्ण भगवान ।।2।।
करिये मन निज.......................

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध को, विष सम करके जान ।
भोग करे सोइ भोगा जाये, जीवन बने मशान ।।3।।
करिये मन निज.......................

सद्गुरु शरण होयकर मनवा, कर अपनी पहिचान ।
'गिरधर' अमर अभय पद पावे, मिले मौज की खान ।।4।।
करिये मन निज.......................

भजन

राग – दरबारी

सत चित आनंद रूप हमारा, आतम जन्म–मरण से न्यारा ।।टैर।।

ज्ञान से जिसका बाध न होवे, कल्पित जग का है आधारा ।।1।।

ज्ञान स्वरूपम, सर्व प्रकाशक, आतम सबका जाननहारा ।।2।।

विषयानंद भी कल्पित जिसमें, निजानंद है परम पियारा ।।3।।

'गिरधर' आतम एक सर्व घट, ज्ञान भये जन होय सुखारा ।।4।।

इन्दव सवैया छन्द

व्यापक ब्रह्म का अनुभव

देह अनातम, दृश्य अचेतन, आतम सत्य, चिदानंद रूपा ।
नाम, रूप जग जान अधिष्ठित, अस्ति, भांति, प्रिय आप अनुपा ।।
ज्यों नभ व्यापक है परिपूरण, ता सम जानहु ब्रह्म स्वरूपा ।
'गिरधरदास' किया जिन अनुभव, सो जन भूपन का महा भूपा ।।

काम और प्रेम

देह इंद्रियन सब काम में रहवे, प्रेम में चेतन तत्व समाई ।
काम में स्वारथ बुद्धि रहे पर, प्रेम में सेवा भाव रहाई ।।
कामानंद निरसता लावे, प्रेमानंद नित बढ़ता जाई ।
काम ही काज बिगारत है सब, प्रेम से 'गिरधर' मुक्त सदाई ।।

सद्‌गुरु चरण कमल बलिहारी

आधि रु व्याधि, उपाधि मिटावत, संशय शोक समूल निवारी ।
अजर अमर निज रूप लखावत, सद्‌गुरुदेव परम हितकारी ।
भैंट करुं किम ? तुच्छ लगे सब, मेल्हों यदि धड़ शीश उतारी ।।
'गिरधर' श्रद्धा युक्त निरंतर, सद्‌गुरु चरण कमल बलिहारी।।

ॐ जय जय मम सद्गुरू स्वामी, आरती उतारूँ अन्तरयामी।। टैर।।

आप गुरू परब्रह्म स्वरुपा, दीनन के हित धर नर रूपा।
दीजिये ज्ञान मिटे सब खामी ।। १ ।।

ॐ जय जय

मात पिता तुम ईश के ईशा, हरि, हर, ब्रह्मा हो जगदीशा।
करहु कृपा करियो निष्कामी ।। २ ।।

ॐ जय जय

बारम्बार जनम पुनि मरना, हो भयभीत लिया तब शरना
दूर करो दुःख हे सुख धामी ।।३।।

ॐ जय जय

तन, मन, धन, जीवन सब अर्पण, तेरा तुझको होत समर्पण।
द्वार खड़ा चरणन अनुगामी ।।४।।

ॐ जय जय

श्रद्धा, प्रेम हृदय में धारें, जन ''सुखदेव'' नित आरती उतारें।
सद्गुरू बारम्बार नमामी।।५।।

ॐ जय जय

श्री दादू जी महाराज की आरती–2

जय दादू गुरु देव हमारे, सब मिल मंगल आरती उतारें।।टेर।।
जय दादू गुरु.........

ब्रह्म निरंजन, सब दुःख भंजन, मंगल मूर्ति परम पियारे।।1।।
जय दादू गुरु.........

ज्ञान प्रकाशक, भरम विनाशक, सर्व हितार्थ लिया अवतारे।।2।।
जय दादू गुरु.........

भक्ति, शक्ति, घट शांति प्रदायिनी, वाणी जी का अर्थ विचारे।।3।।
जय दादू गुरु.........

दे ब्रह्म ज्ञान करें जन मुक्ता, जो ''सुखदेव'' सैन हिय धारें।।4।।
जय दादू गुरु.........

श्री दादू वाणी जी की आरती–3

जय–जय श्री दादू गुरु वाणी, आरती करत सुखी हो प्राणी ।।टेर।।
जय–जय श्री............

अद्वय ज्ञान वेदांत समर्थित, ज्ञान शिरोमणि, भरम नसानी।।1।।
जय–जय श्री............

साखी, शब्द, सरस,पद, अनुपम, पढ़त, सुनत होवै ब्रह्म ज्ञानी।।2।।
जय–जय श्री............

भक्त ,मुमुक्षु, संत मन भावन, मेटहि बंध चौरासी खानी।।3।।
जय–जय श्री............

जन ''सुखदेव'' तात्पर्य उर धारें, निज आनंद स्वरूप समानी।।4।।
जय–जय श्री............

राग- झंझोटी, ताल- कहरवा
तर्ज- शरणे आय पड़ा गुरुदेव......

सईयों गावो मिलकर गुरुदेव की मंगल आरती ।। टैर।।
हिय का थाल प्रेम का दियरा, बाती लगन लगा निज पियरा,
पूरो श्रद्धा का घृत जियरा।
करले ज्ञान अगन से चेतन सोहं-सोहं वारती।।१।।
सईयों गावो..

सद्गुरु ब्रह्म निरंजन राया, धरि के जगत हितारथ काया,
बंधन मुक्त करे निर्माया।
जिनकी करूण कृपा जीवों को भव बंधन से टारती ।। २।।
सईयों गावो..

ब्रह्मा, हरि, हर, ब्रह्म स्वरूपा, गुरुवर सब भूपन के भूपा,
झिलमिल झलके नूर अनूपा
जय जय कार करे ''सुखदेव'' मेरे जीवन के सारथी ।। ३।।

इहिं विधि आरती राम की कीजै, आत्मा अंतर वारणा लीजै।
तन, मन, चन्दन प्रेम की माला, अनहद घंटा दीन दयाला ।। १।।
ज्ञान का दीपक पवन की बाती, देव निरंजन पाँचों पाती ।। २।।
आनन्द मंगल भाव की सेवा, मनसा मन्दिर आतम देवा ।। ३।।
भक्ति निरन्तर मैं बलिहारी, ''दादू'' न जाने सेवा तुम्हारी ।। ४।।

सद्गुरु कृपा ते पाइये, अविचल सुख संतोष।
''सुखदेवा'' ब्रह्म ज्ञान ते, जीवत ही हो मोक्ष।।
''सुखदेव'' ब्रह्म ज्ञान से, रहती नहीं कुछ भ्रान्ति।
सर्व सुख आनन्द हो, सर्वत्र शान्तिः शान्तिः ।।

आवश्यक जानकारी

(१) एक–ईश्वर, परमात्मा, साक्षी, ज्योति स्वरूप

(२) दो अध्यास– (१) अर्थाध्यास (२) ज्ञानाध्यास

दो उपाधि–(१) समष्टि (ईश्वर उपाधि) (२) व्यष्टि (जीवोपाधि)

दो असंभावना–(१) प्रमाणगत संशय (२) प्रमेयगत संशय

दो विद्या–(१) परा (२) अपरा

दो अर्थ–(१) वाच्यार्थ (२) लक्ष्यार्थ

तीन योग–(१) कर्मयोग (२) भक्तियोग (३) ज्ञानयोग

तीन अन्तः करण दोष – (१) मल (२) विक्षेप (३) आवरण

तीन काण्ड–(१) कर्म (२) उपासना (३) ज्ञान

तीन अवस्था – (१) जाग्रत (२) स्वप्न (३) सुषुप्ति

तीन आनन्द – विषयानन्द (संसार), भजनानन्द (भक्त), ब्रह्मानन्द (मुक्त)

तीन इच्छा–लोकेषणा, पुत्रेषणा, वित्तेषणा

तीन प्राच्य कर्म–संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण

तीन कारण वाद–आरम्भवाद, परिणामवाद, विवर्तवाद

तीन दुःख–दैहिक, दैविक, भौतिक

तीन जीव के शरीर– स्थूल, सूक्ष्म, कारण

तीन वाद– जल्पवाद, वितंडावाद, संवाद

चार अवस्था–जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय

चार रात्रि के पहर– प्रदोष, निशोथ, त्रियामा, उषा

चार मुक्ति–सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य, सायुज्य

चार अनुबन्ध–अधिकारी, विषय, प्रयोजन, सम्बन्ध

चार खानि–स्वेदज (पिण्डज), जरायुज, अण्डज, उद्भिज

छः दर्शन–योगी, जंगम, सेवड़ा, सन्यासी, दरवेश, ब्राह्मण

छः शास्त्र–मीमांसा, न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, वेदान्त

छः विकार–अस्ति, वृद्धि विपरिणाम, जरा, अपक्षय, विनाश

छः भ्रम–कुल, गोत्र, जाति, वर्ण, आश्रम, नाम, भ्रम

सप्त ज्ञान भूमिका– शुभेच्छा, सुविचारणा, तनुमानसा, सत्वापति,

असंशक्ति, पदार्थाभाविनी, तुरियगा।

अष्ट दोष नारी में–निन्दा, साहस, चपलता, माया, भय, अविवेक, अशौच, अदाया।

अष्ट ज्ञान साधन–विवेक, वैराग, शमादि, षट्–सम्पत्ति, मुमुक्षता, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार, तत् त्वं पद शोधन

अष्ट योग साधन–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि

अष्ट शील अंग–नारी दर्शन, स्पर्श, श्रवण, स्मरण, कीर्तन, चितवन, एकांतसेवन, स्त्रीसंग, इन आठों से दूर रहने को शील (ब्रह्मचर्य) कहते हैं।

अष्ट मद–विद्या, जोबन, जाति, धन, प्रभुता, सुन्दर रूप, कुल, मदिरा नवधा भक्ति–श्रवण, कीर्तन, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य (सखापन), दास्य, आत्म–निवेदन (अनन्य)

उठो ! जागो ! !

युग पुरुष स्वामी विवेकानंद

''आध्यात्मिकता द्वारा विश्व पर विजय'' इसे करो या मरो

उठो भारत ! तुम अपनी आध्यात्मिकता द्वारा जगत पर विजय प्राप्त करो। जैसा कि इसी देश में पहले पहले प्रचार किया गया है, प्रेम ही घृणा पर विजय प्राप्त करेगा, घृणा घृणा को नहीं जीत सकती, हमें भी वैसा ही करना पड़ेगा। आध्यात्मिकता ही पाश्चात्य देशों पर अवश्य विजय प्राप्त करेगी।'

लोग हर रोज तुमसे कहेंगे कि पहले अपने घर को संभालो, बाद में विदेशों में प्रचार करना। पर मैं तुम लोगों से स्पष्ट शब्दों में कह देता हूं कि तुम सबसे अच्छा काम तभी करते हो, जब दूसरे के लिए काम करते हो। अपने लिए सबसे अच्छा काम तुमने तभी किया जबकि तुमने औरों के लिए काम किया। अपने विचारों का समुद्रों के उस पार विदेशी भाषाओं में प्रचार करने का प्रयत्न किया, हम सभी को इसके लिए तैयार होना चाहिए, और भरसक कोशिश करनी चाहिए।

तुम में से प्रत्येक मनुष्य अंधविश्वास पूर्ण मूर्ख होने के बदले यदि घोर नास्तिक हो जाए तो मुझे पसंद है, क्योंकि नास्तिक तो जीवंत है तुम उसे किसी तरह परिवर्तित कर सकते हो, परंतु यदि अंधविश्वास घुस जाए तो मस्तिष्क बिगड़ जाएगा, कमजोर हो जाएगा और मनुष्य विनाश की ओर अग्रसर होने लगेगा। इन दो संकटों से अवश्य बचो। निर्भीक, साहसी मनुष्यों का निर्माण करना ही हमारा प्रयोजन हैं। हमारा आदर्श है आध्यात्मिकता द्वारा भारत की विश्व पर विजय--इससे छोटा कोई आदर्श नहीं चलेगा और हम सभी को इसके लिए तैयार होना चाहिए-- और भरसक कोशिश करनी चाहिए, दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।''अवश्यमेव इसे करो या मरो।''

संदर्भ- ''स्वामी विवेकानंद व्याख्यानमाला''
(पृष्ठ संख्या 202,204)
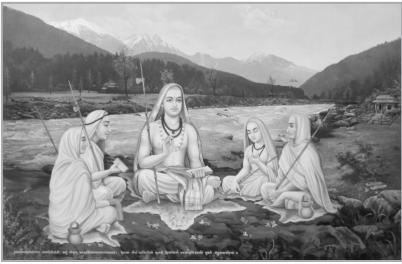
सच्चे गुरु एवं सच्चे साधक

सिर्फ गुरुमंत्र देने से कोई गुरु नहीं हो जाता और ना ही गुरुमंत्र लेने से शिष्य हो जाता है क्योंकि हर एक गुरु को अपने शिष्य के प्रति सभी कर्तव्य पूर्ण करने होते है और उस शिष्य को भी अपने गुरु के प्रति सभी कर्तव्यों का पालन करना होता है तभी वह गुरु परम्परा चलती है

बाजार में बहुत गुरु घूम रहे है बंदूकधारी अंगरक्षकों के साथ जिनके कभी तो हि दूर से दर्शन हो पाते है वो गुरु नहीं है गुरु के पास अपने शिष्यों के लिए ही समय नहीं वो कैसा गुरु ? और जिस शिष्य के पास अपने गुरु के लिए समय नहीं वो कैसा शिष्य ? गुरु-शिष्य तो एक दूसरे के पूरक होते है ऐसे गुरु आध्यात्मिक तो दूर सांसारिक मार्गदर्शन भी नही करते । - संत वाणी

सादर सत्यराम

श्री दादू सम्प्रदायाचार्य प.पू. श्री गोपालदास जी महाराज द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं के सम्पान पर सम्माननीय अलंकरण ''श्री दादूपंथ श्री'' प्रदान करते हुए। 12 मार्च 2011 दादूमेला, नरायना धाम।

महामहिम उपराष्ट्रपति – श्री भैरोंसिंह जी शेखावत द्वारा 'आध्यात्मिक ज्ञान भारती' ग्रन्थ का लोकार्पण (2011)

'राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केन्द्र' के कार्यक्रमों की झलकियाँ

‘राष्ट्रीय आध्यात्मिक ज्ञान सेवा केन्द्र’ के कार्यक्रमों की झलकियाँ

"हिन्दू संस्कृति की महत्ता"

हिन्दू संस्कृति जगत में, महा सिंधु महा गंग।
सर्वभूत हिते रता, हिन्दू धर्म का अंग।
हिन्दू धर्म का अंग, कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम।।
जग का हो कल्याण, यही है ईश्वर कार्यम्।।
कण-कण में भगवान इसी का चिन्तन बिन्दू।
त्याग हीनता कहो गर्व से हैं हम हिन्दू।।

गुरूदेव की महिमा अनंत (मनहर सवैया)

दीन के दयाल दीन जानके खयाल करि, टारि मायाजाल भव बंधन हरतु है।
ज्ञान, गुण, बुद्धि हीन, विषयों के रस लीन, तो भी गुरूदेव दया दृष्टि करतु है।।
बिना प्रतिफल, दलदल से उबार लेय, संगति किये ते, सब संशय टरतु है।
महिमा अनंत गुरुदेव की कही ना जाय, "सुखदेव" पांव परि वंदन करतु है।।

संतो की रहनी (मनहर सवैया)

दधिहु बिलोय, मथि माखन प्रकट होय, मिलत न छाछ मधि सत्य करि मानिये।
नारियल मध्य जिहि गिटक छिटक रहे, जिहि मुख भुजंग के मणि कर जानिये।।
पत्थर समद मंहि, जल में कमल दल, रहत अलग यहु प्रत्यक्ष प्रमाणिये।
संत सकल यों ही रहत जगत मांहि, "सुखदेव" निर्लेप, असंग बखानिये।।

'है' जो ही 'है' (इंदव सवैया)

नाम न रूप, न देह सरूप न जाति, वरण, कुल मैं हूं न तू है।
जीव न ईश क्रिया न ही कर्म ही, कर्ता न भोक्ता अद्वैत न दू है।।
साक्ष्य न साक्षी न दृश्य न दृष्टा, न सत्य असत्य न तेरा न मू हैं।।
सद्गुरु सैन ले सहज समाधिहु, "है जो ही है" सुखदेव न "हूँ" है।।

जगे जब भारत ! (इंदव सवैया)

जाति रु पंथ, भाषा अरु प्रान्त का, भेद मिटाय रहो इक सारा ।
छूत, अछूत न ऊँच न नीच, प्रत्येक हि मानव राम का प्यारा ।।
होय संगठित प्रेम परस्पर, तामस मेट करो उजियारा।
कह "सुखदेव" जगे जब भारत ! गूँज उठे जग में जयकारा ।।